पादरीयों के लिए पौलूस की सलाह

1 और 2 तीमुथियुस, तीतुस

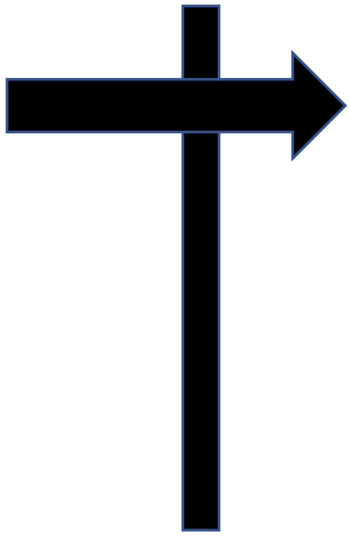

ये बातें उद्धाहरण के तौर पर हुईं और हमारे लिए लिखी गयीं थी।” 1 कुरिन्थियों 10:11

रेव डॉ. जेरी श्मोयर

Jerry@ChristianTrainingOrganization.org
ChristianTrainingOrganization.org

© 2022

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी श्मॉयर, डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उसने 1975 में थिओलॉजी में मास्टर डिग्री और 2006 में सेवकाई में डाक्टर डिग्री प्राप्त की है।

उसने 2016 तक 35 वर्षों तक यू.एस.ए में एक चर्च पादरी के रूप में कार्य किया। वह मसीही प्रशिक्षण संगठन के संस्थापक हैं जहां वह विवाह, परिवार और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है, और सेवकों/पासबानो को परामर्श और सलाह देने में सक्रिय है। उसने 2006 से भारत में पादरीयों की सेवा की है।

उसने 1979 से नैन्सी नाम की एक नर्स से शादी की है। वे अपने बहुत बड़े परिवार और कई पोते-पोतियों का आनंदमय जीवन जीता है।

उसके साथ Jerry@ChristianTrainingOrganization.org पर संपर्क किया जा सकता है।

लेखक द्वारा पुस्तकें

(ये https://www.christiantrainingonline.org/ पर मिल सकती हैं)

बाइबल अवलोकन

बाइबल परामर्श

बाइबल आधारित भविष्यवाणी

एक पादरी के कर्तव्य

अगुवाई के पाठ/सबक

शादी और सेवकाई

पादरीयों के लिए पौलुस की सलाह (1, 2 तिमोथयुस, तीतुस)

बाइबल का प्रचार और शिक्षण

उपदेश और बाइबल अध्ययन 1

आध्यात्मिक विकास और शिष्यत्व

आध्यात्मिक युद्ध पुस्तिका

बाइबल का अध्ययन करना

बाइबल आयातों की प्रासंगिक सूची

परमेश्वर कलीसियाओं से क्या उम्मीद करता है

परमेश्वर पासबानो से क्या उम्मीद करता है

हम क्यों विश्वास करते हैं

पादरीयों के लिए पौलूस की सलाह

1 और 2 तीमुथियुस , तीतुस

परिचय

I. पादरी

क- पौलूस

1. इतिहास में समय
2. पौलूस का प्रारंभिक जीवन
3. पौलुस की सेवकाई
4. पौलुस के जीवन से सबक
क- परमेश्वर किसी का भी उपयोग कर सकता है
ख- हमारी उपलब्धियां हमें परिभाषित नहीं करती हैं
ग- संतोष का महत्व
घ- पौलुस मनुष्य को नहीं, परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जीवित रहा
5. पौलुस के जहाज की तबाही से अगुवाई के सबक
क- एक ईश्वरीय नेता पर भरोसा किया जा सकता है
ख- एक ईश्वरीय नेता पहल करता है
ग- एक ईश्वरीय नेता कठिनाइयों के दौरान मजबूत होता है
घ- एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को प्रोत्साहित करता है
ङ- एक ईश्वरीय अगुवा पाप के विरुद्ध खड़ा होता है
च- एक ईश्वरीय अगुवा एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है
छ- एक ईश्वरीय नेता जब भी कर सकता है सेवकाई करता है

ख- तीमुथियुस

1. जीवन और सेवकाई
2. तीमुथियुस से सबक
क- तीमुथियुस का उदाहरण
ख- निराशा: शैतान का उपकरण
ग- एक सिखाने योग्य आत्मा
घ- कठिन समय में डटे रहना
ङ- संघर्षशील पादरीयों के लिए प्रोत्साहन
3. डर को समझना और नियंत्रित करना

ग- तीतुस

1. जीवन और सेवकाई
2. तीतुस से सबक

यह सब मेरे बारे में नहीं है

II. 1 तीमुथियुस

क- 1 तीमुथियुस की पृष्ठभूमि

ख- 1 तीमुथियुस की रूपरेखा

ग- पादरीयों के लिए सलाह

1. सब को किसी पौलूस की जरूरत होती है
2. घबराने वाला तीमुथियुस (1:1-3, 18-19)
3. हमारे दरम्यानी धर्म्तायागी लोग (1:4-20)
4. पौलुस के समान प्रार्थना करना (2:1-8)
5. महिलाओं की भूमिका (2:9-15)
6. एक पादरी क्या करता है? (3:1-3)
7. परमेश्वर एक अगुवे में क्या देखता है (3:1-3)
8. परमेश्वर एक चर्च -कार्यकर्ता में क्या देखता है (3:8-16)
9. झूठे शिक्षक की पहचान कैसे करें (4:1-5)
10. आज्ञा देना और सिखाना (4:6-11)
11. आज के पादरीयों को पौलुस की आज्ञा (4:12-16)
12. अपनी भेड़ों के साथ कैसा व्यवहार करें (5:1-16)
13. ईश्वरीय पादरीयों को चुनना और उनको भुगतान करना (5:17-25)
14. झूठे शिक्षकों को कैसे पहचानें (6:1-5)
15. परमेश्वर के जन के लिए आज्ञा (6:6-21)

III. 2 तीमुथियुस

क- 2 तीमुथियुस की पृष्ठभूमि

ख- 2 तीमुथियुस की रूपरेखा

ग- पादरीयों के लिए सलाह

1. पौलूस के अंतिम शब्द (1:1-5)
2. एक विश्वासयोग्य पादरी के गुण 1: उत्साह और साहस (1:6-12)
3. एक विश्वासयोग्य पादरी के गुण 1: विश्वासयोग्यता (1:13-18)
4. कर्तव्य 1: मजबूत बनो (2:1)
5. कर्तव्य 2: सत्य का संचार करें (2:2)
6. कर्तव्य 3: कठिनाइयों को सहना (2:3-7)
7. धीरज धरने में यीशु हमारे लिए उधारण है (2:8-13)
8. कर्तव्य 4: झूठी शिक्षाओं का विरोध करें (2:14,16-19)
9. कर्तव्य 5: केवल परमेश्वर की स्वीकृति की ही तलाश करें (2:15)
10. कर्तव्य 6: पवित्र बनो (2:20-26)
11. कर्तव्य 7: संसार के विरोध के प्रति सचेत रहो (3:1-9)

12. कर्तव्य 8: उत्पीड़न में विश्वासयोग्य रहें (3:10-13)
13. कर्तव्य 9: वचन के अनुरूप जीएं (3:14-17)
14. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार करो (4:1-2)
15. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार करने के लिए तैयार रहें (4:1-2)
16. कर्तव्य 10: सुधार करना, डांटना और प्रोत्साहित करना (4:1-2)
17. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार कैसे करें (4:1-2)
18. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार क्यों करें (4:3-5)
19. अपनी पत्नियों के प्रति हमारे कर्तव्य
20. आपने बच्चों के प्रति हमारे कर्तव्य
21. एक पादरी की पत्नी के कर्तव्य
22. कर्तव्य 11: अंत तक विश्वासयोग्य रहें - 1 (4:6-8)
23. पौलूस और तीमुथियुस के अंतिम वर्ष (4:9-22)
24. मसीही लोगों के अपने पादरी के प्रति कर्तव्य
25. अन्य पादरीयों के प्रति पादरीयों के कर्तव्य

IV. तीतुस
क- तीतुस की पृष्ठभूमि
ख- तीतुस की रूपरेखा
ग- पादरीयों के लिए सलाह
1. संदेश पहुंचाएं 1:1-4
2. व्यवस्था और संरचना का परमेश्वर 1:5
3. ईश्वरीय अगुवों का व्यवहार 1:6-9
4. झूठे शिक्षकों का व्यवहार 1:10-14
5. अज की झूठी शिक्षाएं आज 1 1 1:15-16
6. अज की झूठी शिक्षाएं आज - 2 1:15-16
7. झूठी शिक्षाओं के परिणाम 1:10-16
8. झूठी शिक्षाओं को कैसे पहचानें 1:10-16
9. मसीही पुरुषों का व्यवहार 2:1-2
10. महिलाओं और युवकों का व्यवहार 2:3-8
11. दासों का व्यवहार 2:9-10
12. ईश्वरीय चुनाव करना 2:11-15
13. अधिकारियों के प्रति व्यवहार 3:1-7
14. यीशु की वापसी की प्रतीक्षा 3:8-15

V. पादरीयों और अगुवों के लिए मानक
क- एक ईश्वरीय नेता को एक ईश्वरीय नेता बनना चाहिए
ख- एक ईश्वरीय नेता में ईश्वरीय आंतरिक गुण होते हैं

ग- एक ईश्वरीय नेता के ईश्वरीय पारस्परिक संबंध होते हैं
घ- एक ईश्वरीय नेता की ईश्वरीय प्रतिष्ठा होती है
ङ- एक ईश्वरीय अगुवे का एक ईश्वरीय आध्यात्मिक जीवन होता है

VI. संघर्ष समाधान

क- संघर्ष लाज़मी है
ख- पहला कदम उठाएं
ग- जब शांति समझौते विफल हो जाए
घ- फिलिप्पीयों में संघर्ष

निष्कर्ष

पुस्तक के अंत में प्रशनों की परछाई

परिचय

बाइबल में परमेश्वर के लोगों के लिए निर्देश और मार्गदर्शन है। इसके बिना, हम कैसे जानते कि उसके लिए जीवन कैसे जीना है और उसकी सेवा कैसे करनी है? इमें मसीहीयों को यीशु के लिए जीवन जीने के बारे सिद्धांत और शिक्षाएं मिलती हैं। इसमें पतियों को , पत्नियों को , माता-पिता को और सरकारी अगुओं को सलाह दी जाती है। इसमें पादरीयों के लिए भी सलाह है। इसे अब तक के सबसे महान पादरीयों में से एक द्वारा लिका गया है, और वह है : प्रेरित पौलुस।

एक पादरी के रूप में, मुझे, पौलूस के साथ बैठने और उसको सुनने, मिले अवसर पर, बहुत अच्छा महसूस हुआ होता। यह संभव नहीं है, खैर यह तो संभव नहीं है, इसलिए हम अगला सबसे अच्छा काम कर सकते हैं: हम, तीमुथियुस और तीतुस के साथ उसकी बातचीत में बैठ सकते हैं और उसको सुन सकते हैं कि वह उनसे क्या कहता है। ऐसा इसलिए क्योंकि उसने यह सारी बातचीत को बाइबल की 3 किताबों में लिखा है: 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस। इनका अध्ययन करने से हम सीख सकते हैं और आज आपने आप पर उसकी सलाह लागू कर सकते हैं। इसलिए परमेश्वर ने इन किताबों को अपने प्रेरित वचन के भाग के रूप में कायम रखा है। इन पुस्तकों में पौलुस परमेश्वर के चरवाहों के लिए विशिष्ट, , घहरी, विस्तृत रूप से निर्देश और आदेश देता है। वह तीमुथियुस और तीतुस को बताता है कि जब वे एक कलीसिया की अगुवाई करते हैं तो उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

किसी कलीसिया में एक पादरी होना कभी भी आसान नहीं होता है, खासकर अगर आप इसके लिए अच्छा काम करना चाहते हैं। लोगों की अगुवाई करना और उनके साथ काम करना बहुत मुश्किल हो सकता है, जैसा कि तीमुथियुस और तीतुस महसूस करते हैं। इफिसुस की कलीसिया, जहाँ पौलुस ने तीमुथियुस को भेजा था, उसमें कई संघर्ष और चुनौतियाँ थीं। पौलूस अपने अनुभव से ईश्वरीय सलाह देता है कि कैसे कठिन समय और परिस्थितियों में सेवा करनी चाहिए।

आप अगुवाई करने , पासबानी करने , डर से निपटने, झूठे शिक्षकों का सामना करने और भटके हुए लोगों को पुनः प्राप्त करने के बारे में सबक सीखेंगे। आप जानेंगे कि यीशु का अनुसरण करने वालों की बेहतर सेवा कैसे कर सकते हैं, और उसके साथ-साथ जो यीशू का अनुसरण नहीं करते हैं उनके साथ कैसे काम कर सकते हैं। हम एक अगुवे के लिए परमेश्वर की उमीदों को विस्तार से देखेंगे। लोगों के बीच संघर्ष का संतुलन बनाये रखने पर भी इस पुस्तक में एक भाग है। इस पुस्तक में कई एक सिद्धांत और महत्वपूर्ण सत्य हैं जिन्हें आप सीखना और लागू करना पसंद करेंगे।

यह पुस्तक पौलुस, तीमुथियुस और तीतुस के जीवन को देखती है और उनके जीवन से सबक लेकर आती है जो आज ही हमारी मदद कर सकते है। जब हम यहां और अभी प्रभु की सेवा करना चाहते हैं, ईनका जीवन हमें शिक्षित करेगा, प्रेरित करेगा, प्रोत्साहित करेगा और चुनौती देगा। उनकी कमियों और दोषों के बावजूद, भी परमेश्वर ने उनका भरपूर उपयोग किया है।

वह आपका भी भरपूर उपयोग कर सकता है और करेगा भी। बाइबल उसकी प्रशिक्षण पुस्तक है। पौलूस, तीमुथियुस और तीतुस के जीवन और लेख विशेष रूप से कलीसिया के अगुओं और पादरीयों के लिए हैं। जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो प्रार्थना करें और परमेश्वर से कहें कि वह आपको इसमें आपके लिए सच्चाई दिखाए। उने लिख कर रख लो। परमेश्वर जो चाहता है कि आप याद रखें और आपने जीवन में लागू करें उसको लिख लो । वह आपको आशीष देगा और वैसे ही आपका उपयोग करेगा जैसे उसने पौलुस को आशीष दी और उसका उपयोग किया।

I. पादरी

क-पौलूस

1. इतिहास में समय

बाइबल की पुस्तकें: प्रेरितों के काम 13-26, पौलुस के पत्र
बाइबल आयत: 2 तीमुथियुस 4:7-8 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रक्षा की है। अब मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो ईश्वरीय और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा - और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी जो उसके प्रगट होने की बाट जोहते हैं।

समय: 34-96 ईस्वी

इस समय की विश्व घटनाएँ:

थोमा भारत आता है और वहां एक कलीसिया शुरू करता है। रोम ने वेल्स पर विजय प्राप्ति हासिल करता है । क्लॉडियस की पत्नी जूलिया एग्रीपिना अपने पति को जहर दे देती है और अपने बेटे नीरो को सम्राट बना देती है (बाद में वही उसे मार डालता है)। रोम आग से सड़ जाता है। यहूदिया रोम के खिलाफ विद्रोह करता है, इसलिए 70 ईस्वी में टाइटस द्वारा यरूशलेम को नष्ट कर दिया जाता है। वेसुवियस पहाड़ फट जाता है और 20,000 लोग मारे जाते हैं ।

भौगोलिक स्थान: भूमध्यसागरीय क्षेत्र, फिलिस्तीन से स्पेन तक ।

जैसे-जैसे प्रारंभिक कलीसिया बढ़ने और फैलने लगी, उसे भीतरी और बाहरी विरोध का सामना करना पड़ा। कलीसिया का सच्चाई में मार्गदर्शन करने के लिए एक मजबूत व्यक्ति की आवश्यकता थी। पतरस के कोमल व्यक्तित्व ने, पहले अंगारों की तब तक रक्षा की जब तक वे आग की लपटों में नहीं बदल गए और फैलने नहीं लग गए । फिर इस आग पर काबू पाने और इसके सही दिशा में बढ़ने के लिए पौलूस जैसे किसी व्यक्ति की जरूरत थी। पौलूस तो केवल शिक्षा और व्यक्तित्व के साथ एक मनुष्य ही था। परमेश्वर ने आरम्भिक कलीसिया बनाने के लिए पौलुस का उपयोग किया, परन्तु इसके साथ साथ उसने कलीसिया का भी उपयोग किया कि पौलुस ऐसा बने और यीशु के समान बने।

2. पौलूस का प्रारंभिक जीवन

पौलूस एक ऐसा व्यक्ति था जो सब कुछ 100% करता है, चाहे वह कलीसिया का विरोध कर रहा होता या समर्थन कर रहा होता। उसने कभी भी आधा- अधुरा कुछ नहीं किया।
वंशवली- पौलूस उसका लातीनी (रोमन) नाम था और शाऊल उसका यहूदी नाम था, जिस नाम से वह घर में जाना जाता था। उसके परदादा, बिन्यामीन गोत्र से था ,तो तर्सस में रहने के लिए गलील में गिस्काला नाम के नगर को छोड़ आए थे।

गृह नगर -तर्सस पांच लाख लोगों की आबादी वाला एक समृद्ध, स्वशासी नगर था। यह आर्थिक और शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था। एक यहूदी के लिए फलने बड़ने के लिए यह एक बहुत ही सांसारिक शहर था।

माता-पिता -पौलुस के पिता एक रईस फरीसी थे। वह स्थानीय भेड़ों के लंबे काले ऊन से तंबू बनाया करता था । वह तर्सस में एक नेता और एक रोमन नागरिक भी था, जो उस समय किसी के लिए बड़ी गर्व की बात होती थी। पौलूस की मां के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। शायद वह बीमार थी, शायद पौलूस की बहन के जन्म के समय उसकी मृत्यु हो गई थी। किसी तरह से उसकी बहन यरूशलेम में आकार वास करने लगी थी (प्रेरितों के काम 23:16-35)। यह हो सकता है कि जब उसकी मां की मृत्यु हो गई तो कोई रिश्तेदार ने उसे वहां लाकर पाला और बड़ा किया था।

शिक्षा - पौलूस घरपर ही शिक्षित हुआ था। आराधनालय में उसे इब्रानी भाषा सिखाई गई थी। 13 साल की उम्र तक उसने यहूदी इतिहास, कविता और नबियों में महारत हासिल कर ली थी। उसके पास एक उत्कृष्ट दिमाग और अद्‌भुत यादशत शक्ति थी।

भाषा -पौलूस भी बहुभाषी था, जैसा कि उस समय के अधिकांश लोग होते थे। वह बचपन से ही यूनानी भाषा जानता था, जो उस समय की मुख्य भाषा थी। अरामी भाषा आम भाषा थी जो यहूदी लोग अपने घरों में बोलते थे। इब्रानी वह भाषा थी जिसमें युवक पवित्रशास्त्र का अध्ययन करना सीखते था। उसे लातीनी का भी अच्छा कार्य साधक ज्ञान था।

व्यवसायक जीवन- तम्बू बनाना एक साधारण और छोटा व्यवसाय था, लेकिन यहूदियों का मानना था कि सभ लड़कों को एक ना एक हाथ का हुनर सीखना चाहिए जिस से उनको महसूस हो सके कि काम करना क्या होता है। तंबू वहां पर आम चीज थी जिसका उपयोग कारवां, खानाबदोश और सेना के लोग करते थे। पौलूस ने खडी को आगे-पीछे धकेलते हुए कपड़ा बुनने में कई घंटे बिताया करता था। इससे उसका दिमाग ईश्वर और यहूदी मान्यताओं के बारे में आराम और आसानी से सोच विचार कर सकता था।

विश्वास -जब वह तर्सुस में रहता था, तो उसे वहाँ अच्छा नहीं लगता था। बाल की उपासना, अनैतिकता, और परमेश्वर के उपासकों पर अत्याचार ने उसके हृदय को उसके पूर्वजों की भूमि की ओर मोड़ दिया था।

घरेलू जीवन- पौलूस का घर ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता पर जोर देने के साथ धर्मपरसती का उच्च-स्थान होता था। शायद इसमें बाहरी अनुरूपता पर अत्यधिक जोर दिया गया था।

विकसत होता हुआ - पौलूस 13 साल की उम्र में बार मिट्ज्वा नाम की रीती रस्म से होकर गुज़रा, जो शायद उस समय हुआ जब वह यरूशलेम में अपनी पहली यात्रा की थी। वह अपने पिता और अन्य पुरुषों के साथ गया होगा जो आपने आपने आध्यात्मिक या व्यावसायिक कारणों से वहां गए होंगे। उसके लिए यह न केवल एक धार्मिक रूप से एक विशेष समय था, बल्कि पौलूस को अपनी बहन को देखने का मौका मिला था। कुछ समय बाद पौलूस प्रसिद्ध रब्बी गमलीएल के अधीन प्रशिक्षण और अध्ययन के लिए वहां लौट आया था। जब वह कई साल पहले यीशू अपने बार मिट्ज्वा के लिए मंदिर गया था तो यीशू ने भी गमलीएल के साथ समय बिताया होगा। पौलूस का प्रशिक्षण लंबा और कठिन था। उसने न केवल इब्रानी शास्त्रों पर बल्कि यहूदी व्याख्याओं और उन पर टिप्पणियों में भी महारत हासिल कर ली : मिशना, जेमेरा और तारगम पर। उसने अपनी बौद्धिक प्रतिभा से अपने साथियों को बहुत जल्दी ही

पछाड़ दिया था। उसके पास एक बहुत ही तार्किक दिमाग, एक उत्कृष्ट यादाश्त शक्ति थी, उपजाऊ कल्पना और विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति थी। क्योंकि वह हमेशा अपने आप से और दूसरों से बहुत उम्मी रखता था, हो सकता है कि उसके बहुत अधिक घनिष्ठ मित्र ना हों। प्रशिक्षण दौर में उसके साथ के कई लड़के बाहरी अनुरूपता (पाखंड) और दूसरों को प्रभावित करने के बारे में ही चिंतित रहते थे। पौलूस हमेशा सही कारण के लिए सही काम करने के बारे में चिंतित रहता था। बाहर से तो ऐसा प्रतीत होता था कि उसने पूर्णता प्राप्त कर ली है, लेकिन भीतर वह अहंकार, वासना और भौतिकवाद से जूझ रहा था।

तर्सुस को लौटना - 30 ईस्वी के आरंभ में, पौलुस तर्सुस लौट आया और वहाँ के आराधनालय में अगुवा बन गया, वह तंबू बनाकर अपना निर्वाह करते हुए शास्त्रों को पढ़ाता था। शायद तम्बू बनाने के दौरान ही उसकी भेंट बरनबास से हुई।

चेहरा मोहरा - पौलूस एक हष्टपुष्ट, मजबूत और अच्छी शारीरिक रूप जवान प्रतीत होता है। इतिहास कहता है कि वह 5 फुट से कम, चौड़े कंधों वाला , बारीक भौहें और मोटी दाढ़ी वाला था। उसकी नाक लम्भी और टेढ़ी थी। वह समय से पहले सफेद और फिर गंजा हो गया। उसके अधिआतमिक रूपांतरण के अनुभव के बाद उसको आँखों की परेशानी हो गई थी। उसके मित्रों ने कहना था कि वह बदसूरत था; दुश्मनों ने उसके लिए 'प्रतिघाती' शब्द को प्राथमिकता देते थे। दुनिया पर उसका इतना बड़ा प्रभाव उनकी शारीरिक बनावट से नहीं आया था।

विवाह - जबकि पौलूस के जीवन का बहुत कुछ अज्ञात है, हम उसके बारे में कुछ बातें टुकड़ों में एकत्र कर सकते हैं। महासभा में एक सदस्य होने के लिए एक व्यक्ति का विवाहित होना और एक पिता होना लाज़मी था, इसलिए शायद वह एक समय पर विवाहित था और उसका एक बच्चा भी था। शायद उसकी पत्नी और बच्चे दोनों की मौत एक ऐसी महामारी में हो गयी थी जो उन दिनों आम बात थी। इस से उसका दिल कितनी बुरी तरह से टूट गया होगा और वह उदास हो गया होगा! ऐसा हो सकता है कि 14 अप्रैल, 33 ई. की घटनाओं के साथ-साथ, जिसने उसे यरूशलेम लौटने को मजबूर कर दिया। उस दिन दोपहर 12 बजे हर तरफ अंधेरा छा गया था। दोपहर 3 बजे भूकंप ने दुनिया को हिला दिया और रोशनी फिर से चमक उठी थी। ये बातें स्पष्ट रूप से अलौकिक थीं। जब यरूशलेम से नासरत के यीशु के सलीब पर चढ़ाए जाने की अजीबोगरीब घटनाओं के बारे में खबर आई, तो पौलूस अंदर इसके विरुद्ध कुछ कर दिखाने की आग उठने लगी। एक कट्टर यहूदी होने के नाते, पौलूस इस नए विधर्म को समाप्त करने के लिए कुछ भी करने की चाहत करने लगा था। शायद उसका सारा गम और दर्द, अवसाद और खालीपन उन लोगों के लिए क्रोध और घृणा में प्रकट हो गया जिन्होंने यीशु को आपना मसीहा के रूप में देखा था। पौलूस यरूशलेम में इस नए आंदोलन का विरोध करने के लिए आकर वास करने लगा था , उसके पास सब कुछ था।

पौलूस एक उत्पीड़क- इस नए उद्यम में खुद को डालने से उसे अपने खोए हुए परिवार की दुखद यादों से बाहर आने में मदद मिली और साथ ही उसे एक नई चुनौती भी मिली, यह कुछ ऐसा था जो उसके अंदर के खालीपन को भर सकता था। वह यरूशलेम में तंबू बनाने वालों की गली/कालोनी में रहता था और काम करता था, लेकिन धार्मिक शासकों के साथ जितना भी हो सकता था उतना समय बिताता था। वह यरूशलेम में एक प्रमुख फरीसी बन गया। नीकुदेमुस, अरिमतियाह का यूसफ और स्तिफनुस जैसे लोग जिनकी वह प्रशंसा और सम्मान करता था, अब उसकेलिए घृणत शत्रु बन चुके थे। पौलूस महासभा में सबसे कम उम्र के सदस्यों में से एक था, और इस प्रकार इज़राइल में सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक बं गया था। उसका पूरा भविष्य उसके सामने था।

आध्यात्मिक इच्छाएँ - फिर भी पौलुस खाली था, वह जीवन में वास्तविक अर्थ और उद्देश्य की खोज कर रहा था। एक आदर्श यहूदी बनने के लिए उसने जितनी मेहनत की, वह उतना ही खालीपन महसूस करने लगा। वह बाद में बताता है कि वह आपने आप को व्यवस्था और परंपरा के बोझ तले दबे हुए महसूस करता था , लेकिन परमेश्वर की तलाश करने का कोई दूसरा तरीका नहीं जानता था। वह अपनी निराशा यीशु के अनुयायियों पर निकालता जिन्होंने ने इसका दावा किया था कि उनके पास वह शांति है जिसकी वह तलाश करता था।

केवल यीशु ही संतुष्टी देता ही - पौलूस के पास वह सब कुछ था जो दुनिया दे सकती है, वह सब कुछ जिसकी कोई चाहत कर सकता है। उसका एक अच्छा, महत्वपूर्ण, मददगार और प्यार करने वाला परिवार था। यहूदी धर्म (इब्रानी) और धर्मनिरपेक्ष (यूनानी) ज्ञान दोनों में उसके पास बेहतरीन शिक्षा थी। तम्बू बनाने वाले और एक रब्बी के रूप में उसका एक सफल व्यवसायक जीवन था। ऐसा लगता है कि वह महासभा में था (यहूदी समाज के सभी क्षेत्रों में शासन करने की शक्ति रखने वाले दुनिया भर में इज़राइल के शीर्ष 70 पुरुष होते थे)। वह बढ़ तो रहा था, पर वह अभी भी काफी छोटा था। वह अपने धर्म में लगभग पूर्ण था, बाहरी रूप से पाप रहित था। ऐसा लग रहा था कि उसके पास यह सब कुछ है। लेकिन वह खाली था और अंदरूनी रूप से खोज कर रहा था। वह कुछ ऐसा भूल चूका था जो उसे संतुष्ट कर सकता था - यीशू को। उसने यीशु के बारे में बहुत कुछ सुना था। शायद वह और स्तिफनुस दोस्त थे। उन्होंने यरूशलेम में एक ही आराधनालय में जाया करते थे। यीशु को मसीहा साबित करने वाले स्तिफनुस के तर्कों का पौलुस विरोध नहीं कर सका था। पौलूस ने इन सभी के पूरे निहितार्थ को समझ लिया होगा, कि अगर नासरत का यीशु वास्तव में परमेश्वर द्वारा वादा गया मसीहा था , तो उसके लिए व्यक्तिगत रूप से और यहूदी धर्म के लिए इसका क्या मतलब होता। यह उस एक चीज़ को छीन लेगा जिस पर पौलुस ने अपने जीवन का निर्माण किया था - यहूदी व्यवस्था और बाहरी रीतियाँ। अंत में, चूंकि वह स्तिफनुस के शब्दों को किसी अन्य तरीके से दबा नहीं सकता था, शायद इसी लिए उसने स्तिफनुस को पथरवाह करके मौत के घाट उतारने के लिए उसने अपने अधिकार का इस्तेमाल किया।

उत्पीड़न अपनी चरम सीमा पर - हालांकि, इससे पॉल के मामले का समाधान नहीं हुआ। दरअसल बात और बिगड़ गई। वह अपनी पूरी ताकत से मसीही धर्म पर हमला करने लगा था। उसका व्यक्तित्व और ईश्वर की चीजों के लिए उसका उत्साह, एक आध्यात्मिक खालीपन जिसे वह महसूस करता था और मसीही लोगों के, प्रति उसकी ईर्ष्या, जिनको ऐसा लगता था कि उनके पास वह सब कुछ था जिसकी पौलूस को तलाश थी, यह सभ चीज़े मिलकर उसे इन लोगों को नष्ट करने और मारने के लिए प्रेरित करती थी। वह उनके घरों में और आराधनालयों में घुस जाता था। वह पुरुषों और महिलाओं के साथ-साथ बच्चों को भी कैद कर देता या मार डालता। बहुतों को वह पीट-पीट कर अपंग कर देता। इन सब के दौरान, हालांकि, पौलुस सुसमाचार के साथ गहरे और गहरे संपर्क में आ रहा था। जैसे-जैसे वह गुप्त रूप से उनकी सभाओं में उपस्थित होता और उनकी 'परीक्षाओं' में उनका बचाव सुनता, उसने इस यीशु के बारे में अधिक से अधिक जान लिया था। उसने उन लोगों से सुना जो यीशु के चमत्कारों के चश्मदीद गवाह थे और जिन्होंने यीशु द्वारा दिए गए पूरे भाषणों को याद कर लिया था। उसने देखा कि उसके द्वारा उनको दी गई बड़ी पीड़ा ने उनके आनंद को कम नहीं किया। उनपर इसका कुछ फर्क नहीं पड़ा।

मसीही धर्म फैलता है- अंत यरूशलेम में मसीहीयों को शहर से बाहर निकाल दिया गया या इतनी गहराई से भूमिगत कर दिया गया था कि वे आसानी से देखे नहीं जा सकते थे। यरूशलेम इस नए पंथ से सुरक्षित लग रहा था, लेकिन इसे बाहर निकालने के बजाय, पौलूस ने पाया कि उसने तो इसे चारों ओर फैला दिया था। जैसे किसी आग को बुझाने के लिए उसे पीटना, जिससे केवल यही देखा जा सकता है कि इसकी प्रत्येक चिंगारी जहाँ भी गिरी है उसने एक नई आग शुरू कर दी है , पौलुस ने महसूस किया कि जो लोग यरूशलेम को छोड़कर चले गए थे वे अपना संदेश कहीं और ले जा रहे थे। यरूशलेम को

इस से मुक्त करने से ही संतुष्ट ना हुआ , पौलुस चाहता था कि यह विश्वास हर जगह पूरी तरह से मिट जाए। वह जानता था कि अगर उसने इसे जल्द ही नहीं रोका तो यह इतना फ़ैल जायेगा कि वह अपनी पूरी ताकत से भी इसे नष्ट नहीं कर सकेगा। यह दमिश्क के उत्तरी हिस्से में पहले से ही एक मजबूत स्थान हासिल कर रहा था। यदि इसे जड़ जमाने और बढ़ने दिया गया, तो यह कहना मुश्किल हो सकता था कि यह विधर्म किस हद तक फैलेगा और यहूदी धर्म को कितना नुकसान पहुँचाएगा!

दमिश्क की रह पर - दमिश्क में बहुत बड़ी यहूदी आबादी थी, जिसने इस नए संदेश के प्रसार के लिए इसे तैयार कर दिया था। पौलूस ने आधिकारिक दस्तवेज प्राप्त किए, यहूदी सैनिकों (लेवियों) और अन्य अधिकारियों को इकट्ठा किया और अपने मुख्यालय को दमिश्क ले जाने के लिए निकल पड़ा। वहां जाकर वह हमेशा के लिए इस पापी पंथ को समाप्त करना चाहता था। दमिश्क 150 मील दूर उत्तर की ओर था जिसको एक गधे पर सवार होकर 4 दिन में पूरा किया जा सकता था। उन्होंने गलील से होते हुए गोलन हाइट्स को पार किया, फिर हर्मन पहाड़ से। उसने इन स्थानों पर अपने लोगों के साथ परमेश्वर के कारनामों को जरूर याद तो किया होगा।

रूपांतरण/मनपरिवर्तन ! अचानक सूरज से भी बड़ी रोशनी, शिकनाह (परमेश्वर की महिमा) खुद, पौलूस और लोगों के उस समूह पर दिखाई दी जिसके साथ वह यात्रा कर रहा था। वे सभी इस रौशनी के सामने गिर गए । एक आवाज़ तो सभी ने सुनी, लेकिन नाम से केवल पौलूस को बोला और कहा: "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ?" वे एक ऐसे मनुष्य के द्वारा बोले गए थे जो मानो पौलुस की अपनी उम्र का ही हो, और पौलुस तुरंत जान गया कि वह कौन है, बेशक उसने उस मनुष्य को पहले कभी नहीं देखा था। अपने शक्क को दूर करने लिए पौलुस ने पूछा, "तू कौन है?" उत्तर वही था जिसकी उसे उम्मीद थी, "मैं यीशु हूँ।" एक ही पल में जो एक अनंत काल सा था, पौलूस जान गया था कि यीशु उन लोगों से प्यार करता है जिन्हें वह सता रहा था, और वह उस से भी प्यार करता था। तुरंत ही पौलूस ने आत्मसमर्पण कर दिया। उसके सारे पुराने धार्मिक तर्क पिघल गए। इससे अब उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उसके संगी यहूदी क्या सोचेंगे या यहूदी धर्म का वह क्या भविष्य छोड़ रहा है। सितिफनुस सही था, पौलूस गलत था - बस यह इतना सरल भेद था। इसे स्वीकार करने से वह मिल गया जिसको पाने के लिए पौलूस अपने पूरे जीवन लगा रहा था , उसकी आत्मा पर तुरंत मीठी शांति की बाढ़ आ गई। उसने अपना जीवन 100% नासरत के यीशु, यहूदी मसीहा, परमेश्वर जो स्वयं मनुष्य के रूप में पृथ्वी आया था उसके लिए समर्पित कर दिया। पौलूस का एक नया स्वामी था जिसकी उसने जीवन भर अटूट समर्पण के साथ सेवा की।

नए जीवन के पहले कुछ दिन - पौलूस अगले 3 दिनों के लिए अंधा था। वास्तव में, ऐसा लगता है कि उसकी आँखों की दृष्टि जीवन भर प्रभावित रही थी । यह उसके लिए एक आजीवन याद थी कि कब परमेश्वर ने उसे तोड़ा था, क्योंकि याकूब के लंगड़ा हो जाने से वह आपने जीवन भर एक इसी तरह की घटना को याद करता रहा था। वे तीन दिन बिना खाने-पानी के व्यतीत हुए, क्योंकि उसे खाने की कोई इच्छा नहीं थी। वह इस पर इतना केंद्रित हो चूका था, इसके नएपन से इतना अभिभूत हो चूका था कि अब वह सब कुछ यही था जो वह सोच सकता था। एक गर्वित, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर पौलूस को दमिश्क में हाथ से पकड़ कर ले जाना पड़ा और दूसरों की देखभाल में रहना पड़ा । वह कोई विजयी नायक नहीं था, बल्कि एक ऐसा उपद्रवी हार चूका था। उसके पास सोचने के लिए काफी समय था। सितफनुस एक टाइम बम था जो उसके दिमाग में फट गया था। वह एक -एक करके सितिफनुस के एक -एक शब्द को याद करने लगा, और हर एक शब्द ने एक तेज तलवार की तरह उस आत्मा पर प्रहार किया था। वह इतना अंधा कैसे हो सकता था? वह इस से कैसे चूक सकता था? यह तो इतना स्पष्ट था, अब उसके लिए बहुत स्पष्ट है। अपराधबोध और पछतावे ने उसे लहरों में बहा दिया था, उसके बाद अब उसके लिए अनुग्रह और शांति थी। सितफनुस के शब्द हमेशा उनके साथ रहेंगे। वे एक ऐसा ढाँचा बन जायेंगे, उन शब्दों के लिए, एक बुनियादी ढाँचा, जो पौलुस को खुद बोलने थे। अब पौलुस स्तिफनुस के शब्द बोल

रहा होगा। यह ऐसा था जैसे सितफनुस अभी भी जीवित था - निश्चित रूप से उसका संदेश जीवित था। तब परमेश्वर ने अनन्या नाम के एक व्यक्ति को पौलुस के पास भेजा। यह बड़े विश्वास का कार्य था। दमिश्क के मसीही लोग प्रार्थना कर रहे थे कि पौलुस न आए, और यदि वह ए भी तो उन्हें न मिले! अनन्या के माध्यम से, पौलूस ने अपनी दृष्टि प्राप्त की और सार्वजनिक रूप से वयस्क बपतिस्में (विसर्जन) द्वारा अपना नया विश्वास दिखाया। पौलूस ने अगले कुछ दिन दमिश्क में बिताए और एक बार आराधनालय में प्रचार किया कि यीशु ही मसीहा था। वह कैसा समय रहा होगा! कुछ लोगों ने शायद सोचा कि वह इस हरकत को कलीसिया में घुसने के लिए और यह पता लगाने के लिए कि कौन कौन मसीही था, एक चाल के रूप में इस्तेमाल कर रहा था, ताकि वह उन्हें मार सके। इस हंगामे के कारण, वह दमिश्क में अधिक समय तक नहीं रह सका।

बुनियादी प्रशिक्षण -पौलूस ने अगले तीन साल अरब के रेगिस्तान में बिताए, 35 ईस्वी की गर्मियों से लेकर 37 ईस्वी की गर्मियों तक। वह किसी हद तक अपने जीवन की रक्षा के लिए वहां से भाग गया था , लेकिन इसके साथ साथ अपने नए विश्वास के बारे में और जानने के लिए भी उसने ऐसा किया था। उसने इन वर्षों के दौरान परमेश्वर पर निर्भर रहना सीखा। परमेश्वर ने उसे आध्यात्मिक सच्चाइयाँ सिखाईं और यह भी सिखाया कि पुराने नियम के बारे में जो उसके पास जो जानकारी पहले से ही है उसे मसीही धर्म में कैसे लागू करना है। शायद वह व्यक्तिगत रूप से निर्देश पाने के लिए यीशु से मिला था। उसके पास इस नई विश्वदृष्टि को अपने जीवन में सोचने, प्रतिबिंबित करने, पचाने और एकीकृत करने का समय था। उसने जिन लोगों को मिलता यह बताता और उनको सिखता कि वह अपने नए विश्वास को साझा करना सीख रहा है। उसके पास आध्यात्मिक रूप से विकसित होने का समय था। उसी रेगिस्तान में मूसा के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने इस समय का उपयोग पौलुस के आत्मिक विकास के लिए किया।

शिक्षुता - 37 ईस्वी की गर्मियों से साल के आखीर तक , पौलुस कुछ समय के लिए दमिश्क में, फिर यरूशलेम में और अंत में तरसुस में रहा। उसने अपने नए ज्ञान को व्यावहारिक स्थितियों में लागू करना शुरू किया, यीशु के बारे में सिखाने और उपदेश देने का अनुभव प्राप्त किया। येरुशलम विशेष रूप से पौलूस पर कठोर था, क्योंकि उसके रूपांतरण की बात पर विश्वासी यहूदियों द्वारा विश्वास नहीं किया जा रहा था, वे उस पर भरोसा नहीं करते थे। केवल उसका पुराना मित्र बरनबास ही उसके साथ खड़ा रहा और दूसरों को उसे विश्वास में एक भाई के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करता था। सताव अब खत्म हो गया है और पौलूस ने वचन को फैलाने में मदद की, कलीसिया में शांति और विकास की लहर आई। ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय के दौरान भी पौलुस अपने घर तरसुस चला गया था । मुझे आश्चर्य होता है कि पौलूस के जीवन में इस बदलाव के प्रति उसके पिता और वहां के अन्य लोगों ने क्या प्रतिक्रिया दी होगी ? पौलूस वास्तव में उन्हें भी यीशु में अपना विश्वास बनाये देखना चाहता था, लेकिन हम नहीं जानते कि किसी ने किया या नहीं। ऐसा लगता है कि आराधनालय के नेताओं द्वारा उसे 5 बार पीटा गया था, इसलिए जितना वे विश्वास करने में देरी कर रहे थे, वह भी उन्हें उतनी जल्दी छोड़ने वाला नहीं था। कुछ लोगों का कहना है कि इस बात ने उस के स्वास्थ्य को कमजोर कर दिया और वह जीवन भर कमर से झुका ही रहा । परिवार और यहूदी धर्म से पूर्ण रूप से अब अलगाव आ गया है।

3. पौलूस की सेवकाई

आरंभिक सेवकाई - तब पौलुस 37 ईसवी के अखीर से लेकर 43 ईस्वी के पतझड़ तक - साढ़े 5 वर्ष तक सीरिया और किलिकिया गया। उसने सेवकाई तो की, परन्तु उसने सीखा भी। उसने आपने बल भूते पर यात्रा की जैसा कि परमेश्वर उसे आगामी मिशनरी यात्राओं के लिए तैयार कर रहा था जिसका वह अगुवाई खुद करता। उसने कलिसीयाओं में प्रचार किया, कलिसीयाओं को स्थापित किया और उन्हें

मजबूत किया और सामने आए कष्टों के माध्यम से धैर्य करना सीखा। हो सकता है इस समय के दौरान उसने मृत्यु का अनुभव भी किया हो और वह फिर से जीवित हो गया हो (2 कुरिन्थियों 12:1-10)। उसके जीवन और हृदय में पूर्ण, संपूर्ण परिवर्तन आ गया था। अब उसके पास वह संतोष और शांति थी जो इतने लंबे समय से उससे दूर थी। उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया था। बाहरी रूप से तो वह ऊपर से नीचे (यहूदी धर्म से नीचे आकर एक अस्वीकृत जन और सताए हुए मसीही लोगों का एक अगुवा बं चूका था) गया। आंतरिक रूप से, हालाँकि, चीजें नीचे (आशांति और अपराधबोध) से ऊपर (शांति और संतुष्टि) तक पहुच चुकी थी। अन्ततः पौलुस अन्ताकिया में आ टिका जहाँ एक बहुत मजबूत मसीही कलीसिया शुरू हो गई थी, और जहाँ विश्वासियों को पहली बार 'मसीही' कहा जाता था (प्रेरितों के काम 11)। यहीं पर 'बेन हूर' की कहानी घटित होती है। वहाँ पर पौलूस कलीसिया में एक अगुवा बन गया था - शीर्ष पुरुषों में से एक नहीं बल्कि प्रशिक्षण देने वालों में एक अगुवा। परमेश्वर उसे अन्यजातियों तक आगामी मिशनरी पहुच बनाने के लिए तैयार कर रहा था।

पहली मिशनरी यात्रा- परमेश्वर ने अन्ताकिया में रहनी वाली कलीसिया की अगुवाई की ताकि वे बरनबास और पौलुस को उन लोगों तक सुसमाचार फैलाने के लिए बहार भेजे जिन्होंने अभी तक सुसमाचार नहीं सुना था (प्रेरितों के काम 12:1-3; अप्रैल 48)। उन्होंने साइप्रस और एशिया माइनर के दक्षिणी भाग में लोगों को यीशु के बारे में बताते हुए 2 साल बिताए (प्रेरितों के काम 12-14)। वे पहले स्थानीय आराधनालय में जाते और वहां वचन सुनते। आमतौर पर, बहुते यहूदियों ने उनके संदेश को अस्वीकार कर दिया था, इसलिए वे अन्यजातियों के पास जाते थे। उन्होंने वापसी में आते हुए, उन युवा कलिसीयाओं का दौरा किया जिनको उन्होंने लोगों और अगुवों को प्रोत्साहित करने और प्रशिक्षित करने के लिए शुरू किया था। 50 ईस्वी के अप्रैल में वे वापस अन्ताकिया में पहुच गए थे।

येरूशलेम कौंसिल- क्योंकि बहुत से अन्यजाति यीशु के पास आ रहे थे, इसलिए एक विवाद खड़ा हो गया। कुछ यहूदी विश्वासियों का कहना था कि उनको वाव्स्था का पालन करने और खतना कराना आवश्यक है, जबकि दूसरों का कहना था कि यह आवश्यक नहीं था। 49 ईस्वी (प्रेरितों के काम 15) के आखीर में, यरूशलेम में एक परिषद बनाई गई जहाँ इस बात की पुष्टि की गई थी कि उद्धार विश्वास से है और कर्मों से नहीं। यह केवल यीशु में विश्वास के द्वारा पाए परमेश्वर का अनुग्रह है। यह कलीसिया के लिए एक ऐतिहासिक निर्णय था और इसका प्रभाव आज भी हम महसूस कर रहे हैं।

दूसरी मिशनरी यात्रा - पौलूस ने फिर उन कलिसीयाओं का दौरा किया जिनको उसने शुरू किया था और उन्हें परिषद/कौंसिल के फैसले की खबर दी (50 मई से 53 की गर्मिओं तक - प्रेरितों के काम 16-18)। सीलास पौलुस के साथ गया, और तीमुथियुस बाद में उनके साथ शामिल हो गया। उन्होंने पश्चिमी एशिया माइनर और फिर यूनान की यात्रा की, सुसमाचार को यूरोप ले गए और वहाँ कलीसियाएँ शुरू कीं। वे वपस यरूशलेम और फिर अन्ताकिया लौट आए।

तीसरी मिशनरी यात्रा - अन्ताकिया में कुछ महीनों के बाद, पौलूस और सिलास फिर से कलिसीयाओं का दौरा करने और दूसरी कलिसीयाओं को शुरू करने के लिए रवाना हुए (प्रेरितों के काम 19-20 - सितंबर 53 से मई 57)। उन्हें यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों के बढ़ते विरोध का और हद से जायदा उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। नई कलीसियाओं में कई समस्याएँ थीं जैसे जैसे नए विश्वासी मसीह की आज्ञा के अनुसार जीने का प्रयास करते थे। परमेश्वर ने उनके काम पर आशीष दी और यह फलता-फूलता और बढ़ता गया। पौलूस वहां के गरीब मसीहीयों के लिए एक दान राशी लेकर यरूशलेम आया।

रोम की यात्रा - कई परीक्षणों और लंबे वर्षों के कारावास के बाद, अंत में पौलुस रोम पंहुचा (प्रेरितों के काम 21-28 - 57 - 62 ईस्वी)। हालांकि, वह जंजीरों में एक कैदी के रूप में वहां पहुचा था। उसकी

यात्रा करने के और कलिसीयाओं को शुरू करने के दिन समाप्त हो गए थे। उस से कम उम्र के लोगों ने काम संभाल लिया था। पौलूस ने उन कलिसीयाओं को पत्र लिखना जारी रखा जिनको उसने शुरू किया था। आखिरकार उसे रिहा कर दिया गया और वह तब तक यात्रा करता रहा जब तक कि उसे फिर से गिरफ्तार नहीं कर लिया गया था। उस समय उसने तीमुथियुस और तीतुस को पत्र लिखे। इसके तुरंत बाद, 65 ईस्वी में नीरो द्वारा उसका सिर काट दिया गया। (पौलुस के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी के लिए, मेरी पुस्तक "बाइबल अवलोकन" में " प्रेरितों के काम" अनुभाग पढ़े।)

4. पौलूस के जीवन से सबक

क-परमेश्वर किसी का भी इस्तेमाल कर सकता है (पौलुस के सबक -1)

कभी-कभी परमेश्वर का काम करने का तरीका बहुत ही अजीब होता है। जब उसे किसी और की तुलना में कलीसिया के लिए अधिक अच्छा करने के लिए किसी की आवश्यकता थी, तो उसने उसी व्यक्ति को चुना जो किसी और की तुलना में कलीसिया को अधिक नुकसान पहुंचा रहा था। उसने बहुत से अविश्वासियों को जीवन देने के लिए उसी व्यक्ति का इस्तेमाल किया जो कई मसीहीयों को मौत के घाट उतारता चला आ रहा था। कलीसिया का सबसे बड़ा नाश करने वाला ही कलीसिया का सबसे बड़ा निर्माण करने वाला बन गया।

पौलूस अपने यहूदी विश्वास के लिए जोशीला था और एक आराधनालय से दुसरे आराधनालय में जाकर उन यहूदियों पर, जिन्होंने यीशु को अपने मसीहा के रूप में स्वीकार किया था, उत्पीड़न को प्रोत्साहित करता था। वह स्तिफनुस की मृत्यु में शामिल था और उसने इसे स्वीकार भी किया था (प्रेरितों के काम 7:54-8:1)। फिर एक दिन परमेश्वर ने आपने आप को, दमिश्क के मार्ग में, पौलुस पर प्रकट किया और इससे उसका पूरा जीवन बदल गया (प्रेरितों के काम 9:1-9)। वह कलीसिया को सताने वाले व्यक्ति से कलीसिया के लिए सताए जाने को तैयार एक व्यक्ति बन गया।

कोई भी व्यक्ति जो पौलुस के विश्वासी बनने से पहले उसे जानता होगा, उसने कभी नहीं सोचा होगा कि परमेश्वर कलीसिया के निर्माण के लिए उसका उपयोग करेगा। पौलूस साबित करता है कि परमेश्वर की पकड़ से दूर कोई नहीं है। परमेश्वर के लिए कोई भी इतना बुरा नहीं है कि वह उसे बचाना ना चाहे और उपयोग ना करना चाहे। हो सकता है कि आपने किसी को उसके पापी स्भाव या मसीहीयों को नुकसान पहुंचाने की उसकी बुरी मानसकिता के कारण उसे आपने दिल से निकाल दिया हो , लेकिन परमेश्वर किसी के साथ ऐसा नहीं करता। आप सोच सकते हैं कि आपका पापी अतीत आपको उसकी सेवा करने के अयोग्य ठहराता है, लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं सोचता। ईश्वर किसी को नहीं त्यागता। वास्तव में, वह अक्सर उन लोगों को चुनता है जो उसकी सेवा करने के लिए सबसे अयोग्य प्रतीत होते हैं क्योंकि तब ही उसे महिमा मिलती है, किसी व्यक्ति को नहीं। वह दूसरा अवसर देने वाला परमेश्वर है। वह कई दूसरे मौके देता है, जितनो की भी जरूरत होती है। शायद उसने आपको भी दूसरा मौका दिया है। शायद उसने आपको कई बार मौका दिया है! वह इसी प्रकार का परमेश्वर है! उसका अनुग्रह वास्तव में पर्याप्त है (2 कुरिन्थियों 12:9)।

अनुग्रह से महरूम कोई नहीं है। कोई बेकार नहीं है। कोई भी माफ़ी और सेवा से महरूम नहीं है। कहा जाता है कि हर संत का एक अतीत होता है और हर पापी का एक भविष्य होता है। इसलिए जिस किसी को आप गवाही दे रहे हैं और जिसके लिए प्रार्थना कर रहे हैं, उसे मत छोड़िए। अपने आप को मत छोड़ो। यदि परमेश्वर पौलूस या दाऊद जैसे हत्यारे का उपयोग कर सकता है, या पतरस जैसे डरपोक का (जो प्रभु को नकारने वाला था) या गिदोन का (जो गड्ढे में छिपा हुआ था) या राहाब और समसून

जैसे पाप पापी का उपयोग कर सकता है, वह आपको और मुझे भी उपयोग करेगा - अगर हम उसे हमारा उपयोग करने दे। वह हमारी क्षमता को नहीं देखता। वह हमे क्षमता दे सकता है और हमसे ले भी सकता है। वह जो खोजता है वह है उसकी सेवा में उपयोग की जाने वाली हमारी उपलब्धता है। क्या आप उपलब्ध हैं? क्या आप उसे अपना उपयोग करने देने के लिए तैयार हैं?

पौलूस की सलाह: परमेश्वर किसी का भी उपयोग कर सकता है, जो आपने आप को उसके सामने उपलब्ध करता है, और हाँ इसमें आप भी शामिल हैं।

इफिसियों 2:8-9 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है - और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करने लगे।

क्या आपने किसी ऐसे व्यक्ति से बात करना या उसके लिए प्रार्थना करना छोड़ दिया है जो ऐसा लगता है कि परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने के लिए बहुत दूर जा चूका है? अबी उनके लिए प्रार्थना करो, और उनके लिए प्रार्थना करते रहो।

क्या आप अपनी स्वयं की असफलताओं और पापों का उपयोग प्रभु की सेवा करने से बचने के बहाने के रूप में करते हैं, यह सोचते हुए कि वह आपका उपयोग नहीं कर सकता है? अपने ईस रवैये को पाप के रूप में स्वीकार करें और 100% उसकी सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हों जाएँ।

क्या आप कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो प्रभु से फिर गए हैं? क्या आपने उनका त्याग कर दिया है? परमेश्वर ने उनका त्याग नहीं किया है। उससे कहें कि वह आपको बताये कि आप उन्हें उसके पास वापस लाने के लिए क्या कर सकते हैं।

ख- हमारी उपलब्धियां हमें परिभाषित नहीं करतीं (पौलूस के सबक -2)

जिन लोगों को यीशु ने अपना अनुसरण करने के लिए चुना उनमें से अधिकांश दस्तकारी वर्ग के थे, पुरुष और महिलाएं जो अपने हाथों से काम करते थे। वे मछुआरे, किसान, बढ़ई या दिहाड़ीदार मजदूर थे। लेकिन पौलूस बिल्कुल अलग था। वह अपने हाथों से तंबू बनाने का काम तो कर सकता था (प्रेरितों के काम 18:1-4) लेकिन वह बहुत अच्छी तरह से शिक्षित और प्रशिक्षित था, एक उच्च कोटि का यहूदी था जो व्यवस्था का पालन करने में दूसरों से कहीं आगे था (फिलिप्पियों 3:4-9)। वह एक स्वाभाविक अगुवा था। वह एक प्रतिभाशाली और बहुत उत्पादक व्यक्ति था। फिर भी वह खुद को विशेष या दूसरों से बेहतर नहीं देखता था। अपने पत्रों में उसने अपना परिचय "मसीह यीशु का दास" होने के रूप में देता था (रोमियों 1:1)।

पौलूस जानता था कि उसके पास अभी भी विकास के लिए जगह थी (फिलिप्पियों 3:12)। यदि कोई था जो इस बात पर घमण्ड कर सकता था कि उद्धार से पहले वह क्या था, या उद्धार के बाद उसने परमेश्वर के लिए क्या किया, तो वह पौलुस था। लेकिन उसने ऐसा कभी नहीं किया। उसने इस बात को मानयता दी कि जो कुछ उसके पास था वह परमेश्वर के अनुग्रह से था (1 कुरिन्थियों 15:10)। वह स्वीकार करता था कि वह अब भी पाप से संघर्ष कर रहा है (रोमियों 7:15)। वह यीशु के लिए अपनी सेवा में असफल नहीं होना चाहता था (1 कुरिन्थियों 9:27)। उसने अपनी उपलब्धियों को कभी यह नहीं सोचने दिया कि वह दूसरों से बेहतर हैं।

पौलूस आज हमारे लिए एक अच्छा उदाहरण है। बहुत बार हम खुद को आपने कामों से परिभाषित करते हैं, या फिर हमारी उपलब्धियों से। हम दूसरों का मूल्यांकन उनके द्वारा किए गए कार्यों से करते हैं। बहुत से लोग महसूस करते हैं कि पादरी और मिशनरी पादरी कलीसिया में सबसे अधिक आध्यात्मिक लोग होते हैं। इनके बाद आते हैं कलीसिया के अन्य अगुआ और कार्यकर्ता। अखीर में वे हैं जो "सिर्फ" चर्च जाते हैं। इस से हमें गर्व महसूस हो सकता है अगर हम चर्च में सक्रिय हैं, या फिर अगर हम सक्रिय नहीं हैं तो हम दूसरे दर्जे के नागरिक की तरह महसूस करते हैं। लेकिन जब हम, जो करते हैं, उसे आध्यात्मिकता के बराबर कर देते हैं, तो हम वह सब खो रहे होते हैं जो यीशु ने विनम्रतापूर्वक परमेश्वर और दूसरों की सेवा करने के बारे में कहा था। परमेश्वर के कार्य के लिए सब कुछ करने के बावजूद, पौलुस जानता था कि एक व्यक्ति के रूप में उसका मूल्य इन सब चीजो पर आधारित नहीं था। उसका मूल्य इस बात पर निर्भर नहीं था कि उसने परमेश्वर के लिए क्या किया, बल्कि इस पर जो परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया था ।

क्या आप ऐसा सोचते हैं कि जब आप उसके लिए कुछ विशेष करते हैं तो परमेश्वर आपसे अधिक प्रेम करता है, या जब आप असफल होते हैं या पाप करते हैं तो वह आपसे कम प्रेम करता है? याद रखें, ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे आप परमेश्वर को आपसे इससे अधिक प्रेम करने के लिए मजबूर कर सकते हैं जितना वह अभी करता है। और ऐसा कुछ भी नहीं है कि वह आप उससे कम प्रेम करें जितना वह अभी करता है। हमारा मूल्य इस बात पर आधारित नहीं है कि हम क्या करते हैं, बल्कि इस पर आधारित है कि हम कौन हैं। हम लहू से मोल लिए हुए परमेश्वर की सन्तान हैं, क्षमा किए गए और अनंत काल के लिए स्वर्ग में उसके लिए चुने हुए लोग हैं। हम यह लोग हैं। हम जो कुछ भी करते हैं, उससे न तो इसमें कुछ जोड़ सकते हैं और न ही उससे कुछ घटाया जा सकता है।

पौलूस की सलाह: परमेश्वर हमसे इस लिए प्यार करता है कि हम कौन हैं, न कि इसलिए कि हम क्या करते हैं। हमें उसका प्रेम अर्जित नहीं करना है, वह तो हमारे पास पहले से ही है।

फिलिप्पियों 3:12 बात यह नहीं है , कि मैं यह सब पा चुका हूं, या अपना लक्ष्य पा चुका हूं, परन्तु जिस वस्तु के लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा, मैं उसे पकडऩे के लिए दौड़ा चला जाता हूं।

1 कुरिन्थियों 15:10 परन्तु मैं जो कुछ हूं, वह परमेश्वर के अनुग्रह से हूं, और उसका अनुग्रह मुझ पर व्यर्थ न हुआ, कबी नहीं । मैं ने उन सब से अधिक परिश्रम किया है, तौभी मैं ने नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह ने जो मुझ पर था।

क्या आप लोगों का उनके कामों के लिए मूल्यांकन करने के दोषी हैं ? क्या आप उन्हें अधिक महत्व देते हैं जो जीवन में 'सफल' हैं या कलीसिया की गतिविधि में व्यस्त हैं?

क्या आप अपने आप को एक व्यक्ति या मसीही जन के रूप में परिभाषित करते हैं जो आप एक व्यक्ति के रूप में करते हैं, बजाय इसके कि आप एक व्यक्ति के रूप में क्या हैं?

ग- संतुष्टि का महत्व (पौलुस के सबक -3)

कल्पना करें किसी ऐसे व्यक्ति की जो अच्छा खासा , अत्यधिक सम्मानित, एक सामुदायिक नेता हो और एक बहुत लोकप्रिय नेता होए की स्थिति से ऐसी स्थिति पर आ जाए जहाँ उसे कोड़े मारे जाते हैं , पीटा

जाता है, पत्थर मारे जाते हैं और कैद में डाल दिया जाता है ? जीवन के हालातों में ऐसे बदलाव को आप कितनी आसानी से या अच्छी तरह स्वीकार करेंगे ? पौलूस को यही समझौता करना था। जब किसी के पास सब कुछ होता है तो उसे संतुष्ट रहना आसान होता है, लेकिन जब किसी के पास कुछ भी न हो तो संतुष्ट होना बहुत कठिन होता है। फिर भी पौलुस ने दोनों ही स्थितियों में संतुष्ट रहना सीख लिया था। जब वह एक कस्बे में प्रवेश करता, तो उसे एक अमीर व्यक्ति की हवेली में रहने के लिए आमंत्रित किया जा सकता था और घर के मालिक के पास जो कुछ भी था, उसके साझा कर सकता था, या इसके बजाय एक झोपड़ी में वह एक बहुत गरीब आदमी के साथ रह सकता था, पौलूस को इस से कोई फर्क नहीं पड़ता था । किसी भी तरह से वह संतुष्ट था क्योंकि वह हर परस्थिति को परमेश्वर की ओर से आते हुए देखता था। यह जानते हुए कि वह परमेश्वर से किसी भी चीज़ के लायक नहीं था, इस बात से उसके लिए हर हाल में संतुष्ट होना बहुत आसान हो गया।

ध्यान दें कि पौलुस कहता है कि उसने संतुष्ट होना "सीखा" (फिलिप्पियों 4:11-13)। संतोष करना सीखना चाहिए। यह स्वाभाविक रूप से नहीं आता है। क्या आपने कभी ऐसा बच्चा देखा है जो संतुष्ट, धैर्यवान और समझदार था जब उसकी ज़रूरतें तुरंत पूरी नहीं हुई थीं? हम सभी जन्म से ही आत्मकेंद्रित और मांग करने वाले हैं, केवल अपने और अपनी इच्छाओं के बारे में ही सोचते हैं। बच्चा कब इन भावनायों से उबरता है ? उत्तर है 'कभी नहीं।' असंतुष्टि एक ऐसी चीज है जिस से हमें अपना पूरा जीवन लड़ना चाहिए। संतोष करना सीखना चाहिए पर यह आसान नहीं है। यह परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसा करने और उससे प्राप्त होने वाली हर चीज को स्वीकार करने के लिए एक रवैया का समझौता है । पौलुस जानता था कि परमेश्वर उसकी सारी आवश्यकताएँ पूरी करेगा (फिलिप्पियों 4:19) परन्तु उसकी सारी इच्छाएँ पूरी नहीं करेगा। पौलूस जानता था कि परमेश्वर उसे वह देगा जो उसके लिए सबसे अच्छा होगा क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे कुछ सबसे अच्छा दिया था (यीशु), जबकि वह अनंत न्यायक सज़ा के अलावा किसी चीज का भी हकदार नहीं था।

जब हम कहते हैं कि हम परमेश्वर के लिए जीना चाहते हैं और उसकी सेवा करना चाहते हैं, यह विश्वास करते हुए कि वह जानता है कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है, तो हमें हर उस चीज़ को ऐसे स्वीकार करना चाहिए की यह उसकी तरफ से आती है। जब हम चाहते हैं कि वह हमें अपनी महिमा के लिए उपयोग करे, तो हम उससे माँगने के अपने अधिकार को छोड़ देते हैं और उस से हमारी सेवा करने की उम्मीद करने लगते हैं । प्रभु की प्रार्थना में हम प्रार्थना करते हैं “तेरा राज्य आए; तेरा इच्छा पूरी हो जाए” (मत्ती 6:10)। हम यह प्रार्थना नहीं करते “मेरा राज्य आए; मेरी इच्छा पूरी हो जाए। फिर भी अक्सर हम वास्तव में आपने अंदर यही सोच रखते हैं। जब जीवन कठिन होता है तो असंतुष्ट होना आसान हो जाता है, विशेषकर तब जब हमें लगता है कि परमेश्वर हमें एक आसान जीवन देने का करजाई है। संतोष करने का अर्थ है जीवन में जो कुछ भी होता है उसे हमारे लिए परमेश्वर की सिद्ध योजना के रूप में स्वीकार करना। इसका अर्थ है उस पर भरोसा करना और उसकी सेवा करना जब हालात खराब होते हैं ठीक उसी तरह जब हालात ठीक होते हैं।

पीड़ा और परीक्षण को सहना कठिन होता है। और इससे भी कठिन होता है इसका सामना अच्छे रवैये से करना। यही संतोष है। इसका अर्थ है कि हम जीवन में जिन भी परिस्थितियों का सामना करते हैं उन्हें ईश्वर की ओर से आने के रूप में स्वीकार करते हैं, चाहे हम उन्हें पसंद करें या न करें। पौलूस ने यही करना सीखा। हमें भी इसे सीखने की जरूरत है। यही संतुष्टि है।

पौलूस की सलाह: अपने जीवन से संतुष्ट रहें, यह विश्वास करते हुए कि यह आपके लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा है।

फिलिप्पियों 4:11-13 मैं यह इसलिये नहीं कह रहा हूं कि मुझे घटी है, क्योंकि मैं ने हर हालात में सन्तोष करना सीख लिया है। मुझे पता है कि जरूरतमंद होना क्या होता है, और मैं जानता हूं कि भरपूर होना क्या होता है। मैंने किसी भी और हर स्थिति में संतुष्ट रहने का रहस्य सीख लिया है, चाहे पेट भर खाया रहूँ या भूखा रहूँ , चाहे अमीरी में रहूँ हो या कंगाली में रहूँ। मैं उसके द्वारा, जो मुझे शक्ति देता है, यह सब कर सकता हूं।

1 से 10 अंकों में, आप अपनी संतुष्टि को कितने अंक देते हैं? परमेश्वर आपको कौन सा अंक दगा?

आपको संतुष्ट होने में सबसे ज्यादा परेशानी कब होती है? क्यों? अपने रवैये को ठीक करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

घ- पौलूस परमेश्वर को खुश करने के लिए जीता था, मानुषों को नहीं (पौलूस से सबक-3)

एक मसीही होने के नाते, हम सुसमाचार के अधिक से अधिक विरोध का अनुभव कर रहें है। यह समझौता करने के लिए बहुत अधिक दबाव पैदा कर सकता है ताकि हम अपने विश्वास के लिए अस्वीकार न किया जाए। हमारे लिए खड़ा होना और परमेश्वर के वचन की सच्चाई की घोषणा करना कठिन हो सकता है जब हम जानते हैं कि हमें बहुत अच्छी तरह से स्वीकार नहीं किया जाएगा और हम यह काम करने के लिए लोकप्रिय नहीं होंगे। पौलुस के लिए भी यह बहुत कठिन था, परन्तु उसने इसे किया (गलातियों 1:10)। उसने कभी भी सच्चाई पर चीनी का लेप नहीं किया ताकि इसे बेहतर तरीके से ग्रहण किया जा सके। उसने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि दूसरे उसके बारे में क्या सोच सकते हैं। उसे केवल इस बात की चिंता थी कि परमेश्वर उसके बारे में क्या सोचता है ।

हो सकता वह भी चाहता हो कि सब उसके बारे में अच्छा सोचें, परन्तु वह जानता था कि ऐसा नहीं होगा (मत्ती 5:11-12)। वास्तव में, वह जानता था कि अगर हर कोई उससे सहमत हो जाये तो इसका मतलब होगा कि कुछ ना कुछ गलत है और वह परमेश्वर की सच्चाई के लिए खड़ा नहीं हो रहा है (लूका 6:26)।

आज यह एक आजमाईश है कि हम एक मसीही बनने की कोशिश करें लेकिन ऐसा कुछ भी न कहें या ऐसा न करें जिससे दूसरों को ठेस पहुंचे क्योंकि हम उनकी आलोचना या अस्वीकृति पाना नहीं चाहते हैं। इस पर निर्भर होना बहुत आसान है कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं और क्या कहते हैं । दूसरों का डर एक बड़ी समस्या हो सकती है। हम परमेश्वर और मनुष्य दोनों से नहीं डर सकते। यह दोनों में से एक ही हो सकता है।

हम अपने आस-पास ऐसे कई लोगों के जीवन को देख सकते हैं जो लोकप्रिय होने और सभी के द्वारा पसंद किए जाने के लिए वे सब कुछ करते हैं जो वे कर सकते हैं। हम उनसे ईर्ष्या भी कर सकते हैं। लेकिन क्या आप वास्तव में उनके साथ स्थान बदल सकते हैं यदि आप कर सकते होते तो ? क्या आप केवल लोकप्रियता पाने के लिए हो यीशु को और उसका दिया हुआ आपके पास जो कुछ भी है उसे छोड़ देंगे? आपके आस-पास के लोगों की तुलना में आप के लिए यीशु की स्वीकृति और मुस्कान कितनी बेहतर और महत्वपूर्ण है। यदि आप विश्वास करते हैं कि वह सत्य है तो आपकी जिम्मेदारी है कि आप उसकी सच्चाई को दूसरों के साथ साझा करें। उनकी समस्याओं के समाधान को रोकना एक ऐसे वैज्ञानिक के समान होगा जो दूसरों से कैंसर का इलाज रोक रहा है क्योंकि उसे लगता है कि वे उसका मजाक उड़ा सकते हैं और उस पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। फिर भी हमारे पास कैंसर के इलाज से कहीं अधिक मूल्यवान और जीवन बदलने वाला कुछ है। हमारे पास मनुष्य की सभी आवश्यकताओं का

उत्तर है। इसे अपने पास ही न रखें। डरो मत कि दूसरे इस पर कैसे प्रतिक्रिया दे सकते हैं। पौलूस की तरह, परमेश्वर को खुश करने के लिए जिएं, मनुष्य को नहीं।

पौलुस की सलाह: ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करें, दूसरे लोग चाहे कुछ भी सोचें।

गलातियों 1:10 अब क्या मैं मनुष्यों की, या परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास कर रहा हूं? या मैं लोगों को खुश करने की कोशिश कर रहा हूँ? अगर मैं अभी भी लोगों को खुश करने की कोशिश कर रहा होता, तो मैं मसीह का सेवक नहीं होता।

लूका 6:26 हाय तुम पर, जब सब लोग तुम्हारे विषय में भला कहें, क्योंकि उनके पुरखा जन भी झूठे भविष्यद्वक्ताओं से ऐसा ही व्यवहार करते थे।

आप किसे खुश करने के लिए जी रहे हैं? आप अपने बारे में किसके विचार से सबसे ज्यादा वाकिफ हैं, लोगों के या परमेश्वर के ?

कब आप परमेश्वर के वचन की सच्चाई के लिए खड़े होने से बचने के लिए सबसे अधिक प्रलोभित होते हैं? क्यों? जरूरत पड़ने पर परमेश्वर से आपको साहस देने के लिए प्रार्थना करें।

<u>5. पौलूस के जहाज़ की तबाही से अगुवाई के सबक</u>

पढ़ें प्रेरितों के काम 27:1 – 28:10

पौलूस कलीसिया के इतिहास में सबसे महान अगुवाओं में से एक है। कलिसीयाओं को शुरू करने और किसी और की तुलना में बाइबल में अधिक किताबें लिखने के लिए परमेश्वर ने उसे शक्तिशाली तरीके से इस्तेमाल किया। ऐसे कई अद्भुत अगुवाई के सबक हैं जिन्हें हम उसके जीवन से प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के अंतिम अध्यायों में से कुछ को देखेंगे, जो कि पौलुस के जहाज़ की तबाही के दौरान का अनुभव है। ऐसा कहा जाता है कि परीक्षण और कठिन समय अगुवों के सर्वश्रेष्ठ बल को सामने लाता है, और पौलूस के बारे में यह निश्चित रूप से सच है।

पौलूस दमिश्क के रास्ते में परिवर्तित हो गया था (प्रेरितों के काम 9)और आध्यात्मिक रूप से सीखने और बढ़ने के लिए अरब गया था। उसने अपनी सेवकाई का अधिकांश समय तीन मिशनरी यात्राओं में, कलीसियाओं को शुरू करने और अन्य कलीसियाओं को पत्र लिखने में बिताया (प्रेरितों के काम 13-20)। सेवकाई के 30 वर्षों के बाद, उसे यरूशलेम में किसी ऐसे काम के लिए गिरफ्तार किया गया था जो उसने किया ही नहीं था और अंततः मुकदमे के लिए रोम स्थानांतरित कर दिया गया था (प्रेरितों के काम 21-26)। हालाँकि जंजीरों में एक कैदी के रूप में यात्रा करते हुए, पौलूस ने उस यात्रा में कई तरीकों से अपने नेतृत्व कौशल को दिखाया था। हम ईससे कई महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं।

<u>क- एक ईश्वरीय अगुवे पर भरोसा किया जा सकता है (पौलुस के जहाज की तबाही से सबक 1)</u>

जब उसे रोम ले जाया गया, तो पौलुस यूलियुस नाम के एक सूबेदार के अधिकार में एक बंदी था जो सीधा कैसर को समर्पित था (प्रेरितों के काम 27:1)। पौलुस जंजीरों में जकड़ा हुआ था, और जहाज की पकड़ में था। उसके वफादार दोस्त लूका ने अपने खर्च पर उसके साथ यात्रा की थी। पौलूस के साथ जाने के लिए, उसे पौलूस का दास होने के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने पड़े थे। यही एक ही रास्ता था जिसके

माध्यम से वह उसके साथ जा सकता था। जबकि उसके द्वारा किए गए सभ कुछ के लिए मान्यता और श्रेय पौलूस को मिलता है, ऐसा होना लूका की मदद और समर्थन के अलावा उसके चिकित्सिक कौशल और मदद के बिना संभव नहीं था। मुझे अपने जीवन में ऐसे कई लोगों आशीष भरा सहयोग मिला है, जिनमें पी. के. मोसेस भी शामिल हैं, जो भारत में मेरी किताबों और सम्मेलनों में मेरी मदद करता है। वह परमेश्वर का एक उत्तम जन है और एक महान सेवक है जो मेरे द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों को संभव बनाता है।
पहले बंदरगाह पर जहाँ जहाज़ उतरा, जूलियस ने पौलूस को तट पर जाने की अनुमति दी ताकि वह जेल में रहने के दौरान विकसित या बिगड़ी हुई स्थितियों के लिए कुछ चिकित्सा सहायता प्राप्त कर सके (प्रेरितों के काम 27:2-3)। वहां पर पौलूस के कुछ दोस्त थे जो उसे जरूरत की चीजें मुहैया करा सकते थे।

यह असामान्य था कि रोमी सैनिक, जूलियस ने पौलुस को तट पर जाने की अनुमति दी। इसका मतलब है कि उसने पौलूस और उसके दोस्तों पर भरोसा किया होगा। यदि उसने अपने किसी भी कैदी को खो दिया होता , तो उसे मौत के घाट उतार दिया जाता , इसलिए उसे विश्वास करना पड़ा कि पौलूस को खुला छोड़ने के लिए तट पर कोई योजना नहीं थी, और यह कि वादे के अनुसार वह वापस आ जाएगा। पौलूस ने एक ऐसे व्यक्ति से इतना सम्मान और विश्वास अर्जित करने के लिए क्या किया था जो उससे अभी मिला था?
जो लोग पौलुस को जानते थे वे आश्वस्त थे कि वह उनकी परवाह करता था और उनकी भलाई के लिए वह सब कुछ करता था जो वह कर सकता था (मत्ती 20:25-28)। उस पर अपनी बात रखने के लिए भरोसा किया जा सकता था। वे जानते थे कि वह केवल अपने उद्देश्यों के लिए उनका उपयोग नहीं कर रहा था। उसने सभी के साथ इसी तरह से व्यवहार किया था : स्वतंत्र और दास, वयस्क और बच्चे, पुरुष और महिला, उच्च सामाजिक स्थिति और विनम्र स्थिति वालों से। यीशु ने भी वैसा ही किया था। पौलूस ने दूसरों की सेवा की थी और उनसे अपनी सेवा करने की उम्मीद नहीं की थी। भरोसा खराई और चरित्र से आता है (1 तीमुथियुस 3:2, 7)।

आज हमारे साथ भी यही सचाई है। हमारे पास एक ऐसे व्यक्ति के रूप में की प्रतिष्ठा होनी चाहिए जिस पर अपनी बात रखने और सही काम करने के लिए भरोसा किया जा सके। एक ईश्वरीय अगुवे पर भरोसा किया जाना चाहिए।

पौलूस की सलाह: *ऐसा व्यक्ति बने जिसे दूसरे जानते हों कि तुम पर भरोसा किया जा सकता है।*

क्या लोग आप पर भरोसा करते हैं? क्या आपके पास ईमानदार होने और अपनी बात रखने की प्रतिष्ठा है, यहां तक कि उन लोगों के बीच भी जो आपको बहुत अच्छी तरह से नहीं जानते हैं? क्या आप जिन लोगों के साथ काम करते हैं, वे जानते हैं कि आप उनकी ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों से पहले रखते हैं? क्या आप सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं, चाहे उनकी उम्र, लिंग, धन या सामाजिक स्थिति कुछ भी क्यों ना हो?

ख- एक ईश्वरीय अगुवा पहला कदम उठाता है (पौलुस के जहाज़ की तबाही से सबक-2)

पौलूस और लूका अगले बंदरगाह पर उतरने तक कुछ दिनों के लिए जहाज पर सवार हुए (प्रेरितों के काम 27:4-5)। वहां पर वे मिस्र से रोम तक अनाज लेकर जाने वाले एक बड़े जहाज में चढ़ गए (प्रेरितों के काम 27:6), जो खुले समुद्र में यात्रा करने के लिए सुरक्षित होगा। इस जहाज में 276 यात्री सवार थे। जब वे नए जहाज पर यात्रा कर रहे थे, तो उन्होंने हवाओं के खिलाफ चलने की कोशिश की, और यह

कठिन था। वे फिर से उतरे, इस बार क्रेते द्वीप पर एक स्थान पर (प्रेरितों के काम 27:7-9क)। अब तक अक्टूबर की शुरुआत हो चुकी थी और रोम की लंबी यात्रा के लिए बहुत देर हो चुकी थी। तेज हवाएं और तूफान की स्थिति शुरू हो रही थी, जिससे वसंत तक यात्रा करना बहुत खतरनाक हो गया था। एक कैदी होने के बावजूद, पौलुस ने जहाज के अगुवों को चेतावनी दी कि आगे बढ़ते रहना खतरनाक होगा (प्रेरितों के काम 27:9ख)। इस समय समुन्द्र पार करने की कोशिश करना विनाशकारी हो सकता है।
यह पौलुस के बोलने का स्थान नहीं था। जहाज़ के कप्तान और मालिक का फैसला ही अंतिम फैसला होता, फिर भी पौलुस बोल पड़ा। यह एक साहसी कार्य था। उसे इस बात का दृढ़ विश्वास था कि क्या किया जाना चाहिए इसलिए उसने अपनी राय को साझा किया। वह विनम्र और मामूली था, लेकिन उसने खुद को एक अगुवा की स्थिति में रख दिया। उसने दूसरों की आलोचना नहीं की थी या उन्हें नीचा नहीं दिखाया था। न ही उसने अपने लिए रास्ता निकालने की मांग की थी । उसने अपनी इच्छा को बल देने के लिए क्रोध का उपयोग नहीं किया। लेकिन वह जो महसूस करता था उसने वह बताया। जरूरत पड़ने पर उसने एक अगुवा की भूमिका भी निभाई।

परमेश्वर पादरीयों से अगुवा होने की भी उम्मीद करता है (1 पतरस 5:1-4)। कुछ के लिए यह आसान है, लेकिन दूसरों के लिए बहुत कठिन होता है। एक अगुवा बनने का गुण स्वाभाविक रूप से पतरस को मिला था क्योंकि वह उन लोगों से घिरा रहना पसंद करता था जो उसकी बात सुनते थे। परन्तु जब तक उसने यीशु को अपने जीवन में प्रथम स्थान देना नहीं सीखा तब तक वह एक ईश्वरीय अगुवा नहीं बन पाया। जो लोग शर्मीले या आरक्षित होते हैं उनके लिए दूसरों के सामने टिके रहना और समूह के लिए निर्णय लेना कठिन होता है। मैं उस तरह का व्यक्ति हूं। मेरे लिए पहल करना और अगुवाई करना हमेशा कठिन काम रहा है। मैं यह पता लगाने में बेहतर काम करता हूं कि बहुमत क्या चाहता है और उस तरफ को हो जाता हूं, या किसी को अगुवाई करने की तुलना में अधिक गतिशील होने देता हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि यह सही नहीं है। चूँकि परमेश्वर ने मुझे लोगों की अगुवाई और सेवकाई के अंतर्गत मुझे जिम्मेदारी दी है, वह मुझे एक ऐसा मार्गदर्शन भी देगा जिसकी मुझे अगुवाई करने में आवश्यकता है। मुझे विश्वास करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर जो चाहता है वह सही और सर्वोत्तम है, और मैं उसका पालन करूं। यह मेरे लिए विशेष रूप से उस समय कठिन होता है जब कोई मेरी आलोचना करता है या मेरे नेतृत्व का विरोध करता है। एक अगुवा होने का मतलब लोकप्रिय होना और हर किसी के द्वारा पसंद किया जाना नहीं होता है। यह लोगों को खुश करने के बारे में नहीं बल्कि परमेश्वर को खुश करने के बारे में होता है। पौलूस यही करता था , और जो हम सभी को भी करना चाहिए। जरूरत पड़ने पर एक अगुवा को खड़ा होना चाहिए और अगुवाई करनी चाहिए।

पौलूस की सलाह: आवश्यकता पड़ने पर अगुवाई करने की पहल करें।

क्या आपके लिए अगुवाई करना कठिन है या आसान है? यदि यह आसान है, तो क्या आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आप वही कर रहे हैं जो परमेश्वर चाहता है, न कि केवल वह जो आप चाहते हैं?

यदि यह कठिन है, तो आप अपने भय पर विजय पाने के लिए क्या करते हैं ,और जो आप जानते हैं कि परमेश्वर चाहता है क्या उसके लिए खड़े होते हैं?

क्या आप उस समय के बारे में सोच सकते हैं जब कभी आपने पहला कदम उठाया की और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अगुवाई करने का काम किया? यह कैसा रहा? उस समय के बारे में सोचें जब आप अगुवाई करने में झिझकते थे, या परमेश्वर के मार्ग के बजाय अपने रास्ते पर चले गए थे? वह कैसा निकला?

<u>ग- एक ईश्वरीय अगुवा कठिनाइयों के दौरान मजबूत होता है (पौलुस के जहाज़ की तबाही से सबक- 3)</u>

हालाँकि पौलुस ने यह नहीं सोचा कि ऐसा करना सही है, जहाज़ के कप्तान और मालिक दोनों ने यात्रा शुरू करने का फैसला कर लिया था। वे सर्दियों को बिताने के लिए एक बेहतर जगह पर जाना चाहते थे जब तक कि वे रोम जाने का बाकि रास्ता खतम नहीं कर लेते थे। सुरक्षित शीतकालीन के लिए बंदरगाह तक पहुँचने को उन्हें केवल 40 मील तक जाने की ही आवश्यकता थी, और यह एक सुरक्षित जुआ खेलने जैसा था, जैसा मालूम हो रहा था (प्रेरितों के काम 27:11-13)। लेकिन जब उन्होंने छोटी यात्रा शुरू की, तो मौसम जल्दी बदल ही गया और एक तूफान आया (प्रेरितों के काम 27:14-15)। वे जहाज की दिशा को नियंत्रित नहीं कर सके और जहाज को डूबने से बचाने के लिए वे सब कुछ किया जो वे कर सकते थे, यहाँ तक कि जहाज को हल्का करने के लिए सभी माल और उपकरणों को जहाज पर से बाहर फेंक दिया था (प्रेरितों के काम 27:16-19)।

तूफान कई दिनों तक बिना रुके चलता रहा। जहाज को बचाए रखने में मदद करने के लिए हर कोई जाग रहा था। खाना या सोना असंभव था। किसी भी क्षण जहाज टूट सकता था और वे डूब सकते थे। भावनात्मक और शारीरिक तनाव जबरदस्त था, और इसके कई दिनों के बाद वे थक गए और जीवित रहने की आशा छोड़ बैठे थे (प्रेरितों के काम 27:20-21क)।

यह वह समय था जब पौलूस की अगुवाई कला सामने आई। वह खड़ा हुआ और सब को स्मरण दिलाने लगा कि यदि उन्होंने उसकी बात मानी होती तो ऐसा न होता (प्रेरितों के काम 27:21)। वह यह दिखाने की कोशिश नहीं कर रहा था कि वह सही था और वे गलत थे, वह चाहता था कि उन्हें पता चले कि वह जानता है कि वह किस बारे में बात कर रहा है। उन्होंने पहले उसकी बात नहीं मानी, लेकिन अब शायद वे सुनेंगे। पौलूस सभी को कहता है कि मरने से ना डरें, क्योंकि परमेश्वर ने उसे आश्वासन दिया था कि वे सभी जीवित रहेंगे। जहाज तो खो जाएगा, परन्तु वे सुरक्षित रहेंगे (प्रेरितों के काम 27:22-24)। पौलूस ने उस पर विश्वास किया जो परमेश्वर ने उसे कहा था और उसने आत्मविश्वास से इसे दूसरों तक पहुँचाया था। वह यह उम्मीद नहीं कर रहा था कि लोग उसका अनुसरण करने लगे , बल्कि वह उम्मीद कर रहा था कि वह परमेश्वर पर भरोसा करें और उसका अनुसरण करने लग जाएँ। जो परमेश्वर ने बोला था, और जो उसने कहा वह पूरा होगा।

हमें उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। जब कठिन समय आता है, तो हमें आगे बढ़ना चाहिए और एक ऐसा नेता बनना चाहिए जिसका अनुसरण अन्य लोग कर सकें। जब कोई व्यक्ति या परिवार बहुत कठिन समय से गुजर रहा हो, तो उनके पास जाएं और उन्हें मदद करने के लिए प्यार से उन्हें मार्गदर्शन दें। यदि आपकी कलीसिया किस भीतरी या बाहरी परीक्षा या हमले का सामना कर रही है, तो उठ खड़े हों और लोगों की अगुवाई करें क्योंकि परमेश्वर आपको निर्देशित करता है। पादरी एक अगुवा होता है और उसे अगुवाई करनी चाहिए, विशेष रूप से कठिन समय में।

पौलूस की सलाह: कठिन समय के दौरान, खड़े होकर एक मजबूत अगुवा बनें।

क्या आप परमेश्वर के सत्य की घोषणा करने में सक्षम हैं, विशेष रूप से कठिन समय के दौरान?
क्या आप लोगों को परमेश्वर का अनुसरण करने और उसके वचन और वादों पर भरोसा करने के लिए कह सकते हैं?

क्या आप अपने और अपनी सेवकाई के लिए परमेश्वर की अगुआई को स्पष्ट रूप से समझने में सक्षम हैं ताकि आप इसे दूसरों तक पहुँचा सकें?

क्या आप इससे जुड़े रहते हैं, चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हो जाएं?

क्या आप अधिकार के साथ अगुवाई कर सकते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि यह तो परमेश्वर ही है जो अगुवाई कर रहा है और आप तो सिर्फ उसका अनुसरण कर रहे हैं (मत्ती 7:28-29)?

घ- एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को प्रोत्साहित करता है (पौलुस के जहाज की तबाही से सबक 4)

एक ईश्वरीय अगुवा हमेशा उन लोगों को प्रोत्साहित करने और उनका निर्माण करने की कोशिश करता है जिनकी वह अगुवाई करता है। वह उनकी आलोचना नहीं करता, उनको डाँटता नहीं या उन से गुस्सा नहीं करता। हर कोई आलोचना से बेहतर प्रोत्साहन पर सही प्रतोक्रिया देता है। परमेश्वर स्वयं भी हमारे साथ इसी प्रकार व्यवहार करता है। पौलुस ने जहाज पर लोगों के साथ यही किया, भले ही उसकी सलाह को सुनने से इनकार करने से उन्हें इस स्थिति में आना पड़ा था। उसने परमेश्वर पर अपने भरोसे की पुष्टि करके उन्हें प्रोत्साहित किया (प्रेरितों के काम 27:25-26)। उसने एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण स्थापित कर दीया जो डरता नहीं था, बल्कि परमेश्वर पर विश्वास करता था और उसके वादों पर भरोसा करता था।

पौलुस ने लोगों को आश्वान दीया कि वे सब जीवित रहेंगे। उसने वर्तमान परिस्थितियों से परे देखा था जो परमेश्वर ने क्या वादा किया था। वह लोगों के साथ खुल-दिला और ईमानदार था, और वे लोग उसका सम्मान करते थे और उस पर भरोसा करते थे।

इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस ने लोगों को कभी दरुस्त नहीं किया होगा , क्योंकि उसने ऐसा किया था (गलतियों 2:11-14)। परन्तु उसने प्रेम में सच बोलकर ऐसा किया (इफिसियों 4:15)। यीशु कहता है कि हमें किसी व्यक्ति के पास पहले तो व्यक्तिगत रूप में जाना है, जब तक वह पश्चाताप करने से इनकार नहीं करता है, तब तक उसे सार्वजनिक रूप से नहीं लाना चाहिए (मत्ती 18:15-18)। फिर भी, पूरा उद्देश्य पुनर्स्थापित करना है,किसी की निंदा करना नहीं। परमेश्वर हमारे साथ यही करता है (रोमियों 8:1)।

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम अपने लोगों का निर्माण कर सकते हैं और उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं। हमें हमेशा उनके बारे में अच्छा बोलना चाहिए, उन्हें बताना चाहिए कि हमें उन पर गर्व है और उनकी विश्वासयोग्यता के लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। परमेश्वर हमारी आलोचना नहीं करता परन्तु प्रेम और प्रोत्साहित करता है, उस समय भी जब हम अच्छा नहीं कर रहे होते हैं। हमें अपने लोगों के साथ भी ऐसा ही करना चाहिए।

पौलूस की सलाह: हमेशा उन तरीकों की तलाश करें जिनसे आप दूसरों का निर्माण कर सकें और उन्हें प्रोत्साहित कर सकें।

क्या कठिन समय में लोग आपके पास प्रोत्साहन के लिए आते हैं? क्या आप लोगों को प्रोत्साहित करने में अच्छे हैं?

क्या आप उन लोगों की भी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं जिन्होंने आपकी सलाह नहीं मानी होती और इसकी वजह से परेशानी में पड़ चुके हैं?

क्या आप प्यार में दूसरों को निजी तौर पर सुधारने में सक्षम हैं?

क्या आप अपने क्रोध और हताशा को नियंत्रित कर सकते हैं, इसे करुणा और सहानुभूति में बदल सकते हैं?

क्या आप दूसरों के साथ वैसा व्यवहार कर सकते हैं जैसा परमेश्वर आपके साथ करता है?

<u>ङ- एक ईश्वरीय अगुवा पाप के विरुद्ध खड़ा होता है (पौलुस के जहाज की तबाही से सबक 5)</u>

2 सप्ताह के बाद एक तूफान द्वारा हिंसक रूप से चारों ओर उछाले जाने के बाद, पौलूस का जहाज अंत में भूमि की ओर आने लगा (प्रेरितों के काम 27:27-28)। इसका मतलब था कि पानी उथला हो गया था और चट्टानों से टकराने और टूटने का खतरा बहुत अधिक बढ़ चूका था (प्रेरितों के काम 27:29)। उस तरह के मौसम में लोगो का तैर कर किनारे पर आने का कोई रास्ता नहीं था।

सुबह के उजाले का इंतज़ार करते हुए, कुछ नाविकों ने एक रक्षक किश्ती लेने की कोशिश की ताकि वह खुद किनारे पर पहुँच सके। यह अगले दिन जहाज के बाकी हिस्सों को छोड़ कर निकल जाती जब की इन लोगो की मदद की बाकि लोगों को बहुत आवश्यकता होती। पौलूस ने पता लगाया कि वे क्या कर रहे थे और जूलियस को चेतावनी दी कि उन्हें रोका जाना चाहिए नहीं तो हर कोई डूब जाएगा (प्रेरितों के काम 27:30-31)।

ऐसा लगता है कि पौलूस का अगुवाई करना अब सम्मानित और भरोसेमंद हो चूका था। जूलियस ने उसकी बात सुनी और उसके सुझाव पर अमल किया (प्रेरितों के काम 27:32)। पौलूस ने खुद को साबित कर दिया था और वे सब स्वेच्छा से उसका अनुसरण करने लगे थे। किसी को उपाधि देने से वह अपने आप कोई अगुवा नहीं बन जाता है। जो लोग दूसरों को दिखाते हैं कि उनके मन में उनका आपना हित सर्वोत्तम है और वे जानते हैं कि अपनी आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जाए, वे इसे अर्जित करते हैं। एक कैदी के रूप में जिसकी सबसे अधिक संभावना रोम में एक क्रूर मौत मरने की हो सकती थी , पौलूस को भागने की कोशिश करने वाला मना जाना चाहिए था। इसके बजाय, उसने समूह की भलाई के लिए दूसरों को ऐसा करने से रोका। वह अपने और व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि सभी के भले के लिए सोचता है।

यह भी ध्यान दें, कि पौलुस ने भागे हुए नाविकों का स्वयं सामना नहीं किया, परन्तु ऐसा करने के लिए वह अधिकारी के पास गया। उन्होंने कमान की प्रणाली का पालन किया। कई बार ऐसा हो सकता है कि हम चीजों को अपने हाथों में लेने के लिए ललचा जाएँ, लेकिन अधिकारिक लोगों के साथ काम करना बेहतर होता है, चाहे फिर वह किसी परिवार का पिता हो, स्थानीय सरकार हो या किसी व्यवसाय का मुखिया हो। यही बात उन लोगों के साथ व्यवहार करते समय भी लागू होती है जो किसी और सेवकाई या कलीसिया के सदस्य या हिस्सा हैं।

यह सच है कि हमें अपने लोगों को प्रोत्साहित करना और उनका निर्माण करना चाहिए, लेकिन जब पाप होता है तो पाप पर धयान किया जाना चाहिए। हमें पाप पर आक्रमण करना है पर पापी को प्रेम और

प्रोत्साहन देना है। किसी व्यक्ति पर कभी आक्रमण न करें, पर केवल पाप पर। पाप के बारे बात करो और उसके समाधान के बारे में बात करो। पौलूस ने यही किया।

पौलूस की सलाह: पाप के खिलाफ एक साहसी कदम उठाएं।

क्या आप पाप के खिलाफ खड़े होने में सक्षम हैं, चाहे यह किसने किया है या किस कारण से किया है ?

क्या आप प्यार में पाप को पहली बार निजी तौर पर इस तरह से इंगित कर सकते हैं जिस से अपमानजनक व्यक्ति पुनर्स्थापित हो जायेगा ?

<u>च- एक ईश्वरीय अगुवा एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है (पौलुस के जहाज की तबाही से सबक- 6)</u>

पौलुस को रोम ले जाने वाला जहाज एक तूफ़ान से डगमगा गया था। यह स्पष्ट था कि जहाज जल्द ही टूटकर अलग हो जाएगा और डूब जाएगा। तूफान से लड़ते-लड़ते सब थक चुके थे। यह जानते हुए कि अगला दिन हर किसी के लिए कठिन होगा, पौलुस ने लोगों से आवश्यक शक्ति प्राप्त करने के लिए खाने का आग्रह किया (प्रेरितों के काम 27:33-34)। उसने पहले खाना शुरू करके एक उदाहरण पेश किया (प्रेरितों के काम 27:35)। इसने सभी को समान कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया (प्रेरितों के काम 27:36)।

पौलूस ने न केवल उन्हें बताया कि उन्हें क्या करना है, बल्कि उन्होंने उदाहरण के द्वारा दिखाया। हम जो कहते हैं, वह सब जो हम करते हैं उसके अनुरूप होना चाहिए। अगर हम एक बात सिखाते हैं और करते कुछ दूसरी हैं तो हम उन लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाएंगे जो हमें जानते होते हैं। हम आत्म-संयम, धैर्य, त्याग, विनम्रता या सेवा के बारे में बात कर सकते हैं। लेकिन यह हमें उन्हीं गुणों को अपने जीवन में लाने के लिए जिम्मेदार बनाता है। हम जो उपदेश देते हैं और सिखाते हैं, उसके द्वारा दूसरों को प्रभावित करने का हमारे पास एक बड़ा अवसर है, लेकिन सबसे बड़ा प्रभाव हम जो करते हैं उससे पड़ता है।

हमारी सेवकाई में लोगों के अगुवों और हमारे परिवारों में बच्चों के अगुवा के रूप में, हमें उनके लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। जब तक हम पहले स्वयं कुछ ऐसा नहीं करते तब तक हम उनसे वह करने की उम्मीद नहीं कर सकते जो हम कहते की वह करें। हमें हमेशा देखा जा रहा होता है, उस समय पर भी जब हम यह नहीं सोचते होते कि कोई हमें देख रहा है। छोटी-छोटी चीजें, जिन पर हम ध्यान भी नहीं दे पाते, दूसरों द्वारा देख ली जाती हैं। हमें अविश्वासियों के बीच एक अच्छी प्रतिष्ठा बनाए रखने की आवश्यकता है, लेकिन साथ ही साथ हमें विश्वासियों के लिए एक मानक भी स्थापित करने की आवश्यकता है। एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करके, हम दूसरों को यह भी दिखाते हैं कि यीशु के लिए कैसे जीना है और विभिन्न परिस्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया देनी है। हम अपने बच्चों या अपने लोगों से वह करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं जो हम कहते हैं कि वे करें यदि हम स्वयं उस काम को नहीं कर रहे होते हैं!

पौलूस की सलाह: आप जो कहते और करते हैं, उसके द्वारा यीशु के लिए एक अच्छा उदाहरण बनाए। दूसरे लोग आप को देख रहे हैं।

आप अपने बच्चों के लिए क्या नमूना कायम करते हैं?

आपकी सेवकाई में जो लोग है उनके बारे में क्या है ?

क्या आप उनमें कोई बुरी आदतें या लक्षण देखते हैं जो उन्होंने आपके पीछे चलने से सीखे हैं?

आपने कब दूसरों के लिए एक अच्छा उदाहरण पेश किया है? आपने कब कोई बुरा नमूना कायम कर दिया है ? आप किसका उदाहरण देखते हैं और किसका अनुसरण करते हैं? क्यों?

छ- एक ईश्वरीय अगुवा जब भी वह कर सकता हो सेवकाई करता है (पौलुस के जहाज की तबाही से सबक -7)

अगले दिन जहाज़ डूबने पर वैसा ही हुआ जैसा पौलुस ने कहा था। तूफान से जहाज को नुकसान पहुँचना जारी रहा। यह जरूर था कि जहाज टूटने और डूबने से पहले यह तट के करीब पहुंच गया था , और सभी लोग जहाज से किनारे पर आ गए थे (प्रेरितों के काम 27:37-41)। जहाज़ छोड़ने से पहले सैनिक कैदियों को मारने ही वाले थे, क्योंकि यदि कोई भाग निकलता, तो वे मारे जाते, परन्तु पौलुस और जो कुछ उसने किया था, उसके प्रति सम्मान के रखते हुए यूलियुस ने योजना को रोक दीया (प्रेरितों के काम 27:37-40)। सभी बचाए गए थे (प्रेरितों के काम 27:41)। लेकिन कहानी पूरी तरह खत्म नहीं हुई थी।

किनारे पर उन्होंने सूखने और गर्म होने के लिए आग जलाई। जंगल की लकड़िया जो पौलूस ने उठाई उनमें एक जहरीला सांप था , और उसने उसे डस लिया। कुछ ने यह सोचा कि यह उस पर सजा का प्रोकोप था क्योंकि वह समुद्र में तो नहीं डूबा था। हालाँकि, उस पर विष का कोई प्रभाव ना दिखाई दिया (प्रेरितों के काम 28:1-6) और इस से लोग बहुत प्रभावित हुए। जाहिर है, कि परमेश्वर एक विशेष तरीके से पौलूस के साथ था।
उस द्वीप के मुख्य अधिकारी ने अपने घर में उन सब का स्वागत किया। उसका पिता बिस्तर पर था, बहुत बीमार था । पौलुस ने उसके लिए प्रार्थना की और वह चंगा हो गया। द्वीप के अन्य लोग जो बीमार थे, वहां आए और पौलुस ने उन सभी के लिए प्रार्थना की। सभी ठीक हो गए। पौलूस उस द्वीप पर सभी के लिए सेवकाई करने और सभी को सुसमाचार सुनाने के योग हुआ। उन लोगों ने पूरी सर्दी के दौरान डूबे जहाज़ से बचे हुए इन लोगों की देखभाल की और वहां से जाने के समय तक उन्हें जरूरी वस्तुए देकर उनकी मदद करते रहे थे (प्रेरितों के काम 28:7-10)।

थके हुए, भीगे हुए, और भूखे होने के बावजूद, और एक ज़हरीले साँप के डसे जाने के बावजूद, पौलुस ने किसी ज़रूरतमंद के लिए प्रार्थना करने का अवसर देखा और उसके लिए प्रार्थना की। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उसके लिए द्वीप पर सभी के लिए सेवा करने का द्वार खोल दिया। हम इसे पौलुस के पूरे जीवन भर में देखते हैं। वह हमेशा सेवा करने के अवसरों की तलाश में रहता था और जितना हो सकता था समय का उतना लाभ उठाता था।

परमेश्वर कहता है कि हमें भी वचन और कर्म से सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए (1 पतरस 3:15)। जब हम मसीह-समान तरीके से कार्य करते हैं और बात करते हैं तो बड़े बड़े परीक्षण या दुःख के समय भी हमारे लिए सेवकाई करने के अवसर के रूप में साबित हो सकते हैं। आप जो कुछ भी करते हैं उसमें यीशु नाम को ऊँचा उठाने के लिए हमेशा एक मार्ग की तलाश करें।

पौलुस की सलाह: परमेश्वर सेवा करने या दूसरों की सेवा करने के हर अवसर के प्रति हमेशा सतर्क रहें।

क्या आप हमेशा किसी भी तरह से दूसरों की सेवा करने के लिए तैयार और इच्छुक हैं, चाहे समय कितना भी बुरा है या आपके जीवन में कुछ भी हो रहा है?

यदि आप व्यस्त हैं तो क्या आप कभी-कभी किसी तक पहुँचने और किसी की मदद करने में हिचकिचाते हैं?

क्या आप हर दिन परमेश्वर से उसकी सेवा करने के अवसर मांगते हैं, और फिर पूरे दिन उनकी तलाश करते हैं? या क्या आप कभी-कभी अपनी योजना में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि आप अपने आसपास के लोगों की ज़रूरतों पर ध्यान ही नहीं देते हैं ?

ख- तीमुथियुस

1. तीमुथियुस का जीवन और सेवकाई

पृष्ठभूमि -कुछ लोग सोचते हैं कि सभी पादरीयों को मिलनसार और खुशमिजाज होना चाहिए। उन्हें लगता है कि पादरीयों को स्वाभाविक रूप से अगुवे होना चाहिए और आसानी से दोस्त बनने वाले होना चाहिए और किसी से भी किसी भी तरह की बात करने वाले होना चाहिए। लेकिन सभी पादरी या अगवे ऐसे नहीं होते हैं। कई इसके बिलकुल विपरीत होते हैं, जिनमें मैं भी शामिल हूं। मैंने तीमुथियुस से बहुत कुछ सीखा है, क्योंकि वह मेरी तरह ही शर्मीला और शांत स्भाव का था।

परिवार- तीमुथियुस के पिता एक यूनानी था जो मसीही नहीं था । उसकी एक ईश्वरीय - यहूदी माँ, यूनीके, और नानी, लोइस थी, जिसने उसे परमेश्वर का वचन सिखाया और यहूदी विश्वास में उसका पालन-पोषण किया था (2 तीमुथियुस 1:5; 3:14-17)। उसके नाम, "तीमुथियुस" का अर्थ है "ईश्वर का सम्मान।" तीमुथियुस के लिए एक ईश्वरीय पिता के बिना बड़ा होना कठिन रहा होगा जिससे वह एक ईश्वरीय व्यक्ति बनने में मदद प्राप्त कर सका होता । फिर भी, लुस्त्रा में तीमुथियुस का यहूदी घर एक ऐसा स्थान था जहाँ पुराने नियम की शिक्षा दी जाती थी क्योंकि वह इसे अच्छी तरह से जानता था (2 तीमुथियुस 1:3; 3:15)। उसने कम उम्र में ही यहूदियों के परमेश्वर में अपना विश्वास बना लिया था (प्रेरितों के काम 16:1; 2 तीमुथियुस 1:5)। हमें आपने बच्चों को बहुत कम उम्र में ही परमेश्वर के बारे में सिखाना महत्वपूर्ण है।

उद्धार -तीमुथियुस ने पौलूस स उसकी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान यीशु के बारे में सुना था (प्रेरितों के काम 14:6-19)। संभवतः उस समय उसकी माँ और नानी भी विश्वासी बन गई थीं। पौलूस और उसके साथ यात्रा करने वालों को शायद उनके द्वारा आपने घर पर रहने के लिए आमंत्रित किया गया था और इससे उन्हें बात करने का काफी समय मिल गया था। तीमुथियुस के परिवार ने न केवल यहूदी आतिथ्यतव का अभ्यास किया, बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पास पौलूस और उसके दोस्तों को रखने के साधन भी थे। हम यह भी मान सकते हैं कि पौलुस तीमुथियुस के घर लुस्त्रा में अपने पत्थरवाह की चोटों से ठीक हो गया था (प्रेरितों के काम 14:19)। जैसे-जैसे वह एक मसीही के रूप में बढ़ता गया, तीमुथियुस ने लुस्तरा में नए विश्वासियों के बीच एक अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी (प्रेरितों के काम 16:2)। तीमुथियुस एक ऐसे परिवार में बड़ा हुआ था जो यहूदी और अन्यजाति दोनों से बना था। चूंकि वह दोनों जाती के समूहों को समझता था, जब वह एक मसीही बन गया, तो वह दोनों से संबंधित था और दोनों की सेवा करने में सक्षम था।

पौलुस के साथ संबंध -पौलुस तीमुथियुस का आत्मिक पिता और गुरु बन गया था (2 तीमुथियुस 1:6)। तीमुथियुस एक ऐसा पुत्र बन गया जो पौलुस के पास कभी नहीं था (2 तीमुथियुस 1:4; फिलिप्पियों 2:22; 1 तीमुथियुस 1:2, 18) और पौलुस आत्मिक पिता बन गया जिसकी आवश्यकता तीमुथियुस को थी। जिस व्यक्ति की वह प्रशंसा और सम्मान करता था, उसके द्वारा मिले स्वीकृति और प्रोत्साहन ने तीमुथियुस को उस व्यक्ति के रूप में आत्मविश्वास हासिल करने में मदद की जैसा परमेश्वर ने उसे बनाया था। सभी लड़कों को एक ऐसे आदमी की ज़रूरत होती है जो उन्हें दिखा सके कि एक परिपक्व आदमी कैसा दिखता है। उन्हें एक पुरुष की भी आवश्यकता होती है जो उनकी पुष्टि करे और उन्हें परिपक्व पुरुष बनने के लिए प्रोत्साहित करे।

पौलुस के साथ यात्रा करना -उसके जाने के एक साल बाद, पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर लुस्त्रा लौटा। तीमुथियुस उस समय शायद लगभग 20 साल का था। वह लगभग 35 वर्ष का था जब 1 तीमुथियुस लिखा गया था और 37 वर्ष का जब उसने 2 तीमुथियुस पौलुस से प्राप्त किया था।

आत्मिक उपहार- तीमुथियुस एक पादरी और प्रचारक था (2 तीमुथियुस 4:5) जिसने कलीसियाओं को लगाया और उन्हें बढ़ने में मदद की। यीशु के प्रति उसकी गहरी आध्यात्मिक प्रतिबद्धता थी और वह जीवन भर उसके प्रति वफादार बना रहा।

व्यक्तित्व - शारीरिक और भावनात्मक रूप से तीमुथियुस कमजोर और नजुक था। वह डरपोक और कमजोर दिल का था (2 तीमुथियुस 1:6-7; 1 कुरिन्थियों 16:10-11)। वह आलोचना और अस्वीकृति के प्रति बहुत संवेदनशील हो जाता था। वह न केवल शर्मीला था, बल्कि वह उन अधिकांश लोगों से उम्र में छोटा था जिनकी अगुवाई उसे करनी थी और यह उसके लिए कठिन काम था (1 तीमुथियुस 4:12)। जिस तनाव और चिंता का उसने सामना किया उसके कारण उसे पेट की समस्या हो गई थी (1 तीमुथियुस 5:23)।

सेवकाई -तीमुथियुस, पौलुस और सीलास के साथ यात्रा करने और यीशु का सुसमाचार सुनाने में शामिल हुआ। वह सेवकाई में पौलुस के विश्वासयोग्य साथियों में से एक बन गया। वह पौलुस के प्रमुख संकट-निर्वाण करने वालो में से एक था। उसे बेरिया से थिस्सलोनिका भेजा गया (प्रेरितों के काम 17:14; 1 थिस्सलुनीकियों 3:2)। फिर सीलास के साथ होते हुए वह कुरिन्थुस में पौलुस के साथ मिल गया (प्रेरितों के काम 18:5; 1 थिस्सलुनीकियों 3:6) और उसके साथ वहीं रहने लगा (1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। बाद में उसे कुछ गलत प्रथाओं और गलत विश्वासों को सुधारने के लिए कुरिन्थ वापस भेज दिया गया (1 कुरिन्थियों 4:15-16)। कुरिन्थुस में विपत्तियाँ जारी रहीं इसलिए तीमुथियुस फिर से वहाँ चला गया (रोमियों 16:21; 2 कुरिन्थियों 1:19)। तीमुथियुस उस समय पौलुस के साथ था, जब वह रोम में बन्दीगृह में बंद था (कुलुस्सियों 1:1; फिलेमोन 1; फिलिप्पियों 1:1)। पौलूस ने तीमुथियुस को अपने प्रतिनिधि के रूप में फिलिप्पी में भेजा था (फिलिप्पियों 2:19)

तीमुथियुस इफिसुस में - पौलुस के जेल से छूटने के बाद जिन स्थानों पर वह गया उनमें से एक था इफिसुस। जब वह वहां से चला गया, तो उसने तीमुथियुस को वहाँ का प्रभारी नियुक्त कर दिया। तीमुथियुस ने इफिसुस में अस्त-व्यस्त लोगों को सुधारने में बहुत समय बिताया (प्रेरितों के काम 19:22)। इफिसुस में कुछ मजबूत महिलाएं और कमजोर, सांसारिक पुरुष और झूठे शिक्षक भी थे। उन्होंने तीमुथियुस के की अगुवाई का विरोध किया। इफिसुस में जिन कठिनाइयों का उसने सामना किया उससे तीमुथियुस इतना निराश हो गया कि वह सब कुछ छोड़ना चाहता था। इसलिए पौलुस ने उसे पहला और दूसरा तीमुथियुस पत्र लिखे और उसे बने रहने और अच्छी लड़ाई लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया (1

तीमुथियुस 1:18-19)। 1 तीमुथियुस में हम उन कुछ समस्याओं को देखते हैं जिनका उसने सामना किया। कुछ स्त्रियाँ दबंग और अनुचित थीं (2:11-15), कलीसिया में गड़बड़ी कर रही थी (3:14-15) और कुछ पाप में जी रही थीं (4:6)। उसकी युवावस्था और शर्मीलेपन के कारण उसकी बहुत आलोचना होती थी (4:12-16)। लोग उसके बारे में तरह तरह की बातें करते थे (5:19)। कुछ लोगों के बीच सत्ता प्राप्ति का संघर्ष चल रहा था (5:21-22)। इसमें कोई आश्चर्य नहीं था कि उसे पेट की समस्या हो गयी थी (5:23) और वह छोड़ना चाहता था!

इफिसुस का महत्व -जब पौलुस को दूसरी बार गिरफ्तार किया गया, तो तीमुथियुस उसके साथ शामिल होने के लिए गया। पौलूस की मृत्यु के बाद वह इफिसुस में काम करने के लिए वापस चला गया, क्योंकि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण, रणनीतिक कलीसिया थी । जब उत्पीड़न ने यरूशलेम में मसीहीयों को तितर-बितर कर दिया, तो अन्ताकिया की कलीसिया प्रमुख कलीसिया बन गई। फिर इफिसुस केन्द्र स्थान बन गया और कई वर्षों तक रहा जब तक कि वह रोम में स्नथानांतर नहीं हो गया। मरियम, यीशु की माँ और प्रेरित यूहन्ना इफिसुस में रहते थे। इग्नाटियस और पॉलीकार्प सहित कई महत्वपूर्ण कलीसिया के अगुवे वहां से आए थे। महत्वपूर्ण चर्च कौंसिल वहां हुईं। दुर्भाग्य से, कलीसिया वफादार नहीं रही। यीशु ने इसे ऐसी कलीसिया कहा जिसने अपना पहला प्यार खो दिया था (प्रकाशितवाक्य 2:1-7)।

तीमुथियुस की मृत्यु- तीमुथियुस ने अपने पूरे जीवन भर ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा की। वह डोमिनिटियन या नर्व के शासनकाल के दौरान शहीद हुआ था (लगभग 97 ईस्वी)। उसने अपने डर पर काबू पाया, अपने विश्वास के लिए खड़े रहाओर इसके लिए मर गया।

2. तीमुथियुस से सबक

क- तीमुथियुस का उदाहरण (तीमुथियुस का जीवन 1)

तीमुथियुस ने डर और निराशा के साथ संघर्ष किया, लेकिन वह अंत तक वफादार बना रहा। तीमुथियुस के जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

1. उसके पास दास का हृदय था (प्रेरितों के काम 19:22)। -वह सेवा कराने के बजाय सेवा करने को तैयार था। कलीसिया के अगुवे आज जानते हैं कि उन्हें सेवक बनने के लिए है, परन्तु कुछ लोग यह उम्मीद करते हैं कि कलीसिया के लोग उनकी सेवा करें। एक सेवक के रूप में आप अपने आप क्या अंक देते है? आपकी पत्नी और बच्चे आपको कितने अंक देते हैं ? परमेश्वर आपका मूल्यांकन कैसे करता है? यीशु जैसे अधिक सेवक बनने के लिए आप क्या कर सकते हैं? हर दिन यीशु से कहें कि वह आपको उसके जैसा सेवक बनने में मदद करे।

2. वह उपलब्ध था (प्रेरितों के काम 20:4)। -जब जब पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस उसकी मदद करे, वह मदद करता था। जब कभी उसे किसी कलीसिया में किसी समस्या का निवारण करने के लिए किसी की आवश्यकता होती थी, तो वह वहां जाता था। वह हर जगह जाने के लिए उपलब्ध था, जहाँ भी वह पौलूस और कलीसिया की मदद करने के योग्य होता था। वह आपने आप को आगे बढ़ाने की या एक बहुत बड़ी कलीसिया को विकसित करने की कोशिश नहीं कर रहा था। जिस तरह से भी जरूरत होती थी, वह हमेशा सेवा के लिए उपलब्ध होता था । परमेश्वर ऐसे व्यक्ति का उपयोग बहुत अच्छे तरीके से कर सकता है! क्या आप परमेश्वर द्वारा उपयोग किये जाने के लिए उपलब्ध हैं, या फिर आपके पास

अपने स्वयं के विचार हैं कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं? क्या आप परमेश्वर को यह दिखाने के लिए प्रार्थना करते हैं कि वह आपसे क्या चाहता है या फिर आप उसे बताते हैं कि आप उससे क्या चाहते हैं ताकि आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें?

3. वह सिखाने योग्य था (2 तीमुथियुस 3:10-11)। -तीमुथियुस वह सब कुछ सीखना चाहता था जो कुछ वह पौलुस से सीख सकता था। जरूरत पड़ने पर वह आपने आप में दरुस्त किये जाने के लिए तयार था। उसने ऐसा कभी नहीं सोचा था कि वह यह सब जानता था या फिर यह कि वह हमेशा सही था। जब कोई आपको दरुस्त करता है तो आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? जब आप गलत होते हैं तो आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? *आप दूसरों से कुछ सीखने के लिए कितने इच्छुक हैं?*

4. वह वास्तव में दूसरों की परवाह करता था (फिलिप्पियों 2:19-20)।- जब पौलुस ने तीमुथियुस को फिलिप्पी की कलीसिया में भेजा तो उसने तीमुथियुस के बारे में कहा: "मेरे पास उसके तुल्य और कोई नहीं, जो तुम्हारे हित की सच्ची चिन्ता करता हो " (फिलिप्पियों 1:19-20)। "वास्तविक" का अर्थ है कि वह ईमानदार और संवेदनशील था। वह वास्तव में दूसरों की परवाह करता था। क्या आप वास्तव में उन लोगों की परवाह करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने आपको आपनी देखरेख में लेने के लिए आपके सपुर्द किया है, या फिर क्या आप उनसे अधीर और नाराज़ हो जाते हैं? क्या आप यह सोचते हैं कि उन्हें आपके लिए क्या करना चाहिए, या यह कि आप उनके लिए क्या कर सकते हैं? तीमुथियुस वास्तव में लोगों की परवाह करता था, यहाँ तक कि उन लोगों की भी जो उसकी आलोचना करते थे।

5. वह विश्वासयोग्य था (1 कुरिन्थियों 4:17)- तीमुथियुस अपने सब कामों में विश्वासयोग्य होने के लिए प्रसिद्ध था, और पौलुस इसके लिए उसे पहचान चुका था । तीमुथियुस न केवल परमेश्वर के वचन की सच्चाई को जानता था, बल्कि वह अपने जीवन में इसपर अमल भी करता था। क्या आप हमेशा वह करते हैं जो आप उपदेश देते हैं? क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जिनको आप जानते हैं कि उनमें सुधार किया जाना चाहिए? क्या आप उन बातों के बारे उपदेश और शिक्षा देते हैं जो आपके श्रोताओं को करनी चाहिए या नहीं करनी चाहिए, लेकिन आप खुद अपने जीवन में उन्हें लागू नहीं करते हैं?

6. उसने दूसरों को प्रशिक्षित किया (2 तीमुथियुस 2:2; 1 थिस्सलुनीकियों 3:2)।-तीमुथियुस ने अपने जीवन को पौलुस के अनुसार ढाला, और उसने दूसरों को भी उसके जैसा जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित किया। वह जो जानता था उसे आगे पारित करता था और दूसरों को अनुशासित करता था। वह कलीसिया के अगुओं को सिखाता था। आप किसको सिखा रहे हैं? आप किसके जीवन का निर्माण कर रहे हैं ताकि वे यीशु का अनुसरण करें जैसे आप खुद भी उनका अनुसरण करते हैं?

7. उसने अपने भय पर विजय प्राप्त करना सीखा (1 तीमुथियुस 1:7; फिलिप्पियों 4:6-7, 13) - तीमुथियुस लोगों के भय, आलोचना और अस्वीकृति के भय, असफलता के भय और शायद अन्य कई तरह के भय से भी संघर्ष करता रहा। पौलूस ने उसे अपने डर से भागने के बजाय डर का सामना करने के लिए प्रोत्साहित किया और उसने ऐसा किया। उसने सब प्रकार के भय पर विजय प्राप्त करना सीखा। जीवन में आपके सबसे बड़े डर क्या हैं? वे आपकी सेवकाई को कैसे प्रभावित करते हैं? आप उन पर विजय प्राप्त करने के लिए क्या कर रहे हैं? डर पर काबू पाने में आपकी मदद करने के लिए यहां कुछ वादे दिए गए हैं: नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन सहिता 34:4; यहोशू 1:9; 10:8;23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14:13; 1 शमूएल 17:45-47; 2 शमूएल 22:33-35,40-41; फिलिप्पियों 4:6-7; 4:13; 2 तीमुथियुस 1:7; नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन सहिता 34:4; यहोशू 1:9; 10:8; 23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14:13।

तीमुथियुस ने अपनी पूरी सेवकाई के समय को एक समस्या से निकल कर दूसरी समस्या में जाते हुए बिताया। उसने पौलूस का प्रतिनिधित्व किया और ईमानदारी से पौलूस की तरह सेवा की। उसकी सेवा में कुछ भी असाधारण या नाटकीय नहीं था, जैसा कि पौलुस के जीवन में था। लेकिन उसने जो कुछ भी किया वह बहुत जरूरी था। परमेश्वर आपसे जो कुछ करवा रहा है वह भी उतना ही आवश्यक है। तीमुथियुस की तरह वफादारी से सेवा करें।

पौलूस की सलाह: परमेश्वर की और दूसरों की सेवा करने में तीमुथियुस के उदाहरण का पालन करें।

ख- साहसहीनता : शैतान का हथियार (तीमुथियुस का जीवन 2)

मसीही अगुवों के विरुद्ध शैतान का एक सबसे बड़ा हथियार निराशा/साहसहीनता है। हम सभी को समय-समय पर इसका सामना करना होता है। सेवकाई बहुत कठिन हो सकती है और हमें अक्सर वे परिणाम देखने को नहीं मिल सकते हैं, जो हम चाहते हैं। लोग हमारे गिरने का कारण बन जाते हैं। शैतान जानता है कि क्या हमे निराश करेगा और फिर वह हमारे विरुद्ध इसका उपयोग करता है ठीक उसी तरह जैसा उसने एलिय्याह के साथ किया था (2 राजा 19)। उसने तीमुथियुस के साथ भी ऐसा ही किया, जिसने एक ऐसी कलीसिया की अगुवाई करने की कोशिश कर रहा था जो उसका अनुसरण नहीं करना चाहती थी। कुछ लोगों ने तीमुथियुस का विरोध किया और उसे चुनौती दी और वह हर समय उन्हें अपनीआज्ञा में लाने के योग्य नहीं था। इस बात ने उसे निराशा होने लगी।

निराशा तब भी आ सकती है जब हम शारीरिक रूप से या भावात्मक रूप से थके हुए होते हैं । जब हम थके हुए होते हैं, तो हमारे पास मजबूत बने रहने के लिए ना तो ऊर्जा होती है और ना संसाधन होते हैं। मजबूत बने रहने के लिए और निराशा से लड़ने के लिए हमे पर्याप्त स्वस्थ भोजन, आराम, व्यायाम और आराम लेना महत्वपूर्ण होता है। एलिय्याह की निराशा के समय यह परमेश्वर द्वारा उपचार का एक हिस्सा था (1 राजा 19:5-8)।

दबाव/तनाव भी निराशा का कारण बन सकता है। जब हमें यह लगता है कि हमे आपने समय, क्षमता या संसाधनों की तुलना में ज्यादा करना पड़ता है, तो हम इसे छोड़ देना और हार मान लेना उचित समझ सकते हैं। लेकिन याद रखें, यीशु कहता है कि यह उसकी कलीसिया है और वह खुद इसे बनाएंगा (मत्ती 16:18)। हमें बस ईमानदारी से अपना सर्वोत्तम कार्य करना है, बाकी सब उस पर छोड़ देना है।

निराशा का एक और कारण भी होता है, जब हम एक ऐसे पाप से संघर्ष करते हैं जो हमें पराजित करता प्रतीत हो रहा होता है। तीमुथियुस अक्सर भय के नियंत्रण में होता था। जब हम खुद पर और अपनी असफलताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम निराश हो जाते हैं। जब हम अपने जीवन में पाप को अनुमति देते हैं, तो हम परमेश्वर के आत्मा को हमें आत्मा के फलों से फलवन्त करने को रोकते हैं (गलतियों 5:22-23)।

सतर्क रहें, जब आप निराश महसूस करते है। निराशा परमेश्वर की ओर से नहीं आती; यह हमें पराजित करने और नष्ट करने के लिए शैतान का एक हथियार है। याद रखें, परमेश्वर यह नहीं देखता कि हम क्या उत्पन करते हैं, वह यह देखता है कि हम उसके पीछे चलने में विश्वासयोग्य हैं। परिणाम उस पर हैं, हम पर नहीं। हम केवल ईमानदारी से उसकी सेवा करने के लिए जिम्मेदार हैं। जब हमारी सेवकाई को बहुत

अच्छी प्रतिक्रिया मिलती है, हम ना तो श्रेय ले सकते हैं और न ही हम उस समय कोई दोष ले सकते हैं जब कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है या बहुत कम होती है। यह परमेश्वर पर निर्भर है।

निराशा पर विजय पाने का सबसे अच्छा तरीका है परमेश्वर के वादों को याद रखना और उन पर भरोसा करना। वह कहता है कि वह सदैव हमारे साथ रहेगा (यहोशू 1:1-9), हमें कभी न छोड़ेगा (इब्रानियों 13:5), जितना हमें उसकी सहायता से रख सकते हैं उससे अधिक नही देगा (1 कुरिन्थियों 10:13), हर हाल में उसका अनुग्रह सदैव हमारे लिए काफी है (2 कुरिन्थियों 12:9) और जो कुछ भी होगा वह हमारे विकास और अपनी महिमा के लिए उपयोग करेगा (रोमियों 8:28)।

पौलूस की सलाह: सतर्क रहें कि शैतान आपके जीवन और सेवा में निराशा का उपयोग कैसे करता है।

1 कुरिन्थियों 4:2 "अब यह अवश्य है, कि जिन को भरोसा दिया गया है, वे विश्वासयोग्य ठहरें।" 1 शमूएल 17:47 और यह सारी मण्डली जान ले कि यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता। क्योंकि युद्ध यहोवा का है, और वही तुम को हमारे हाथ में कर देगा।"

आप निराशा से संघर्ष करने के लिए सबसे उपयुक्त कब होते हैं? इसकी रोकथाम के लिए या इसे दूर करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

जब आप निराश हो जाते हैं तो बाइबल में कौन से वादे आपके लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो निराश है? अभी रुकें और उसके लिए प्रार्थना करें। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए आज ही परमेश्वर के सत्य के साथ उसके पास पहुँचें।

ग- एक सिखाने योग्य आत्मा (तीमुथियुस का जीवन 3)

कई पुरुषों को जो पादरी बनाना सीख रहे थे उनको सलाह देना मेरा सौभाग्य रहा है। उन्हें प्रशिक्षित करना एक खुशी की बात थी क्योंकि वे बहुत ही सिखाने योग्य थे। वे सीखने को त्यार और इच्छुक थे। उन्होंने आपने सुधारे जाने को बुरा नहीं माना पर इससे सीखते रहे । यदि उन्होंने ऐसा सोचा होता कि उन्हें वह सब कुछ पता है जो उन्हें जानना चाहिए था और जो उन्होंने किया वह हमेशा सही था, तो मैं उनमें कुछ भी निर्माण नहीं कर पाता। उनके गर्व ने उन्हें सीखने और विकास करने के लिए तैयार रहने से रोक लिया होता। लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं था इसलिए उनके साथ काम करना एक खुशी की बात थी।

पौलूस के लिए तीमुथियुस को प्रशिक्षित करना एक खुशी की बात थी क्योंकि वह और नई चीजें सीखने के लिए तैयार था। उनके बीच एक घनिष्ठ बंधन विकसित हुआ, एक पिता-पुत्र के प्रेम और सम्मान का था (2 तीमुथियुस 2:1-2)। पहला और दूसरा तीमुथियुस नामक पत्रियाँ पौलूस द्वारा तीमुथियुस को दी गई सलाह से भरे हुए हैं। जहाँ आवश्यक था, उसने उसे सुधारा, जहाँ आवश्यक था, उसने उसे नई बातें सिखाईं और जो कुछ भी उसने किया उसमें उसे प्रोत्साहित किया। जब आप इन पुस्तकों को पढ़ते हैं, तो आप देख सकते हैं कि तीमुथियुस सीखने और विकास करने के लिए कितना तैयार रहा होगा। यदि वह ऐसे तैयार नहीं होता, तो वह पौलुस या परमेश्वर के लिए उपयोगी नहीं होता।

बाइबल कहती है कि जो लोग सिखाने के योग्य नहीं हैं वे मूर्ख हैं (नीतिवचन 26:12; 11:14)। सिखाने अयोग्य लोगों को यह एहसास नहीं होता कि वे ऐसे हैं, वे बस यह सोचते हैं कि वे हमेशा सही हैं (नीतिवचन 16:12)। वे सुधार या सुझावों को व्यक्तिगत आलोचना के रूप में देखते हैं और नाराज हो जाते हैं (नीतिवचन 12:1)। उनकी असुरक्षा और गलत होने का डर उन्हें यह सोचने में असमर्थ बनाता है कि वे गलत हो सकते हैं। यह उनका गर्व है जो उन्हें यह सोचने की अनुमति नहीं देता कि कोई दूसरा बेहतर या अलग तरीका हो सकता है। ऐसी मनोवृत्ति वाले लोग भले ही सुनने का दिखावा करते हों, लेकिन जो कहा जा रहा होता है, वे पहले से ही उसका इनकार चुके होते हैं। विफल होने पर भी वे अपने रास्ते पर डटे रहते हैं।

हम सभी इस प्रकार के लोगों को जानते हैं जो महसूस करते हैं कि वे हमेशा सही होते हैं और उन्हें सब कुछ अपने तरीके से करना चाहिए। यह उनके और उनके आसपास के लोगों के लिए बुरा है। जब परमेश्वर द्वारा स्थापित अगुवे ऐसे होते हैं तो यह ओर खतरनाक जो जाता है। परमेश्वर उन तक पहुँचने की कोशिश करता है और उन्हें परिपक्व होने में मदद करने की कोशिश करता है, लेकिन वे दूसरों की सलाह को कभी भी परमेश्वर की ओर से आने के रूप में नहीं मानते हैं। वे उन नई चीज़ों के लिए तैयार नहीं होते हैं जो परमेश्वर उन्हें दूसरों के माध्यम से दिखाने की कोशिश कर रहा होता है। इस प्रकार वे स्वयं को परमेश्वर से भी दूर कर लेते हैं।

यदि आप ईमानदारी से स्वीकार करते हैं कि कभी-कभी आप बहुत ज्यादा सिखाने योग्य नहीं होते हैं, तो स्वयं को परमेश्वर के सामने विनम्र करें। प्रार्थना करें और उससे अपने अभिमान को क्षमा करने के लिए प्रार्थना करें। उसके आगे झुक जाओ और उसकी ताड़ना और शिक्षा को स्वीकार करो। उससे पूछें कि आप उन लोगों से क्या सीख सकते हैं जो आपको ईश्वरीय सलाह और सुझाव देने की कोशिश करते हैं।

पौलूस की सलाह: सुनिश्चित करें कि आपके पास हमेशा सिखाने योग्य भावना है और सीखने व बढ़ने के लिए तैयार हो।

नीतिवचन 26:12 क्या तू किसी ऐसे मनुष्य को देखता है जो सिखाने अयोग्य है, और अपक्की दृष्टि में बुद्धिमान और बड़ा घमण्डी है? उससे अधिक आशा मूर्ख से होती है।

नीतिवचन 12:15 हमें बताता है, "मूर्ख को अपनी चाल सीधी लगती है, परन्तु जो सम्मति को मानता, वह बुद्धिमान होता है।"

जब आपकी आलोचना की जाती है तो आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या होती है?

जब कोई आपको कुछ करने का बेहतर तरीका दिखाने की कोशिश करता है तो आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं?

जब आप गलत होते हैं तो आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं?

क्या आपकी पत्नी या बच्चे कहेंगे कि आप सुधार और नए सुझावों के लिए तैयार हैं? क्या परमेश्वर आप के लिए ऐसा कहेगा ?

<u>घ- कठिन समय में टिके रहना (तीमुथियुस का जीवन 4)</u>

पौलूस को शुरुआती कलीसिया के अगुवा के रूप में पहचाना जाता है। अत्यंत विरोध और उत्पीड़न के बावजूद भी उस की प्रतिबद्धता और द्दढ़ता को हम सब जानते हैं। , जहाँ कहीं भी पाप था उसने इसको इंगित किया जहाँ तक की उसने पतरस के जीवन में भी पाप की ओर इशारा किया था (गलतियों 2:11-14)। उसके लिए तीमुथियुस की प्रतिबद्धता के लिए प्रशंसा करना एक महान पूरक है, विशेष रूप से जब ऐसी बात पौलूस कह रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे अपने साथ काम करने वालों में से किसी की तुलना तीमुथियुस पर अधिक भरोसा है (1 तीमुथियुस 6:11-13)।

पौलुस ने कठिन समय में तीमुथियुस को प्रोत्साहित किया था जब इफिसुस की कलीसिया के अगुवे उसकी आलोचना कर रहे थे और उसकी अगुवाई का मज़ाक उड़ा रहे थे। तीमुथियुस पौलुस को जेल में उसके लंबे और कठिन समय के दौरान प्रोत्साहित करता था। वे दोनों ने निःस्वार्थ तरीके से कलीसिया की और एक दूसरे की सेवा करते थे। आज अक्सर सेवकाईयां एक अगुवा के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द घूमती हैं। जब एक व्यक्ति के ऊपर और उसके चारों ओर एक कलीसिया बनाई जाती है, तो यह अच्छा नहीं होता है। यीशु कलीसिया का एकमात्र प्रमुख है और उसकी महिमा किसी के साथ साझा नहीं होनी चाहिए!

तीमुथियुस ने अपना पूरा जीवन और सेवकाई का समय परदे के पीछे रहकर काम करते हुए बिताया था। उसे तीमुथियुस के राज्य के निर्माण में कोई दिलचस्पी नहीं थी, पर सिर्फ यीशु के राज्य के निर्माण की चिंता थी। उसने अपना जीवन दूसरों में निवेश किया और इसका कभी भी पछतावा नहीं किया। उसे उन्नति में कोई दिलचस्पी नहीं थी, बस जहां जरूरत थी वहां सेवा करने में दिलचस्पी थी।

ऐसे पादरीयों से ईर्ष्या करना जिनके पास आपकी तुलना में अधिक सफल सेवकाई हो, आसान सी बात है। उनकी लोकप्रियता से आपको जलन हो सकती है। जब आप संघर्ष करते होते हैं और दूसरे को यही काम आसान लगता है, तो आप के अंदर ऐसी सोच आ सकती है कि परमेशर आपके लिए निष्पक्षता से काम नहीं करता है। ज्यादातर सेवकाई कठिन होती है। दूसरों को पता नहीं होता है कि आप क्या करते हैं और आपको इसके लिए बहुत कम पहचान मिलती है। कुछ कुछ के लिए तो, उनकी पूरी सेवकाई इसी तरह से चलती रहती है। यह यिर्मयाह, यशायाह और कई अन्य नबियों का जीवन/सेवकाई का समय बिलकुल ऐसा ही था। यह आपके बारे में भी सच हो सकता है। तीमुथियुस को याद रखें और ईमानदारी से सेवा करें चाहे जीवन कितना भी कठिन क्यों न हो।

पौलूस की सलाह: जब हालात कठिन हो जाते हैं, तो अपनी बुलाहट के प्रति वफादार रहें।

2 तीमुथियुस 4:1-2 परमेश्वर और मसीह यीशु की हजूरी में, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, और उसके प्रगट होने और राज्य के विषय में मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं, कि वचन का प्रचार कर; अनकुल और विपरीत परस्थितियों में तैयार रहना; बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ सुधार करना, डाँटना और प्रोत्साहित करना।

आप किसे जानते हैं जो तीमुथियुस की तरह यीशु की सेवा करने के लिए वफ़ादारी से प्रतिबद्ध है? आप उसके जीवन से क्या सीख सकते हैं?

जब दूसरे आपकी ओर देखते हैं, तो क्या वे उसी प्रकार की सेवा, विनम्रता और यीशु-केन्द्रित समर्पण देखते हैं, जैसा कि हमने तीमुथियुस में देखा था?

ङ- संघर्ष करते पादरीयों के लिए प्रोत्साहन (तीमुथियुस का जीवन 5)

क्या आपकी कलीसिया में कोई ऐसा है जो आपकी आलोचना करता है? क्या आपको अभी ऐसा बोला जाता है कि आपके उपदेश काफी अच्छे नहीं होते हैं? क्या कोई ऐसा है जो आपके लिए सेवकाई कार्य को कठिन बना रहा है? क्या आपको इससे आश्चर्य होता है कि आप एक पादरी होना भी चाहिए था या नहीं ? क्या आपको कभी-कभी यह काम छोड़ने का मन करता है? सेवकाई में आपका स्वागत है।

तीमुथियुस ही कोई अकेला नहीं है जो एक पादरी के रूप में संघर्ष करता था। ऐसे युवा और वृद्ध पादरीयों के साथ भी होता है। मैंने भी कुछ वैसी ही कठिनाइयों का सामना किया है जिनका तीमुथियुस ने किया था: जैसे कि लोग जो सोचते और कहते थे उसका डर, टकराव को नापसंद करना, उन मजबूत इरादों वाले मसीहीयों की गपशप और आलोचना का शिकार होना और उनके विरोध का समना करना, जो यह सोचते थे कि वे परमेश्वर की इच्छा को, मुझसे बेहतर जानते हैं। एक से अधिक लोग यह चाहते थे कि मैं कलीसिया छोड़ दूं, यहां तक कि सेवकाई भी छोड़ दूं। मैंने उनमें से कुछ के साथ तो वर्षों तक संघर्ष करता रहा। उस समय तो मैंने इसे स्पष्ट रूप से नहीं देखा था, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर इन हालातों में मुझे मेरी कमजोरियों का सामना करने और मेरे विश्वास में विकास करने की अनुमति दे रहा था। यह मुझे उसके करीब लाने और मुझे यीशु की तरह बनने में मदद करने की उसकी योजना का हिस्सा था। हो सकता मैं इसके द्वारा आपनी सेवकाई को नष्ट करने और परमेश्वर के लिए मेरा उपयोग करने की विधि को समाप्त करने दे दिया होता। लेकिन इसके बजाय मैं आगे बढ़ा और मैं ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना जारी रखा। शैतान मुझे बेदिल करने और मुझे बेकार बनाने की कोशिश कर रहा था, और वह कभी-कभी यह काम भी देता था।

परमेश्वर ने कभी ऐसा वादा नहीं किया कि सेवकाई करना आसान होगा या फिर यह कि वह सभी विरोधों को शांत कर देगा (मत्ती 10:16)। वह यह सब कुछ हमारे विकास के लिए होने देता है (भजन संहिता 119:71)। याद रखें, परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम उन लोगों से प्रमाण प्राप्त करें जिनकी हम अगुवाई करते हैं, परन्तु केवल उसी से (गलतियों 1:10)। यदि हम दूसरों को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं तो हम कभी भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर पायेंगें, यह दोनों बातों में से एक ही होती है (गलातियों 1:10)। इसमें सफल होने का सिर्फ एक ही तरीका है और वो है प्रार्थना में परमेश्वर के निकट रहना है (लूका 18:1)। हम केवल उसकी स्वीकृति चाहते हैं**: "धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास"** (मत्ती 25:21, 23)। अगर पासबानी करना आसान और मजेदार होता, तो हर कोई पादरी ही बनना चाहता होता।

यिर्मयाह इसका एक अच्छा उदाहरण है। उसे परमेश्वर ने सेवक बनने के लिए बुलाया था। परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा: **"गर्भ में रचने से पहले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, उत्पन्न होने से पहिले ही मैं ने तुझे अभिषेक किया था ; मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया है"** (यिर्मयाह 1:5)। यिर्मयाह ने जवाब दिया कि वह तो इसके लिए बहुत छोटा था और नहीं जानता था कि परमेश्वर जो चाहता है उसे कैसे करना है (यिर्मयाह 1:6)। परमेश्वर ने यिर्मयाह को आश्वस्त किया कि वह उसके साथ रहेगा, परन्तु लोगों द्वारा उसकी आलोचना की जाएगी और उसे अस्वीकार कर दिया जाएगा क्योंकि लोग परमेश्वर का अनुसरण नहीं करेंगे (यिर्मयाह 1:14-16)। उसे शुरू से ही बताया गया था कि उसकी सेवकाई दुनिया की नज़र में विफल होगी। तब परमेश्वर ने यिर्मयाह को चेतावनी दी कि वह लोगों से न डरे क्योंकि वह उसके साथ रहेगा (यिर्मयाह 1:17-19)। उसका आने वाले न्याय के बारे में का संदेश। स्पष्ट रूप से यह एक लोकप्रियता संदेश नहीं था, क्योंकि यिर्मयाह सभी लोगों के द्वारा अस्वीकार और घृणा जायेगा।

यिर्मयाह परमेश्वर का एक इच्छुक सेवक था। वह यहोवा की सेवा कर रहा था; यहोवा उसकी सेवा नहीं कर रहा था। जब हम परमेश्वर की सेवकाई के लिए सहमत होते हैं, तो हम कह रहे होते हैं कि हम वह

करेंगे जो वह चाहेगा चाहे कितना भी कठिन या कठिन क्यों न हो। हम लोगों की प्रतिक्रिया पर या यह इस पर कि हम कितने सफल हैं, ध्यान नहीं लगा सकते हैं। हमें सिर्फ यिर्मयाह की तरह वफादार रहना है। उसने 40 वर्षों तक सेवा की लेकिन केवल 2 लोग ही परिवर्तन हुआ (यिर्मयाह 32:12; 36:1–4; 45:1–5; 38:7–13; 39:15–18)। यशायाह ने अधिक समय तक सेवकाई की और कुछ लोगों का ही मन परिवर्तन हुआ (यशायाह 6)। यिर्मयाह और यशायाह ने जिन लोगों से बात की उन्होंने कभीभी पश्चाताप नहीं किया, पर सच तो यह है कि उन्होंने यिर्मयाह और यशायाह दोनों को शहीद कर दिया। तौभी परमेश्वर की दृष्टि में यह दोनों विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ता थे। जब आपको लगता है कि आपके लिए यह कठिन है, उन्हें याद करें। अपनी आँखों को अपने आप से और यह काम कितना कठिन है उस से हटाओ और अपनी आँखें यीशु पर लगाओ। आखिरकार, उसे भी अस्वीकार कर दिया गया था, और यदि संसार ने उसे अस्वीकार कर दिया, तो संसार के लोग उन्हें भी अस्वीकार कर देंगे जो उसका अनुसरण करते हैं (यूहन्ना 13:16)।

उसकी मदद करने के लिए, यिर्मयाह के पास परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी: **"वे तुझ से लड़ेंगे परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, और तुझे छुड़ाऊंगा," यहोवा की यह वाणी है** (यिर्मयाह 1:19)। हमारे पास भी भरोसा करने के लिए परमेश्वर के वादे हैं। परमेश्वर हमारी जरूरतों को पूरा करने का वादा करता है (फिलिप्पियों 4:19) और हमें अपनी शांति देता है (फिलिप्पियों 4:6-7)। वह हमें वह करने की शक्ति देने की प्रतिज्ञा करता है जो कुछ वह हमसे चाहता है (फिलिप्पियों 4:13; यशायाह 40:31)। वह हमें कभी न छोड़ेगा और न त्यागेगा (व्यवस्थाविवरण 31:5-6; इब्रानियों 13:5)। वह हमारा मार्गदर्शन करेगा (नीतिवचन 3:5-6)। हमे किसी हालात का भी समना करते हों, उसका अनुग्रह हमारे लिए काफी होता है (2 कुरिन्थियों 12:9)। वह हमें उससे अधिक सेहन करने को नहीं देगा जितना हम उसकी सहायता से सहन कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 10:13) और जो कुछ होता है वह उसका हमारी वृद्धि और अपनी महिमा के लिए उपयोग करेगा (रोमियों 8:28)। इसलिए हमें किसी प्सेराणी से या किसी वस्तु से डरने की आवश्यकता नहीं है (भजन संहिता 118:6; इब्रानियों 13:6)।

सेवकाई के कार्य को एक आसान कार्य होने की उम्मीद न करें, यदि आप 100% परमेश्वर का अनुसरण कर रहे हैं और केवल उसी की सेवा कर रहे हैं। जब दूसरे आपका निरादर करें तो इससे आप परेशान न हों (1 तीमुथियुस 4:12)। कभी भी डरो मत (2 तीमुथियुस 1:7) परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह में बलवन्त बनो (2 तीमुथियुस 2:1)।

"मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं" (मत्ती 10:16)।

भजन सहिता लिखने वाले ने कहा, "यह तो अच्छा है कि मैं पीड़ित हुआ।" "ताकि मैं तेरे मार्ग सीख सकूं" (भजन 119:71)।

आपके लिए सेवकाई का सबसे कठिन हिस्सा क्या है?

परमेश्वर आप का उपयोग कैसे कर रहा है कि आपको यीशु की तरह बढ़ने में मदद मिल सके ?

वह कौन सी प्रतिज्ञाएँ देता है जिन पर आपको ऐसे समय पर भरोसा करने की आवश्यकता है?

3. डर को समझना और नियंत्रित करना

कई साल पहले गुआम में कुछ शिकारियों को एक जापानी सैनिक मिला जो 1944 से जंगल में छिपा हुआ था। उसका स्वास्थ्य बहुत खराब था और वह दरिद्र हालात में था। वह यह मानने से डरता था कि युद्ध खत्म हो चूका था और वह 50 साल से छिपा हुआ था। जीने का क्या ही तरीका है! और फिर भी हममें से कितने लोग हैं जो और भी बुरे रूप में भय की कैद में जी रहे हैं?

सभी को डर का सामना करना पड़ता है। यह पाप के प्रति मनुष्य की पहली प्रतिक्रिया थी - आदम और हव्वा परमेश्वर से छिप गए क्योंकि वे डरते थे (उत्पत्ति 3:10)। डर भावनात्मक और सामाजिक रूप से अपंग बना सकता है। इससे कई शारीरिक बीमारियां भी हो सकती हैं। यह विश्वास के विपरीत है। यह अलग-अलग नामों में छिपा हुआ है लेकिन सभी का कुल मूल्य भय है: अवसाद, अकेलापन, कायरता, हीनता, अहंकार, पीछे हटना, अति आक्रामकता, शर्म, कमजोर -दिल , अनिर्णय, संदेह, चिंता और उलझन।

भय दो तरह का हो सकता है, पापमयऔर पापरहित। पापमय भय परमेश्वर की ओर से नहीं आता है (2 तीमुथियुस 1:7), बल्कि यह हमें परमेश्वर से अलग करता है। इसमें शांति तो होती ही नहीं है, और शांति पवित्र आत्मा का फल है (गलातियों 5:22-23)। पाप रहित भय हमें कुछ सकारात्मक करने के लिए प्रेरित करता है (दर्द या जहरीले सांपों से दूर रखता है)। जब आप विश्लेषण करते हैं कि डर आपको क्या करने के लिए प्रेरित करता है, तो आप अपने आप में इसमें का अंतर बता सकते हैं: दो ही बाते होती हैं, या तो परमेश्वर के करीब आओ और खतरे के प्रति सतर्क रहना, या फिर घबराओ और परमेश्वर में अपनी शांति और भरोसा खो देना। अपने आप से पूछें कि यीशु क्या करता।

पापमय भय का एकमात्र इलाज परमेश्वर में विश्वास करना। जब पतरस डर गया कि जिस नाव में वह था वह डूब जाएगी, तो उसकी नज़र यीशु पर पड़ी और, विश्वास में, यीशु के पास वह पानी पर चलने लगा। फिर जब उसने यीशु से अपनी आँखें हटाईं और अपने आस-पास के वातावरण पर देखने लगा तो वह डूबने लगा क्योंकि उसका विश्वास विफल हो गया। उसने अपनी नजरें फिर यीशु पर डालीं और नाव में वापस लाये जाने के लिए यीशु के पास पहुँच गया। हमारे साथ भी ऐसा ही होता है। यशायाह 12:2 41:10; 54:17; 2 तीमुथियुस 1:7; प्रकाशितवाक्य 1:17-18; भजन संहिता 56:3, आदि, को याद करें और उन्हें अपने आप से उद्धृत करें जब आप को भय का सामना करना पड़ता है ताकि आपको यीशु पर अपनी दृष्टि बनाए रखने में मदद मिल सके।

भय जीवन को दरिद्र बना सकता है, परन्तु जब हम यह महसूस करते हैं कि सब कुछ परमेश्वर के नियन्त्रण में है और वह जो करता है हमारे लिए सर्वोत्तम होता है (रोमियों 8:28-31) फिर हमें किसी चीज से डर नहीं आता है। हम उससे डरते हैं जिसे हम नियंत्रित नहीं कर सकते, जिससे हमें दर्द हो सकता है। हालाँकि, यह जानना कि परमेश्वर सर्वोच्च है और सब कुछ उसी के नियंत्रण में है और वह हमारे लिए प्यार से जो कुछ भी करता है , हमें इस से प्रेरित होकर उस पर भरोसा करना चाहिए। हम या तो भय कर सकते है या विश्वास पर दोनों कभी नहीं। इनमें से एक चीज दूसरी को बाहर निकालती है। आप इन में से किसे अपने दिल के सिंहासन पर बैठने और शासन करने की अनुमति देते हैं? यह आपकी पसंद है, आप जानते हैं। सही का चुनाव करें !
पौलूस की सलाह: डर परमेश्वर के सेवकों का सबसे बड़ा दुश्मन है, अपने जीवन में इस पर विजय प्राप्त करना सीखें।

भय से लड़ने के दौरान उपयोग करने के लिए बाइबल के वादे :

<u>विश्वासियों के लिए मृत्यु का भय चला गया है:</u> भजन सहिता 23:4; 49:15; 116:15; यूहन्ना 14:1-3, 6,-19, 27

<u>भय, दावा करने का वादा:</u> नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन 34:4; यहोशू 1:9; 10:8;23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14:13; 1 शमूएल 17:45-47; 2 शमूएल 22:33-35,40-41; फिलिप्पियों 4:6-7; 4:13; 2 तीमुथियुस 1:7

<u>भय , विश्वास करनेवाले को डरने की कोई बात नहीं</u>: नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन 34:4; यहोशू 1:9; 10:8; 23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14:13; 1 शमूएल 17:45-47; 2 शमूएल 22:33-35,40-41

<u>ग- तीतुस</u>

<u>1. जीवन और सेवकाई</u>

कई मायनों में, तीतुस तीमुथियुस से काफी मिलता-जुलता है, क्योंकि दोनों को पौलुस द्वारा प्रशिक्षित किया गया था और जहां भी जरूरत थी वहां सेवकाई के लिए भेजा गया था। हालाँकि, हम तीतुस के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। उसके बारे में केवल कुछ ही हिस्से बोलते हैं (गलतियों 2:1-3; 2 कुरिन्थियों 8:24)। "तीतुस" एक आम लातीनी नाम है और इसका अर्थ है "मैं सम्मान करता हूँ।" कुछ विद्वान सोचते हैं कि शायद वह लूका का भाई था, क्योंकि प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका ने आपने आप का या तीतुस का उल्लेख नहीं किया है।

उसका गृहनगर क्रेते रहा होगा। उसके परिवार के बारे या उसके पालन-पोषण के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है इसके सिवाए कि वह एक अन्यजातियों के परिवार से आया था और एक विशिष्ट गैर-यहूदी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति था। यहाँ तक कि उसका उद्धार का अनुभव भी अज्ञात है, फिर हो सकता है कि पौलुस ने उसे उद्धार की ओर अगुवाई की थी (गलतियों 2:3; तीतुस 1:4)।

ऐसा लगता है कि वह(तीतुस) तीमुथियुस की तुलना में एक मजबूत, अधिक शक्तिशाली व्यक्तित्व का व्यक्ति है और तीमुथियुस की तरह उसने डर से संघर्ष नहीं किया। कुरंथियों में संघर्ष करती कलीसिया के लिए उसके मन में गहरा लगाव और चिंता थी। पौलुस ने उसे, कठिनाइयों का सामना करने वाली कलीसियाओं में, एक संकटमोचक के रूप में भेजने के लिए उसके उत्साह और दक्षता का उपयोग किया था।

तीतुस ने अन्ताकिया में पौलूस के साथ मिलकर काम किया और यहूदी बने बिना अनुग्रह द्वारा बचाए गए अन्यजातियों के उदाहरण के रूप में यरूशलेम परिषद (प्रेरितों के काम 15) में गया था। हम उसे कई एक तरीकों से पौलूस की मदद करते हुए देखते हैं। उसने क्रेते में कलीसिया के साथ बहुत काम किया और डालमटिया में सुसमाचार प्रचार का काम किया। उसे इफिसुस से कुरिन्थुस में यरूशलेम की कलीसिया के लिए धन इकट्ठा करने के लिए भेजा गया था (2 कुरिन्थियों 12)। फिर वह मकिदुनिया में पौलुस के साथ हो गया (2 कुरिन्थियों 7:6) और पौलुस के पत्र को कुरिन्थियों (2 कुरिन्थियों) तक ले गया।

उसने पौलुस के साथ और पौलुस की सेवकाई के दौरान पौलुस के लिए काम किया। पौलूस ने मरने से कुछ समय पहले उसने "तीतुस " की किताब लिखी थी। पौलूस के अंतिम कारावास के दौरान वह शायद रोम में पौलूस के साथ था।

पौलुस का अनुसरण करते हुए, वह कई वर्षों तक क्रेते द्वीप पर सेवा करता रहा। ऐसा कहा जाता है कि 93 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

2. तीतुस से सबक

यह सब मेरे बारे में नहीं है (तीतुस से सबक)

तीतुस लगभग तीमुथियुस जितना प्रसिद्ध नहीं है। उसने तीमुथियुस की तरह पौलुस की मदद की। उसने पर्दे के पीछे रहकर भी काम किया। लेकिन वह पौलूस का नंबर एक संकटमोचक नहीं था। वह पौलूस द्वारा अत्यधिक संस्तुत और पूरक नहीं था। उसके पास तीमुथियुस की तरह पौलूस का प्यार और पिता-पुत्र का सा रिश्ता नहीं था। उसे केवल एक छोटा सा पत्र मिला, जिसमें से अधिकांश तो पौलुस पहले से ही तीमुथियुस को लिख दिए थे। उसके उपहार और कौशल हमारी जानकारी के लिए दर्ज नहीं हैं । वह केवल एक औसतन व्यक्ति था जो किसी भी तरह से परमेश्वर की
सेवा करने की पूरी कोशिश कर रहा था।

हमें अपनी पहचान उसके साथ करने में सक्षम होना चाहिए। हम में से अधिकांश ऐसे हैं जिनको कभी भी प्रसिद नहीं होंगे। हमारे पास विशेष कौशल या उपहार नहीं हैं। हम बड़ी बड़ी कलीसियाओं के पासबान नहीं बनेंगे या ऐसे उल्लेखनीय काम नहीं करेंगे जिनको कहीं दर्ज किया जायेगा और याद किया जायेगा। हमारे जाने के बाद कुछ ही लोग हमें याद रखेंगे और उनके जाने के बाद वह यादें भी खत्म हो जाएगी। हमारे लिए पौलूस के साथ, कभी-कभी तीमुथियुस के साथ अपनी पहचान करना कठिन हो सकता है, लेकिन तीतुस एक ऐसा बन्दा है जिसे हम सभी एक उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। वह हमारे जैसे एक सामान्य, औसतन व्यक्ति था लेकिन उसने अपने पूरे जीवन भर ईमानदारी से ईश्वर की सेवा की।

जब सांसारिक मान्यता या प्रतिफल नहीं था तो वह ऐसा कैसे कर सकता था? उसे अपने जीवन भर की मेहनत के लिए क्या मिला? उसने यह सब यीशु के प्रति प्रेम और समर्पण के कारण परमेश्वर के लिए किया। यह सब तीतुस के बारे में नहीं था, यह सब यीशु के बारे में था। उसका इनाम तब मिला जब वह स्वर्ग गया, और अब वह अनंत काल तक इसका आनंद ले रहा है।

हम अपनी विश्वासयोग्यता के कारण अनन्तकाल के लिए पुरस्कृत किये जाते हैं और आशीष पाते हैं, न कि उसके करण जो हम उत्पादन करते हैं (1 कुरिन्थियों 3:10-15)। संसार उसकी मात्रा देखता है जो हम करते हैं परन्तु परमेश्वर हमारे हृदय की गुणवत्ता को देखता है जो हम करते हैं (1 कुरिन्थियों 4:5)। हम सोचते हैं कि बड़ा बेहतर है, इसलिए हम सोचते हैं कि जिनके पास बड़ी बड़ी सेवकाई हैं या जो महान काम करते हैं, वे हमसे ज्यादा सफल हैं। परन्तु परमेश्वर चीजों को इस तरह से नहीं देखता (भजन संहिता 147:10; 44:21; 1 राजा 8:39; 1 इतिहास 28:9)। वह चीजों को बाहरी रूप से नहीं आंकता जैसा हम आंकते हैं (1 शमूएल 16:7; यशायाह 55:8)।

यदि हम उसे प्रसन्न करना चाहते हैं, तो हमें उसकी सेवा उसके लिए करनी चाहिए, न कि जो हम प्राप्त करते हैं उसके लिए। हमारा मकसद उसके लिए हमारा प्यार होना चाहिए। इफिसुस की कलीसिया परमेश्वर के लिए कई अच्छे, प्रभावशाली कार्य कर रही थी (प्रकाशितवाक्य 2:2-3, 6)। परन्तु वे यीशु के प्रति प्रेम के कारण ऐसा नहीं कर रहे थे (प्रकाशितवाक्य 2:4)। परमेश्वर ने कहा कि वह उनकी सेवकाई को समाप्त कर देगा, यदि वे ऐसे ही चलते रहे तो (प्रकाशितवाक्य 2:5) और ऐसा ही हुआ। अपने आप के साथ और अपनी सेवकाई के साथ ऐसा न होने दें!

पौलूस की सलाह: हमारा ध्यान यीशु की सेवा पर होना चाहिए चाहे कुछ भी हो, न कि हमारी अपनी उन्नति या उपलब्धि पर।

1 कुरिन्थियों 4:5 इसलिये निर्धारित समय से पहिले किसी बात का न्याय न करना; प्रभु के आने तक प्रतीक्षा करो। वह अन्धियारे में छिपी बातों को प्रकाश में लाएगा, और मनुष्यों के मन की युक्तियों को प्रगट करेगा। उस समय प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की ओर से अपनी स्तुति प्राप्त करेगा।

1 शमूएल 16:7 जो कुछ मनुष्य देखता है, यहोवा उसकी ओर नहीं देखता। मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मनुष्य के मान पर रहती है।"

यीशु इसके बारे में क्या कहेगा जो आप उसके लिए कर रहे हैं? क्या यह सब वास्तव में उसके लिए है, या फिर आप की सेवा में आपका बहुत कुछ आपके मतलब के लिए है?
यदि कोई गलत मंशा या स्वार्थी इच्छाएँ हैं जो आपने उसके लिए अपनी सेवा में रखी हैं, तो परमेश्वर से कहें कि वह आप को दिखाए (भजन संहिता 139:23-24) "हे परमेश्वर, मुझे खोज और मेरे मन को जान; मुझे परख, और मेरी चिन्ताओं को जान ले। देख कि मुझ में कोई आपत्तिजनक मार्ग है, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर")।

II. तीमुथियुस

क-1 तीमुथियुस की पुष्ठभूमि

शीर्षक : प्राप्तकर्ता के नाम पर
लेखक: पौलूस
लेखन की तिथि: 62 ई.
लेखन का स्थान: मक्दूनीया
प्राप्तकर्ता: तीमुथियुस, एक युवा पादरी- मित्र
मुख्य आयत : यदि मुझे आने में देर हो जाए , तुम जान लो कि परमेश्वर के घराने में, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और सत्य का खंभा और बुनियाद है, उसको कैसा व्यवहार करना चाहिए।
... पर संतुष्टि के साथ धार्मिकता बहुत बड़ा लाभ है। ... परन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन सब से दूर भाग जाना, और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा करते रहना। 12 विश्वास की अच्छी लडाई लड़। उस अनन्त जीवन को थामे रख जिसके लिये तू बुलाया गया था जब तू ने बहुत गवाहों के साम्हने इसका अच्छा अंगीकार किया था। ... तीमुथियुस, जो तुझे सौंपा गया है उसकी रक्षा कर। अधर्म की बक-बक और विरोधी विचार जिसे झूठा ज्ञान कहा जाता है उस सब से दूर रहना , 3:15; 6:6, 11-13, 20
प्रमुख शब्द: "अच्छा" (22 बार); "ईश्वरत्व" (8); "सिद्धांत" (8); "सिखाना/शिक्षक" (7)
उद्देश्य: पौलूस एक पादरी के रूप में अपने युवा प्रशिक्षु के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है। वह उसे झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देता है और समझाता है कि उसे कलीसिया का संचालन कैसे करना चाहिए।
विषय: कलीसिया के अनुशासन को सही करना।

इससे पहले कि हम यह भी जान पाते कि हमारा पहला बच्चा लड़का होगा या लड़की, परमेश्वर ने हम दोनों के दिलों में उसका नाम 'तीमुथियुस' रखा क्योंकि वह एक युवा पादरी होगा। बाइबल में तीमुथियुस किसी के लिए भी अनुसरण करने के लिए एक उत्तम उदाहरण है। एक यूनानी पिता और यहूदी मां से जन्मे, पौलूस द्वारा अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर यीशु में उद्धार के लिए उसका नेतृत्व किया गया था।

उसकी माँ, यूनीके, और नानी, लोइस, दोनों का उस पर अच्छा ईश्वरीय प्रभाव था। अपने आत्मिक वरदानों और तीव्र परिपक्वता के कारण, और इसलिए भी कि वह स्वाभाविक रूप से उसके साथ बहुत अच्छी तरह घुल-मिल गया था, पौलुस ने तीमुथियुस को अपने साथ आने और अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में मदद करने के लिए कहा। उसने फिलिप्पी, थिस्सलुनीका, बेरिया और कुरिन्थु में कलीसिया स्थापित करने में पौलुस की सहायता की। पौलूस ने उन्हें कलिसीयाओं में कठिन परिस्थितियों को ठीक करने के लिए अपना आधिकारिक 'समस्या-निवारक' के रूप में हर जगह भेजा, जहाँ पौलूस स्वयं जाने में असमर्थ था। यह कई सालों तक चलता रहा। तीमुथियुस और पौलुस अंत के बहुत करीबी बन गए थे। वह शायद रोम में पौलूस के साथ था जब पौलूस को दूसरी बार वहां कैद किया गया था। यह गिरफ्तारी पौलूस के कत्ल के साथ समाप्त हुई थी । तीमुथियुस स्वयं एक शहीद के रूप में मरा था , जिसको रोमी सरकार द्वारा मारा गया था।

पृष्ठभूमी - 1 तीमुथियुस, पौलुस की मृत्यु से लगभग 3 वर्ष पहले लिखा गया था। तीमुथियुस को इफिसुस में समस्याओं का निवारण करने के लिए भेजा गया था जबकि पौलूस कहीं और सेवकाई कर रहा था। पौलूस ने इफिसुस में उसके साथ शामिल होने की उम्मीद की थी, लेकिन उसे देरी हो गयी थी, इसलिए उसने तीमुथियुस को यह पत्र लिखकर निर्देश दिया कि जब तक वह वहां नहीं पहुंचता तब तक उसे कैसे आगे बढ़ना है। इस प्रकार हमारे पास पौलुस की अंतर्दृष्टि है कि एक कलीसिया को कैसे चलना चाहिए। पौलूस का इफिसुस न पहुँच पाना पौलुस और तीमुथियुस दोनों के लिए निराशाजनक था, लेकिन निश्चित रूप से हमारे लाभ के लिए था।

I. तीमुथियुस का अभिषेक (1:3-20) -जाहिर तौर पर आरामप्रस्त तीमुथियुस के लिए चीज़ें सुचारू रूप से नहीं चल रही थीं। झूठे शिक्षकों, दबंग महिलाओं और कलीसिया के संघर्षों ने उसे बेवस कर दिया था कि उसने पौलूस से पूछा कि क्या वह पौलूस की कृपया से इफिसुस छोड़ सकता है। यह इतना बुरा था कि इससे उसे पेट की समस्या हो रही थी! पौलूस ने उसे स्पष्ट रूप से रहने और विरोध का सामना करने के लिए कहा। जबकि पौलूस के लिए यह कठिन न होता, लेकिन तीमुथियुस स्पष्ट रूप से काफी अलग स्वभाव का व्यक्ति था । इस प्रकार से पौलूस इस में तीमुथियुस को इस कठिन कार्य में प्रोत्साहित और सहायता करता है। वह उसे सलाह और मार्गदर्शन देने के साथ-साथ उसके वहां रहने और काम करने के उसके फ़र्ज़ की याद दिलाता है। किलिसिया को नियम /अनुशासन की आवश्यकता थी और वही इसे लाने वाला व्यक्ति था।

II. कलीसिया का संगठन (2:1 - 3:16) पौलूस फिर कलीसिया में प्रार्थना के महत्व के बारे में बात करता है और इसका नेतृत्व के द्वारा होना चाहिए। वह सलाह देता है कि मसीही महिलाओं की पहचान आत्मा के आंतरिक श्रृंगार से होनी चाहिए, न कि शरीर के बाहरी लिबास से। उनके जीवन से अच्छे कार्यों और इज्ज़त की भावनाए दिखाई देनी चाहिए। पुरुष को अगुवे होना हैं, महिलाओं को उनके समर्थक होना हैं। सच यह है कि इफिसुस में ऐसा नहीं हो रहा था।

फिर पौलुस तीमुथियुस को बताता है कि प्राचीनों और उपयाजकों के लिए क्या योग्यताएँ होनी चाहिए। पुरुष नेतृत्व को भी वहां सीधा/दरुस्त करने की जरूरत थी। कलीसिया के नेतृत्व के लिए किसे चुनना है यह हमेशा एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय होता है। चूँकि पौलूस अपनी आशा के अनुसार वहाँ जाने में सक्षम नहीं था, इसलिए उसने तीमुथियुस को निर्देश दिया कि वह कैसे अगुवों चुनाव करे और उनका उपयोग करे ।

III. तीमुथियुस का संचालन (4:1 – 6:19) -1 तीमुथियुस का यह अंतिम भाग कलीसिया में तीमुथियुस के स्वयं के रहन -सहन और कार्य से संबंधित है। पौलूस उसे झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देता है और उसे एक ईश्वरीय शिक्षक होने के उसके फ़र्ज़ की याद दिलाता है। पौलूस कलीसिया के बारे एक परिवार के रूप में बात करता है और तीमुथियुस को कलीसिया के लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करता है जैसे वह परिवार के सदस्यों के साथ व्यवहार करता होता: इज्जत और सम्मान के साथ।
1 तीमुथियुस में सूचीबद्ध पौलूस के मानकों के मुताबिक आपकी कलीसिया कहाँ पर है? यदि यह उन सिद्धांतों को पूरा नहीं कर रही है तो इसका मतलब कुछ तो गलत है। यदि पौलूस जीवित होता तो वह आकर चीजों को ठीक कर देता। वह नहीं है और वह नहीं करेगा, परन्तु परमेश्वर है और वह करेगा। तीमुथियुस बनो और अपनी कलीसिया में नियम/ अनुशासन लाओ।

<u>ख- 1 तीमुथियुस की रूपरेखा</u>

अभिनंदन 1:1-2

I. तीमुथियुस का अभिषेक (तीमुथियुस को प्रभार सौंपना) 1
क- पौलूस झूठे शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी देता है 1:3-11
ख- पौलूस परमेश्वर के अनुग्रह की गवाही देता है 1:12-17
ग- पौलूस तीमुथियुस को सेवक के रूप में नियुक्त करता है 1:18-20

II. कलीसिया का संगठन (कलीसिया को चुनौती) 2-3
क- प्रार्थना भी की विनती 2:1-8
ख- महिलाओं की अधीनता 2:9-15
ग- अगुवों की निगरानी 3:1-16
1. प्राचीन 3:1-7
2. उप्पाजक 3:8-13
3. कलीसिया का उद्देश्य 3:14-16

III. तीमुथियुस का संचालन (तीमुथियुस का आचरण) 4-6
क- जिमेदारी का सर्वेक्षण 4:1-15
1. शत्रु: झूठे शिक्षक 4:1-5
2. फ़र्ज़: एक ईश्वरीय शिक्षक बनें 4:6-16
ख- निभर रहने वालों की सहायता 5:1-6:2

1. छोटे या बड़े लोगों के लिए 5:1-2
2. विधवाओं को 5:3-16
3. प्राचीनो को 5:17-25
4. स्वामियों और दासों को 6:1-2

ग- ईश्वरत्व की श्रेष्ठता 6:3-19

1. झूठे शिक्षकों के ऊपर 6:3-5
2. भौतिकवाद के ऊपर 6:6-19

समापन 6:20-21

ग- पादरीयों के लिए सलाह - । तीमुथियुस

1. हर किसी को पौलूस की जरूरत होती है

जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को अपनी सेवा करने के लिए बुलाता है, तो वह उस व्यक्ति को सुसज्जित भी करता है। वह उन्हें उपहार देता है और दूसरों को उनके जीवन में भेजता है जो उन्हें प्रशिक्षित कर सकते हैं और उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं। जैसे-जैसे वे बढ़ते और परिपक्व होते हैं, तब वह उन्हें युवा विश्वासियों की ओर ले जाता है जिनका वे निर्माण कर सकते हैं। बरनबास ने पहले पौलुस को चेला बनाया, फिर पौलुस ने तीमुथियुस को प्रशिक्षित किया।

तीमुथियुस की माँ, यूनीके, और उसकी नानी, लोइस, ईश्वरीय यहूदी थी। उसका पिता यहूदी नहीं था। फिर भी, उसने अपने बेटे का नाम "तीमुथियुस" रखने की अनुमति दे दी, जिसका अर्थ है "ईश्वर का सम्मान।" तीमुथियुस को बड़ा होने पर पुराने नियम की शिक्षा दी गई थी (2 तीमुथियुस 1:5; 3:15)। यकीनन उसका परिवार संपन्न रहा होगा क्योंकि जब पौलूस अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर लुस्त्रा में गया था, तब वे लोग पौलुस की मेहमान-नवाज़ी करने में सक्षम थे। शाईद पौलुस वहाँ पर उस पर हुए पत्थरवाह की चोटों से उभर गया होगा (प्रेरितों के काम 14:19)।

पौलूस का परिवार के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित हो गया, विशेषकर तीमुथियुस के साथ। उसने तीमुथियुस की अगुवाई उद्धार की ओर की (प्रेरितों के काम 15:6-19) और वह उसका आत्मिक पिता और गुरु बन गया (फिलिप्पियों 2:22)। तीमुथियुस युवा था, शायद एक किशोर ही था। वह सुभाव में पौलूस के विपरीत था शर्मीला और असुरक्षित।

पौलूस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर उसे देखने के लिए लौटा। उसने पाया कि तीमुथियुस यीशु के पीछे चल रहा था और उसकी सेवा कर रहा था। वहाँ के मसीहियों के बीच उसकी अच्छी प्रतिष्ठा थी (प्रेरितों के काम 16:2)। जब पौलुस वहां से चला, तो तीमुथियुस उसके साथ यात्रा पर गया। पौलूस उसे सलाह देता और प्रशिक्षित करता था ।
तीमुथियुस अगले 15 वर्षों तक पौलुस के साथ यात्रा करता रहा। वह कलिसीयाओं को शुरू करने और उन्हें विकासत होने में मदद करता था (2 तीमुथियुस 4:5)। अधिकांश समय उसने इफिसुस में सेवा की। इफिसुस एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर और प्रारंभिक कलीसिया का केंद्र था। पौलूस ने किसी अन्य स्थान की तुलना में वहां अधिक समय बिताया था। यह शैतान की शक्ति के अधीन एक दुष्ट नगर था। परमेश्वर ने यह दिखाने के लिए किए कि उसकी सामर्थ्य शैतान की सामर्थ्य से बड़ी है

पौलुस के द्वारा आश्चर्यकर्म किये (प्रेरितों के काम 19)।

इफिसुस में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। यहीं पर अपुल्लोस को उद्धार का ज्ञान हुआ था। प्रेरित यूहन्ना और मरियम, यीशु की माँ, वहाँ रहते थे और कलीसिया के कई महत्वपूर्ण अगुओं को प्रशिक्षित करते थे। मरकुस ने अपना सुसमाचार इफिसुस में ही लिखा था। यूहन्ना ने भी वहाँ से ही 3 पत्रियाँ लिखीं थी । इफिसुस की कलीसिया बहुत महत्वपूर्ण थी और पौलुस द्वारा तीमुथियुस को वहां सेवा करने के लिए नियुक्त करना उसके लिए एक बड़ी जिम्मेदारी थी। पौलुस तीमुथियुस को ऐसी ही एक ज़िम्मेदारी के लिए प्रशिक्षित कर रहा था। हर किसी को किसी सिखाने वाले की जरूरत होती है।

पौलूस तीमुथियुस का गुरु था और तीमुथियुस पौलूस का शिष्य था। कलीसिया के प्रत्येक अगुवे को कोई न कोई सलाह देने वाला होना चाहिए, जैसे तीमुथियुस के लिए पौलुस था। पौलुस के गुरु बरनबास और लूका थे। प्रत्येक अगुवा को उसके विकास करने में मदद करने के लिए किसी की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे वे विश्वास में परिपक्व होते जाते हैं, उन्हें आगे प्रशिक्षित करने के लिए किसी को खोजने की आवश्यकता होती है, जैसे पौलूस ने तीमुथियुस को प्रशिक्षित किया। कलीसिया की अगुवाई करने में उनकी भावी भूमिकाओं के लिए उन्हें तैयार करने के लिए हम सभी को युवा अगुवों का निर्माण करना चाहिए। आपको किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो आपका मार्गदर्शन करने में मदद करे और साथ ही किसी ऐसे व्यक्ति की भी जिसे आप प्रशिक्षण दे सकते हैं।

पौलूस के पास उसे सलाह देने के लिए विश्वास में अधिक परिपक्व थे बरनबास और लूकाऔर आपने से किसी छोटे व्यक्ति को सलाह देने के लिए था तीमुथियुस। पौलूस के पास कोई व्यक्ति था जो जीवन और परिपक्वता में उसके बराबर का , बोझ साझा करने के लिए एक दोस्त के रूप में था। सीलास उसके जीवन में ऐसा ही एक व्यक्ति था। हमें भी, एक करीबी सेवकाई मित्र की आवश्यकता होती है जिसके साथ हम बोझ साझा कर सकें और जिससे प्रोत्साहन प्राप्त कर सकें।

पौलूस की सलाह: सुनिश्चित करें कि आपके पास कोई है जिसे आप सलाह दे रहे हैं और साथ ही कोई ऐसा व्यक्ति है जो आपको सलाह दे रहा है।

2 तीमुथियुस 2:2 जो बातें तू ने मुझे बहुत गवाहों के साम्हने कहते सुना है, उन को विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

आपका गुरु कौन है? आप किस को सलाह दे रहे हैं?
सेवकाई में आपके करीबी मित्र कौन हैं जिनके साथ आप अपनी परेशानियों और जीत को साझा करते हैं? प्रत्येक पादरी और अगुवे को इनमें से प्रत्येक श्रेणी में कुछ न कुछ होना चाहिए। यदि आपके पास ऐसा कोई नहीं हैं, तो आप परमेश्वर से आपको यह दिखाने के लिए कहें कि आपके जीवन में इन भूमिकायों को कौन नभा सकता है।

2. डरपोक तीमुथियुस (1 तीमुथियुस 1:1-3, 18-19)

पढ़ें 1 तीमुथियुस 1:1-3, 18-19)

क्या आप कभी डरते हैं? कलीसिया के कुछ अगुआ शांत और शर्मीले होते हैं। वे उस से भयभीत हो जाते हैं जो हो सकता है। यह कुछ ऐसा है जिसका मुझे सामना करना पड़ा, खासकर एक युवा मसीही के रूप में। तीमुथियुस को भी यही समस्या थी। वास्तव में, पौलुस का 1तीमुथियुस लिखने का कारण यह था कि तीमुथियुस को इफिसुस में रहने और कलीसिया की समस्याओं को दूर करने के लिए आग्रह किया जा सके। इफिसुस एक बहुत ही महत्वपूर्ण शहर था, और वहाँ की कलीसिया अपने समय की प्रमुख कलीसिया थी। लेकिन घबराया हुआ तीमुथियुस कठिनाइयों का सामना कर रहा था जिसके कारण वह इफिसुस से कार्य छोड़ कर वहां से चला जाना चाहता था।

पौलुस तीमुथियुस का मित्र और आत्मिक पिता था, परन्तु उसने तीमुथियुस को वहां रहने और कलीसिया के सामने आने वाली समस्याओं को ठीक करने की आज्ञा देने के लिए एक प्रेरित के रूप में अपने अधिकार का उपयोग किया था। वह अपने पत्र की शुरुआत यह कहते हुए करता है, "पौलुस, परमेश्वर की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित" (1:1)। तीमुथियुस निश्चित रूप से जानता था कि पौलूस कौन था, लेकिन पौलूस उसे उस जिम्मेदारी की याद दिला रहा है जो परमेश्वर ने पौलूस को अपनी कलीसिया और उसके अगुओं की देखरेख के लिए दी थी।

"जैसा मैं ने तुम से बिनती की थी... वहीं इफिसुस में ठहरो, कि तुम कुछ लोगों को आज्ञा दो, कि वे फिर झूठी शिक्षा न दें" (1:3)। पौलूस ने तीमुथियुस को व्यक्तिगत रूप से यह बताया था, लेकिन वह फिर भी वहां से छोड़ना चाहता था क्योंकि वहां की समस्याएं उस के लिए तनाव और चिंता पैदा कर रही थीं। वह उन्हें संभाल नहीं सकता था इसलिए वह उन्हें छोड़ना चाहता था और उनसे दूर भागना चाहता था। वह निराश था और डरा हुआ था।

कलीसिया किन समस्याओं का सामना कर रही था? वहां ऐसे अगुवे और अन्य लोग थे जो झूठे सिद्धांतों की शिक्षा दे रहे थे (1:3-11), कुछ मजबूत इरादों वाली महिलाएँ जो अपने गलत विश्वासों को आगे बढ़ा रही थीं (2:11-15), लोगों के बीच की अव्यवस्था और फूट (3:14-15) , अगुवाई कार्य के बीच सत्ता के लिए संघर्ष (5:21-22) और ईश्वरीय अगुओं की चुगली और आलोचना (5:19)। तीमुथियुस इन हालातों के विरोध कोई कदम नहीं उठा रहा था। कुछ लोग उसकी आलोचना कर रहे थे और कह रहे थे कि वह अगुवाई करने के लिए अभी बहुत छोटा है (4:12-16; 6:11-14)। कलीसिया की कई समस्याएँ थीं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता थी। इनमें से कुछ समस्याएं लंबे समय तक बनी रहीं। तीस साल बाद, यूहन्ना ने यह लिखा कि, उसकी गृह कलीसिया, ने अपना पहला प्यार खो दिया था (प्रकाशितवाक्य 2:1-7)।

ये गंभीर मुद्दे थे जिन्हें ठीक करने की आवश्यकता थी, लेकिन तीमुथियुस को बदलाव लाने में कठिनाई हो रही थी। वास्तव में, इन चीजों से तीमुथियुस पर इतना दबाव पड़ रहा था कि उसे तनाव और चिंता से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो रही थीं (5:23)। वह उन लोगों का सामना करने से डरता था जो कलीसिया को गुमराह कर रहे थे।

हर कोई समय-समय पर डर का अनुभव करता है, कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक करते हैं। कलीसिया के कई अगुवे अपनी सेवकाई में विफल होने या अपने लोगों द्वारा आलोचना किए जाने से भी डरते हैं। मैं मानता हूं कि मैंने भी ऐसा किया था, शायद आप भी इसका सामना करते होंगे। हमें याद रखना चाहिए कि यह भय परमेश्वर की ओर से नहीं आता (2 तीमुथियुस 1:7)। अगर हम मानते हैं कि

सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है, तो हमारे लिए डरने की कोई बात ही नहीं है। हम या तो भय को या फिर विश्वास को आपना प्रेरित कर्ता बना सकते हैं। हम दोनों का अनुसरण नहीं कर सकते, केवल इसका या उसका। क्या आप कभी भयभीत या निराश हुए हैं? उस पर विजय पाने के लिए क्या करते हो?

तीमुथियुस की तरह, जब सेवकाई कठिन हो जाती है तो हम आपना पद छोड़ना चाह सकते हैं। जब हम वांछित परिणाम नहीं देखते हैं और हम दबावों और समस्याओं का सामना करते हैं, तो हम सेवकाई को छोड़ना चाहते हैं, या किसी आसान कार्य पर स्विच करना चाह सकते हैं। हम अपनी शादी या अपने बच्चों से आई समस्याओं से भी निराश हो सकते हैं। वित्तीय या स्वास्थ्य संघर्ष भारी लग सकता है। हमारे जीवन में पाप से पराजित होना भी इसे जारी रख सकता है और इसे दुखदायक बना सकता है।

तीमुथियुस को पौलुस की सलाह हमारे लिए भी अच्छी सलाह है। "मैं तुम्हें यह निर्देश देता हूं ... विश्वास और अच्छे विवेक को थामे हुए अच्छी तरह से लड़ाई लड़" (1:18-19)। "लड़ाई लड़" एक आदेश है, विकल्प नहीं। हम अपने पापी स्वभाव, संसार और शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के साथ युद्ध में हैं। हम छोड़ कर नहीं जीत सकते; हम लड़कर ही जीत सकते हैं। हमें अपने डर, निराशा और ईश्वर में दृढ़ विश्वास और भरोसा रखते हुए छोड़ने देने की भावना से लड़ना चाहिए। "विश्वास और अच्छे विवेक" के द्वारा (1:19) हम विजय प्राप्त कर सकते हैं। जब हम परमेश्वर के वचन को जानते हैं और उसके वादों पर विश्वास करते हैं, तो हम उस पर भरोसा करेंगे और उसे प्रसन्न करने वाला जीवन व्यतीत करेंगे। यदि नहीं, तो परमेश्वर का आत्मा हमें हमारे विवेक के माध्यम से दोषी ठहराएगा ताकि हम पश्चाताप करें और उसके लिए जीना सीख सकें।

यीशु की सेवा करना कठिन हो सकता है। लड़ाई कई बार बहुत कठिन हो सकती है। परमेश्वर के सत्य और प्रकाश का हमेशा विरोध होगा। परमेश्वर पर अपनी दृष्टि लगाये रखने से और उस पर विश्वास करते हुए , हम अपने भय पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

पौलूस की सलाह: डर एक ऐसा दुश्मन है जिसको हमें हर कीमत पर हराना होगा।

2 तीमुथियुस 1:7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय का नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम का आत्मा दीया है।
क्या आप नियमित रूप से बाइबल का अध्ययन करने में समय व्यतीत करते हैं ताकि आपका विश्वास और विश्वासयोग्यता बढ़े?

क्या आप निराश या भयभीत हैं और उस कार्य को छोड़ना चाहते हैं जो परमेश्वर ने आपको करने के लिए दिया है?

क्या आप अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं, या आप हार मान रहे हैं और निराशा को जीतने दे रहे हैं? परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखें, जो हमेशा आपके साथ रहने और आपको युद्ध के लिए शक्ति देने और परमेश्वर की मदद से लड़ते रहने का आश्वासन देते हैं ।

3. हमारे बीच धर्मत्यागी

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 1:4-20

जब मैं एक युवा मासीही था, तो मैं कुछ अच्छे उम्रदराज़ मसीहीयों से मिला, जो मुझे वह सब कुछ बताना चाहते थे जो मुझे एक मसीही होते हुए करना चाहिए था या नहीं करना चाहिए था। उन्हें लगता था कि वे मेरी हर परिस्थिति में मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे जानते हैं। वे मुझे बताते कि मुझे कैसे कपड़े पहनने चाहिए, कैसे बात करनी चाहिए और कैसे जीवन कार्य करना चाहिए। मुझे क्या पढ़ना चाहिए , क्या देखना चाहिए, क्या सुनना चाहिए या क्या करना है, यह सब मेरे लिए तय था। जितना बेहतर ढंग से मैंने उनकी आज्ञाओं का पालन किया, उतना ही मुझे उनके समूह द्वारा स्वीकार किया जाता। वे जो सही मानते थे उसे करने में विफलता के परिणामस्वरूप अस्वीकृति मिलती। जब मैं उनकी उम्मीदों पर खरा उतरा, तो मुझे विश्वास होने लगा कि मैं उन अन्य मसीहीयों से बेहतर हूं जो ऐसा नहीं करते। मैंने जो किया था उसके लिए मेरा मकसद था उनके द्वारा और ईश्वर द्वारा मेरी की गयी आलोचना का डर। मैं उन्हें और परमेश्वर को खुश करने की कोशिश कर रहा था। इसका परिणाम था आत्मकेन्द्रितता और अभिमान। यह मेरा सौभाग्य था कि, परमेश्वर ने मुझे अपने अनुग्रह का सत्य दिखाया और मुझे उस बंधन से मुक्त किया।

इफिसुस में भी कुछ ऐसा ही हो रहा था इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस से आग्रह किया कि जो लोग लोगों को बन्धनों में डालते हैं वह उन्हें सुधारे। उसने तीमुथियुस को उन लोगों के बारे में चेतावनी दी जो "नाबालिगों को बड़ा बनाते हैं' (1:4)। उसके पास "धर्मत्यागियों" के लिए और भी कड़े शब्द थे, "जो एक समय विश्वास करते थे और सच्चाई का पालन करते थे, लेकिन अब इससे दूर हो गए हैं" (1:6)। वे लोग कलीसिया या मसीही धर्म को तो नहीं छोड़ते हैं , बल्कि अपने झूठ और विधिवाद को फैलाने के लिए भीतर ही रहते हैं (1:8)। उसने समझाया कि व्यवस्था का उद्देश्य उद्धार अर्जित करना या परमेश्वर को प्रभावित करना नहीं था, बल्कि हमारे जीवन में पाप को इंगित करना था (1:19-10)। उसने तीमुथियुस को याद दिलाया कि उद्धार का संदेश "सुसमाचार" (यूनानी में "सुसमाचार") है। विधिवाद एक बुरी खबर है लेकिन अनुग्रह अच्छी खबर(सुसमाचार) है (1:11)।

तब पौलुस ने आपने आप को झूठे शिक्षकों और शिक्षाओं के विरुद्ध प्रमाण के रूप में उपयोग किया (1:12-14)। वह परमेश्वर के अनुग्रह का उदाहरण है, क्योंकि अनुग्रह के बिना वह कुछ भी नहीं होता। उसने पुराने नियम की सभी व्यवस्थाओं का पालन करने की कोशिश की लेकिन वह केवल उसके लिए दोष और निंदा ही लाए। वह अपने उद्धार को अर्जित करने या बनाए रखने के लिए कुछ भी नहीं कर सका। उसके पाप के बावजूद, परमेश्वर ने पौलुस को उद्धार देकर और परमेश्वर की सेवा करने के लिए नियुक्त करके उसको आपना अनुग्रह दिखाया।

पौलूस परमेश्वर की दया के लिए इतना आभारी है कि वह यीशु की प्रशंसा में फूट पड़ा (1:15-17)। चूँकि वह पापियों में सबसे बड़ा पापी था, उसके जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह ने उन लोगों के लिए परमेश्वर के धैर्य और प्रेम को दिखाया है जिनको उसने बनाया है। हमे भी हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम और धैर्य के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। हमें पौलुस के साथ उसकी स्तुति करनी चाहिए: “अब उसकी जो अनन्तकाल के राजा, अमर, अदृश्य, एकमात्र परमेश्वर है, आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन” 11:17)।

हुमिनयुस और सिकंदर जैसे झूठे शिक्षक पौलुस की तरह नहीं थे। वे परमेश्वर के सत्य से फिर गए और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रभावित करते थे। पौलूस अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा के लिए

हमेशा आभारी है (1:19-20)। पौलुस अच्छी लड़ाई लड़ रहा था (1:18) परन्तु वे नहीं लड़ रहे थे। यह तीमुथियुस के लिए एक बहुत चतुर चेतावनी नहीं है कि हुमेनियस और सिकंदर की तरह रास्ते से फिरने के बजाय ईमानदारी से पौलूस की तरह सेवा करें। यह आज हमारे लिए भी एक कड़ी चेतावनी है। परमेश्वर के वचन को जानो और ऐसी हर शिक्षा से फिर जाओ जो स्पष्ट रूप से इसमें नहीं सिखाई गई है।

पौलूस की सलाह: उन लोगों से सतर्क रहें और उनसे दूर रहें जो 100% यीशु की सच्चाई को नहीं सिखाते हैं।

पौलुस ने 1:15-16 में अपनी भावनाओं को सारगर्भित किया: "यह बात भरोसे के योग्य है: मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया - जिनमें सबसे बड़ा पापी मैं हूं। परन्तु इसी कारण से मुझ पर दया हुई, कि मुझ में, जो सब से बड़ा पापी है, मसीह यीशु अपना असीमत धीरज उन लोगों के लिये प्रदर्शित करे, जो उस पर विश्वास करके अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे।"

क्या तुम पौलुस के ये शब्द कह सकते हो? परमेश्वर से कहते हुए इन शदों को बार बार पढ़ें।

परमेश्वर हमसे सिद्ध होने की उम्मीद नहीं करता है, लेकिन वह चाहता है कि हम उसके लिए ईमानदारी से जीएँ और "अच्छी लड़ाई लड़ें।" क्या आप ऐसा करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं?

<u>4. पौलुस के समान प्रार्थना करना</u>

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 2:1-8

पौलुस को सिखाते और प्रचार करते सुनना बहुत अद्भुत होता। उसे प्रार्थना करते सुनना और भी विशेष होता। उसने कैसे प्रार्थना करता था ? उसने क्या प्रार्थना करता था ? 1 तीमुथियुस 2:1-8 में पौलुस तीमुथियुस को प्रार्थना की व्याख्या करता है। यह हमें पौलुस के प्रार्थना भरे जीवन के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और हमें यह जानने में मदद करता है कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए।

"इसलिये, सबसे पहले, मैं बिनती करता हूँ, कि सब लोगों के लिये बिनती, प्रार्थना, मध्यस्तता की जाए और धन्यवाद दिए जाए" (2:1) पौलुस इन बातों को सूचीबद्ध करते हुए आरम्भ करता है कि उन्हें क्या प्रार्थना करनी चाहिए। "याचिकाएँ" हमारी अपनी आवश्यकताओं के लिए व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ होती हैं। "प्रार्थना" परमेश्वर के साथ आदरणीय संचार को संदर्भित करती है, मतलब हमारा दिल से उसके साथ जुड़ना, हमारी भावनाओं और इच्छाओं को उसके साथ साझा करना। "मध्यस्थता" दूसरों की जरूरतों के लिए प्रार्थना करने पर केंद्रित होती है। "धन्यवाद" हमें याद दिलाता है कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमेशा शुकुर्गुजारी के भाव को बनाये रखने की याद दिलाती है। प्रार्थना का मतलब है परमेश्वर से बात करना, उसके साथ गहरे स्तर पर जुड़ना। यह हमारी जरूरतों, खुशियों, सवालों और समस्याओं को उसके साथ साझा करने का कार्य है।

प्रार्थना हमारे लिए तो है, लेकिन यह दूसरों के लिए भी होती है। पौलूस तीमुथियुस को बताता है कि किस के लिए प्रार्थना करनी है: सभी के लिए बेशक ; लेकिन विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो अधिकार में हैं (1:2)। फिर पौलुस तीन कारण बताता है कि हमे क्यों उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो अधिकार में हैं (2:2-4)।
1) सब की खातिर ताकि सब जन, "शांतिपूर्ण और शांत जीवन" जी सके (2:2)।

2) विश्वासियों के लिए, ताकि वे "पूरी भक्ति और पवित्रता में" जीवन जी सके (2:2)।
3) परमेश्वर की खातिर, क्योंकि अधिकारियों द्वारा शांति से शासन करना "अच्छा है और हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को प्रसन्न करता है" (2:3)। परमेश्वर चाहता है कि हर कोई उसे जाने और उसका अनुसरण करे (2:4), और उथल-पुथल और तनाव के समय में सुसमाचार को फैलाना कठिन होता है। परमेश्वर का मानवजाति को बनाने का पूरा कारण उसके साथ संगति करना है। इसलिए जब भी पाप ने हमें उससे अलग किया तो वह हमारे लिए मरने आया। वह हमें अपने साथ बने रहे देखना चाहता है क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है।

तब हम किससे प्रार्थना करें? पौलूस तीमुथियुस से कहता है कि हम अपने मध्यस्थ यीशु के माध्यम से परमेश्वर को प्रार्थना करते हैं। यीशु स्वयं परमेश्वर है जो मनुष्य बना ताकि वह हमारे पापों की कीमत चुकाकर हमें छुड़ा सके और हमें परमेश्वर से मिला सके (2:5-6)। दूसरों को परमेश्वर की इन अद्भुत आशीषों के बारे में बताने का सौभाग्य मिलने के लिए पौलुस परमेश्वर का धन्यवाद करता है (2:7)। अब वही विशेषाधिकार हमारा है। क्या आप परमेश्वर के सत्य को दूसरों के साथ साझा करने के सम्मान के लिए उसके आभारी हैं? क्या आप इस आशीष के लिए उसका धन्यवाद करते हैं?

अंत में, पौलुस प्रार्थना कैसे करें, प्रार्थना की प्रक्रिया के बारे में बात करता है। "मैं चाहता हूं कि हर जगह मनुष्य बिना क्रोध या विवाद के पवित्र हाथों को प्रार्थना में उठाएं" (2:8)। "प्रार्थना" वर्तमान काल में है, जिसका अर्थ है कि हमें किसी भी समय और हर समय प्रार्थना करनी है। "पुरुषों" को अपने परिवारों, कलीसिया और राष्ट्र में पहल करनी है और अगुवाई करनी है। प्रार्थना "हर जगह" की जा सकती है, ना कि केवल चर्च में ।

जगह मायने नहीं रखती, लेकिन दिल का रवैया मायने रखता है। इसे पूरी ईमानदारी से किया जाना चाहिए: "पवित्र हाथों को उठा कर।" बाइबल में प्रार्थना के लिए कई आसनो का प्रयोग किया गया है: हाथ उठाना, मुँह के बल लेटना, घुटने टेकना, बैठना और खड़े होना। कोई भी आसन दूसरे से बेहतर नहीं है। यह दिल का रवैया है जो मायने रखता है, क्योंकि इसे "पवित्र" होना चाहिए। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है, यह हमारी प्रार्थनाओं को रोकता है। जब हम पाप के द्वारा उसके विरूद्ध विद्रोह करते हैं तो हम परमेश्वर के साथ निकटता से कैसे जुड़ सकते हैं? पाप परिवारों, विवाहों और मित्रों के बीच मानवीय संबंधों को तोड़ देता है। यह परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के साथ भी ऐसा ही करता है।

पौलूस विशेष रूप से क्रोध और विवाद के पापों के खिलाफ चेतावनी देता है (2:8)। वह शायद इफिसुस की स्थानीय कलिसीयाओं में चल रहे संघर्षों और उनकी प्रार्थनाओं को क्यों नहीं सुना जा रहा है, इसका जिक्र कर रहा है। तीमुथियुस को इन संघर्षों को सुलझाना चाहिए और कलीसिया के लिए ईश्वरीय नेतृत्व प्रदान करना चाहिए ताकि उनकी प्रार्थनाओं में बाधा न आए।

यह हमें पौलुस की प्रार्थनाओं की एक झलक देता है और कैसे उसने दूसरों को प्रार्थना करना सिखाया। उसका जीवन प्रार्थना से भर गया। प्रारंभिक कलीसिया की विशेषता प्रार्थना थी। वे आपना बहुत समय प्रार्थना में बिताया करते थे (प्रेरितों के काम 2:42)। स्वस्थ मसीहीयों और कलिसीयाओं को भी आज ऐसा ही करना चाहिए।

पौलूस की सलाह: परमेश्वर के जन व्ही हैं जो प्रार्थना के जन हैं।

याकूब 5:16 ईश्वरीय जन की प्रार्थना सामर्थी और प्रभावशाली होती है।
क्या आप मानते हैं कि प्रार्थना महत्वपूर्ण है और यह चीजों को बदल देती है?

आप प्रत्येक दिन प्रार्थना में कितना समय व्यतीत करते हैं?

क्या आप सुनिश्चित करते हैं कि जब आप प्रार्थना करते हैं तो आपके जीवन में कोई पाप नहीं होता है?

क्या आप क्रोध से संघर्ष करते हैं? क्या आपको किसी का साथ नहीं मिल रहा है? अपने पापों को स्वीकार करो और अभी उनसे मुड़ो।

5. महिलाओं की भूमिका

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 2:1-8

क्या आपको अपनी कलीसिया में कभी कोई ऐसी समस्या हुई है जिसको कैसे संभालना है, आप नहीं जानते हों ? तीमुथियुस की यही समस्या थी। पौलुस ने 1 तीमुथियुस, यह बताने के लिए लिखा कि इफिसुस की कलीसिया की कठिनाइयों को दूर करने के लिए क्या करना चाहिए। वह पुरुषों द्वारा प्रार्थना में अगुवाई करने की शुरुआत करने के बारे में बात करता है (2:8)। फिर, उसने स्त्रियों के लिए कुछ दिशा-निर्देश दिए (2:9-15)। जाहिरी तौर पर कुछ मुश्किलें महिलाओं ने ही पैदा की थीं। वह यह कहते हुए शुरू करता है कि महिलाओं को शालीनता से कपड़े पहनने चाहिए (2:9-10)।

उनका रूप-रंग साफ-सुथरा, समझदारी वाला और नेक होना चाहिए। उनका ध्यान अपनी आंतरिक सुंदरता पर होना चाहिए, न कि केवल बाहरी दिखावे या रूप-रंग पर। पतरस इसी बात को अधिक विस्तार से कहता है (1 पतरस 3:1-6)। शायद कुछ औरतें अपनी दौलत का दिखावा कर रही थीं और अपने रूप-रंग पर अधिक ध्यान दे रही थीं। परमेश्वर के लोगों को अपने रूप-रंग के घमण्ड के लिए नहीं, बल्कि नम्रता और दीनता के लिए जाना जाना चाहिए।

महिलाओं को न केवल शालीनता से कपड़े पहनने चाहिए (2:9-10), बल्कि उन्हें व्यवहार भी मर्यादापूर्ण करना चाहिए (2:11-15)। "एक महिला को शान्तिपूर्व और पूर्ण समर्पण में सीखना चाहिए। **मैं किसी स्त्री को पढ़ाने या किसी पुरुष पर अधिकार करने की अनुमति नहीं देता; उसे चुप चाप रहना चाहिए " (2:11-12)।**

"एक महिला को सीखना चाहिए" का अर्थ है कि उसके साथ व्यवहार करने और उसे उसी तरह सिखाने के लिए ईश्वरीय पुरुष होने चाहिए जैसे यीशु महिलाओं के साथ व्यवहार करता था और उन्हें सिखाता था: सम्मान और दया के साथ। एक व्यक्ति के रूप में महिलाएं पुरुषों के बराबर हैं, वे सिर्फ कर्तव्य और जिम्मेदारी में पुरुषों के अधीन हैं। एक नियोक्ता अपने कर्मचारियों से बेहतर व्यक्ति नहीं है, लेकिन यह उसका कार्य है जो उसे उनके ऊपर दिखाता है। यही पुरुषों और महिलाओं के बारे में सच है।

पौलूस का कहना है कि महिलाओं को "शांति" में सीखना चाहिए। वह "मौन" के लिए यूनानी शब्द का उपयोग नहीं करता है, क्योंकि वह यह नहीं कह रहा है कि वे बात नहीं कर सकती हैं । वह यहाँ एक नियंत्रित बोलचाल का जिक्र कर रहा है। महिला को यह पहचानना चाहिए कि परमेश्वर के नियम के अनुसार पुरुष ही कलीसियाऔर परिवार की जिम्मेदारी लेने के लिए जिम्मेदार हैं। उसे अपने पति या पादरी के साथ उसके जीवन में नेतृत्व की भूमिका निभाने में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। पौलुस 2:12 में इस आदेश को दोहराता है: "उसे चुपचाप रहना चाहिए।"

इफिसुस की स्थानीय -कलीसियाओं में तीमुथियुस को बेकाबु महिलाओं को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए वह कहता है कि उन्हें "पूर्ण अधीनता" (2:11) में रहना चाहिए। जब एक महिला परमेश्वर पर भरोसा करती है और उसके प्रति समर्पण करती है, तो वह उसके अधिकार के नियम को भी प्रस्तुत करती है। बाइबल यह नहीं कहती कि सभी स्त्रियों को सभी पुरुषों के अधीन होना चाहिए, यह केवल इतना कहती है कि पत्नियों को अपने पतियों के अधीन होना चाहिए (इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1) और स्त्रियों को अपने कलीसिया के अगुवों के अधीन होना चाहिए (1 तीमुथियुस 2: 11-12)। इसका मतलब यह नहीं है कि महिलाएं महिलाओं या बच्चों का नेतृत्व नहीं कर सकती हैं, अपनी गवाही साझा नहीं कर सकती हैं, प्रार्थना नहीं कर सकती हैं, गीत नहीं गा सकती हैं या चर्च में इसी तरह के कार्य नहीं कर सकती हैं। यह केवल पुरुषों पर अधिकार के पद हैं जिनसे उन्हें वंचित किया जाता है। बाइबल उत्कृष्ट महिलाओं से भरी हुई है जिन्होंने परमेश्वर की सेवा की: मरियम, दबोरा, एस्तेर, मरियम, मार्था, फीबे, अन्ना, अबीगैल, आदि।

पौलूस विशेष रूप से कहता है कि महिलाओं को पुरुषों को यह नहीं सिखाना चाहिए कि परमेश्वर उनसे क्या चाहते हैं। वे सुझाव दे सकती हैं, ज्ञान और राय पेश कर सकती हैं और अपने विचारों और भावनाओं को साझा कर सकती हैं। कोई ही मूर्ख पति होगा जो एक ईश्वरीय पत्नी की पेशकश को न सुने। महिलाओं में अक्सर वो अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण होता है जो पुरुषों में नहीं होता है। किसी महिला के पास अंतिम निर्णय लेने का अधिकार नहीं हो सकता है, जो पुरुष अगुओं को परमेश्वर की इच्छा लगने वाली बात को अज़रंदाज़ करता हो। एक महिला कलीसिया में कई क्षमताओं में सेवा कर सकती है और उसे करनी भी चाहिए, लेकिन प्राथमिक पादरी/अगुवा के रूप में नहीं।

हालाँकि बाइबल इस बारे में स्पष्ट है, लेकिन मैं उन अच्छी महिलाओं को जानता हूँ जो पादरी हैं। अक्सर यह भूमिका उन पर थोपी जाती है क्योंकि वहां आगे बाद कर इस कार्य की जिम्मेदारी लेने के लिए कोई पुरुष उपलब्ध नहीं होता है। उस समय भी यही मामला था जब दबोरा इजराइल की अगुवाई करने के लिए तैयार हुयी थी क्योंकि बाराक अगुवाई नहीं करना चाहता था (न्यायियों 4:6-10)। हम विश्वास सकते हैं कि इजराइल की अगुवाई करते समय भी वह अपने पति के अधीन थी (न्यायियों 4:4)। मैं कई उत्कृष्ट महिला पादरीयों से मिला हूँ जिन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद कलीसिया को चालू रखने के लिए आगे कदम बढ़ाया है। अगर उन्होंने ऐसा ना किया होता , तो चर्च बंद हो जाता और लोगों के पास उपासना करने को जाने के लिए कोई जगह नहीं होती। मैं कभी भी ऐसी महिला का न्याय नहीं करूंगा जो महसूस करती है कि परमेश्वर उसे एक सेवकाई में बुला रहा है, जो कि उसके और परमेश्वर के बीच की बात है। लेकिन हम परमेश्वर के वचन के द्वारा उसके कार्यों का मूल्यांकन कर सकते हैं और पौलूस स्पष्ट करता है कि एक महिला को पुरुषों का नेतृत्व नहीं करना चाहिए।

ऐसा कठोर कथन देने के बाद, पौलुस पवित्रशास्त्र से इसका समर्थन करता है (2:13-15)। वह यह नहीं कहता है कि पुरुषों को चर्च (और परिवार) में महिलाओं को प्रतिबंधित करने के लिए अगुवा बनना है, बल्कि उन्हें उस भूमिका में कार्य करने की अनुमति देकर उन्हें लाभान्वित करना है जिसके लिए उन्हें बनाया गया था। महिलाएं स्वाभाविक रूप से देखभाल करने वाली होती हैं और वे बड़ी मात्रा में करुणा और प्रेम का अनुभव कर सकती हैं। कभी-कभी वे विश्वास कर सकती हैं कि वे वही कर रही हैं जो सही है जबकि यह वास्तव में परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है, जैसा कि हव्वा द्वारा आदम को फल देने का मामला था (उत्पत्ति 3)।

पौलूस बताता हैं कि अदन में पाप के लिए आदम जिम्मेदार था। वह बेहतर जानता था और उसने स्वेच्छा से पाप किया था जबकि हव्वा यह सोचती थी कि वह जो कर रही थी वह सही था (2:14)। जब ईश्वरीय पुरुष यीशु के उदाहरण का पालन करते हुए प्रेमपूर्ण तरीके से नेताओं के रूप में अपनी भूमिका निभाते

हैं और पूरा करते हैं, तो महिलाओं के लिए उन पर भरोसा करना और उनके सामने समर्पण करना बहुत आसान होता है जैसा कि वे यीशु के प्रति करती हैं। हमेशा कुछ ऐसी स्त्रियाँ होंगी जो परमेश्वर द्वारा दिए गए अधिकार से अधिक अधिकार हड़पना चाहती हैं, लेकिन बहुसंख्यक महिलाए ईश्वरीय पुरुषों का अनुसरण करने में प्रसन्न होती हैं जो सज्जनता और करुणा के साथ अगुवाई करते हैं। इस पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय कि महिलाओं को कैसे प्रतिबंधित किया जाए, कलीसिया को चाहिए कि वो पुरुषों को मसीह के समान अगुवाई शुरू करने के लिए प्रशिक्षण और लैस करने पर ध्यान केंद्रित करे। पौलुस तीमुथियुस को यही करने के लिए कह रहा था और आज भी यही आवश्यक है।

पौलूस की सलाह: महिलाएं एक चर्च में महान योगदान दे सकती हैं इसलिए उन्हें सेवा करने की अनुमति दें, लेकिन केवल पुरुष ही अन्य पुरुषों पर अधिकार कर सकते हैं।

पुरुष: क्या आप अपने जीवन में महिलाओं के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा यीशु ने अपने जीवन में महिलाओं के साथ किया था? महिलाओं के साथ अपने व्यवहार में और अधिक मसीह-समान बनने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है?

महिला: क्या आप उन पुरुषों के प्रति इज्ज़त और सम्मान दिखाती हैं जिनका आप पर अधिकार है, उन पर भरोसा करते हुए किआप यीशु पर भरोसा करती हैं? जब आप यीशु को समर्पित करती हैं, तो आप उस पर अपने पति और कलीसिया के अगुवों के द्वारा अगुवाई करने के लिए भरोसा कर रही हैं, भले ही आप उनसे असहमत हों। यदि आप उन पर भरोसा नहीं कर सकती, तो आप यीशु पर भरोसा कर सकती हैं

6. एक पादरी क्या करता है?

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 3:1-3

परमेश्वर के लोगों का अगुवा होना एक बड़ा सौभाग्य है लेकिन साथ ही एक बड़ी जिम्मेदारी भी है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर हमसे क्या उम्मीद करता है। 1 तीमुथियुस 3:1 में पौलुस तीमुथियुस को और हमें बताता है।

"यदि कोई अध्यक्ष होने की इच्छा करता है, तो वह एक भले काम की इच्छा करता है" (3:1)। " अध्यक्ष " (यूनानी शब्द "एपिस्कोपोस" जिससे हमें 'एपिस्कोपल' मिलता है) उस व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कई शब्दों में से एक है जिसे हम आज 'पादरी' कहते हैं। "अध्यक्ष," का अनुवाद "बिशप" भी किया गया था, जो अन्यजातियों के एक समूह के अगुवा के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शीर्षक था। इसका शाब्दिक अर्थ है 'अभिभावक' और यह अन्यजातियों की कलीसिया के आत्मिक अगुवों के लिए प्रयुक्त शब्द बन गया (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:7-9; 1 पतरस 5:1-4)।

यहूदी मूल की कलिसीयाओं ने अपने आध्यात्मिक अगुवा को एक "बुजुर्ग" (यूनानी में जिसे "प्रेसुटेरोस" कहा, जिससे हमें 'प्रेस्बिटरी' मिलता है)। वह एक यहूदी आराधनालय का प्रभारी होता था। जब सिनागॉग(यहूदी आराधनालय) चर्च बन गए, तो वे अपने अगुवों के लिए इसी उपाधि का इस्तेमाल करते थे (1 पतरस 5:1-4; 1 तीमुथियुस 5:1,17,19; तीतुस 1:5-6)। शाब्दिक रूप से शब्द का अर्थ है 'कमांडिंग ऑफिसर।' एक एल्डर और एक ओवरसियर एक ही भूमिका को संदर्भित करते हैं: पादरी। बस यह वे सिर्फ विभिन्न संस्कृतियों से आए थे।

शब्द "पादरी" (यूनानी पोइमेन, शाब्दिक रूप से जिसका मतलब है 'चरवाहा') उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो भेड़ों की रक्षा करता है, उनका मार्गदर्शन करता है, उनकी अगुवाई करता है और उन्हें चराता है (इफिसियों 4:11; 1 पतरस 5:1-4)। "मिनिस्टर" इस्तेमाल किया जाने वाला चौथा शब्द है (जो यूनानी में "डायकोनोस" है, जिससे हमें 'डीकन' मिलता है)। इसका शाब्दिक है उसके लिए 'वह जो मेजों पर प्रतीक्षा करता है(वेटर)', एक नौकर को संदर्भित करता है। डीकन कलीसिया में एक कार्यालय है, लेकिन यह शब्द पादरीयों के लिए भी उपयोग किया जाता है क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक हैं (1 तीमुथियुस 4:6; 2 तीमुथियुस 4:5)।

ये सभी शब्द विश्वासियों के एक समूह के एक ही व्यक्ति, पादरी या आध्यात्मिक अगुवा (या अगुओं) को संदर्भित करते हैं। यह शब्द इस बात का वर्णन करते हैं कि एक पादरी क्या करता है। ओवरसियर/बिशप चर्च को व्यवस्थित करने और उसके संचालन की देखरेख करने के लिए पादरी की जिम्मेदारी को संदर्भित करता है। एल्डर/बजुर्ग समान है, लेकिन जबकि गैर-यहूदी विश्वासियों द्वारा अध्यक्ष शब्द का उपयोग किया जाता था, एल्डर/बजुर्ग शब्द का उपयोग मसीही लूगों और यहूदियों द्वारा उनके अगुवा के लिए किया जाता था। वह अधिकार, गरिमा और परिपक्कता वाले व्यक्ति होते थे। लोग आध्यात्मिक नेतृत्व के साथ-साथ अपने समूह के दैनिक कार्यों को करने के लिए उनकी आज्ञा को देखते थे। इनमें से किसी से भी सारे काम खुद करने की उम्मीद नहीं कीजाती थी, वे बीएस यह सुनिश्चित करने के लिए योजना बनाने थे , काम सौंपने और काम की देखरेख करने के लिए जिम्मेदार होते थे कि काम सही ढंग से किया जाता है या किया गया है। पादरीयों और कलीसिया के अगुआओं को यही करना होता है। हमें यह सब स्वयं करने की आवश्यकता नहीं है लेकिन यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह काम होता है या हो गया है।

इफिसियों 4:12-16 में पौलुस कहता है कि पादरीयों को "संतों को सेवकाई के काम के लिये तैयार करना होता है।" पौलूस कह रहा है कि हमें सब कुछ करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन हम यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार हैं कि यह सब हो जाए। परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी को अलग-अलग उपहार देता है । कोई एक व्यक्ति सब कुछ नहीं कर सकता। हमें उन उपहारों का उपयोग करना चाहिए जो परमेश्वर ने दूसरों के माध्यम से प्रदान किए हैं क्योंकि एक कलीसिया के सभी अंग एक साथ काम करते हैं, जैसे हमारे शरीर के सभी अंग एक साथ काम करते हैं (1 कुरिन्थियों 12)।

अगुवों को हमारे अगुवे, यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए अगुवाई करनी होती है। हमें दया भावना में और दूसरों की सेवा करके अगुवाई करनी है, जैसे यीशु ने किया है। एक सेवक के शीर्षक का भी यही मतलब है। एक सेवक परमेश्वर का दास है। हम उसके(परमेश्वर के) लोगों की सेवा करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम वह सब कुछ करें जो वे चाहते हैं या जिसकी वे उम्मीद करते हैं। हम वही करते हैं जो परमेश्वर चाहता है, जो लम्भी समय अविधि में उनके लिए अच्छा है। अच्छे माता-पिता वह सब कुछ नहीं करते जो उनके बच्चे चाहते हैं, वे वही करते हैं जो बच्चों के लिए सबसे अच्छा होता है भले ही बच्चा इसे समझे या पसंद न करे। हम अपने बच्चों की सेवा करते हैं, और जिन लोगों का हम अगुवाई करते हैं, जो उनके लिए सबसे अच्छा है। हम सभी बातों में परमेश्वर की आज्ञा का पालन और उस पर भरोसा करके उसकी सेवा करते हैं।

चरवाहा (पादरी) शब्द इसका सार बताता है। हम अपनी भेड़ों को खतरे से, झूठी शिक्षा से, पाप से और उन लोगों से बचाते हैं जो उन्हें नुकसान पहुँचा सकते हैं या उन्हें गुमराह कर सकते हैं। हम उन्हें विश्वास में बढ़ने और परिपक्क होने में मदद करने के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं और उनको दिशा देते हैं। हम उदाहरण से और वचन के द्वारा उनकी अगुवाई करते हैं। हम उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाकर खिलाते हैं। यह भेड़ों के चरवाहों के लिए और लोगों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है!

"यदि कोई अध्यक्ष होने की इच्छा करता है, तो वह एक भले काम की इच्छा करता है" (1 तीमुथियुस 3:1)। कलीसिया का अगुवा होना बहुत ही महान, विशेष, सम्माननीय और विशेष जिम्मेदारी है। लेकिन यह एक "कार्य" है - यह एक कार्य असाइनमेंट है जिसके लिए कार्य किये जाने की आवश्यकता होती है। परमेश्वर की सेवा से बढ़कर दूसरा कोई काम नहीं है जो एक व्यक्ति कर सकता है। लेकिन हमें इसे उसके तरीके से ही करना चाहिए।

पौलूस की सलाह: पादरीयों को अपने लोगों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देकर उनकी रक्षा करनी चाहिए और उन्हें सुसज्जित करना चाहिए।

क्या परमेश्वर कहेगा कि तुम विश्वासयोग्यता से उसकी सेवा कर रहे हो? क्या आप अपनी भेड़ों की सेवा कर रहे हैं? क्या आप उनकी रक्षा करते हैं , उनका मार्गदर्शन करते हैं, उनका नेतृत्व करते हैं और उनको खिलतें हैं ?।

<u>7. परमेश्वर एक अगुवा में क्या देखता है</u>

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 3:1-3

आज कुछ कलीसियाएँ पुरुषों को केवल इसलिए अगुवा बनने के लिए चुनती हैं क्योंकि वे आत्मविश्वासी, सफल व्यवसायी या महत्वपूर्ण, शिक्षित समुदाय के अगुवा हैं, भले ही वे एक ईश्वरीय जीवन ना जी रहे हों। जब हम केवल अविश्वासी संसार में उनकी हैसियत के कारण पुरुषों को कलीसिया का अगुवा बनाते हैं, तो कलीसिया में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इफिसुस की स्थानीय कलीसियाओं में कठिनाइयों पर योग्य अगुवों द्वारा ध्यान दिया जाना चाहिए था, इसके बजाय वे अक्सर समस्याएँ पैदा करने वाले होते थे! तीमुथियुस के सामने आने वाली अधिकांश समस्याओं को रोका जा सकता था यदि उसके अधीन सेवा करने वाले अच्छे लोग होते। परमेश्वर जिस प्रकार के अगुवों को चाहता है उन्हें खोजने में उसकी मदद करने के लिए, पौलुस उसे 1 तीमुथियुस 3 में योग्यताओं की एक सूची देता है।(इन मनको के विस्तृत वर्णन को देखने के लिए पादरीयों और अगुवों के मानको का V. पढ़े)
"अध्यक्ष को चाहिए कि वह निर्दोष, अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य, संयमी, सम्मानित, पहुनाई करने वाला, सिखाने में निपुण, पियक्कड़ न हो, हिंसक न हो परन्तु कोमल हो, झगड़ालू न हो, धन का लोभी न हो" (3) :2-3).

पौलूस कहता है कि एक पादरी ऐसा "होना है।" यह एक आदेश है, सुझाव नहीं। इफिसुस के अगुवों को इस प्रकार के व्यक्ति होना चाहिए जिसका वह वर्णन करता है। इनमें से कोई छूट नहीं है। उन्हें "होना" चाहिए, जो कि वर्तमान काल में है, उन्हें अभी संदर्भित करता है। हो सकता है कि वे अतीत में इस तरह न रहे हों, लेकिन वे विश्वास में बढ़ चुके हैं और अब सेवा कर सकते हैं। उनका अतीत नहीं है जो मायने रखता है। पौलूस, जो यह लिख रहा है, कई मसीही लोगों की यातना और उनकी मृत्यु के लिए जिम्मेदार था, लेकिन परमेश्वर ने उसका बहुत उपयोग किया। साथ ही, "होना" उनके चरित्र लक्षणों को संदर्भित करता है। मायने यह रखता है कि वे कौन हैं, यह नहीं कि वे क्या कर सकते हैं। पौलूस उपहारों, प्रतिभाओं, शिक्षा, प्रशिक्षण या कौशल की सूची नहीं देता है। वह बताता है कि वे किस तरह के होने चाहिए। परमेश्वर किसी को भी वह क्षमता दे सकता है जिसकी उन्हें आवश्यकता है, लेकिन उन्हें अपनी स्वयं की इच्छा से अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार परमेश्वर की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

उसका कहना है कि उन्हें "निंदा से ऊपर" होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि उनके वर्तमान जीवन में दोष या आलोचना का कोई कारण नहीं होना चाहिए है। गलत होने पर उन्हें माफी मांगने वाली भावना से भरे

होना चाहिए। जब वे पाप करते हैं, तो उन्हें पाप कबूल करना चाहिए। उन्हें परिपूर्ण होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन उन्हें यीशु की तरह जीने और कार्य करने का प्रयास करना चाहिए, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस सामान्य, समग्र विवरण के बाद, पौलुस विस्तार से बताता है कि निंदा से ऊपर होने का क्या अर्थ है। वह पहले शादी से शुरू करता है: "अपनी पत्नी के प्रति वफादार।" इसका मतलब है कि वह उस महिला के लिए एक ईश्वरीय पति होना चाहिए जिसके साथ वह वर्तमान में विवाहित है। इसका मतलब यह नहीं है कि अगर वह अविवाहित या विधुर है तो वह सेवा नहीं कर सकता है, इसका मतलब है कि अगर उसकी पत्नी है, तो उसे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा यीशु उसके साथ करता है। उसे उसकी जरूरतों को अपनी जरूरतों से पहले रखना चाहिए और सौम्य, विचारशील तरीके से नेतृत्व की शुरुआत करते हुए प्यार से उसकी सेवा करनी चाहिए। यदि एक पुरुष का अपनी पत्नी के साथ ईश्वरीय संबंध नहीं है, तो वह पादरी नहीं हो सकता। पतरस आगे कहता है कि यदि वह अपनी पत्नी से वैसा व्यवहार नहीं करता जैसा उसे करना चाहिए, तो उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दिया जाएगा (1 पतरस 3:7)।

फिर पौलूस इस व्यक्ति का विवरण देता है। उसे "संयमित" होना चाहिए जिसका अर्थ सभी चीजों में संयमित होना है और "स्व-नियंत्रित" का शाब्दिक अर्थ है "एक स्वस्थ दिमाग होना", जो सुविचारित निर्णय और अच्छे विकल्प बनाता है। उसे इस तरह से जीना है जिसकी दूसरे लोग सम्मान और प्रशंसा करते हैं ("आदरणीय") और ज़रूरतमंद लोगों के साथ उदारता से साझा करके आतिथ्यभाव दिखाएँ ("मेहमाननवाज")।

क्योंकि परमेश्वर के वचन की शिक्षा देना पादरीयों की एक प्रमुख जिम्मेदारी है, पौलूस इस सूची में "सिखाने में सक्षम" होने की योग्यता को भी शामिल करता है। वह कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता है और फिर उन उपहारों का उपयोग करता है जो परमेश्वर ने उसे उन सच्चाइयों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए दिए हैं।

यह वर्णन करता है कि उसे किस प्रकार का व्यक्ति होना चाहिए। इसके विपरीत यदि उसे परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करनी है तो उसके चरित्र में कुछ ऐसे गुण हैं जो उसके पास बिल्कुल नहीं होने चाहिए। सबसे पहले "नशेबाज़ी" का ज़िक्र किया गया है। बाइबल दाखमधु पीने की मनाही नहीं करती, परन्तु यह अधिक मात्रा में नहीं हो सकती है। "हिंसक नहीं बल्कि कोमल" का अर्थ है कि उसे दूसरों के प्रति विचारशील और संवेदनशील होना चाहिए और जल्दी गुस्सा करने वाला नहीं होना चाहिए। इसके अलावा, वह तर्कशील नहीं हो सकता है और जो हर काम को अपने तरीके के करना चाहता है("झगड़ालू") । वह लालची नहीं हो सकता ("पैसे का प्रेमी")।

फिर पौलूस वापस चला जाता है और अपने द्वारा बताए गए पहले चरित्र लक्षण के बारे में विस्तार से बताता है क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है। उसे "अपने परिवार का अच्छा प्रबंधक होना चाहिए", क्योंकि यदि वह अपने परिवार की देखभाल नहीं कर सकता है, तो वह कलीसिया की देखभाल करने में सक्षम नहीं होगा (3:4-5)। उसके पास एक आदर्श विवाह या पूर्ण बच्चे होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन उसे उन समस्याओं और कठिनाइयों से निपटने के लिए बाइबल के दिशा निर्देशों का पालन करने की आवश्यकता है जिनका सामना हर परिवार करता है। उसे प्यार से और धीरे से उत्पन्न होने वाली हर स्थिति के लिए समाधान की शुरुआत करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु उसके साथ करता है।

पौलुस एक चेतावनी के साथ समाप्त करता है कि एक अगुवा एक नया विश्वासी नहीं हो सकता क्योंकि शैतान उसे गर्व के साथ परीक्षा में डाल सकता है और उसे पराजित कर सकता है (3:6)। वह एक परिपक्व विश्वासी होना चाहिए जिसके पास यीशु के लिए जीने का अनुभव है और वह जानता हो कि प्रलोभनों और परीक्षणों पर विजय कैसे प्राप्त की जाए। कई पादरीयों के लिए गर्व और आत्म-केंद्रितता वास्तविक समस्याएँ बनती हैं। दुर्भाग्य से, एक अभिमानी या आत्म-केंद्रित व्यक्ति इन चीजो को अपने अंदर मौजूद नहीं देख सकता है और यदि कोई इसे इंगित करता है तो वे इसे अच्छी तरह से नहीं मानता हैं। विनम्रता में बढ़ना कठिन है, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है।

फिर पौलुस एक सामान्य कथन के साथ समाप्त करता है, "बाहर के लोगों के बीच उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए" ताकि वे उस परमेश्वर के बारे में अच्छी तरह सोच सकें जिसका वह और कलीसिया प्रतिनिधित्व करते हैं। यह "निंदा से ऊपर" के समान है, जिसके साथ उसने शुरुआत की थी और जो कुछ उसने कहा है वह उसका सारांश देता है। ये सभी लक्षण मिलकर परमेश्वर के एक सच्चे व्यक्ति का वर्णन करते हैं। वास्तव में, वे यीशु का वर्णन करते हैं, जो परमेश्वर का पूर्ण मनुष्य है। वह वही है जिसका हम प्रतिनिधित्व करते हैं और जिसके जैसा हमें बनना है।

पौलूस की सलाह: पादरीयों को अपने आसपास के लोगों के लिए यीशु का उदाहरण बनना चाहिए।
आप इन योग्यताओं की तुलना में खुद को कैसे आंकते हैं? आप किस चरित्र लक्षण में मजबूत हैं? आप किसमें कमजोर हैं? अपने कमजोर क्षेत्रों में सुधार करने के लिए आज से आप क्या कर सकते हैं? इन महत्वपूर्ण मानकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए -V. पास्टरों और अगुओं के लिए मानक देखें।

8. परमेश्वर कलीसिया के एक कार्यकर्ता में क्या देखता है

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 3:8-16

हमने पिछले खंड में देखा कि जो लोग मसीहीयों के एक समूह की अगुवाई करते हैं उन में ईश्वरीय चारित्रिक गुणों का होना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि वे यीशु के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित कर सकें। इफिसुस की कलीसिया में ऐसा नहीं था और इसके परिणामस्वरूप वहां कई समस्याएँ उत्पन्न हो गयी थी। अयोग्य अगुवे कलीसिया में त्रुटियों को ठीक करने में असमर्थ थे, और स्वयं कई समस्याओं का कारण बन रहे थे। ईश्वरीय अगुवों का होना अनिवार्य हैं। यह कलीसिया में हर प्रकार की अगुआई की भूमिका में हर एक पर लागू होता है, जिसमें अगुवों की मदद करने वाले भी शामिल हैं।

यरूशलेम की प्रारंभिक कलीसिया में प्रेरित लोगों की भौतिक आवश्यकताओं की देखभाल करने में इतने व्यस्त थे कि उनके पास बाइबल का अध्ययन करने और प्रार्थना करने का समय नहीं रहता था, इसलिए उन्होंने लोगों की भौतिक आवश्यकताओं और संपत्ति की देखभाल करने के लिए उपयाजकों को नियुक्त किया (अधिनियम 6)। पौलुस 3:8-10 में इन लोगों का वर्णन करता है: "इसी प्रकार सेवक भी आदरयोग, निष्कपट होने चाहिए , और वे ना तो पियाकड़ और न नीच कमाई के पीछे भागने वाले हों। उन्हें स्पष्ट विवेक के साथ विश्वास की गहरी सच्चाइयों को थामना चाहिए। पहले उनका परीक्षण किया जाना चाहिए; और फिर यदि उनके विरोध में कुछ न हो, तो वे उप्याज्कों के काम पर नियुक्त किये जाएँ।

कलीसिया के अगुवों के लिए ईश्वरीय विशेषताएँ (3:1-7) यही मानक सहायकों के लिए भी हैं (3:8-12)। "उसी तरह " का अर्थ है, उन्हें भी, "ईश्वरीय पुरुष" होना चाहिए। उनके पास अलग-अलग आध्यात्मिक उपहार हो सकते हैं लेकिन उन्हें यीशु के अच्छे उदाहरण भी होने चाहिए। अध्यक्ष की तरह ही , उन्हें भी

“होना हैं।” पौलूस तीमुथियुस को योग्य लोगों को रखने की आज्ञा दे रहा है जो वर्तमान समय में "सम्मान के योग्य" हैं। उन्हें भी आदरणीय होना चाहिए और उन लोगों के बीच जो उन्हें जानते हैं उनकी अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। उन्हें "ईमानदार" होना चाहिए, जिसमें कोई छल, बेईमानी, पाखंड या गलत चाल ना हो। वे ना तो "बहुत अधिक दाखरस में लिप्त" हो सकते हैं, न ही वे लालची हो सकते हैं और ना ही "बेईमानी के लाभ के पीछे" भागने वाले हो सकते हैं। उन्हें अपने सभी कार्यों में विश्वासयोग्य होना चाहिए (3:9) और आपने आप को सक्षम और भरोसे के योग्य साबित करना चाहिए (3:10)।

फिर, पौलुस एक धार्मिक पति और पिता होने के महत्व पर जोर देता है (3:12)। जो सेवा करते हैं उन्हें आदेश दिया जाता है कि वे किसी और चीज से पहले अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करें। जो लोग इन मानकों को पूरा करते हैं और ईमानदारी से अगुओं की मदद करते हैं, वे इस समय भी और हमेशा के लिए धन्य होंगे, (3:13)।

जबकि पौलूस ने अब तक कहा है वो सभ पुरुष अगुओं के लिए है, वहीं महिलाओं के लिए भी अगुओं की सहायक के रूप में सेवा करने की जगह है। ये महिला उपयाजक महिलाओं और बच्चों की सेवा कर सकती हैं, पुरुषों की तुलना में इनके अक्सर बहुत आसान और अधिक सफलतापूर्वक होते हैं । 3:12 वैसे ही स्त्रियों को भी आदर के योग्य होना चाहिए, न कि गाली बकनेवाली, पर संयमी और सब बातों में विश्वासयोग्य हों।

उन्हें भी, यीशु के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करने वाली भक्त महिलाए "बनने" की आज्ञा दी गई है। उन्हें भी पुरुषों की तरह ही "सम्मान के योग्य" होना चाहिए। वे ऐसी महिलाएँ नहीं हो सकती हैं जो गपशप करती हैं, आलोचना करती हैं या दूसरों की निंदा करती हैं ("दुर्भावनापूर्ण बात करने वाली नहीं")। इसके बजाय, उन्हें आत्म-नियंत्रित होना चाहिए, खासकर जब शराब ("संयमित") पीने की बात आती है। उन्हें दी गई ज़िम्मेदारी के कारण उन्हें "हर बात में भरोसेमंद" होना चाहिए। जब उन्हें देखा जाएगा और उनका सम्मान किया जाएगा। वे दूसरों के बारे में ऐसी बातें जानेंगी जो कोई और नहीं जानता। यदि वे परिपक्व नहीं हैं, धर्मपरायण महिलाएं नहीं हैं बल्कि ऐसी हैं जो गपशप नहीं करती हैं या दूसरों के बारे में बात करती हैं तो वे बहुत चोट और नुकसान पहुंचाने वाली साबित हो सकती हैं।

पौलूस इस पूरे विषय को शामिल करता है कि एक अगुवा या सहायक किस तरह का व्यक्ति होना चाहिए ताकि तीमुथियुस इफिसुस में नेतृत्व की समस्याओं को ठीक कर सके (3:15)। वह तीमुथियुस को यह कहकर प्रोत्साहित करता है कि वह व्यक्तिगत रूप से आना चाहता है (3:14)। पौलूस कहता है कि यह अच्छा नहीं लगेगा कि वह पहुंचे और देखें कि तीमुथियुस ने इफिसुस की स्थानीय कलीसियाओं में कुछ समस्या के क्षेत्रों को ठीक नहीं किया है। मसीह की कलीसिया के बारे में सोचने से आरम्भिक कलीसिया का एक भजन याद आता है और पौलुस उसमें से कुछ को यीशु की स्तुति करने के एक तरीके के रूप में उद्धृत करता है (3:16)।

पौलूस की सलाह: एक कलीसिया में सेवा करने के लिए परिपक्व, ईश्वरीय, वफादार मसीहीयों की तलाश करें।

"मैं ये निर्देश इसलिए लिख रहा हूं कि तुम जान जाओ कि परमेश्वर के घर में, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और सत्य का खंभा, और बुनियाद है, कैसा चालचलन होना चाहिए" (1 तीमुथियुस 3:14-15)।

यदि पौलुस आपको आपकी कलीसिया के बारे में एक पत्र लिख रहा होता, तो वह क्या कहता?

वह किन समस्याओं की ओर संकेत करता? वह आपको उनके बारे में क्या करने के लिए कहता ?

वह आपकी कलीसिया के अगुआओं और कार्यकर्ताओं के बारे में क्या कहता?

9. झूठे शिक्षक को कैसे पहचानें

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 4:1-5

जब मैं एक युवा पादरी था, एक आदमी जो एक झूठा शिक्षक था, मेरे चर्च में आया, हालाँकि मुझे इसका तब पता नहीं था कि वह एक झूठा शिक्षक था, लेकिन बाद में पता चल गया। वह बहुत मिलनसार था और सभी उसे पसंद करते थे। वह बाइबल को अच्छी तरह जानता था और एक विश्वासयोग्य मसीही जन मलूम होता था। हालांकि, ज्यादा देर नहीं हुयी कि कलीसिया में समस्याएँ आने लगीं। वो हर चीज जो वह लोगों को सिखा रहा था उसका पता लगाया जा सकता था कि वो बाइबल आधारित नहीं थी। क्योंकि वह इतना प्रभावित करने वाला व्यक्ति था कि बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया और उसके झूठे मार्गों का अनुसरण करने लगे। उसे हटाना बहुत मुश्किल हो गया था। कुछ लोग तो र्चच छोड़कर चले गए और कभी वापस नहीं आए। कई वर्षों के बाद फिर वही हुआ, अंतर केवल यह था कि इस बार वह पुरुष के बजाय एक महिला थी। परिणाम वही थे। उसके मन-मोहित व्यक्तित्व और बहुत ही आध्यात्मिक व्यवहार के कारण उसके अनुयायी बड़ने लगे, लेकिन सच यह था कि वह परमेश्वर के वचन से नहीं सिखा रही थी। इस तरह के झूठे शिक्षक कलीसिया में बहुत नुकसान पहुँचा सकते हैं, खासकर अगर अगुआ सच्चाई के लिए खड़े नहीं होते हैं और उस व्यक्ति को हटा नहीं देते हैं। मेरे लिए लोगों पर से उनका प्रभाव हटाना आसान काम नहीं था, न ही तीमुथियुस के लिए यह आसान काम था। लेकिन इस काम को किया जाना ज़रूरी है।

पौलुस ने वर्णन किया कि ईश्वरीय अगुवों और कार्यकर्ताओं को कैसा होना चाहिए। इसके बाद, उसने उन लोगों के बारे में लिखा जो अईश्वरीय हैं, जो विनाश लाने के लिए कलीसिया के अंदर से कार्य करते हैं। शैतान कलीसिया पर बाहर से आक्रमण करने की तुलना भीतर से आक्रमण करने में हमेशा अधिक सफल रहा है। हमें पता होना चाहिए कि हम परमेश्वर की भेड़ों की रक्षा कैसे करें और उन लोगों पर विजय प्राप्त कैसे करें जो उन्हें गुमराह करते हैं।

"आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि अंतिम समय में कुछ लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की सिखाई हुई बातों के पीछे चलने लगेंगे " ***(1 तीमुथियुस 4:1)। यहाँ "कुछ" का का अर्थ है " लोगों की एक विशाल संख्या।" यीशु के लौटने का समय जितना निकट आता है, विश्वास से भटकने वालों की संख्या उतनी ही अधिक होती जाती है।*** यह सिर्फ पौलूस की राय ही नहीं है, "आत्मा स्पष्ट रूप से कहता है" और इससे इनकार नहीं किया जा सकता है।

"त्यागना" यूनानी भाषा का शब्द है जिससे हमें "धर्मत्याग" शब्द मिलता है। इसका शाब्दिक अर्थ है "दूर हो जाना , बिलकुल अलग होना।" मसीही होने का दावा करने वाले कुछ लोग स्वेच्छा से बाइबल की सच्चाई से दूर हो जाएंगे और इसकी कुछ बुनियादी सच्चाइयों को अस्वीकार करने लगेंगे। लेकिन वे चर्च नहीं छोड़ेंगे या खुद को "मसीही" कहना बंद नहीं करेंगे। वे कलीसिया की संगति में रहते हैं और जिस किसी को भी गुमराह कर सकते हैं उसे गुमराह करते हैं। बाहर से होने वाले हमले आमतौर पर चर्च को मजबूत बनाते हैं क्योंकि ऐसी स्थिति में मसीही लोग विरोध के खिलाफ एक साथ उठ खड़े होते हैं। भीतर के आक्रमणों को हराना बहुत कठिन होता है। लोग धोखा खा जाते हैं और झूठ पर विश्वास करने लगते हैं। यह परमेश्वर के आत्मा से नहीं आता है। यह शैतान की ओर से आता है: "जो आत्माओं को दुष्टात्माओं

की सिखाई हुई बातों से भरमाता है ।" शैतान ने अदन की वाटिका में हव्वा के साथ सबसे पहले ऐसा किया था (उत्पत्ति 3) और आज भी वैसा ही करना जारी रखता है। वह इसका सबसे अच्छा खिलाड़ी है।

हमें आज इसके कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। कई मसीही, कलिसियाएं , यहां तक कि पूरी की पूरी मंडलीयां हैं जो इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु एक कुंवारी से पैदा हुया था और वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही है। कलीसिया के भीतर बहुत से लोग विश्वास नहीं करते कि बाइबल परमेश्वर का प्रेरित वचन है। शाश्वत दंड को खारिज कर दिया जाता है क्योंकि वे कहते हैं कि एक प्यार करने वाला परमेश्वर कभी किसी को नरक नहीं भेज सकता है। कुछ भविष्यद्वक्ता या भाविद्वाक्तायें होने का दावा करते/करती हैं और कहते हैं कि उन्हें परमेश्वर से विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। कुछ यह सिखाते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि हर कोई चंगा हो जाये और धनी हो जाये। इनके आलावा कई अन्य लोग कहते हैं कि हमें उद्धार प्राप्त करने या बनाए रखने के लिए कुछ चीज़ें तो अवश्य ही करनी होगी। वे पाप को नज़रन्दाज कर देते हैं और विधिवाद और मानव-वाद पर जोर देते हैं। यहाँ तक कि कुछ ऐसे भी हैं जो यह तक भी कहते हैं कि शारीरक सम्बधों या कुछ खाद्य पदार्थों से दूर रहना आपको अधिक आध्यात्मिक बनाता है (4:3-5)। वे एक जानकार अधिकारी होने का दावा करते हैं और आत्मविश्वास और गर्व के साथ बोलते हैं, लेकिन वे शैतान के लिए झूठ फैला रहे होते हैं। तीमुथियुस ने इन हालातों का सामना किया और हम आज करते हैं।

पौलूस इन लोगों को **" कपटी और झूठे"** कहता है। "ऐसे उपदेश झूठे कपटियों के द्वारा आते हैं, जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है" (4:2)। ***वे स्वयं को विश्वास दिला सकते हैं कि वे जो विश्वास करते हैं उसमें वे सही हैं, परन्तु ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने आत्मा की चेतावनियों के विरूद्ध अपने विवेक को मृतक कर दिया है (4:2)।***

पौलूस तीमुथियुस को याद दिला रहा है कि झूठे शिक्षक आएंगे। जैसे-जैसे यीशु की वापसी का समय निकट आएगा ऐसे लोग और भी बढ जायेंगे। बेशक वे ईमानदार दिखाई देते हैं, वे उनको धोखा देते और गुमराह करते हैं जिन्हें परमेश्वर के वचन का अच्छा ज्ञान नहीं है। उनके विरोध से मत डरो, आपने काम पर डटा रह। अनुग्रह का प्रचार कर, विधिवाद का नहीं। परमेश्वर के वचन को अच्छी तरह से जान और उसके सत्य के लिए खड़ा रह।

पौलूस की सलाह: इस तथ्य के प्रति सचेत रहें कि बहुत से लोग परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने का दावा करेंगे, लेकिन यदि वे उसके वचन के प्रति सच्चे नहीं हैं तो वे ऐसे नहीं है। उनको और उनके प्रभाव को कलीसिया से हटा देना चाहिए।

आपको झूठे शिक्षकों से कब निपटना पड़ा है?

उस वक्त क्या हुआ?

जैसे ही आपको पता चलता है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन के विपरीत कुछ सिखा रहा है, तो आपको क्या करना चाहिए?

यदि आप अनजाने में कुछ ऐसा सिखा रहे हैं जो सत्य नहीं है, तो परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको यह दिखाए।

10.आदेश दो और इन बातों को सिखाओ
पढ़ें: 1 तीमुथियुस 4:6-11

पौलूस ने अभी यह समझाया है कि झूठे शिक्षकों को कैसे पहचाना जाए। फिर उसने तीमुथियुस को बताता है कि उनके बारे में क्या किया जाए: "यदि तू भाइयों ओर बहनों को ये बातें बताएगा, तो तू मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा, और विश्वास की उन सच्चाइयों से और उस अच्छे उपदेश से, जिसका तू ने पालन किया है, तेरा पोषण होगा।" (4:6)। तीमुथियुस झूठे शिक्षकों को चुनौती देने और उन्हें दरुस्त करने के लिए जिम्मेदार था। उसे विश्वासियों को इस लिए सच्चाई सिखानी थी ताकि वे गुमराह न हों जाएँ। ऐसा करने के लिए तीमुथियुस का परमेश्वर के वचन को अच्छी तरह जानना जरूरी था। उसके लिए इसका अध्ययन करना और इसे लगातार पढ़ाना लाजमी था।

तीमुथियुस पौलूस और अन्य लोगों द्वारा सिखाया गया था कि उसने जो सीखा है उसे अपने जीवन में लागू करने और उसका अभ्यास करने की जरूरत है और आपने भय को कभी भी सेवकाई की चुनौतियों का सामना करने में रूकावट नहीं बनने देना चाहिए। उसका "पोषण विश्वास की सच्चाइयों पर " हुआ था। अब उसे दूसरों का पोषण करने की आवश्यकता थी ताकि वे ईश्वरीय मसीही बनने के साथ साथ अगुवे भी बन सकें। वह "अच्छी शिक्षा पर" चलता था। अब उसके लिए, दूसरों को पालन कराने के लिए सटीक, ईश्वरीय शिक्षा प्रदान करना लाज़मी था। हमारे लिए भी यह सच है। हमें दूसरों ने सिखाया और प्रशिक्षित किया है। अब हमें उन्ही बातों को दूसरे मसीहियों तक पहुंचाना चाहिए।

सत्य की शिक्षा दें ताकि नकली सच न फैले। नकली का पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका है किसी बात को विस्तार से जानना कि इसका मूल कैसा है, फिर आप देख सकते हैं कि नकली कहां पर रासते से भटकता है। नकली पैसों में , कला में या गहनों में तो यह सच है। ऐसे नकलीपन का परमेश्वर के सत्य के साथ होना भी झूठ नहीं है। जो कुछ पवित्रशास्त्र द्वारा नहीं सिखाया जाता है उसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए (4:7अ)।

"ईश्वरहीन मिथक" और "बूढी पत्नियों की कहानियाँ" उन लोकप्रिय मान्यताओं को संदर्भित करती हैं जो बाइबल द्वारा नहीं सिखाई जाती हैं। वे उनके लिए जो बेहतर नहीं जानते हैं, दिलचस्प हो सकते हैं और उन लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। इन बातों पर बहस और विचार विमर्श हो सकता है, लेकिन ये सच नहीं हो सकते हैं। कुछ लोग ऐसे गुप्त सत्यों की तलाश करना पसंद करते हैं जिन्हें दूसरों ने अभी तक खोजा नहीं होता है। 2 तीमुथियुस 4:2 में पौलुस इसे "कानों की खुजली" कहता है: जो कुछ नया और अलग सुनना चाहते हैं। वे आध्यात्मिक परिपक्वता के लिए एक शॉर्टकट/छोटे मार्ग की तलाश में रहते हैं, बिना सीखे और विकसित हुए जीवन में त्वरित विजय पाने का एक आसान तरीका ढूँढ़ते रहते हैं। वे परमेश्वर के वचनों की सच्चाई से ऊब चुके होते हैं और कुछ नया और अलग पाना चाहते हैं।

परमेश्वर के वचन का सही और अच्छी तरह से अध्ययन करने के लिए और सिखाने के लिए हर किसी के लिए आत्म-अनुशासन की आवश्यकता होती है। एक एथलीट में अपने शरीर को प्रशिक्षित करने की एक इच्छा शक्ति होनी चाहिए (4:7ख)। हमारे शरीर को जितना हो सके स्वस्थ बनाने के लिए शारीरिक प्रशिक्षण अच्छा है, लेकिन हमारे दिल और दिमाग के लिए आध्यात्मिक प्रशिक्षण कहीं बढ़कर है (4:8)। यह केवल एक सुझाव नहीं है; यह सभी मसीहीओं (4:11) की एक आवश्यकता है। "आदेश दो और इन बातों को सिखाओ" (4:11)। यदि लोग बाइबल को जानेंगे, तो वे त्रुटि को पहचानने और उससे बचने में सक्षम होंगे। यदि वे सत्य को नहीं जानते हैं, तो वे उन सभी झूठों के प्रति खली होंगे जो शत्रु फैलाते हैं।

तीमुथियुस एक सेवक (“डाइकोनोस” सेवक) था, परन्तु पौलुस ने कहा कि उसे एक “अच्छा” सेवक बनने की आवश्यकता है। कोई भी पादरी, कलीसिया का अगुवा या कलीसिया में कार्यकर्ता हो सकता है। लेकिन एक "अच्छा" होना बहुत मायने रखता है। परमेश्वर ने हमें जो ज़िम्मेदारी दी है, उसे पूरा करने में हमें प्रभावशाली होना चाहिए। आप एक पादरी या एक अगुवा हो सकते हैं, लेकिन क्या परमेश्वर आपको "अच्छा " व्यक्ति कह सकेगा ?

पौलूस की सलाह: परमेश्वर के वचन को विस्तार से सीखना और दूसरों को इसकी सच्चाई सिखाना बहुत महत्वपूर्ण है।

इस पर विचार करें कि आपको सेवकाई के लिए किसने सिखाया और प्रशिक्षित किया है ? उनके लिए परमेश्वर का शुक्र करें। आप किसे अनुशासित कर रहें है और किसे परामर्श दे रहे हैं?

क्या आप परमेश्वर के वचन के विद्यार्थी हैं? क्या अब आप इसे कुछ महीने पहले की तुलना में बेहतर जानते हैं? क्या आपको इसे जानने और अपने जीवन में लागू करने की गंबीर इच्छा है?

क्या आप इसे दूसरों को सिखाने में विश्वासयोग्य हैं ताकि वे झूठी शिक्षा से गुमराह न हों जाएँ?

क्या परमेश्वर कहेगा कि तुम एक अच्छे पास्टर या कलीसिया के अच्छे अगुआ हो? ईमानदारी से उसकी सेवा करने में आपके लिए सबसे कठिन संघर्ष भरा क्या है?

11. आज पादरीयों को पौलुस की आज्ञा

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 4:12-16

यदि आज पौलूस को पादरीयों के सम्मेलन में बोलना होता, तो वह हमें क्या बताता ? वह क्या सलाह देता ? इसको जानना बहुत मददगार साबित होगा। हम इसका अध्ययन कर सकते हैं कि उसने पासबानी के बारे में तीमुथियुस को क्या लिखा। वह शायद आज हमें भी यही बातें बताता। पौलुस ने तीमुथियुस को एक ईश्वरीय अगुवे के लक्षण बताए (4:1-13) और उसे झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी दी (4:1-5)। उसने तीमुथियुस को परमेश्वर के वचन की शिक्षा और प्रचार करने की आज्ञा भी दी (4:6-11)। फिर पौलुस उन सब बातों को संक्षेप में लिखता है और उनका निष्कर्ष निकालता है जो उसने तीमुथियुस को झूठे शिक्षकों से, जो उनके बीच उत्पन्न हुए थे, लोगों को बचाने के लिए जो कुछ करने को कहा था। उसने उसको 8 आज्ञाएं दीं, जो हमारे लिए भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

1. क्योंकि तुम युवा हो, कोई भी तुझे नीच ना जाने। क्योंकि तीमुथियुस अस्वीकृति और आलोचना से डरता था, वह उन लोगों के सामने खड़ा नहीं होता था जो उसका विरोध करते थे। जब हम परमेश्वर के लिए बोलते हैं तो हमारे पास परमेश्वर का अधिकार होता है, इसलिए हमें डरने की कोई बात नहीं है। अपनी आयु, आकार, शिक्षा या धन/आय जैसे किसी भी कारण से कोई तुझे तुश ना जाने। यीशु ने तुम्हे सेवा करने के लिए बुलाया है और यदि वह आपके पीछे खड़ा है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरा कोई तुम्हारे बारे क्या सोचता है।

2. लेकिन विश्वासियों के लिए आपने बोल-चाल में, जीवन में, प्रेम में, विश्वास में और पवित्रता में एक उदाहरण स्थापित कर (4:12ख) दूसरे क्या सोचते हैं, इसकी चिंता न करे, बस परमेश्वर के लिए ईमानदारी से जिओ। जिससे दूसरों के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित हो जाये।

3. जब तक मैं न आऊं, तब तक अपने आप को, पवित्रशास्त्र को सार्वजनिक रूप में पढने में , उपदेश और शिक्षा देने में, लगाओ (4:13)। "स्वयं का समर्पण कर" का अर्थ है कि यह एक पादरी या अगुवा की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी और सर्वोच्च प्राथमिकता है। जब भी हम अपने लोगों से बात करते हैं तो हमारे लिए परमेश्वर के वचन को जानना, सिखाना और लागू करना जरूरी है। यही हमारी भी प्राथमिकता होनी चाहिए।

4. अपने उस उपहार से मुंह न मोड़ना, जो तुझे भविष्यद्वाणी के द्वारा उस समय दिया गया, जब पुरनियों ने तुझ पर हाथ रखे थे (4:14)। परमेश्वर ने प्रत्येक पादरी को अलग-अलग रूप में उपहार दिया है। हममें से कोई भी दुसरे जैसे नहीं हैं। इसलिए खुद की तुलना दूसरों से न करें और न ही किसी और की तरह बनने की कोशिश करें। यह सिर्फ मन में निराशा ही लाता है। ईश्वर ने आपको जैसा बनाया है, वैसे ही बने रहें और उसके द्वारा दिए गए उपहारों का उपयोग करें।

5. इन मामलों में मेहनती बनो (4:15 क)। "मेहनती बनने " का अर्थ है, परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और सिखाने में और अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करने में गहराई से सतर्क रहना।

6. अपने आप को पूरी तरह से उनके लिए दे दो, ताकि हर कोई तुम्हारी प्रगति देख सके (4:15ख)। उन क्षेत्रों में उपदेश देना, सिखाना और सेवकाई करना जिसे परमेश्वर ने तुम्हारी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाने का तुम्हे उपहार दिया है। जैसे ही वे तुम्हारीं वृद्धि देखेंगे, इस से दूसरों को प्रोत्साहित किया जाएगा। जो दूसरों को भी अनुसरण के लिए एक उदाहरण स्थापित करेगा।

7. अपने जीवन और सिद्धांतों को करीबी से परखें (4:16क)। परमेश्वर के वचन को जानना बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन अगर यह सिर्फ दिमागी ज्ञान है और हमारे जीने के तरीके को प्रभावित नहीं करता है, तो इसका मतलब कुछ तो जरूर गलत है। प्रत्येक दिन प्रार्थना करने, स्तुति करने, आराधना करने और मनन करने में समय व्यतीत करें। केवल ज्ञान में ही मत बढ़ो, परमेश्वर के साथ अपने संबंध में भी बढ़ो। लोग परखने के लिए यह देखेंगे कि तुम्हारा चाल-चलन कैसा है, यह देखने के लिए कि क्या तुम्हारा रहन सहन तुम्हारी बातों से मेल खाता है!

8. उन पर सथिर रह, क्योंकि यदि तू ऐसा करेगा, तो तू अपने आप को और अपने सुननेवालों का उद्धार करेगा (4:16ख)। जब हालात कठिन हो जाते हैं और हम निराश हो जाते हैं तो बने रहने के लिए दृढ़ता जरूरी होती है। एक साथी, माता-पिता या कलीसिया का अगुवा बनना आसान काम नहीं है। तीमुथियुस छोड़ना चाहता था लेकिन पौलूस ने कहता था कि उसे दृढ़ रहना चाहिए, और छोड़ने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। हमें भी अपने जीवन और सेवकाई में आगे बढ़ते रहना चाहिए चाहे हम कितनी भी कठिनाइयों या परीक्षाओं का सामना क्यों न करें।

यदि पौलूस को आज पादरीयों के सम्मेलन की अगुवाई करता तो वह जरूर इन बातों का आदेश पादरीयों को देता।

पौलूस की सलाह: एक पादरी को ईमानदारी और सच्चाई से यीशु की सेवा करनी चाहिए, चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न हों।

इनमें से कौन सा आदेश आप पर सबसे अधिक लागू होता है? आपके लिए किस बात का अनुसरण करना सबसे कठिन है? क्यों? उन्हें अपने जीवन में बेहतर ढंग से लागू करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

क्या आप जानते हैं कि आपके आध्यात्मिक उपहार क्या हैं? क्या आप उनका उपयोग कर रहे हैं, या क्या आप अपना अधिकांश समय उन चीजों को करने में लगाते हैं जिनमें आप अधिक कौशिल नहीं रखते हैं?

12. अपनी भेड़ों के साथ कैसा व्यवहार करें

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 5:1-16

मैंने एक बार एक पादरी को यह कहते हुए सुना कि कलीसिया में एक पादरी बनना आसान होता यदि यह लोगों के लिए न होता तो। यह बिल्कुल सच है। पासबानी करने का सबसे कठिन हिस्सा होता है लोगों के घमंड, आत्म-केंद्रितता, हठ, विद्रोह और पाप के साथ निपटना है। मुझे यकीन है कि परमेश्वर हमारे बारे में भी यही कहता होगा ! मुझे बाइबल का अध्ययन करना और सिखाना/प्रचार करना अच्छा लगता है, लेकिन मुश्किल लोगों की सेवा करना एक वास्तविक चुनौती हो सकती है। लोग आलोचनात्मक, असभ्य, माँग करने वाले और असंवेदनशील हो सकते हैं।

तीमुथियुस को भी विद्रोही और परेशान करने वाले लोगों से कठिनाई हो रही थी इसलिए तो पौलुस ने उसे लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना है इस की सलाह दी। "बूढ़े को कठोरता से न डांटना, परन्तु उसे यह समझकर कि वह तेरा पिता है समझाना। पूरी पवित्रता से छोटों को भाई, बूढ़ी स्त्रियों को माता, और जवान स्त्रियों को बहन जानकर समझाना" (1 तीमुथियुस 5:1-2)। पौलूस की सलाह सरल है: सभी के साथ परिवार की तरह व्यवहार करें। अपने से बड़े लोगों के प्रति आदरपूर्ण और दयालु रहें, भले ही आप उनके जीवन में पाप का सुधार रहे हों। उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप अपने माता-पिता से करते हैं। जो छोटे हैं, हमें उनके साथ नम्रता और आदर के साथ व्यवहार करना चाहिए, जैसा कि हम एक भाई या बहन से करते हैं जिसे हम प्यार करते हैं।

फिर पौलूस उस स्थिति पर ध्यान केंद्रित करता है जिसका सामना तीमुथियुस इफिसुस में कर रहा था। कलीसिया विधवाओं को भोजन और वस्त्र देकर सहायता करती थी , परन्तु कौन सी विधवाएँ सहायता के योग्य थीं? जब मुफ्त सहायता और भोजन प्रदान किया जाता है, तो कुछ लोग दावा करेंगे कि उन्हें ज़रूरत है जबकि वास्तव में होती नहीं है। पौलूस कहता था कि कुछ मानक हैं जो एक विधवा को आर्थिक रूप से सहायता पाने के लिए पूरी होनी चाहिए (5:3-10)। उनके पास उनकी सहायता करने के लिए परिवार का कोई जन नहीं होना चाहिए (5:4), क्योंकि: "जो कोई अपने रिश्तेदारों और विशेष रूप से अपने परिवार के लिए प्रदान नहीं करता है, वह विश्वास से फिर गया है और एक अविश्वासी से भी बुरा है" (5:8)। यह पहली शर्त है और इसे तीन बार दोहराया गया है, यह बहुत महत्वपूर्ण है (5:4, 8, 16)। ऐसे कड़े शब्द यह दिखाते हैं कि परिवारों के लिए एक-दूसरे की देखभाल करना कितना आवश्यक है और यह मान कर ना चले कि कलीसिया उनके लिए यह सब करेगी। फिर भी अक्सर रिश्तेदार लोग यह उम्मीद करते हैं कि यह सब कलीसिया प्रदान करेगी ताकि उन्हें ऐसा न करना पड़े। तीमुथियुस को अपने लोगों को यह सिखाना था कि उनके परिवार के प्रति उनकी जिम्मेदारी उतनी ही है जितनी की हमारी है।

कलीसिया द्वारा सहायता पाने के लिए विधवाओं के लिए अन्य मानक भी हैं जिनको पूरा होना चाहिए। उनका ईश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध होना चाहिए (5:5), उन्हें आत्म-केंद्रित जीवन नहीं जीना चाहिए (5:6) और जीविका कमाने में असमर्थ होना चाहिए और वे 60 वर्ष से अधिक आयु की हों (5:9अ)। शादी के

समय वह एक वफादार साथी रही होनी चाहिए थी (5:9ख), एक ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी (5:10), अपने बच्चों के लिए एक अच्छी माँ रही हुयी थी (5:10) और अजनबियों की मेहमाननवाजी करती थी (5:10))। अन्य मसीहीयों के साथ-साथ किसी भी जरूरतमंद की मदद करना (5:10) और जीवन की पवित्रता के प्रति समर्पित रहे होना (5:10) भी आवश्यक है। एक कलीसिया किसे आर्थिक रूप से मदद करती है, इस पर सीमाएँ निर्धारित की जानी चाहिए नहीं तो हर कोई मुफ्त पैसे के लिए आएगा और उन लोगों के लिए पर्याप्त पैसा ही नहीं होगा जो वास्तव में इसके लायक हैं और जिन्हें ईसकी आवश्यकता है। हमें आज भी परमेश्वर द्वारा दिए गए संसाधनों के प्रति एक अच्छा भण्डारी होना चाहिए। कभी-कभी किसी ऐसे व्यक्ति को दूर करना कठिन हो सकता है जो हमारे बारे में दूसरों से शिकायत कर सकता है या मांग कर सकता है, लेकिन हमें इस बात में सावधान रहना चाहिए कि हम परमेश्वर के धन का उपयोग कैसे करते हैं।

ज़रूरतमंद वृद्ध विधवाओं की मदद करने के बारे में बात करने के बाद, पौलुस फिर बात करता है कि युवा विधवाओं के बारे में क्या करना चाहिए (5:11-15)। क्या उन्हें भी आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए? पौलूस का कहना है कि उन्हें पैसा नहीं दिया जाना चाहिए क्योंकि अगर वे काम नहीं करती हैं, तो हो सकता है कि वे अपने सभी खाली समय का उपयोग निर्बुद्ध रूप से करने लगे (5:13)। हो सकता है कि वे पुरुषों के साथ आपने संबंध और यौन इच्छाओं को परमेश्वर के सामने रखने लगे (5:11)। हो सकता है कि वे अईश्वरीय लोगों के साथ जुड़ने लगे, अपने समय का दुरुपयोग करने लगें हैं, गपशप और चुगली करने लग जाएँ और अपना जीवन बर्बाद कर बैठें (5:13)।

यदि वे जो स्वयं का भरण-पोषण कर सकती हैं, उन्हें ऐसा करना चाहिए कि वे अपने स्वयं के जीवन की जिम्मेदारी लें, अपने स्वयं के परिवार के साथ बसें और आध्यात्मिक परिपक्वता तक बढ़ें (5:14)।

संक्षेप में, पौलूस कहता है कि हमें दूसरों के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करना है, जैसा कि एक करीबी परिवार के सदस्य के साथ जिसे हम प्यार करते हैं। सुनहरा नियम यहां लागू होता है: दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ व्यवहार करें (मत्ती 7:12)। हमें बलिदानी रूप से उन लोगों की मदद करनी है जो वास्तव में जरूरतमंद हैं। लेकिन हमें उनका समर्थन नहीं करना है जो खुद की मदद कर सकते हैं या जिनके पास परिवार है जिन्हें ऐसी स्थिति में उनकी मदद करनी चाहिए। यदि सरकारी सहायता उपलब्ध है तो कलीसिया के पैसे के बजाये उसका उपयोग किया जाना चाहिए। ऐसा ना करने से परमेश्वर के संसाधनों की बर्बादी होती है और वास्तव में उनकी मदद नहीं होती है। यह दूसरों को उनके ईश्वर प्रदत्त कर्तव्य करने के योग्य नहीं रहने देता है। हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि हम जो करते हैं वह वास्तव में उनकी मदद करता है और न केवल उन्हें उनकी वर्तमान स्थिति में बने रहने में सक्षम बनाता है।

पौलूस की सलाह: दूसरों के साथ सम्मान से पेश आओ। उनकी मदद करें जिन्हें वास्तव में मदद की जरूरत है लेकिन दूसरों के लिए वह काम न करें जो उन्हें अपने लिए खुद करना चाहिए।

क्या आप अपने परिवार और कलीसिया में इन दिशानिर्देशों का पालन कर रहे हैं? क्या तीमुथियुस की तरह आपको लोगों के साथ व्यवहार करने या ज़रूरतमंदों की सहायता करने के तरीके में कुछ बदलाव करने की ज़रूरत है?

हम लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करने के लिए जिम्मेदार हैं जैसा यीशु ने उनके साथ किया है , भले ही यह आसान न हो। उनसे धैर्य, प्रेम, ज्ञान, करुणा और दया के लिए पूछें जब आप दूसरों के साथ बातचीत करते हैं, विशेष रूप से ऐसे लोग जिनके साथ मिलकर चलना मुश्किल होता है।

13. ईश्वरीय पादरीयों को चुनना और उनको भुगतान करना

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 5:17-25

1 तीमुथियुस 5 में पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश देताथा कि लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना है। वह जरूरतमंद विधवाओं के लिए आर्थिक सहायता की बात करता था। इससे पादरीयों को आर्थिक रूप से सहायता देने के प्रशन सामने आने लगे। क्या उन्हें कलीसिया से पैसा लेने के बजाय अपने वेतन के लिए खुद काम करना चाहिए? आखिरकार, क्या पौलूस ने एक तंबू बनाने वाले के रूप में आपने आप की खुद सहायता नहीं की थी ? 1 तीमुथियुस 5:17 में पौलुस ने तीमुथियुस को ठीक वही बताया जो वह एक पादरी के बारे में सोचता था: " वे प्राचीन जो कलीसिया का अच्छा संचालन करते हैं, विशेष करके वे जिनका काम केवल प्रचार करना और सिखाना है, वे दो गुने आदर के योग्य हैं।"

"प्राचीन" आराधनालय के एक अगुवा के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला यहूदी शब्द था, जैसा कि " निगेबान " एक गैर-यहूदी अगुवा के लिए इस्तेमाल किया गया था। वे दोनों उस व्यक्ति का उल्लेख करते हैं जिसे हम "पादरी" कहते हैं। पौलूस कहता है कि इन पुरुषों की दो मुख्य जिम्मेदारियां हैं। सबसे पहले, उन्हें "कलीसिया के मामलों को निर्देशित करना" होता था। उन्हें सब कुछ स्वयं नहीं करना होता था, लेकिन उन्हें यह देखना होता था कि यह काम हो गया है। एक आराधनालय के अगुवा के रूप में वे एक स्कूल के प्रधानाचार्य की तरह होते थे। इफिसियों 4:12-13 में पौलुस कहता है कि पास्टरों को "परमेश्‍वर के लोगों को सेवा के कामों के लिए तैयार करना होता है।" पादरी सारे काम खुद नहीं करते; वे दूसरों को सेवकाई और सेवा करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

पादरीयों की दूसरी जिम्मेदारी भी होती है "उपदेश देना और सिखाना"। चरवाहों का काम है अपनी भेड़ों को चराना नहीं तो वे परिपक्व और विकसित नहीं होंगी। यही काम एक पादरी का भी है। बाइबल की शिक्षा देना वह तरीका है जिससे हम दूसरों को सेवा करने के लिए तैयार करते हैं (इफिसियों 4:12-13)। हम एक कलीसिया का नेतृत्व करने की अन्य सभी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों में इतने व्यस्त हो सकते हैं कि हम बाइबल का अध्ययन करने और उसके वचन को सिखाने के लिए अच्छे संदेशों को विकसित करने की लापरवाही करने लागतें हैं। यह बहुत गलत बात है (प्रेरितों के काम 6:4)।

पादरी जो अपनी कलीसिया को निर्देशित करते हैं और अपने लोगों को खिलाते हैं, वे "दो गुने सम्मान के हकदार हैं।" एक पादरी उन लोगों से मान और सम्मान प्राप्त करता है जिनकी वह सेवा करता है। उसे आर्थिक सहायता भी मिलती है, इसलिए उसके पास अध्ययन करने , प्रार्थना करने और सेवा करने का समय होता है। यदि वह वेतन के लिए काम करने लगता है, तो उसके पास सेवा करने के लिए बहुत कम समय रहता है। पादरी आर्थिक सहायता के उतने ही हकदार हैं जितने वे मान और सम्मान के हैं। हम कैसे जान सकते हैं कि पौलूस यहाँ एक पादरी को भुगतान करने के बारे में ही बात कर रहा है? अगली आयत पढ़ें।

"के लिए" का अर्थ है कि जो उसने अभी कहा वह उसका प्रमाण दे रहा है। उसका प्रमाण वही है जो "पवित्रशास्त्र कहता है" (5:18)। यह साबित करने के लिए कि लोगों को पादरियों को भुगतान करना चाहिए : वह पुराने नियम के दो अंशों को उद्‌धृत करता है, व्यवस्थाविवरण 25:4 और 24:15। पादरियों को न केवल जीवित रहने और सेवा करने के लिए धन की आवश्यकता होती है, बल्कि इससे लोगों को सेवकाई में योगदान देने के लिए साँझा करना और त्याग करना सीखना चाहिए। परमेश्वर अपने लोगों को अतिरिक्त धन देता है ताकि उनके पास अपने पादरियों को देने के लिए कुछ हो, लेकिन अक्सर अपने लालच में वे यह सब अपने लिए रखना चाहते हैं। जो अच्छी तरह से पासबानी(पादरी का काम) करते हैं

उन्हें सम्मान और सहायता दी जानी चाहिए। लेकिन, क्या होगा, अगर एक पादरी अच्छी तरह से सेवा नहीं कर रहा है और लोग उसके बारे में शिकायत करते हैं? तब क्या?

जब किसी पादरी की आलोचना होती है, तो इसे 2 या अधिक लोगों द्वारा सिद्ध किया जाना चाहिए (5:19)। यदि कही गई बातों में सच्चाई है, तो आपत्तिजनक अगुवे को सुधारा जाना चाहिए (5:20)। यदि पाप सार्वजनिक रूप से ज्ञात था, तो सुधार और पश्चाताप भी सार्वजनिक तौर पर ही होना चाहिए। एक पादरी के खिलाफ आरोपों का मूल्यांकन करते समय सचा और निष्पक्ष होना महत्वपूर्ण है। उसके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा कि आप चाहते हैं कि उसका उपचार किया जाए।

पादरियों के साथ इन समस्याओं में से बहुत सारी समस्याओं को यह सुनिश्चित करके हल किया जा सकता है कि जो पुरुष पादरी बनने के लिए चुने गए हैं वे ईश्वरीय और परिपक्व पुरुष हैं (5:22, 24-25)। किसी युवा को, जो दिखाता है किवह योग्य है, पासबानी करने के लिए, अभिषेक करने में जल्दबाजी न करें (5:22)। उन्हें परिपक्व होने का समय दें। सुनिश्चित करें कि आप उन्हें अच्छी तरह से जानते हैं और साथ साथ उनके जीवन पर ध्यान भी दें (5:24-25)। यदि आप अयोग्य पुरुषों को जिम्मेदारी के स्थान पर रखते हैं, तो यह आंशिक रूप से आपकी गलती होगी जब बातें बिगड़ने लगती हैं।

यह सब तीमुथियुस के लिए बहुत कठिन है जो टकराव और आलोचना से डरता है। तनाव और चिंता इतनी बुरी है कि वह छोड़ना चाहता है। यह उसके स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है, इसलिए पौलुस उसे सलाह देता है कि वह अपने पेट के लिए थोड़ी सी दाखरस पी लिया करे (5:23)। पानी दूषत था और थोड़ी सी दाखरस मदद कर सकती थी। दाखरस में अल्कोहल की मात्रा तब बहुत कम होती थी, इसलिए थोड़ी सी मात्रा उसके लिए फायदेमंद साबित हो सकती थी। हालांकि इससे वह सिर्फ लक्षणों का इलाज कर रहा था। तीमुथियुस को वास्तव में स्वतंत्र होने के लिए अपने डर का सामना करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता थी, और हमें भी ऐसा ही करना हैं।

इसलिए, हम देखते हैं कि वे पादरी जो अपनी कलीसिया को निर्देशित करते हैं और प्रचार कार्य करते हैं और अच्छी शिक्षा देते हैं उन्हें सम्मान के साथ-साथ वेतन भी दिया जाना चाहिए ताकि वे जीवित रह सकें। हमें पादरियों की आलोचना तब तक नहीं सुननी चाहिए जब तक कि यह कम से कम दो लोगों द्वारा सिद्ध न हो जाए, लेकिन यदि यह सच है, तो हमें कोमल, प्रेमपूर्ण तरीके से त्रुटियों को सुधारना चाहिए। इनमें से कई समस्याओं को रोकने के लिए, सुनिश्चित करें कि जिन्हें आप अधिकार के पद पर रखते हैं वे ईश्वरीय और परिपक्व पुरुष हैं।

पौलूस की सलाह: जो लोग एक पादरी द्वारा सेवा किये जाते हैं उन्हें अपने पादरी के लिए सहायता प्रदान करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए ताकि वह (उनका पादरी) अध्ययन करने , प्रार्थना करने और सेवा करने में सक्षम हो सके।

क्या आप अपने लोगों को सिखाते हैं कि उनके लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे आपको उनके जीवन स्तर के बराबर रहने योग्य वेतन दें?

क्या आप कलीसिया के अगुवों के साथ समस्याओं का समाधान उस तरह से करते हैं जैसे पौलुस तीमुथियुस से सिखाता है? आप सुधार करने के लिए क्या कर सकते हैं?

सेवकाई का कौन सा भाग आप में तनाव और चिंता का कारण बनता है? आप इसे कैसे संभालते हैं?

14. झूठे शिक्षकों को कैसे पहचानें
पढ़ें: 1 तीमुथियुस 6:1-5

बहुत लोग कहते हैं कि बूढ़े लोग आपने आप को दोहराते रहते हैं और एक ही बात को बार-बार कहते हैं। पौलूस अपने जीवन के अंतिम वर्षों में है जब वह 1 तीमुथियुस लिखता है, और वह भी एक ही बात के बारे में 3 बार लिखता है, लेकिन ऐसा इसलिए नहीं था कि वह भूल गया था कि वह पहले ही इसके बारे में बात कर चुका था। ऐसा इसलिए था क्योंकि यह इतना महत्वपूर्ण विषय था और तीमुथियुस को वास्तव में इफिसुस में घरेलू-कलीसियाओं को स्वस्थ, विकास करती कलीसीआए होने के लिए, इस विषय को ठीक करने की आवश्यकता थी। जिस विषय को वह बार-बार उठाता है वो थी, झूठे शिक्षकों और शिक्षाओं की समस्या (1:4-17;4:1-5; 6:1-5)।

सबसे पहले, पौलुस मसीही मालिकों और उनके मसीही दासों के बीच की समस्या को सुलझाता है (6:1-2)। दासों को अपने स्वामी की दया का लाभ नहीं उठाना चाहिए क्योंकि यह एक बुरा उदाहरण बन के रह जायेगा और मसीह इससे को कोई महिमा नहीं देगा। मसीही कर्मचारियों के लिए भी यही सच है। उन्हें सबसे अच्छे कार्यकर्ता होना चाहिए और अपने मालिक की करुणा का लाभ नहीं उठाना चाहिए। उन्हें हर चीज में अपननी सर्वश्रेष्ठ सेवा देनी चाहिए।

इसे निपटने के बाद, पौलूस फिर से अपने दिमाग में इस विषय की ओर मुड़ता है जब वह इफिसुस में होने वाली परेशानियों के बारे में सोचता है: वे लोग कुछ ऐसा सिखाते हैं, जो पौलूस की शिक्षा और जो बाइबल के विपरीत है (6:3)। इन लोगों को कलीसिया में शिक्षण देने या सेवा करने की अनुमति नहीं होनी चाहिए । ऐसा केवल उनकी गलत बातों के कारण नहीं है, बल्कि झूठे लोगों के चरित्र के कारण भी होना चाहिए।

बाहरी रूप से ये लोग ईश्वरीय और मित्रता स्वभाव के से प्रतीत हो सकते हैं, ये लोकप्रिय और प्रभावशाली हो सकते हैं। बहुत से अन्य लोग उनका अनुसरण करना शुरू कर सकते हैं, परन्तु भीतर वे पाप और छल से भरे हुए होते हैं (6:4-5)। पौलूस का कहना है कि वे "घमंडी" हैं, घमंड और आत्म-केंद्रितता से अंधे हो चुके हैं। वे दूसरों से अधिक जानने का दावा कर सकते हैं, परन्तु वास्तव में, वे "कुछ नहीं समझते" क्योंकि वे परमेश्वर के सत्य से अज्ञानी हैं। वे बहस करना पसंद करते हैं क्योंकि उन्हें "विवादों और शब्दों के बारे में झगड़ों में अधिक रुचि रखते है।" उन्हें छोटी-छोटी, महत्वहीन बातों के बारे में लंबे वाद विवादों में रहना अच्छा लगता है। वे "ईर्ष्या" से भरे हुए होते हैं - वे अन्य अगुओं से ईर्ष्या करते हैं और अपने लिए लोगों का ध्यान आकर्षण चाहतें हैं। वे दूसरों के साथ मिलकर नहीं चलते और उनमें "संघर्ष" होता है। जीभ के पाप आम हैं। वे "दुर्भावनापूर्ण बातों" के लिए जाने जाते हैं, वे आलोचना और गपशप करते हैं, वे दूसरों को नीचा दिखाते हैं और उनका न्याय करते हैं।

ऐसा करने से "लोगों के बीच लगातार मनमुटाव" होता है। उनकी शिक्षाएँ विश्वासियों के बीच फूट और कलह ले आती हैं। क्योंकि उनका " दिमाग भ्रष्ट " है, वे बातों को/हालातों को बिगाड़ देते हैं और स्पष्ट रूप से नहीं सोचते हैं। एक समय वह सत्य का पालन करते थे लेकिन झूठ पर विश्वास करने और आपने आप को असत्य में उतरने की अनुमति देकर वे "सत्य को खो बैठे" हैं । इसके अलावा, वे लालची हो जाते हैं और सेवकाई से मुनाफ़ा कमाना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि "धार्मिकता वित्तीय लाभ का साधन है।" वे जीवन में आगे बढ़ने के लिए मसीही धर्म का प्रयोग करते हैं। वे दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं और आर्थिक रूप से आगे बढ़ने के लिए अपने पद का उपयोग करते हैं।

यीशु ने भी इन लोगों के बारे में चेतावनी देता था: **"झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो। वे भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अंदर में वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं" (मत्ती 7:15)।** कुछ सच्चे विश्वासी भी हो सकते हैं जिन्होंने स्वयं को भटकने दिया है और सच्चाई से दूर हो गए हैं, जैसे बिलाम (गिनती 22-24)। अन्य लोग विश्वासी प्रतीत हो सकते हैं, परन्तु सत्य के बचाने वाले ज्ञान तक कभी नहीं पहुँचे, जैसे कि कठोर भूमि पर गिरा हुआ बीज (मत्ती 13:1-23)। इस प्रकार, वे मसीही धर्म से इनकार तो नहीं करते हैं लेकिन जो हम मानते हैं उसके महत्वपूर्ण हिस्सों को बड़ी चतुराई से बदल देते हैं। त्रुटि बढ़ती है और फैलती है और अंततः बहुत बड़ी हानि होती है। वे शैतान के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं क्योंकि वह एक धोखेबाज और झूठा है (यूहन्ना 8:44)।

यदि पौलुस इसे इतनी भयानक समस्या के रूप में देखता है, तो हमें भी इसे ऐसा ही देखना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन को अच्छी तरह से जानना चाहिए ताकि हम हर त्रुटि को देख/पहचान सकें। दूसरी बात फिर हमारे पास इसका सामना करने और इसे परमेश्वर के सत्य से बदलने का साहस होना चाहिए। तीमुथियुस ऐसा नहीं कर रहा था और चीजें टूट रही थीं। आज भी यही स्थिति होगी यदि हम अपनी कलीसियाओं में त्रुटियां होने देंगें । लोकप्रिय लोगों या लोकप्रिय विश्वासों के खिलाफ खड़ा होना कठिन हो सकता है क्योंकि हमारी आलोचना की जाएगी और हम पर हमला किया जाएगा। लेकिन हमें सच्चाई के लिए खड़ा होना चाहिए, चाहेकोई भी कीमत चुकानी पड़े।

पौलूस की सलाह: झूठी शिक्षा पहली बार में सच लग सकती है, इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए ध्यान से देखें कि आपके लोगों को केवल परमेश्वर की सच्चाई ही सिखाई जा रही है।

झूठे भविष्यवक्ताओं का वर्णन करने के लिए पौलुस जिन शब्दों का उपयोग करता है, क्या वे आप पर लागू होते हैं? यही आप किसी को जानते हैं उसके बारे में इसका क्या? अगर आप को ऐसा लगता है, तो आपको इसके बारे में क्या करना चाहिए?

15. परमेश्वर के जन के लिए आज्ञाएँ

पढ़ें: 1 तीमुथियुस 6:1-5

पौलूस ने अपने 'पुत्र' तीमुथियुस को लिखे अपने पत्र को 8 आज्ञाओं के साथ समाप्त करता है। ये इस बात को सारांशित करती हैं कि पौलुस ने हाल ही में लोभ के प्रलोभन के बारे में क्या कुछ कहा है। वह तीमुथियुस को झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देता है जिन्होंने धन प्राप्त करने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया है (6:5), अब वह तीमुथियुस को याद दिलाता है कि मसीह-समानता भौतिक लाभ से बढ़कर है (6:6-8)। वह तीमुथियुस को लोभ के खतरे से और इसके द्वारा लाए जाने वाले विनाश के बारे में चेतावनी देता है (6:9-10)। पैसा पाप नहीं है, लेकिन पैसे का प्यार पाप है (6:10)। हमारे लिए यह बात याद रखना भी महत्वपूर्ण है।

पौलुस की पहली आज्ञा इस सत्य पर आधारित है**: "परन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन सब बातों से दूर भाग जा " (6:11)।** झूठे शिक्षक जो कुछ कर रहे हैं और उन कामों के साथ आने वाले लालच से दूर रह। हमें भी धन और सम्पत्ति के सूक्ष्म प्रलोभन से बचना चाहिए। हम लालची लोगों को बहुत जल्दी नोटिस कर लेते हैं, लेकिन अपे अंदर इसे पहचानना बहुत मुश्किल होता है। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि यदिअपके दिल में कोई लालच है तो वह आप को दिखाए।

दूसरी, पौलुस तीमुथियुस को वे बताता है जो इसके बजाय उसे ढूँढ़ना चाहिए: **"धार्मिकता, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर" (6:11)।** झूठे शिक्षक जो चाहते हैं उसके पीछे जाने के बजाय, जो उसका लक्ष्य होना चाहिए वे है, धार्मिकता (पवित्र जीवन जीना), भक्ति (मसीह जैसी परिपक्वता), विश्वास (कार्य में विश्वास), प्रेम (सभी के लिए बिना शर्त प्यार), धीरज (धीरज, दृढ़ता) और सज्जनता (आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं उसमें विनम्रता का रवैया)।

तीसरी आज्ञा यह है कि चाहे उसे किसी भी परीक्षा का सामना करे, धीरज से आगे बढ़े: **"विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़" (6:12)।** यीशु के लिए जीना एक युद्ध है और हमें केवल परमेश्वर के हथियारों का उपयोग करने से (इफिसियों 6:0-18) और यीशु का अनुसरण करने से ही विजय प्राप्त होती है (यहोशू 1)। यह उम्मीद न करें कि परमेश्वर आपके जीवन को सुचारू और आसान बना देगा क्योंकि आप उसकी सेवा कर रहे हैं। यह कठिन हो जाती है और इस तरह आप उस पर भरोसा करना और उसका अनुसरण करना सीखते हैं।

चौथी, हमें विश्वासयोग्य बने रहना है क्योंकि युद्ध जीतने का यही एकमात्र तरीका है। **"अनन्त जीवन को थाम ले, जिसके लिये तू बुलाया भी गया, जब तू ने बहुत गवाहोंके साम्हने एक अच्छा अंगीकार किया" (12)।** तीमुथियुस को सेवा करने की अपनी प्रतिबद्धता को याद रखने की आवश्यकता है, चाहे कुछ भी हो, और हमें भी अवश्य ऐसे ही करना चाहिए। अपनी परिस्थितियों को मत देखो, यीशु को देखो और सेवा करने के अपने द्वारा किये गए वादे को याद रखो।

पाँचवी, पौलुस फिर से तीमुथियुस (और हम) को कभी हार न मानने की आज्ञा देता है, पर चाहे कुछ भी हो जाए, दृढ़ बने रहने की आज्ञा देता है (6:13-16)। **"हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख" (14)।** तीमुथियुस को छोड़ने के बजाय आगे बढ़ते रहने की जरूरत है, चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो।

छठी आज्ञा में, पौलुस तीमुथियुस को याद दिलाता है कि उसे जिद्दी झूठे शिक्षकों को सुधारने और इफिसुस में घरेलु-कलीसियाओं में व्यवस्था लाने की आवश्यकता है (6:17-19)। उसे अमीर और शक्तिशाली लोगों को सही करना चाहिए जो घमंडी और लालची हैं। ये वही लोग हैं जिनसे वह डरता है क्योंकि वे उसकी आलोचना करते हैं और उसे नीच दृष्टि से देखते हैं। उन्हें यह सिखाने की आवश्यकता है कि ईश्वरीय जीवन धन और संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। भौतिकता अस्थायी है, आध्यात्मिकता आन्तकालीन है।

पौलूस और 2 आज्ञाओं के साथ अपने पत्र को समाप्त करता है। सातवी है **"जो कुछ तुम्हारी देखभाल के लिए सौंपा गया है उसकी रक्षा कर" (20)**। "रक्षा कर" यह एक ऐसे सैनिक के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है जो कीमती खजाने की रक्षा करता है और "सौंपा" एक निवेश की रक्षा के लिए एक बैंकिंग शब्द है। दोनों उस समय तीमुथियुस को संदर्भित करते हैं, और आज हमें उस सुसमाचार के ज्ञान के साथ क्या करना है जो हमें सौंपा गया है। हमें इसे बहुत मूल्यवान वस्तु के रूप में इसकी रक्षा करना चाहिए और इसे दूसरों के साथ पारित करना चाहिए। परमेश्वर के वचन का हमें सौंपे जाने का यह एक बड़ा सौभाग्य है, लेकिन साथ ही एक नाजुक ज़िम्मेदारी भी है।

आठवीं और अंतिम आज्ञा चारों ओर चल रही झूठी शिक्षा से कोई लेना-देना ना रख (6:20-21)। पौलूस झूठी शिक्षा के खिलाफ चेतावनी के साथ ही शुरू करता है और समाप्त भी करता है। थोड़ी सी चूक भी बहुत होती है। हमारे पीने के पानी में थोड़ा सा भी चूहे मारने का जहर घातक होता है। परमेश्वर के वचन के साथ भी ऐसा ही है।

फिर पौलूस इन शब्दों के साथ समाप्त करता है **"आप सभी के साथ अनुग्रह" (6:21)**। तीमुथियुस को इफिसुस में रहने और उन समस्याओं को, जो उत्पन्न हुई हैं क्योंकि गलत लोगों को नेतृत्व के पदों पर बैठने की अनुमति दी गई है, ठीक करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता होगी।

पौलूस हमें भी यही बात कहेगा: हार मत मानो या छोड़ो के मत भागो, दृढ़ रहो, गलत लोगों को अगुवाई मत करने दो और झूठी शिक्षा को अपनी कलीसिया में प्रवेश मत करने दो। यह लगता तो आसान है लेकिन इसे पूरा करना कठिन होता है। तीमुथियुस के समान हमें भी ऐसा करने के लिए परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है।
काश कि परमेशर आपको आशीश दें और आपके साथ रहें जैसे जैसे आप ईमानदारी से उसकी सेवा करने में लगे रहते हैं !

पौलूस की सलाह: प्रभु की सेवा करने के लिए विश्वासयोग्यता, दृढ़ता, पवित्रता और साहस की आवश्यकता होती है।

1 तीमुथियुस से परमेश्वर ने आपको क्या सिखाया है? वे कौन से मुख्य पाठ हैं जो वह चाहता है कि आप सीखें?
क्या आपको अपने जीवन में कोई बदलाव करने की आवश्यकता है? उन्हें लिख लें ताकि आप उन्हें भूल न जाएं।

III. 2 तीमुथियुस

क- 2 तीमुथियुस की पृष्ठभूमि

शीर्षक : प्राप्तकर्ता के नाम पर
लेखक: पौलूस
विषय: विश्वासयोग्य सेवा
लेखन की तिथि: 64 ईस्वी
लिखने का स्थान: रोम (जेल में -दूसरी बार)
प्राप्तकर्ता: तीमुथियुस, एक युवा पादरी
प्रमुख आयत : वचन का प्रचार करना ; अनुकूल समय में और विपरीत समय में भी तैयार रहना; बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ सुधारना , डांटना और प्रोत्साहित करना।
3 क्योंकि ऐसा समय आएगा, जब मनुष्य खरा उपदेश सहन ना कर सकेंगे। इसके बजाय, अपनी इच्छाओं के अनुरूप, वे अपने आस-पास बड़ी संख्या में शिक्षकों को इकट्ठा करेंगे, ताकी उनके खुजली वाले कान वह सुन सके जो वे सुनना चाहते हैं।
4 वे अपके कानोंको सच्चाई से फेर लेंगे, और कल्पित कथाओंकी ओर फिरेंगे।
5 पर तू सब बातों में सच्चा रहना, दु:ख उठाना, सुसमाचार प्रचार का काम करना, और अपनी सेवकाई के सब कामों को पूरा करना । 4:1-5
मुख्य शब्द: "अच्छा" (5 बार)

उद्देश्य: पौलूस उस युवक के लिए अधिक मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है जिसे वह पासबानी में प्रशिक्षण दे रहा है। वह उसे बताता है कि धर्मत्याग के समय में एक सच्चे सेवक के रूप में उसे कैसे जीना है। वह तीमुथियुस को भी आपने पास जल्दी से आने के लिए कहता है, क्योंकि वह मार डाला जाने वाला था।
विषय: पौलूस के अंतिम शब्द हैं ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करना।

पौलूस 30 वर्षों के अधिक समय से परमेश्वर की सेवा ईमानदारी से कर रहा है। उसकी पहली मिशनरी यात्रा को 20 साल हो चुके हैं। उसने बहुत कुछ झेला है, बहुत त्याग किया है, और अक्सर मृत्यु के निकट रहा है। उसके प्रतिभाशाली, उफारित दिमाग और मजबूत व्यक्तित्व ने शुरुआती कलीसिया को उसके कठिन विकास के वर्षों में आगे बढ़ाया था जब झूठे शिक्षकों और ईर्ष्यालु राजनीतिक नेताओं ने इसे नष्ट करने की कोशिश की ली थी। जब उसने 2 तीमुथियुस लिखा, वह फिर से कैद में था। अपनी पहली कैद के बाद के 5 वर्षों में पौलूस उन कलिसीयाओं को देखने के लिए यात्रा करने में सक्षम था जिन्हें उसने शुरू किया था, और साथ ही उन जगहों पर नई कलीसियाए शुरू करने के लिए जहां वह कभी गया ही नहीं था। अब उसका अन्त निकट है और पौलुस यह जानता है। परमेश्वर ने कलीसिया का मार्गदर्शन को हाथ में लेने के लिए स्थानीय अगुवों की एक नई पीढ़ी को खड़ा किया है। पौलूस शारीरिक रूप से थक गया था। उसने एक व्यक्ति को एक अंतिम पत्र लिखा (विश्वासयोग्य लूका के अलावा जो उसके साथ अंत तक था) जो सब से ज्यादा उसे प्यार करता है , जो विश्वास में उसका पुत्र है , तीमुथियुस। 2 तीमुथियुस में पौलुस के मरने की सथिति वाले शब्द हैं, उसका अंतिम संचार जब वह मृत्यु का सामना करता है। यदि किसी समाचार पत्रकार ने उस समय पौलूस का इंटरव्यू लिया होता, तो वे उससे पूछता कि क्या उसे इस बारे में कोई संदेह है कि उसने अपना जीवन कैसे बिताया। "पौलूस ने खा होता, क्या यह इसके लायक था?" "हाँ!" पौलूस पुष्टि करता, "और भी बहुत कुछ।" "आपके पास अपने अनुयायियों के लिए अंतिम बिदाई के शब्द क्या हैं?" रिपोर्टर पूछता। पौलूस ने उत्तर दिया होता "विश्वासयोग्य बनो।" वास्तव में, 2 तीमुथियुस का यही संदेश है। "वफादार बने रहिये!"

पृष्ठभूमि - विश्वासियों के उत्पीड़न लिए बदतर होता जा रहा था। हजारों जन शहीद हो रहे थे। उन्हें निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार के बिना ही रोम का दुश्मन माना जाता था। तब, जब नीरो ने रोम को जला दिया और इसका दोष मसीहीयों पर मढ़ दिया तो बात और बिगड़ गई। हर बात के लिए सब उन्हें ही दोष देने लगे थे। पतरस भी बन्दीगृह में था, उसे शीघ्र ही उल्टा क्रूस पर चढ़ाया जाना था। पौलूस सार्वजनिक रूप से नंबर एक दुश्मन था। इफिसुस में रहते हुए उसके साथ विश्वासघात किया गया और उसे धोखा दिया गया, और इस तरह उसे रोम में कैद कर लिया गया था। वह घर में नजरबंद नहीं था, लेकिन मौत की प्रतीक्षा में एक कालकोठरी में था। इस चीज ने सभी ढोंग को दूर कर दिया और एक व्यक्ति में जो कुछ है उसके दिल और मूल में आ गया। जब कोई मृत्यु का सामना करता है, तो सभी मुखौटे उतार दिए जाते हैं। यही बात 2 तीमुथियुस को ऐसा प्रकट करने वाला पत्र बनाती है।

I.परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य (1:3-18) पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने और परमेश्वर की महिमा के लिए शिक्षा के अपने आत्मिक वरदान का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए आरम्भ करता किया। तमाम अत्याचारों के चलते, ऐसा लग रहा था कि तीमुथियुस अवसाद से लड़ रहा था और पौलुस ने उसे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने और सुसमाचार से लज्जित न होने के लिए प्रोत्साहित करने और प्रेरित करने की पूरी कोशिश की है। पौलूस नहीं चाहता था कि उसके के कष्टों के कारण तीमुथियुस को बुरा लगे। वह कहता है कि सुसमाचार के लिए कष्ट सहना एक वास्तविक सौभाग्य की बात है। बहुत से लोग दबाव में दल-बदल कर रहे थे, लेकिन पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि वह सुनिश्चित करे कि वह यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बना रहता है।

II. आपने आप के प्रति विश्वासयोग्य (2:1-26) फिर पौलुस तीमुथियुस के लिए विश्वासयोग्यता के सात उदाहरणों का उपयोगकरता है: एक शिक्षक, सैनिक, खिलाड़ी, किसान, कार्यकर्ता, पात्र और दास। यह जानते हुए कि तीमुथियुस के लिए हालत और भी बदतर हो जाएँगे, पौलुस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि वह सच्चा बना रहे।

III. दूसरों के प्रति विश्वासयोग्य (3:1 - 4:15) परिस्थितियाँ कितनी भी खराब क्यों न हों, पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर और उसकी सेवकाई के प्रति विश्वासयोग्य बना रहे। वह उसे आश्वासन देता है कि वह ईश्वर की इच्छा में है और उसे जीवित रहने के लिए कहता है ताकि जब वह मर जाए तो उसे पछतावा न हो। पौलुस चीजों को अनंतकल की दृष्टि में रखने में उसकी मदद करता है। पौलुस उन लोगों, के लिए प्रशंसा भरे शब्दों के साथ समाप्त करता है, जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं। यदि संभव हो तो मरने से पहले वह तीमुथियुस को एक बार और देखना चाहता था। हम नहीं जानते कि वह समय पर वहां पहुंचा या नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि तीमुथियुस को तब गिरफ्तार किया गया था जब उसने पौलुस से मिलने की कोशिश की थी। यदि ऐसा है, तो उसे कुछ समय के लिए छोड़ दिया गया था और उसने इफिसुस में यूहन्ना के साथ अपनी विश्वासयोग्यता के लिए शहीद होने तक सेवा की गई।

पौलूस आज हमें भी यही बात कहता - विश्वासयोग्य बने रहो। यीशु का भी यही अपने अनुयायियों से भी अनुरोध था। आप के बारे में क्या हैं। क्या आप वफादार हैं? क्या आप परीक्षा पास कर रहे हैं? सुनिश्चित करें!

ख. 2 तीमुथियुस की रूपरेखा

नमस्कार 1:1-2
आभार का अभिव्यक्ति 1:3-5

I. विश्वासयोग्य पादरी के गुण 1:6-18
क. उत्साह 1:6-7
ख. साहस 1:8-12
ग. विश्वासयोग्यता 1:13-18
1. आवेदन 1:13-14
2. प्रोत्साहन 1:15-18

II. एक विश्वासयोग्य पादरी के कर्तव्य 2:1-4:8

क. व्यक्तिगत मजबूती 2:1
ख. सच्चाई का प्रसारण 2:2
ग . धीरज 2:3-13

1. एक सैनिक के रूप में 2:3-4
2. एक एथलीट के रूप में 2:5
3. एक किसान के रूप में 2:6-7
4. धीरज धरने की प्रेरणा 2:8-13

घ. पाप की चेतावनी 2:14
ङ. परमेश्वर के लिए जीना 2:15
च. ईश्वरीय प्रवचन 2:16-19
छ. पवित्रता 2:20-26
ज. अलेदिगी 3:1-9
झ. उत्पीड़न में विश्वासयोग्य 3:10-13
ञ. वचन का प्रचार 3:14 - 4:5
ट. लम्बे चौड़े लक्ष्य 4:6-8
ठ. व्यक्तिगत अनुरोध 4:9-22

ग- पादरियों के लिए सलाह - 2 तीमुथियुस

1. पौलूस के अंतिम (मौत की स्थिति पर) शब्द

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 1:1-5

किसी भी व्यक्ति के अंतिम शब्द बहुत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे दर्शाते हैं कि उस व्यक्ति के लिए क्या मायने रखता है। 2 तीमुथियुस में हमारे पास पृथ्वी पर उसके सबसे करीबी व्यक्ति, उसके 'पुत्र' तीमुथियुस के लिए पौलुस के अंतिम शब्द हैं। यह जानते हुए कि तीमुथियुस को सलाह देने का यह उसका आखिरी मौका होगा, वह हर शब्द को महत्व देता है। रिहा होने के 5 साल बाद पौलूस रोम की जेल में वापस आ गया था। उसे पता था कि इस बार कोई रिहाई नहीं होगी। तिथि लगभग 64 ईस्वी है पौलुस ने तीमुथियुस को विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इस अंतिम अवसर का लाभ उठाया।
तीमुथियुस को सम्बोधित करते हुए, पौलुस ने स्वयं को एक "प्रेरित" के रूप में चिन्हित किया (2 तीमुथियुस 1:1) - जिसे परमेश्वर ने अपनी सेवकाई के लिए भेजा है। परमेश्वर ने उसे चुना और उसने उसका अनुसरण किया। पौलूस ने हमेशा ही और अपने जीवन के अंत में भी खुद को परमेश्वर की कृपा से परमेश्वर के सेवक के रूप में देखा। वह कुछ भी नहीं था, यीशु ही सब कुछ था।

वह तीमुथियुस को अपना “प्रिय पुत्र” कहता है, जो उनके घनिष्ठ सम्बन्ध को दर्शाता है। तीमुथियुस को अन्तिम बार पत्र लिखना पौलुस के लिए बहुत कठिन रहा होगा। तीमुथियुस अभी भी इफिसुस में था। उसने पौलुस की आज्ञा का पालन किया और वहां रुका रहा, यद्यपि यह उसके लिए बहुत कठिन था। इस पत्र को प्राप्त करना तीमुथियुस के लिए उत्साहजनक तो रहा होगा, लेकिन यह जानकर बहुत दुखी भी हुआ होगा कि उसका अंत निकट था। इतिहास कहता है कि पौलूस के शहीद होने से कुछ समय

पहले ही वह पौलूस को देखने के लिए रोम गया था, लेकिन पौलूस के साथ उसकी पहचान उसके लिए बहुत खतरनाक रही होगी।

तीमुथियुस को पौलूस द्वारा प्रशिक्षण दीया जाता था , और पौलूस को तीमुथियुस द्वारा प्रोत्साहन मिलता था। जेल में मृत्यु का सामना करते होने के बावजूद, पौलुस तीमुथियुस के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है (2 तीमुथियुस 1:3)। उसने तीमुथियुस को विश्वास दिलाया कि वह उसके लिए विश्वासपूर्वक प्रार्थना कर रहा है। क्या आपके पास जवान पुरुष हैं जिन्हें आप परमेश्वर की सेवा करने के लिए परामर्श और प्रशिक्षण दे रहे हैं? क्या आप प्रतिदिन उनके लिए प्रार्थना करते हैं, जिनमें वे भी शामिल हैं जिन्हें आपने पहले ही प्रशिक्षित कर चुके हैं ? पौलूस ऐसा करता था। जो आपके लिए प्रार्थना कर रहे हैं उनके लिए ईश्वर का धन्यवाद करें।

जैसे-जैसे वह मृत्यु के निकट आता है , पौलुस एक स्पष्ट विवेक के साथ परमेश्वर के प्रति अपनी सेवा को पीछे मुड़कर देख सकता था। भले ही उसने मसीहीयों को सताया था, वह जानता था कि उसे क्षमा कर दिया गया है और उसने ईमानदारी से सेवा करने की पूरी कोशिश की। एक स्पष्ट विवेक के साथ जीवन के अंत तक आना कितना आनंददायक होना चाहिए। कलीसिया के अगुआ होने का दावा करने वाले बहुत से लोग पाप में पड़ जाते हैं और अपनी प्रतिष्ठा और सेवकाई को बर्बाद कर देते हैं। अभी से ऐसा जीवन जियो कि तुम्हारा विवेक स्पष्ट हो जाये।

तीमुथियुस का विश्वासयोग्य जीवन पौलुस के लिए एक प्रोत्साहन था क्योंकि वह आपने लिए तीमुथियुस के प्रेम (आयत 4) और आजीवन विश्वासयोग्य सेवा (आयत 5) को याद करता था। पौलूस के दिमाग में यही सबसे महत्वपूर्ण था जब वह लिखता था ..
जब आप अपने जीवन के अंत में आते हैं, तो आप प्रोत्साहन के लिए किस की ओर देखेंगे? किसका विश्वासयोग्य जीवन आपको आनन्दित करेगा? क्या आप अभी दूसरों को प्रशिक्षण दे रहे हैं और उनमें निर्माण कर रहे हैं, जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस के साथ किया था? या फिर आप अन्य चीजों में बहुत व्यस्त हैं?

पौलूस की सलाह: उन लोगों के विश्वासयोग्य जीवन से प्रोत्साहन प्राप्त करें जिन लोगों की आपने विश्वास में बढ़ने में मदद की है।

कुलुस्सियों 1:3-5 जब हम तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं, तब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर का सर्वदा धन्यवाद करते हैं, 4 क्योंकि हम ने सुना है, कि तुम्हारा विश्वास मसीह यीशु पर है, और तुम्हारा प्रेम सब पवित्र लोगों से है - 5 विश्वास और उस आशा से प्रेम रखो जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी हुई है, और जिसके विषय में तुम सत्य का वचन सुन चुके हो,

इफिसियों 1:10 15 इस कारण जब से मैं ने प्रभु यीशु पर तुम्हारे विश्वास और सब पवित्र लोगों के लिए प्रेम के विषय में सुना है, 16 मैं ने तुम्हारे लिए धन्यवाद करना न छोड़ा, और अपनी प्रार्यनाओं में तुम्हें स्मरण करता हूं।

उन लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें जिन्होंने आपके मसीही जीवन के विकास में आपकी सहायता की है।

जिनकी आपने आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में मदद की है उनके लिए भी प्रार्थना करें।

2. एक विश्वासयोग्य पादरी के गुण 1: उत्साह और साहस (2 तीमुथियुस 1:6-12)
पढ़ें: 2 तीमुथियुस 1:6-12

2 तीमुथियुस में, पौलुस अपना अंतिम पत्र एक ऐसे व्यक्ति को भेज रहा है जिसे वह कई वर्षों से प्रेम करता था और उसे प्रशिक्षित किया था। जब वह अपने जीवन पर पीछे मुड़कर देखता है, तो पौलुस महसूस करता है कि कुछ ऐसे गुण हैं जो उन लोगों के लिए आवश्यक हैं जो परमेश्वर की सेवा करते हैं। वह तीमुथियुस को उत्साह, साहस और विश्वासयोग्यता के महत्व की याद दिलाते हुए अपने पत्र की शुरुआत करता है।

उत्साह: पौलूस ने ऐसे कई लोगों को देखा है जो परमेश्वर के लिए जोश से भरे रहते थे लेकिन समय के साथ वे फीके पड़ गए और विश्वास से मुड़ गए थे। आज भी ऐसा होता है। यह किसी के साथ भी हो सकता है। 2 तीमुथियुस 1:6 में पौलुस ने तीमुथियुस को **"परमेश्वर के वरदान को धधकते शोले के समान बने रहने "** के लिए प्रोत्साहित करता था। उसने उससे कहा कि वह परमेश्वर द्वारा दिए गए आत्मिक उपहारों के अनूठे सेट का उपयोग करता रहे (1 पतरस 4:10)। संसार से , देह से और शैतान से युद्ध करने के वर्षों के बाद, एक व्यक्ति थका हुआ और निरुत्साहित हो सकता है। कायरता और भय शैतान के उपकरण हैं जिनसे हमें सावधान रहना है। 2 तीमुथियुस 1:**7 "क्योंकि परमेश्वर ने हमें डरपोक की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और आत्मानुशासन की आत्मा दी है"** डर का सामना करते समय याद करने और उद्धृत करने के लिए यह एक अच्छा वचन है। तीमुथियुस को स्वयं पर भरोसा नहीं था (1 कुरिन्थियों 6:10-11; 1 तीमुथियुस 4:12) और उसे परमेश्वर की सामर्थ्य, प्रेम और आत्म-संयम पर निर्भर रहने की आवश्यकता थी। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। इस आयत ने भय के साथ मेरे संघर्षों में मेरी सहायता की है, और यह आपकी भी सहायता कर सकती है।

साहस: यह पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दिए गए 3 उपदेशों में से पहला है (1:8-12; 1:13-14; 2:1)। उसकी आज्ञा है **"लज्जित न हो"** (2 तीमुथियुस 1:8)। अविश्वासियों द्वारा तीमुथियुस की आलोचना यीशु के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता के लिए और झूठे शिक्षकों द्वारा पौलुस के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता के लिए की जाती थी। यीशु ने कहा **"हाय तुम पर, जब सब लोग तुम्हें भला कहें"** (लूका 6:26)। यीशु और पौलुस के पीछे चलने का मतलब अक्सर सताव और विरोध ही होता है। पौलुस ने कहा **कि "जितने मसीह यीशु में भक्ति से जीवन बिताते हैं वे सब सताएं जायेंगे"** (2 तीमुथियुस 3:12)। पौलूस तीमुथियुस को याद दिलाता था कि सेवकाई में उसने जो कुछ भी हासिल किया वह उसका अपना नहीं बल्कि परमेश्वर का था, वह इसका श्रेय नहीं ले सकता था (आयत 9)। यह हमारे लिए भी एक गंभीर और विनम्र विचार है। हम सब उसके बे-शर्त प्यार और अनुग्रह से आए हैं। परमेश्वर उन्हें चुनता है जो उसके पास उद्धार के लिए आएंगे, और उनमें से फिर वह कुछ को अपनी सेवकाई के लिए चुनता है। चुना जाना बड़े सौभाग्य और सम्मान की बात है। चार्ल्स स्पर्जन ने एक बार कहा था, "यदि परमेश्वर ने आपको अपना सेवक बनने के लिए बुलाया है, तो राजा बनने के लिए नीचे न झुकें।" राजाओं के राजा की सेवा करना सबसे बड़ा सौभाग्य है।

मैं जितना बड़ा होता जाता हूँ मुझे उतना ही स्पष्ट होता जाता है कि परमेश्वर ने मुझे अपनी सेवा के लिए चुनकर मुझे जो अद्भुत सम्मान दिया है वो मैं ही जानता हूँ । मुझे मेरी अपनी अयोग्यताएँ और असफलताएँ अधिक दिखाई देती हैं फिर भी उसकी पर्याप्त शक्ति और कृपा उन सभी पर विजय दिलाती है। इससे हमें कठिनाइयों और विरोध के बावजूद खड़े होने का साहस रखने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए। इससे हमें हिम्मत मिलनी चाहिए और हमें किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए आगे बढ़ने का साहस मिलना चाहिए।

2 तीमुथियुस 1:12 में पौलुस ने अपने विश्वास के लिए मृत्यु का सामना करने के बावजूद अपनी स्वयं की गवाही को साझा किया है : **"फिर भी मैं लज्जित नहीं हुआ हूँ , क्योंकि मैं उसे जानता हूं जिस पर मैं ने विश्वास किया है, और मुझे निश्चय है, कि जो कुछ मैं ने उसे सौंपा है, वह उसकी रक्षा कर सकता है" उस दिन लिए।"** हमारे बारे में भी यही सच है। हमें अपनी आँखें यीशु पर लगानी चाहिए और विश्वास करना चाहिए कि जब तक वह हमें जीवित रखना चाहता है तब तक वह हमें बनाए रखने में सक्षम है। हमारी हिम्मत वहीं से आती है।

यदि आप एक पादरी या अगुवा हैं, तो आपको अपना जोश और साहस बनाए रखना होगा क्योंकि आपको अविश्वासियों और विश्वासियों दोनों के विरोध का समान रूप से सामना करना पड़ेगा। यह यीशु को नहीं रोक सका, न ही पॉल या तीमुथियुस को रोक सका। इसे कभी भी आपको रोकने न देंना।

पौलुस की सलाह: सेवकाई के लिए अपने जोश और साहस को फीका न पड़ने दें।
1 पतरस 4:10 हर एक को जो वरदान मिला है, वह परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह को विश्वासयोग्यता के साथ दूसरों की सेवा में इस्तेमाल करे।

2 तीमुथियुस 1:7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें डरपोक की आत्मा नहीं दी है, पर सामर्थ्य, प्रेम और आत्म-अनुशासन का आत्मा दीया है।

आपका जोश कैसा है? क्या यह वर्षों से ठंडा हो गया है, या यह ताजा और मजबूत है जिस दिन आप पहली बार प्रभु के पास आए थे?

कौन सी बात आपके जीवन में सबसे ज्यादा डर लाती है? उन चीज़ों का सामना करने के लिए परमेश्वर का साहस पाने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

3. एक विश्वासयोग्य पादरी के गुण 2: विश्वासयोग्यता
पढ़ें: 2 तीमुथियुस 1:13-18

पौलूस अपने पुत्र तीमुथियुस के साथ अपना अंतिम पत्राचार शुरू करता है और उसे सेवकाई के लिए अपने उत्साह और साहस को बनाए रखने के महत्व की याद दिलाता है। इसके बाद वह तीसरा आवश्यक गुण जोड़ता है: विश्वासयोग्यता। पहले, वह तीमुथियुस को साहस रखने का उपदेश देता है (2 तीमुथियुस 1:8-12) और अब वह उसे विश्वासयोग्यता से सुसमाचार की रक्षा करने का उपदेश देता है (2 तीमुथियुस 1:13-18)**। "उस अच्छे भण्डार की जो तुझे सौंपा गया है रक्षा कर; पवित्र आत्मा जो हम में वास करता है उसकी सहायता से उसकी रक्षा कर" (2 तीमुथियुस 1:14)।**

"रक्षा" एक बैंकिंग शब्द है। इफिसुस में देवी आर्टेमिस को बहुत पैसा दिया जाता था जहाँ तीमुथियुस ने सेवा करता था, और इसे सुरक्षित रखने के लिए सावधानीपूर्वक पहरा दिया जाता था। पौलुस तीमुथियुस को यह याद दिलाने के लिए इसी तस्वीर का इस्तेमाल करता है कि उसे यीशु के सुसमाचार की खुशखबरी के साथ क्या करना है, जो किसी भी धन राशी से कहीं अधिक कीमती है।

दुर्भाग्य से, हर कोई जो एक बार सच्चाई फैलाता है, वह ऐसा करना जारी नहीं रखता है। विरोध और खतरों के कारण, बहुतों ने परमेश्वर और पौलुस की सेवा छोड़ दी थी, और पौलुस अकेला है, जिसे दूसरों ने त्याग दिया है (आयत 15)। इसलिए परमेश्वर के सेवकों के लिए विश्वासयोग्य रहना बहुत महत्वपूर्ण है।

बहुत से लोगों ने पौलुस को और सुसमाचार को छोड़ दिया, परन्तु कुछ अभी भी थे जिन पर पौलुस और परमेश्वर के द्वारा भरोसा किया जा सकता था (16-18)। उनीसिफुरुस ऐसा ही एक व्यक्ति था। वह संदेश के प्रति और पौलूस के प्रति वफादार ठहरा रहा था। एक भरोसेमंद मित्र कितना मूल्यवान होता है, यीशु के लिए एक सहकर्मी जिस पर हर हालत में भरोसा किया जा सकता है! आपको अपने जीवन में ऐसे पुरुषों की जरूरत है। और आपको भी अपने आसपास के लोगों के लिए उस तरह का आदमी बनने की जरूरत है।

पौलूस की सलाह: परमेश्वर के और उसकी सेवा करने वालों के प्रति वफादार रहें।

नीतिवचन 18:24 मित्रों के बढ़ने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है जो भाई से भी अधिक करीब रहता है।

रोमियों 12:10 भाईचारे की प्रीति से एक दूसरे से प्रेम रखो। सम्मान दिखाने में एक दूसरे से आगे निकलते जाओ।

वे कौन हैं जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं चाहे कुछ भी हो जाए, और चाहे जो कुछ भी होता है वह आपका समर्थन करेंगे और आपकी मदद करेंगे ? उनके लिए परमेश्वर का शुक्र करो।

कठिनाइयों से गुज़रते समय सेवकाई में कौन आपके समर्थन पर भरोसा कर सकता है?
क्या आप किसी को जानते हैं जो कठिन समय का सामना कर रहा है? उन्हें प्रोत्साहित करने और उनका समर्थन करने के लिए आज ही उनके पास पहुंचें।

4. कर्तव्य 1: बलवन्त बनो

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 2:1

तीमुथियुस को उसके लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण गुणों (उत्साह, साहस और विश्वासयोग्यता) की याद दिलाने के बाद, पौलुस ने तीमुथियुस के लिए 11 कर्तव्यों की एक सूची शुरू की जिन्हें तीमुथियुस को एक ईश्वरीय पादरी और अगुआ बनने के लिए पूरा करना चाहिए। पहला कर्तव्य तीसरी प्रेरिणा थी जो पौलुस ने तीमुथियुस को दी थी: बलवन्त हो। **"तो हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो"** (2 तीमुथियुस 2:1)।

" बलवन्त बनो" एक आदेश है, जो सभी पादरीयों के लिए जरूरी है। यूनानी काल जिसमें यह लिखा गया है, कहता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे हम प्राप्त करते हैं, नाकि कुछ ऐसा जो हमें स्वयं को प्रदान करना चाहिए। सामर्थ्य हमारे भीतर से नहीं आती, यह कुछ ऐसा है जो परमेश्वर हमें देता है जब हम उस पर भरोसा करते हैं। यह आदेश वर्तमान काल में है जिसका अर्थ है कि हमें हमेशा परमेश्वर की शक्ति को अपने अंदर काम करने देना चाहिए। मैं स्वाभाविक रूप से भयभीत और कमजोर हूं। मुझे हमेशा उसके लिए खड़े होने, गलती करने वालों को सही करने, आलोचना होने पर चलते रहने या कठिन स्थानों

की यात्रा करने के लिए परमेश्वर की शक्ति की आवश्यकता रही है। मैं 40 वर्षों से आध्यात्मिक सेवकाई में शामिल हूँ और मुझे दुष्टात्माओं के बंधन में बंधे लोगों की सेवा करने के लिए परमेश्वर की शक्ति की आवश्यकता है। मैंने भी पौलूस के साथ साथ सीखा है, कि मैं जितना कमजोर हूं उतना ही स्पष्ट रूप से परमेश्वर की शक्ति मेरे माध्यम से काम करती हुई देखी जा सकती है (2 कुरिन्थियों 12:9-11)।

पौलूस केवल यह नहीं कहता है कि हमें मजबूत होना है। और वह यह भी नहीं कहता हैं कि हमें शक्ति में , वचन में , कर्म में या योग्यता में मजबूत होना है। वह कहता है कि हमें **"अनुग्रह में मजबूत होना"** है। अनुग्रह हमारी शक्ति का स्रोत है। जैसे-जैसे हम आत्मिक रूप से बढ़ते हैं, हम अनुग्रह के लिए अपनी आवश्यकता और परमेश्वर के प्रावधान के बारे में अधिक जागरूक होते जाते हैं। जब हम उसकी आत्मा की अधीनता में चलते हैं और उसकी इच्छा का पालन करते हैं, तो उसका अनुग्रह (वो अनुग्रह जिसके हम हकदार भी नहीं हैं) हमें उस ज्ञान, शक्ति और मार्गदर्शन से भर देता है जो हमें वो काम करने के लिए चाहिए जो वह चाहता है।

इसमें विकास करना जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। पादरीयों और अगुवाओं को अभी भी विकास करते रहने की जरूरत है। कुछ लोग सोचते हैं कि वे आध्यात्मिक परिपक्वता तक पहुँच गए हैं क्योंकि वे अगुवा हैं, लेकिन यह सच नहीं है। एक पादरी उन परीक्षणों और प्रलोभनों से कभी ही मुक्त नहीं हैं जिनका सामना दूसरे लोगों को जीवन में करना पड़ता है। वास्तव में, अक्सर हम दूसरों से अधिक सामना करते हैं क्योंकि हम उसकी सेवा करते हैं। परमेश्वर हमें पासबानी करने में आने वाली कठिनाइयों और समस्याओं का उपयोग करता है ताकि हम उस पर अधिक भरोसा कर सकें और उसके अनुग्रह पर पूरी तरह से निर्भर रह सकें। परमेश्वर ने सेवकाई में मेरे सामने आने वाली चुनौतियों और कठिनाइयों को दूर नहीं किया; उसने उन्हें अनुमति दी है इसलिए मैं उस पर और अधिक पूर्ण रूप से भरोसा करना सीखता हूं। वह चाहता है कि हम सब, पौलुस के समान, यह सीखें **कि "मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिये बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है"** (2 कुरिन्थियों 12:9)।
परमेश्वर को अपना कार्य करने के लिए हमारी आवश्यकता नहीं है। वह हमारे बिना भी बहुत अच्छी तरह से काम कर सकता था। लेकिन जो वह चाहता है हम करें , उसे पूरा करने के लिए हमें उसकी 100% जरूरत होती है। जब हम उसे हमारे माध्यम से कार्य करते हुए देखते हैं तो वह हमें आगे की पंक्ति में बैठने का विशेषाधिकार देता है। यह उसकी सामर्थ्य है जो हम में काम कर रही होती है जो उसके परिणाम उत्पन्न करती है। वह हमसे जो चाहता है वह है ; प्रेम से की गई हमारी अधीनता और सेवा है। वह हमारे साथ एक व्यक्तिगत, अंदरूनी संबंध रखना चाहता है, न कि केवल एक व्यवसायी संबंध जहां हम उसके लिए कार्य करते हों। वह चाहता है कि हम उससे जुड़ने और उससे प्यार करने और उसके प्यार का अनुभव करने में समय बिताएं।

हम उसके वचन में समय बिताकर, उससे बातें करते हुए और उससे बात करते हुए, उसकी आराधना करते हुए, उस पर और उसकी सच्चाई पर मनन करते हुए और उसके लिए जीते हुए उसके अनुग्रह में विकास करतें हैं। क्या आप ऐसा कर रहे हैं? क्या आप उसमें बढ़ रहे हैं जैसे उसका अनुग्रह आप में बढ़ता है?

पौलुस की सलाह: परमेश्वर को आप के अंदर और आपके द्वारा अपने अनुग्रह से कार्य करने की अनुमति दें ताकि आप उसकी सामर्थ्य में सेवकाई कर सकें, अपनी से नहीं।

2 कुरिन्थियों 12:7-10
7 ताकि मैं इन बड़े बड़े प्रकाशनों के कारण घमण्ड में न फूल जोऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया, वह शैतान का दूत है, कि वह मुझे पीड़ा दे।

8 मैं ने प्रभु से तीन बार बिनती की, कि वह मुझ से ले ले।
9 परन्तु उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है, क्योंकि मेरी शक्ति निर्बलता में सिद्ध होती है। इसलिये मैं और भी ख़ुशी से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, ताकि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करे।
10 इस कारण मैं मसीह के निमित्त निर्बलताओं में, और निन्दाओं में, और कष्टों में, और उपद्रवों में, और कठिनाइयों में, प्रसन्न होता हूं। क्योंकि जब मैं कमज़ोर हूं, तब मैं मजबूत होता हूँ।
क्या आप इस बात में अधिक जागरूक हो रहे हैं कि आपके जीवन और सेवकाई में जो भी अच्छा होता है वह परमेश्वर की ओर से आता है?

जो कुछ वह आप में और आपके द्वारा करता है उसके लिए उसका धन्यवाद करने में कुछ समय व्यतीत करें, उसे ही इसका श्रेय दें।

5. कर्तव्य 2: सत्य का संचार कर

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 2:2

मैं जो कुछ भी हूं और जो कुछ भी मेरे पास है उसके लिए मैं अपने जीवन में कार्य कर रहे परमेश्वर के अनुग्रह का ऋणी हूं। ऐसा करने के उसके तरीकों में से एक यह था कि मुझे प्रशिक्षित करने और सलाह देने के लिए मेरे जीवन में ईश्वरीय पुरुषों को लाना। उन्होंने अपना ज्ञान और अनुभव मुझ तक पहुँचाया और अब मैं इसे दूसरों को दे रहा हूँ। भविष्य में वे इन सच्चाइयों को पादरीयों की अगली पीढ़ी के साथ साझा करेंगे। यह एक मडली दौड़ में एक दौड़ने वाले से दूसरे दौड़ने वाले तक डंडा पास करने जैसा है। पादरी की प्रत्येक पीढ़ी उन्हें सिखाती है जो आगे काम संभालेंगे और उनकी जगह लेंगे। युवा पादरियों को सलाह देना और प्रशिक्षण देना एक कर्तव्य है जिसे करने का परमेश्वर हम सभी को आदेश देता है। पौलुस ने तीमुथियुस को भी यह आज्ञा दी: **"और जो कुछ तू ने मुझे बहुत गवाहों के साम्हने कहते सुना है, उसे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को सिखाने के योग्य हों"** (2 तीमुथियुस 2:2)।

ध्यान दें कि पौलूस ने कहा कि तीमुथियुस ने जो कुछ उसने सीखा है वो सब "भरोसेमंद" पुरुषों को पारित करना है। ये ऐसे लोग हैं जो सीखने और सेवा करने के लिए वफादार हैं। परमेश्वर ने हमें चुना है क्योंकि वह हमें भरोसेमंद लोगों के रूप में देखता है। अपने शुरुआती वर्षों में मैं सदा विश्वसनीय नहीं था, और मैं कई बार असफल होता था और अब भी हो जाता हूँ। लेकिन वह मुझे माफ करने और बहाल करने के लिए दयालु है।

हमें इन विश्वसनीय पुरुषों को "सिखाना" है, जैसा कि दूसरों ने हमें सिखाया है। पौलूस ने तीमुथियुस को सिखाया जिसने आगे इसे "भरोसेमंद पुरुषों" को दिया जिन्होंने बदले में "दूसरों" को प्रशिक्षित किया। यह 2,000 वर्षों तक चलता रहा जब तक कि यह हमारे पास नहीं पहुंच गया। अब हमें जवानों को प्रशिक्षित करना चाहिए जो उसके काम को आगे बढ़ा सकें। यह उन सभी के लिए एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है जो मसीही सेवा में हैं। यीशु हमारा उदाहरण है। उसने शिष्यों को प्रशिक्षित किया ताकि वे उसके जाने के बाद काम जारी रख सकें।

कई साल पहले परमेश्वर ने मुझे युवा पादरीयों को सलाह देने की मजबूत इच्छा दी थी। यह हमेशा आसान नहीं होता है, लेकिन इन पुरुषों को प्रोत्साहित करना और उनकी मदद करना खुशी और आशीश भरा

रहा है। परमेश्वर ने मुझे उसकी और उसकी कलीसिया की सेवा करने के बारे में धीरज से बहुत कुछ सिखाया है। उस ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना एक विशेषाधिकार और कर्तव्य है। उनके सत्य को प्रसारित करना एक गंभीर लेकिन पूरी करने वाली जिमेदारी है।

ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना। उसने शिष्यों के साथ समय बिताया, उन्हें अपने साथ अपनी दैनिक सेवकाई में ले गया , उन्हें प्रशिक्षित किया और उन्हें सेवा में अपने नव-विकसित कौशल का उपयोग करने का अवसर दिया। पौलुस ने भी तीमुथियुस, तीतुस और अन्य लोगों के साथ ऐसा ही किया। उसने धैर्यपूर्वक सत्य को आगे बढ़ाया, प्रोत्साहित किया, आवश्यकता पड़ने पर सुधार किया और नियमित रूप से उनके लिए प्रार्थना की। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

पौलूस की सलाह: अगली पीढ़ी के पादरीयों को बाइबल की सच्चाई और सेवकाई के कौशल प्रदान करें ताकि जब हम सक्षम न हों तो वे काम जारी रख सकें।

इफिसियों 4:11-12 वही है जिस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को पासबा न और उपदेशक नियुक्त करके परमेश्वर के लोगों को सेवा के कामों के लिए तैयार किया।

2 तीमुथियुस 2:1-2 हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा। और जो बातें तू ने मुझे बहुत गवाहों के साम्हने कहते सुना है, उन्हें विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को सिखाने के योग्य भी हों।

आपको आपके जीवन में किसने प्रशिक्षत किया है? आप ने उनसे क्या सीखा? उन्हें धन्यवाद दें और उनके लिए ईश्वर को धन्यवाद दें।

आप वर्तमान में किसे प्रशिक्षण दे रहे हैं?

आप किस को जानते हैं जिसको आपके प्रोत्साहन और प्रशिक्षण से लाभ होगा?

6. कर्तव्य 3: कठिनाइयों को सहना

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 2:3-7

इसमें, तीमुथियुस को लिखे अपने अंतिम पत्र में, पौलुस ने तीमुथियुस को उसकी सेवकाई को बेहतर ढंग से पूरा करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण सलाह दी। वह उससे कहता था कि उसमें उत्साह, साहस और विश्वासयोग्यता होनी चाहिए (2 तीमुथियुस 1:6-18)। फिर पौलूस उसे एक पादरी के कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण कर्तव्यों की याद दिलाना शुरू करता है। उसने कहा कि तीमुथियुस को चाहिए कि वह परमेश्वर को अपने अनुग्रह से सामर्थ्य देने दे (2 तीमुथियुस 2:1) और उसको दूसरे लोगों तक पासबानी करने के बारे में जो कुछ भी जानता है उसे आगे पारित करना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:2)। अब वह तीसरा कर्तव्य दे रहा है: आपने सामने आने वाली कठिनाइयों को सहन कर (2 तीमुथियुस 2:3-7)। उसने तीमुथियुस को "कठिनाई सहने" की आज्ञा दी और इसे समझाने के लिए तीन उदाहरण दिए।

सबसे पहले, उसने सैनिकों का एक मिसाल के तौर पर इस्तेमाल किया है : **"मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की नाईं हमारे साथ दु:ख उठा। जो सिपाही के रूप में सेवा करता है वह नागरिक (गैरफौजी) मामलों में शामिल नहीं होता है - वह अपने कमान अधिकारी को प्रसन्न करना चाहता है"** (2 तीमुथियुस 2:3-4)। जब मैं अमेरिकी सेना में था तो मैं वहां गया जहां उन्होंने मुझे भेजा और वही किया जो उन्होंने मुझे करने के लिए सौंपा था। मुझे हमेशा सेवा के लिए तैयार रहना होता था। मैंने वह नहीं किया जो मैं चाहता था बल्कि वह किया जो मुझे करने का आदेश दिया गया था। यीशु की सेवकाई में भी यही सच है। हमें सर्प्रथ्म उसकी सेवा करनी है। एक सैनिक की अपनी उचित प्राथमिकताएँ होनी चाहिए, और परमेश्वर की सेवा करना हमेशा पहले स्थान पर आता है।

इसके बाद, पौलुस ने एक खिलाड़ी का उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया: **"इसी प्रकार यदि कोई खिलाड़ी मुकाबले में आए, तो यदि विधि के अनुसार न लड़े तो विजेता का मुकुट नहीं पाता"** (2 तीमुथियुस 2:5)। एक खिलाड़ी को नियमों का पालन करना चाहिए यदि वह विजयी होना चाहता है। यूनानी खिलाडिओं को अपनी प्रतियोगिताओं के लिए समय से पहले तैयारी करनी पड़ती थी। इसमें कड़ी मेहनत और आत्म-अनुशासन लगता था। इससे बढकर कुछ नहीं हो सकता था। यदि किसी को पुरस्कार जीतना है तो प्रतियोगिता के नियमों का सख्ती से पालन करना होगा। विश्वसनीय सेवा के लिए परमेश्वर का प्रतिफल पाने के लिए हमें भी, सभी बातों में आत्म-अनुशासन का पालन करना चाहिए। जैसा वह अपने वचन में निर्देश देता है, हमें उसकी सेवा करनी चाहिए। हमें उसके मार्ग का नेतृत्व करना चाहिए और इसके पहले किसी चीज को भी नहीं आने देना चाहिए। तभी हम अच्छी तरह से किए गए कार्य के लिए परमेश्वर की स्वीकृति का पुरस्कार प्राप्त कर पाएंगे ।

पौलूस ने जिस अंतिम उदाहरण का उपयोग किया वह एक किसान का है: **"मेहनती किसान को फसल का हिस्सा पहले मिलना चाहिए"** (2 तीमुथियुस 2:6)। खेती मेहनत का काम है। यह शौकिया नहीं है लेकिन जरूरी है ताकि लोग खा सकें। यह धैर्य और दृढ़ता मांगता है। इसके परिणाम तुरंत नहीं देखे जाते है। यह सब पासबानी के क्षेत्र में भी सच है। परमेश्वर के लोगों की अगुआई करने के लिए कड़ी मेहनत और धैर्य की ज़रूरत होती है। हम अपनी सेवा का परिणाम तत्काल नहीं देखते हैं, लेकिन समय आने पर हम देखेंगे।

पौलुस तीमुथियुस को इन उदाहरण के बारे में सोचने और इन पर मनन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जैसे वह उन्हें अपने जीवन में लागू करता है क्योंकि परमेश्वर उसके सीखने में मदद करने के लिए उनका उपयोग करेगा (2 तीमुथियुस 2:7)। हम भी उन से बहुत कुछ सीख सकते हैं। परमेश्वर से कहें कि वे इन से सीखने में मदद आपकी मदद करे ।

पौलूस की सलाह: जीवन में सबसे पहले परमेश्वर की सेवा करके (एक सैनिक के रूप में) कठिनाइयों का सामना करें, चीजों को परमेश्वर के तरीके से करें (एक खिलाडी के रूप में) और (एक किसान के रूप में) कड़ी मेहनत करें लेकिन धैर्य रखें ।

1 तीमुथियुस 6:12 विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़।

कौन सी उदाहरण आपके लिए सबसे अधिक बोलती है: एक सैनिक, खिलाडी या किसान? क्यों?

इस हिस्से के माध्यम से परमेश्वर आपको क्या सिखा रहा है?

7. यीशु हमारे धीरज का उदाहरण

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 2:8-13

2 तीमुथियुस 2 अध्य में, पौलुस तीमुथियुस को यीशु की सेवा में कठिनाइयों को सहने के उसके कर्तव्य की याद दिलाता रहा है। उसने कड़ी मेहनत, आत्म-अनुशासन और दृढ़ता को चित्रित करने के लिए एक सैनिक, एक खिलाड़ी और एक किसान का उदाहरण दिया है (2 तीमुथियुस 2:8-13)। फिर उसने परमेश्वर की सेवा में कठिनाई सहने के दो और उदाहरण दिए - आपना खुद का (आयत 9-10) और यीशु का आयत 8, 11-13)।

पौलुस अन्य विश्वासियों के लिए धीरज रखने के उदाहरण के रूप में स्वयं को जेल में होने की बात का उपयोग करता है (2 तीमुथियुस 2:9-10)। वह उत्पीड़न के बावजूद विश्वासयोग्यता का एक उदाहरण था। उसने तीमुथियुस को ही केवल "कठिनाई सहने" के लिए नहीं कहा था (आयत 3), उसने इसे स्वयं भी सहन किया था (आयत 9-10)। पादरीयों के रूप में, हम प्रचार करते हैं कि चाहे हम किसी भी परिस्थिति का सामना करें, परमेश्वर पर उसके आपने वादों को पूरा करने के लिए भरोसा किया जा सकता है। कई बार हमें इसे अपने जीवन में लागू करने और "हम जो उपदेश देते हैं उसका अभ्यास करने" की आवश्यकता होती है। क्योंकि हम पादरी हैं हम परीक्षणों से अछूते नहीं हैं, वास्तव में कभी-कभी दूसरों की तुलना में हमारे अधिक परीक्षण होते है। परमेश्वर इनको अनुमति देता है ताकि हम अनुभव से सीख सकें कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, ताक वह हमारे जीवनों द्वारा महिमान्वित हो सके जैसे हम कठिनाई और दर्द के माध्यम से उस पर भरोसा करते हैं।

कष्ट सहने का सबसे बड़ा उदाहरण यीशू स्वयं है (आयत 8, 11-13)। वह एक अच्छे उद्देश्य के लिए कष्ट उठाने का हमारे लिए सबसे बड़ा उदाहरण है। वह परमेश्वर था ("मसीह," "मृतकों में से जी उठा") और मनुष्य ("यीशु," "दाऊद का वंशज")। पौलूस तब एक सामान्य कहावत का हवाला देता है , शायद एक गीत के रूप में भी इसे गाया जाता है, जो हमारे बारे में है कि हम यीशु की तरह वफादार बने रहना के उदाहरण का अनुसरण करना है, चाहे कुछ भी हो (आयत 11-13)।

यह एक प्रारंभिक मसीही कविता है जो हमें आश्वस्त कराती है कि, चूंकि हम उद्धार में यीशु के साथ मर गए, हम उसके साथ अनंत काल तक जीवित रहेंगे (आयत 11)। अनन्त जीवन के अतिरिक्त, हमें हमारे विश्वासयोग्य धीरज के लिए अनन्तकाल में प्रतिफल भी दिया जाएगा (आयत 12क)। हमें अनंत जीवन का आश्वासन दिया गया है क्योंकि हम यीशु के साथ मर गए हैं , लेकिन इसके अलावा हमें प्रतिफल भी मिलेगा यदि हम विरोध या प्रलोभन के खिलाफ खड़े रहते हैं। हालाँकि , यदि हम विश्वासयोग्य नहीं रहते हैं तो हमें प्रतिफल नहीं दिया जाएगा (आयत 12ख)। जब हम मरेंगे, हम स्वर्ग तब भी जाएँगे, उद्धार कोई मुद्दा नहीं है। लेकिन स्वर्ग में विशेष इनाम दाँव पर लगा होगा।

यह कविता यीशु की तरह कष्ट सहने के बारे में है। उद्धार खोया नहीं जा सकता, पौलुस इसे कई बार स्पष्ट करता है (रोमियों 8:1, 28-30; इफिसियों 1:4, 11-12; 2:8-9), इसी तरह यीशु ने भी स्पष्ट किया है (यूहन्ना 5:41; 6:37- 40; 10:28-30), यूहन्ना (1 यूहन्ना 5:13; 3:15-16), पतरस (1 पतरस 1:4-5) और यहूदा (यहूदा 24-25)। हमारा उद्धार हमारी विश्वासयोग्यता या सहनशीलता पर निर्भर नहीं है, बल्कि भविष्य का प्रतिफल है। इस गीत की अंतिम आयत इस बात की पुष्टी करती है कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई यह न सोचे कि यह उद्धार की बात करती है। यहां तक कि अगर हम हमेशा विश्वास से नहीं जीते हैं, तो भी परमेश्वर हमें अस्वीकार नहीं करेगा (आयत 13)। हम उसके हैं और वह अपने आप से इन्कार नहीं कर सकता (2 तीमुथियुस 2:13)।

पौलुस तीमुथियुस को याद दिलाता है कि चाहे जो भी हो, कठिनाइयों को सहना उसका कर्तव्य है। वह आपने आप को और यीशु को उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल करता है। मुझे यकीन है कि आप उन लोगों के बारे में सोच सकते हैं जिन्होंने कठिन समय के दौरान ईमानदारी से यीशु की सेवा करने का एक अच्छा उदाहरण पेश किया है। क्या आप दूसरों के लिए वही उदाहरण स्थापित करते हैं जो आपको देख रहे हैं?

पौलुस की सलाह: यीशु की तरह वफादारी से सब कुछ सहन करें। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आपको अनंत काल के लिए पुरस्कृत किया जाएगा।

1 पतरस 4:2 वे अपना बाकि शारीरक जीवन मनुष्य की बुरी लालसाओं के अनुसार नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीते हैं।

अभी आप किन कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं? क्या आप ईमानदारी से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वह वही करेगा जो वह जानता है कि सबसे अच्छा है?

8. कर्तव्य 4: झूठी शिक्षाओं का विरोध कर

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 2:14, 16-19

कभी-कभी पादरीगण कलीसिया का नेतृत्व करने के लिए आवश्यक सभी कार्य करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि वे सबसे महत्वपूर्ण कार्य करना बंद कर देते हैं। अवयस्कों पर प्रमुखता देना और उसकी लापरवाही करना जिसे परमेश्वर सर्वोच्च प्राथमिकताओं के रूप में देखता है, आसान हो सकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि तीमुथियुस के साथ ऐसा न हो, पौलुस मरने से ठीक पहले उसे परमेश्वर और दूसरों के प्रति उसके कर्तव्य की याद दिलाते हुए लिखता है। तीमुथियुस के अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक यह था कि लोगों को धर्मसिद्धान्त के उत्तम बिन्दुओं के बारे में झगड़ा करने से बचने की याद दिलाए (2 तीमुथियुस 2:14, 16-19)। यह आज भी हमारे लिए एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है क्योंकि बहुत से मसीही लोग छोटी छोटी बातों पर बड़े विवाद में पड़ जाते हैं।

तीमुथियुस का कर्तव्य है, उन्हें बाइबल से बाहर की शिक्षाओं से दूर रहने के लिए "याद दिलाना" (आयत 14, 16)। हम अपने प्रचार, शिक्षण और व्यक्तिगत बातचीत में ऐसा करते हैं। उसे, और हमें, विश्वास के बुनियादी सत्यों पर चलते रहने और उन्हें जीवन में लागू करने की आवश्यकता है। झूठे शिक्षक और शैतान झूठ को बढ़ावा देते हैं इसलिए हमें सबसे पहले सत्य को रखने की आवश्यकता है। "शब्दों पर झगड़ा करना" गलत है क्योंकि 1) हमें झगड़ा नहीं करना है, बस परिपक्व चर्चा करनी है और 2) हमारे समय और ऊर्जा के साथ छोटे-छोटे, बालों को विभाजित करने वाले विवादों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए और भी कई महत्वपूर्ण चीजें हैं। ऐसा करना अक्सर विश्वासियों के बीच विभाजन लाता है और यीशु की गवाही को हानि पहुँचाता है। गर्व तब प्रवेश करता है जब लोग सही होना चाहते हैं और 'जीतने' के लिए कुछ भी कर देने तक पहुँच जाते है ।

इसी तरह, पौलुस तीमुथियुस को "परमेश्वेर रहित बकबक से दूर रहने" के लिए कहता है (पद 16)। "परमेश्वर रहित " वह हर बात है जो सच्चाई के साथ उसकी महिमा नहीं करती है, बल्कि झूठी और त्रुटिपूर्ण होती है। "बकबक" खोखली, मूर्खतापूर्ण बातों का वर्णन करता है जो दूसरों का संपादन या निर्माण नहीं करती है। यह उन बातों की निरर्थक चर्चा है जो पवित्रशास्त्र द्वारा समर्थित नहीं हैं। ये झूठी शिक्षाएँ लोगों को महत्वपूर्ण मुद्दों से भटकाती हैं और विभाजन और तर्क-वितर्क का कारण बनती हैं। वे

सिर्फ मुर्खता नहीं हैं, जैसे "सुई की नोंक पर कितने फरिश्ते बैठ सकते हैं?" वे गैंग्रीन की तरह जहरीले और विनाशकारी होते हैं (आयत 17)। वे मसीह के देह में बीमारी और सड़न लाते हैं।

पौलूस ने जिस उदाहरण का इस्तेमाल किया वह झूठी शिक्षा थी कि पुनरुत्थान पहले ही आ चुका था (आयत 18)। कुछ लोग आज भी कहते हैं कि कोई वास्तविक भौतिक पुनरुत्थान नहीं है, यह केवल 'आध्यात्मिक' है, कुछ ऐसा जो उद्धार पर घटित होता है। आप भ्रम और आशा की हानि की कल्पना कर सकते हैं जो इससे होगी! इसने इफिसुस की पूरी कलीसिया में समस्याएँ पैदा की होंगी। यह उस समय तीमुथियुस पर था, और आज हम पर निर्भर करता है , झूठी शिक्षाओं के प्रकट होते ही उन्हें सही करना।

फिर भी, परमेश्वर सम्प्रभु है जिसके नियंत्रण में सब कुछ है। पौलुस ने पुराने नियम को उद्धृत करते हुए उन्हें यह याद दिलाया: "प्रभु उन्हें जानता है जो उसके हैं" (2 तीमुथियुस 2:19; गिनती 16:5, 26)। जो उसके लोग हैं उन्हें इन झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों से मुड़ना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:19; यशायाह 52:11; योएल 3:5)।

यह एक बात है जब कोई आपकी कलीसिया में आता है और बाइबल की सच्चाई और यीशु के ईश्वरत्व को नकारता है। यह स्पष्ट है कि वे गलत हैं और उनका विरोध किया जाना चाहिए। यह तब और भी मुश्किल है अगर कोई ऐसा व्यक्ति हो जो बाइबल का पालन करने वाला मसीही होने का दावा करता हो। तब लोग उनका सम्मान करते हैं और उन पर भरोसा करते हैं और वे कलीसिया में पैर जमा लेते हैं और लोगों से उन चीजों के बारे में बात करना शुरू कर देते हैं जो बाइबल द्वारा समर्थित नहीं हैं। लोगों को आदम और हव्वा की तरह धोखा दिया जा सकता है। कुछ लोग विश्वास करने के लिए कुछ नया खोजते हैं, शायद मसीही जीवन जीने का एक आसान तरीका। उन्हें डर हो सकता है कि वे कुछ खो बैठे हैं और झूठे शिक्षक कुछ ऐसा जानते हैं जो वे लोग नहीं जानते। ऐसे लोगों को चुनौती देना और सही करना बहुत मुश्किल हो सकता है। मैंने एक पादरी के रूप में अपने वर्षों में कई बार ऐसी चीजों का सामना किया है। यह लोगों के आहत और भ्रमित होने के साथ समाप्त हुआ, और कुछ ने चर्च यहाँ तक कि विश्वास को भी छोड़ दिया। इस से लगभग हमेशा संघर्ष और कठिन भावनाएँ आती है। जब ऐसा होता है तो दुख होता है, लेकिन यह हमारा कर्तव्य है कि हम झूठी शिक्षाओं का विरोध करें चाहे कितना भी कठिन या दर्दनाक क्यों न हो। वे गैंग्रीन की तरह हैं। अगर हम इसे बना रहने देंगें तो जहर फैलेगा और अधिक तबाही मचाएगा। अपने लोगों को परमेश्वर के वचन की सच्चाई सिखाते रहो। सुनिश्चित करें कि आपके उपदेश बाइबल के हिस्सों को पढ़ाते और समझाते हैं, न कि केवल वही बार-बार। संपूर्ण बाइबल और इसकी सभी शिक्षाओं को कवर करें। ज्ञान और साहस के लिए प्रार्थना करें, फिर सत्य के लिए खड़े हों।

पौलूस की सलाह: ऐसी हर शिक्षा के विरुद्ध खड़े हों जाओ जो पवित्रशास्त्र द्वारा स्पष्ट रूप से समर्थित नहीं है।

1 तीमुथियुस 6:3-5 यदि कोई दूसरी प्रकार की शिक्षा देता है, और हमारे प्रभु यीशु मसीह के खरे उपदेश और ईश्वरीय उपदेश को नहीं मानता, तो वह घमण्ड करता है और कुछ नहीं समझता है। वे शब्दों के विवादों और झगड़ों में अस्वास्थ्यकर रुचि रखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ईर्ष्या, कलह, दुर्भावनापूर्ण बातें, दुष्ट संदेह और भ्रष्ट दिमाग के लोगों के बीच निरंतर घर्षण होता है, जिन से सत्य लूट गया हैं और जो सोचते हैं कि ईश्वरत्व केवल वित्तीय लाभ का साधन है ।

क्या आपको किसी ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध कभी खड़ा होना पड़ा है जो आपके चर्च में झूठी शिक्षा लेकर आया हो? क्या हुआ?

जब कोई लोगों को मार्ग भ्रष्ट कराने लगता है तो क्या आप समझौता करने और संघर्ष से बचने के लिए प्रलोभित होते हैं? सच के लिए खड़े होने का साहस मांगो।

9. कर्तव्य 5: केवल परमेश्वर की स्वीकृति की तलाश करें

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 2:15

अच्छे माता-पिता अपने बच्चों से उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की उम्मीद करते हैं। वे प्रत्येक बच्चे की ताकत और कमजोरियों, उनकी क्षमताओं और सीमाओं को जानते होते हैं। अगर बच्चा पूरी कोशिश कर रहा है तो एक अच्छे माता-पिता संतुष्ट हैं। अपने बच्चों के साथ हमारे स्वर्गीय पिता का भी यही सच है। वह हमारी क्षमताओं और कठिनाइयों को जानता है। वह हमारी तुलना दूसरों से नहीं करता। वह हमसे सिद्ध होने की उम्मीद नहीं करता, वह "जानता है कि हम मिट्टी हैं" (भजन संहिता 104:13), लेकिन वह यह भी नहीं चाहता कि हम पाप के प्रति लापरवाह हों। तोड़ों का दृष्टांत हमें सिखाता है कि परमेश्वर हमारी तुलना दूसरों से नहीं करता है, परन्तु यह कि वह हमें जो वरदान और संसाधन देता है हम उसका उपयोग करें जो हम कर सकते हैं (मत्ती 25:14-30)।

पौलुस भी तीमुथियुस से यही उम्मीद करता है, जैसा कि 2 तीमुथियुस 2:15 में देखा गया **है। "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और एक ऐसा कार्यकर्त्ता होने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"** केवल परमेश्वर ही है जिसकी स्वीकृति हम चाहते हैं और जिसकी हमें आवश्यकता है। हम दूसरों को खुश करने या प्रभावित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, हालांकि यह अक्सर पादरीयों के लिए एक प्रलोभन हो जाता है। यह स्वाभाविक है कि लोग हमें पसंद करें और हमारे बारे में अच्छा सोचें। लेकिन हम लोकप्रियता के लिए सच्चाई से समझौता नहीं कर सकते। वास्तव में, यदि हम ईमानदारी से यीशु की सेवा कर रहे हैं तो हमेशा कुछ लोग होंगे जो हमारा विरोध करते हैं। स्वयं यीशु को बहुत से लोगों ने पसंद नहीं किया। वह हमें लूका 6:26 में चेतावनी देता है: **"हाय तुम पर, जब सब लोग तुम्हें अच्छा कहें।" उसने मत्ती 5:11 में यह भी कहा: "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं, और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें।"** पादरी होना कोई लोकप्रियता की प्रतियोगिता नहीं है। ईश्वर ही एक है जिसकी राय का हमें ध्यान रखना है।

पौलूस जो उदाहरण देता है वह किसी ऐसे व्यक्ति की है जो किसी दुसरे के लिए काम करने वाले का है। वह जिसके लिए काम करता है उसे खुश करना चाहता है और ऐसा काम करना चाहता है जिससे वह खुश हो। यदि उसका कार्य स्वीकार्य नहीं है, तो कार्यकर्ता किए गए कार्य से शर्मिंदा होगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दुसरे सब यह सोचते हो कि उसने बहुत अच्छा काम किया है, अगर उसे नियुक्त करने वाला ऐसा नहीं सोचता है तो उसे शर्म आएगी। मैं परमेश्वर को **"शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास"** कहते हुए सुनना चाहता हूँ! (मत्ती 25:23) और मुझे यकीन है कि आप भी ऐसा ही चाहतें होंगे। इसका अर्थ है कि हमें अपने सभी कार्यों में उसे प्रसन्न करने का प्रयास करना चाहिए, भले ही दूसरे सहमत हों या नहीं।

पौलूस द्वारा उपयोग किया जाने वाला दूसरा दृष्टांत एक तंबू बनाने वाले का है जिसे अपनी सामग्री को सही ढंग से काटना चाहिए ताकि सिलाईयां पूरी तरह से मिल जाए। "सही ढंग से संभालता है" का अर्थ है "सीधी रेखा को काटना।" इस शब्द का उपयोग एक सीधी पंक्ति में ब्लॉक बिछाने वाले बिल्डर और एक सीधी सड़क का निर्माण करने वाले सड़क निर्माता के लिए भी किया जाता है। यह एक किसान को

अपने खेत में सीधी हल जोतने के लिए भी संदर्भित कर सकता है। पौलूस इस सच्चाई को एक पादरी पर लागू कर रहा है जो सही और सच्चाई से परमेश्वर के वचन को संभालता है। हम अपने अध्ययन और उपदेश की तैयारी में शॉर्टकट नहीं ले सकते। सब कुछ पूरी तरह से और सावधानी से किया जाना चाहिए। हम जल्दी में नहीं हो सकते हैं या शॉर्टकट की तलाश नहीं कर सकते हैं, क्योंकि ऐसा करने पर परमेश्वर हमारी सेवकाई को स्वीकार नहीं करेगा यदि हम जो करते हैं या कहते हैं उसमें उसके वचन के प्रति सच्चे नहीं हैं।

"सत्य का वचन" हमारा उपकरण है। सभी कामगारों के पास उपकरण होते हैं। डॉक्टर, किसान, सैनिक, सबके पास अपने व्यापार के औजार होते हैं। बाईबल वह उपकरण है जिसका उपयोग एक पादरी जीवन बदलने और परमेश्वर की महिमा करने के लिए करता है। जितना बेहतर हम अपने उपकरण को जानते हैं उतना ही बेहतर हम उसके लिए पादरी बन पाएंगे।

बाइबल को "आत्मा की तलवार" कहा जाता है (इफिसियों 6:17)। यह एक तेज, दोधारी तलवार को संदर्भित करता है, जो एक कुशल तलवारबाज के हाथों में एक बहुत ही प्रभावी हथियार है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति इसका उपयोग करना नहीं जानता है, तो वह खुद को काट सकता है। पादरीयों को बाइबल के ज्ञान और उपयोग में पूर्ण होने की आवश्यकता है। यही हमारा एकमात्र आक्रामक हथियार है, हमारी जीत का एकमात्र साधन है। परमेश्वर हमसे उम्मीद करता है कि हम इसके उपयोग में अनुभवी हों। यदि हम हैं, तो हम उसकी स्वीकृति प्राप्त करेंगे और हमें लज्जित नहीं होना पड़ेगा। क्या आप अपनी बाइबल के साथ कुशल हैं? क्या वह आपके ज्ञान और अपने वचन के उपयोग को स्वीकार करता है?

पौलूस की सलाह: अपनी सेवकाई के लिए उसकी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के वचन को ठीक से जानें और उसका उपयोग करें, क्योंकि केवल उसकी स्वीकृति मायने रखती है।

मत्ती 25:22-23 "सोने की दो थैलीयाँ लिये हुए वह पुरूष भी आया। 'स्वामी,' उसने कहा, 'आपने मुझे सोने के दो थैलीयाँ सौंपी थी; देख, मैं ने दो और कमाई हैं।' उसके स्वामी ने उत्तर दिया, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तुम थोड़े में विश्वासयोग्य रहे; मैं तुम्हें बहुत सी चीजों का भंडारी रखूँगा। आओ और अपने मालिक की खुशी में शामिल हो लो !'

क्या आप अपने ज्ञान और परमेश्वर के वचन के प्रयोग में बढ़ रहे हैं?

क्या आप बाइबल के अनुसार जी रहे हैं और सेवा कर रहे हैं?

<u>10. कर्तव्य 6: पवित्र बनो</u>

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 2:20-26

मसीही जीवन और सेवकाई को समझने में हमारी मदद करने के लिए पौलुस कई उपमाओं का उपयोग करता है। 2 तीमुथियुस में वह एक सैनिक (2:3-4), एक खिलाड़ी (2:5), एक किसान (2:6), एक कार्यकर्ता (2:15), एक बर्तन (2:20-21) और एक नौकर (2:20-21) के उदाहरण का उपयोग करता है (2:24-26)। दूसरी कई जगह वह यीशु के लिए जीवन जीने वाले को एक भण्डारी (1 कुरिन्थियों 4:1-2) या एक राजदूत (2 कुरिन्थियों 5:20) होने के बराबर रखता है। पतरस कहता है कि हम जीवित पत्थर हैं (1 पतरस 2:5), याजक (1 पतरस 2:5, 9-10) और अजनबी (1 पतरस 2:11)। यीशु ने स्वयं हमें मछुआरा (मत्ती 4:19), नमक (मत्ती 5:13), प्रकाश (मत्ती 5:14-16) और शाखाएँ (यूहन्ना 15:5) कहा।

जब पौलुस तीमुथियुस को उसके छठे कर्तव्य की याद दिलाता है, पवित्र होने के रूप में , वह लोगों की तुलना लकड़ी या मिट्टी के बर्तनों और पत्रों से करता है (2 तीमुथियुस 2:20-21)। कुछ साफ हैं और कई उद्देश्यों के लिए उपयोगी हैं; अन्य प्रदूषित और अपवित्र हो गए हैं इसलिए अब उपयोगी नहीं रहें हैं। इफिसुस में मसीहीयों के बारे का भी यही सच है। हमें सेवा के लिए तैयार और उपयोगी होना चाहिए, अपने आप को अंदर और बाहर से साफ रखना चाहिए। जब भी जरूरत हो हमें उपलब्ध होना चाहिए।

फिर पौलुस स्पष्ट रूप से बताता है कि क्या कुछ अपवित्रता का कारण बन सकता है और किस किस चीज से बचना चाहिए। वह बुरी इच्छाओं (आयत 22), मूर्खतापूर्ण और बेवकूफी भरी बातें (आयत 23), झगड़ालू रवैया (आयत 24) और निर्देश मानने के लिए तयार नहीं होने (आयत 25-26) को सूचीबद्ध करता है।

''जवानी की अभिलाषाओं से दूर भागो'' (2 तीमुथियुस 2:22) । जो लोग युवा हैं वे अक्सर यौन पापों और अन्य पापों जैसे बहस, अभिमान, स्थापित तरीकों का विरोध करने और यह सोचने के लिए अधिक संवेदनशील हो जाते हैं कि वे सबसे अच्छी तरह का ज्ञान और जानकारी रखते हैं। परन्तु इसकी बजाय, धार्मिकता, विश्वास, प्रेम और शांति के के लिए कोशिश करनी चाहिए।

"मूर्खतापूर्ण और मूर्खता की बातों में न पड़ना" (2 तीमुथियुस 2:23)। झूठी शिक्षाओं और झूठे शिक्षकों से दूर रहो। न केवल वे गलत हैं, बल्कि वे विश्वासियों के बीच विवाद उत्पन्न करते हैं। आज जो लोग विधिवाद (कोई कृपा नहीं, केवल काम करता है) या उदारवाद (कोई काम नहीं, केवल अनुग्रह) को बढ़ावा देते हैं, उन्हें सुधारा जाना चाहिए।

''प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए'' (2 तीमुथियुस 2:24) । झूठी शिक्षाओं से दूर रहें और तुम बहुत सारे वाद-विवाद से भी दूर रहोगे। इसके बजाय, पौलूस कहता हैं कि हमें अनुग्रह दिखाने और कोमल व प्रेमपूर्ण होने के द्वारा सभी के प्रति दयालु होना चाहिए। हमें दूसरों को परमेश्वर की सच्चाई बताने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए (1 पतरस 3:15) और हमें क्रोधित नहीं होना चाहिए। हमें दूसरों को क्षमा भी करना है।

"विरोधियों को नम्रता से शिक्षा दी जानी चाहिए" (2 तीमुथियुस 2:25-26) ताकि इस से वे अपने गलत विश्वासों की त्रुटि को देखे और सत्य की ओर मुड़े। जो झूठी शिक्षाओं से बहकाए जाते हैं वे शैतान के फंदे में फँस जाते हैं और उन्हें उसके प्रभाव से बचने की ज़रूरत है।

पादरीयों के रूप में आज, तीमुथियुस को कहे गए पौलुस के ये शब्द हम पर भी लागू होते हैं। हमें साफ बर्तन होने की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर हमे जो भी कार्य या जिम्मेदारी देना चाहता है वह उसके लिए हमें उपयोग कर सके। इसका अर्थ है कि हमें झूठी शिक्षा से बचना चाहिए और केवल उसके वचन का पालन करना चाहिए। हमें अपनी कलीसिया में किसी भी तरह के झूठ को फैलने से रोकना चाहिए और उन लोगों तक पहुंचना चाहिए जो गुमराह हैं और उन्हें सच्चाई की ओर ले जाना चाहिए । गलत शिक्षाओं में यह शिक्षाएँ भी शामिल हैं जो दावा करती हैं कि परमेश्वर हमें वह सब कुछ देगा जो हम माँगते हैं, कि हम कभी भी बीमार नहीं होंगे या कठिनाइयों से संघर्ष नहीं करना होगा, हमारे जीवन को आसान बनाने के लिए जो भी चमत्कार हम चाहते हैं वह करेगा जो पाप और अवज्ञा की गंभीरता को कम करता है। उसके वचन को जानें और हमेशा उसका मार्गदर्शन लें।

पौलूस की सलाह: पाप से मुड़कर और सभी झूठी शिक्षाओं का विरोध करके एक पवित्र, पवित्र जीवन जिएं।

मत्ती 5:8 धन्य हैं वे, जिन के मन पवित्र हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
भजन संहिता 51:10 हे परमेश्वर, मुझ में पवित्र मन उत्पन्न कर, और मुझ में सही आत्मा का नवीनीकरण कर।

पवित्रता के साथ आपका सबसे बड़ा संघर्ष कहां है?

विजय प्राप्त करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

11. कर्तव्य 7: संसार के विरोध के प्रति सचेत रहें

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 3:1-9

प्रत्येक पीढ़ी सोचती है कि दुनिया बदतर हो रही है। हम आज यही सोचते हैं। पौलूस भी यही सोचता था। वह न सिर्फ ऐसा सोचता था बल्कि इसका सबूत भी देता था। हम अंत के दिनों में जितना आगे बढ़ते हैं, दुनिया में बुराई भी उतनी ही बढ़ती जाती है। अपने अंतिम पत्र (2 तीमुथियुस) में, पौलुस ने तीमुथियुस को एक पादरी के रूप में उसके कर्तव्यों की याद दिलाता है। उसे अपने विश्वास में मजबूत होना था (2:1), सत्य का संचार करना था (2:2), कठिनाइयों को सहन करना था (2:3-13), झूठी शिक्षाओं का विरोध करना था (2:14,16-19), केवल परमेश्वर की स्वीकृति की तलाश करना था (2:15), पवित्र रहना (2:20-26) और अब संसार से बढ़ते विरोध के प्रति सतर्क रहना (3:1-9)। पौलूस, जो अपने विश्वास के लिए जेल में था, जानता था कि समय बुरा था लेकिन यह और भी बुरा होगा। हमें पता होना चाहिए कि इसके आगे क्या आ रहा है और यह जानना चाहिए कि इसके बारे में क्या करना जरूरी है।

''अन्तिम दिनों में भयानक समय आएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:1-9) । "अंतिम दिन" यीशु के लौटने से पहले के अंतिम दिनों को संदर्भित करता है, और कोई नहीं जानता कि यह कब होगा। इसलिए, पौलूस ने महसूस किया कि ये दिन पहले ही शुरू हो चुके थे और तीमुथियुस उन में ही रह रहा था। वह बताता हैं कि वे कैसे होंगे।

2 तीमुथियुस 3:2-5 **लोग अपने आप से प्रेम करने वाले** (स्वकेंद्रित, स्वार्थी), **धन के लोभी** (लालची), **डींग मारने वाले** (खुद पर ध्यान देने वाले), **घमण्डी** (निरंतर अहंकारी), **गाली देने वाले** (दूसरों के साथ निर्दयतापूर्वक व्यवहार करने वाले) होंगे।), **अपने माता-पिता के प्रति अवज्ञाकारी** (विद्रोही, अनादरपूर्ण), **बेशुकुर्गुजार** (पात्रता का रवैया धरे, किसी भी चीज़ के लिए बिना किसी प्रशंसा भावना के), **अपवित्र** (कुछ भी अच्छा, ईश्वरीय, नैतिक नहीं होगा), **बिना प्यार के** (हृदयहीन, कठोर, घृणित, कठोर, किसी की परवाह नहीं करते होंगे, लेकिन सिर्फ स्वयं की), अक्षम्य ('शैतान' के समान मूल शब्द से, शैतान जैसे शैतानी कार्य जो कभी क्षमा नहीं करते हैं लेकिन प्रतिशोधी होता है), **निंदक** (क्रूर, हानिकारक, असत्य के शब्द से दूसरों को नीचा दिखाने के लिए), **आत्म-नियंत्रण के बिना** (जंगली, बिना आत्म-अनुशासन, जो वे चाहते हैं वह करेंगे), **क्रूर** (अदम्य, शाब्दिक रूप से 'असभ्य,' क्रूर, पशुवत), **अच्छे के प्रेमी नहीं** (इसलिए जो अच्छा है उससे घृणा करेंगे और जो बुराई है उससे प्यार करेंगे , विनाशकारी, हानिकारक), **विश्वासघाती** (उनसे विश्वासघात करेंगे जिनके प्रति उन्हें वफादार होना चाहिए), **उतावलापन करने वाले** (विचारों और कार्यों में लापरवाही करने वाले), **अभिमानी** (शाब्दिक रूप से

'अपने महत्व से फूला हुए'), **परमेश्वर के प्रेमी होने के बजाय आनंद के प्रेमी** (सुखवादी, अनैतिक, स्वयं को स्थापित करने के लिए समर्पित) **अच्छा महसूस करना, स्वयं का आनंद ही एकमात्र उनके लिए ईश्वर है जिसकी वे सेवा करते हैं** - **ईश्वरत्व का एक रूप होना लेकिन उसकी शक्ति को नकारना** (पाखंडी, धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, वे जो वास्तव में पसंद करते हैं उसके बारे में ईमानदार नहीं होते हैं) **और हमेशा सीखते हैं लेकिन कभी भी सत्य का ज्ञान तक आने में सक्षम नहीं होते हैं** (वे झूठ पर विश्वास कर रहे हैं, वे आज हमारे लिए बाइबल को परमेश्वर के अंतिम, पूर्ण अधिकार के रूप में नहीं देखते हैं)।

ऐसे लोगों से कोई लेना देना ना रखना। पौलूस द्वारा यह मजबूत आदेश बताता है कि उनके प्रति तीमुथियुस की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए। वह चेतावनी देता है कि वे अच्छी लगने वाली बातों का उपयोग उन लोगों के जीवन में घुसने के लिए करते हैं जो कमजोर और भोले हैं। वे उनका विश्वास प्राप्त करते हैं और धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से उन्हें पाप की ओर ले जाते हैं (आयत 6)। शैतान के दो सेवक यान्नेस और जैम्ब्रेस, जिन्होंने फिरौन के दरबार में मूसा का विरोध किया, इस तरह के लोगों के प्रमुख उदाहरण हैं जो भ्रष्ट हैं और परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं (आयत 8)।

उस समय मूसा के ये विरोधी, तीमुथियुस के दिनों में सत्य के विरोधियों की तरह, जानते थे कि परमेश्वर उनकी शैतानी शक्ति से बड़ा है, लेकिन फिर भी उन्होंने पश्चाताप नहीं किया (आयत 9)। एक दिन हर कोई अपने पाप को देखेगा कि वह वास्तव में क्या है। अंतिम दिनों में ऐसा ही होगा, और जैसे-जैसे हम यीशु की वापसी के करीब आते हैं, हम इन चीजों को अधिक से अधिक देखते हैं। पाखण्ड, पाप, आत्मकेन्द्रता, घमण्ड और अन्य सभी बातें हमारे चारों ओर अधिक से अधिक सामान्य होती जा रही हैं। तीमुथियुस को दी गई पौलुस की आज्ञा का पालन करना, और ऐसे लोगों से कुछ लेना देना न रखना।

कभी-कभी यह बताना कठिन होता है कि कौन झूठा शिक्षक है और कौन ईमानदारी से यह जानने का प्रयास कर रहा है कि परमेश्वर के वचन का क्या अर्थ है। आप उनके मकसद की तलाश करके दोनों में अंतर बता सकते हैं। उनकी किस तरह की प्रतिष्ठा है? पादरीयों और परमेश्वर के वचन के प्रति उनका दृष्टिकोण क्या है? क्या वे अपना रास्ता पाने के लिए क्रोध, शक्ति, भय या नियंत्रण का उपयोग करते हैं? क्या वे नई चीजें सीखने के लिए तयार हैं? क्या वे ध्यान से आपकी बाइबल की व्याख्याओं को सुनेंगे? इससे आपको निर्णय लेने में मदद मिलेगी। आपके भीतर मौजूद परमेश्वर का आत्मा आपको मार्गदर्शन और बुद्धि देगा।

पौलूस की सलाह: घमंडी, स्वार्थी, घृणित लोगों से दूर रहें जो परमेश्वर की बातों का विरोध करते हैं और दूसरों को भी उसी तरह आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं।
आप किस को जानते हैं जो इस वर्णन पर फिट बैठता है? (याद रखें, वे अक्सर धार्मिक प्रतीत होते हैं लेकिन वास्तव में होते नहीं हैं।)

क्या आप खुद को और अपनी कलीसिया को उनसे बचाने के लिए सावधान हैं?

12. कर्तव्य 8: उत्पीड़न में विश्वासयोग्य रहें
पढ़ें: 2 तीमुथियुस 3:10-13

पौलुस तीमुथियुस को उन लोगों के बारे में चेतावनी देता है जो यीशु की वापसी के निकट आने पर परमेश्वर से और दूर हो जाएंगे (2 तीमुथियुस 3:1-9)। ये लोग फाड़ डालते हैं और परमेश्वर के सच्चे सेवकों को बदनाम करने की कोशिश करते हैं ताकि लोग उनकी ही बात सुनें। इफिसुस में के लोग पौलुस की आलोचना करते रहे हैं। चूँकि वे सत्य को बदनाम नहीं कर सकते, वे सत्य वाहक को बदनाम करने की कोशिश करते हैं। जो लोग यीशु के बारे में आपकी शिक्षाओं का खंडन नहीं कर सकते, वे आप पर व्यक्तिगत रूप से हमला करेंगे। उन्हें आपके या आपके व्यक्तित्व के बारे में ऐसी चीज़ें मिलेंगी जो उन्हें पसंद नहीं हैं और वे उनके बारे में शिकायत करेंगे ताकि दूसरे लोग आपकी बातों का सम्मान न करें। यह हर उस व्यक्ति के साथ होता है जो यीशु की सेवा करता है। यह यीशु के साथ हुआ, और पौलुस के साथ भी हुआ था (2 तीमुथियुस 3:10-13)।

पौलूस तीमुथियुस को अपने द्वारा सहन किये गए उत्पीड़न की याद दिलाता है ताकि जब तीमुथियुस इसका सामना करे तो उस को आश्चर्य न हो। हम सोच सकते हैं कि विरोध और कठिनाइयाँ हमारी गलती हैं, क्योंकि हम कुछ गलत कर रहे हैं। बहुत अक्सर : हालांकि, वे इसलिए आती हैं क्योंकि हम चीजों को सही तरीके से कर रहे होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर चाहता है। उसके शत्रु (संसार, शरीर और शैतान) परमेश्वर और उसके प्रतिनिधित्व करने वाले किसी भी व्यक्ति के विरोध में उठ खड़े होते हैं। यह तीसरे कर्तव्य के साथ जुड़ा हुआ है जिसे पौलुस ने तीमुथियुस को कठिनाइयों को सहन करने के लिए याद दिलाया है (2 तीमुथियुस 2:3-13)। पौलूस तीमुथियुस को इन बातों के बारे में अपने शब्दों और अपने कार्यों के द्वारा सिखाता है, और जो उसने सिखाया है उसे अपने जीवन में लागू करने का एक उदाहरण स्थापित करता है ।

दुखद सच्चाई यह है कि पौलुस ने जिस विरोध और आलोचना का सामना किया, और जिसका हम भी करते हैं, वह कलीसिया के भीतर से आता है, बाहर से नहीं। यह आरम्भिक कलीसिया के लिए सत्य था, और आज की कलीसिया के लिए भी सत्य है। फिर भी परमेश्वर हमारे द्वारा अपने मिशन को पूरा करने के लिए अभी भी विश्वासयोग्य है। इसका मतलब यह नहीं है कि दर्द, अस्वीकृति, कठिन समय और हानि नहीं होगी, लेकिन परमेश्वर हमारे साथ रहेगा ताकि हमें उन सब सहन करने में मदद मिले (2 तीमुथियुस 3:10-11)।

परमेश्वर का पौलुस को इतना अधिक अनुभव करने की अनुमति देने का एक कारण था कि वह तीमुथियुस और अन्य लोगों के लिए और आज हमारे लिए भी एक उदाहरण बन सके। आप किसके लिए एक अच्छा उदाहरण बं रहे हैं? आपको कौन देख रहा है जिसके बारे में आप नहीं जानते हैं ? परमेश्वर इसकी अनुमति देता है और हमारे विकास और उसकी महिमा के लिए इसका उपयोग करता है।

फिर पौलूस एक धाकड़ बयान देता है, वास्तव में एक वादा, हालांकि यह ऐसा वादा नहीं है जिसका हम अक्सर दावा करते हैं। **"जो कोई मसीह यीशु में भक्ति का जीवन जीना चाहेगा वह सताया जायेगा"** (2 तीमुथियुस 3:13)। यदि आप विरोध और सताव नहीं चाहते हैं, तो यीशु के लिए जीना बंद कर दें और शैतान आप पर दबाव डालना बंद कर देगा। जीवन और सेवकाई में कठिनाइयों का सामना करते समय चकित या निराश न हों। "हर कोई" में आप और मैं दोनों शामिल हैं। स्पष्ट रूप से समृद्धि का सुसमाचार धर्म्शाश्त्र आधारित है।

आयत 12 में प्रतिज्ञा का दूसरा भाग कहता है कि कुकर्मी और बहकाने वाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए बिगड़ते चले जाएंगे। सत्य की जीत होगी, लेकिन हो सकता है कि हम अपने जीवनकाल में ऐसा होते न देखें। जब यीशु वापस आएगा तो सब कुछ पूर्ण बनाया जाएगा, लेकिन तब तक नहीं। जब वे, जो परमेश्वर और उसके लोगों का विरोध करते हैं वे समृद्ध होते दिखते हैं, और जो परमेश्वर की सेवा करते हैं वे संघर्ष करते हैं, तो चकित मत होना। यह हमेशा से ऐसा ही रहा है और हमेशा रहेगा भी।

पौलूस की सलाह: जब सेवकाई बहुत कठिन हो तो हैरान मत होना, बस विश्वासयोग्य बने रहिए।

मत्ती 5:11-12 "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं, और तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की झूठी बातें कहें। आनन्दित और मगन हो, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है, क्योंकि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को भी इसी रीति से सताया था, जो तुम से पहिले थे।

जब चीजें आपकी इच्छा के अनुसार नहीं होती हैं और या फिर जब लोग आपका विरोध करते हैं तो आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या होती है?

अस्वीकृति और विरोध के प्रति यीशु ने कैसी प्रतिक्रिया दी? हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

13. कर्तव्य 9: वचन आधारित जीवन जीएं

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 3:14-17

अपने प्रिय पुत्र, तीमुथियुस के साथ अपने अंतिम पत्र-व्यवहार में, पौलुस ऐसी सलाह देता था जो उसके दिन के साथ-साथ आज के दिन में भी सत्य है। उसने तीमुथियुस को विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया (1:1-5) फिर उन लोगों के तीन महत्वपूर्ण गुणों को सूचीबद्ध किया जो परमेश्वर की सेवा करते हैं : उत्साह, साहस और विश्वासयोग्यता (1:6-18)। इसके बाद, उसने तीमुथियुस को कर्तव्यों की एक श्रृंखला बनता है, जिनको सब पादरीयों और अगुवों ने आज्ञाओं के रूप में को पूरी करना था (2:1-4:8)। जो कुछ वह कहना चाहता है, उसे कहने के बाद, पौलुस अब तीमुथियुस से सीधे बात करता है (3:14-4:5)। पौलूस उसे आदेश देता है कि"जो कुछ उसने सीखा है उसे जारी रखे" (2 तीमुथियुस 3:14)।

बाइबल को जानने से कोई लाभ नहीं होता है जब तक हम इसे अपने जीवन के व्यवहार में नहीं लाते हैं। तीमुथियुस को सच्चाई में विश्वासयोग्यता से सहते रहना चाहिए और उन लोगों से विचलित नहीं होना चाहिए जो उसका विरोध करते हैं और उसकी आलोचना करते हैं या उनसे जो झूठ सिखाते हैं। परमेश्वर का वचन ही हमारा एकमात्र पूर्ण है, त्रुटि से एकमात्र रक्षक, सत्य को जानने का एकमात्र तरीका है। हमारे कार्य हमारे मूल्यों से निर्धारित होते हैं, और हमारे मूल्य हमारे विश्वासों पर निर्माणित होते हैं। तीमुथियुस परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता है; इस प्रकार उसके मूल्य परमेश्वर के

मूल्यों के समान हैं। यह उनके कार्यों में दिखायी देता है। लोगों के कर्म दिखाते हैं कि वे क्या विश्वास करते हैं। वे लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इससे दूसरों के मूल्यों के बारे में उनके विश्वास का पता चलता है। तीमुथियुस ने पहली बार इन बातों को एक बच्चे के रूप में सीखा था (आयत 15) और पौलुस उसे याद दिला रहा है कि वे अभी भी सत्य हैं।

छोटे बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाना बहुत महत्वपूर्ण है। साधारण कहानियों और खेलों का अपना स्थान है, परन्तु बच्चों को परमेश्वर के वचनों में प्रकट सत्यों को सीखने की आवश्यकता है। बहुत बार पादरी सोचते हैं कि बच्चे महत्वपूर्ण नहीं हैं और वयस्कों की सेवा पर ध्यान केंद्रित करते समय उन्हें अनदेखा कर देते हैं। बच्चों की सेवा करने के लिए उनका पूरा जीवन आगे पड़ा है और बहुत महत्वपूर्ण हैं। मैं इसे लोगों को दो पेंसिल दिखा कर समझाता हूँ। एक पूर्ण है है, दूसरी आधी घिसी हुई है और केवल आधी ही है। मैं उनसे पूछता हूं कि वे दोनों में से कौन सी पेंसिल चुनेंगे और वे हमेशा बड़ी पेंसिल चुनते हैं। जब मैं पूछता हूं कि वे ऐसा क्यों ? तो वे कहते हैं क्योंकि यह लंबे समय तक चलेगी और इसके साथ और अधिक लिखा जा सकता है। बड़ी पेंसिल उन बच्चों को चित्रित करती है जिनके आगे उनका पूरा जीवन रखा होता है। छोटी पेंसिल उन वयस्कों को चित्रित करती है जो पहले से ही अपना अधिकांश जीवन जी चुके होते हैं। जब हम बच्चों में निवेश करते हैं तो हम दूर भविष्य में दूर- अविधि निवेश कर रहे होते हैं। तीमुथियुस को एक छोटे बच्चे के रूप में बाइबल सिखाई गई थी: "बचपन से तू पवित्र शास्त्र जानता है" (2 तीमुथियुस 3:15)। यही केवल तुझे "उद्धार के लिये बुद्धिमान बना सकता है" (आयत 15)।

एक मसीही जन के जीवन में पवित्रशास्त्र के महत्व को दिखाने के लिए, पौलूस बाइबल में सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले आयातों में से एक लिखता है: **सिखाने, और डाँटने, सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये, "सभी (हर एक शब्द) पवित्रशास्त्र ईश्वर-प्रेरित (प्रेरित, 100% सत्य और सटीक) है और उपयोगी है ताकि परमेश्वर का जन हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए"** (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

"शिक्षा" सत्य में निर्देश को संदर्भित करती है, ज्ञान को प्रसारित करती है ताकि लोग जान सकें कि क्या सही है। **"फटकार"** आवश्यक है जहां सत्य को झूठ से बदल दिया जाता है, जो सही नहीं है उसे संशोधित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। **"संशोधन"** का अर्थ है किसी व्यक्ति को त्रुटि से पुनर्स्थापित करना, यह दिखाना कि क्या गलत है और क्या सही है। **"धार्मिकता में प्रशिक्षण"** शाब्दिक रूप से **"बाल-प्रशिक्षण"** है, यह सिखाता है कि जीवन के सभी क्षेत्रों में कैसे जीना है, जो परमेश्वर का वचन सिखाता है जीवन में कैसे लागू करना है ।

परमेश्वर के वचन को सिखाने और करने का उद्देश्य है **"ताकि परमेश्वर का हर जन एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए"** (2 तीमुथियुस 3:17)। बाइबल हमें उसकी सेवा करने और उसके लिए जीवन जीने के लिए तैयार और सुसज्जित करती है। परमेश्वर के वचन को जानना और उसका पालन करना ही 'परमेश्वर का जन' बनने का एकमात्र तरीका है। हमारे जीवन में इससे बेहतर और क्या इच्छा हो सकती है? "परमेश्वर के जन" के रूप में पहचाने जाने से बढ़कर हमारी और कौन सी बड़ी उपाधि हो सकती है। मैं चाहता हूँ की मुझे ऐसे ही याद किया जाए। आप कैसे चाहते हैं की आप को याद किया जाए?

पौलुस की सलाह: आज हमारे लिए परमेश्वर के वचन में उसकी सच्चाई है। हमें इसे सीखना चाहिए और इसका पालन करना चाहिए।

जब आप 'परमेश्वर के जन' के बारे में सोचते हैं तो आपके दिमाग में कौन आता है?

क्या आपके परिवार के सदस्य आपको 'परमेश्वर का जन' मानते हैं? आपके चर्च के लोगों का क्या विचार हैं ?

14. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार कर

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:1-2

जिस सैमीनरी में मैंने किया पढ़ाई की है उसका आदर्श वाकय है "वचन का प्रचार करो" 2 तीमुथियुस 4:2 में तीमुथियुस को कहे गए पौलुस के शब्द हैं, यह हमारे गिरजे की सामने की दीवार पर लिखा गया था और वहां ऐसी जगह पर रखा गया था जहां हम इसे दिन में कई बार देखते थे। इसलिए यह मेरे दिल और दिमाग में अंकित हो चुके है। यह परमेश्वर और दूसरों के प्रति हमारी जिम्मेदारी को सारांशित करता है। यह हमारे लिए परमेश्वर का सौभाग्य और हमारे लिए उसकी आज्ञा है। यह तीमुथियुस के लिए पौलुस का अंतिम कार्य है, वह कर्तव्य जिसके लिए अन्य सभी ने निर्माण किया है।

इस अंतिम शिक्षण सत्र में, 2 तीमुथियुस 4:1-5, में पौलुस तीमुथियुस को 11 आज्ञाएँ देता है, एक के बाद एक, जो वचन का प्रचार करने पर निर्माणित हैं। पौलूस जो कुछ कहने जा रहा है और जिस तरह से वह इसे पेश करता है इससे उसकी गंभीरता को दिखाता **है। "ईश्वर और मसीह यीशु की उपस्थिति में** (हम उसके प्रति जवाबदेह हैं, वह सब कुछ देखता है, जो जो हम करते हैं) **जो जीवितों और मृतकों का न्याय करेगा** (विश्वासयोग्य सेवा के लिए इनाम), **उसके प्रकट होने और उसके राज्य को ध्यान में रखते हुए** (यीशु किसी भी समय वापस आ सकता है इसलिए हमेशा तैयार रहना है), **मैं आपको यह जिमेदारी देता हूं** (पौलुस तीमुथियुस को यह जिम्मेदारी देने के लिए अपने प्रेरितिक अधिकार का उपयोग कर रहा है, यह उनके पिता-पुत्र के रिश्ते से बहुत आगे निकल जाता है)" (2 तीमुथियुस 4:1-2)। तीमुथियुस का कर्तव्य था इफिसुस की कलीसिया को राजा यीशु की वापसी के लिए तैयार रखना। हमें भी यही करना है।

इसके बाद महिमामय आज्ञा आती है: **"वचन का प्रचार करो।"** <u>"प्रचार"</u> का अर्थ किसी चीज़ की सार्वजनिक घोषणा करना है, जैसे कि एक राजदूत जिसे राजा द्वारा अधिकार के साथ अपने संदेश की घोषणा करने के लिए भेजा जाता है। वह राजा के शब्दों को जोर से और स्पष्ट रूप से प्रसारित करेगा, जैसा कि हमे करना है। किसी के लिए किसी राजा का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना जाना एक बड़ा सम्मान और विशेषाधिकार होता था। राजा यीशु का प्रतिनिधित्व करने के लिए आपने जीवन को खर्च करने से बेहतर हम आपने जीवन को किसी रूप से खर्नच हीं कर सकते। वास्तव में, यदि परमेश्वर आपके हृदय में उसकी सेवा करने के लिए भावना डालता है और आप नहीं करते हैं, तो आपके जीवन में कोई वास्तविक आनंद या शांति नहीं होगी (1 कुरिन्थियों 9:16)।

हम प्रचार और शिक्षा के द्वारा सार्वजनिक रूप से परमेश्वर के सत्य की घोषणा करते हैं। हम परामर्श में या अपनी दैनिक बातचीत में व्यक्तियों से बात करते समय भी ऐसा करते हैं। हम इसे विशेष रूप से अपने जीवन के द्वारा करते हैं क्योंकि दूसरे देखते हैं कि हम कैसे जीते हैं और कैसे कार्य करते हैं।

पौलुस कहता है कि हमें जो प्रचार करना है वह "वचन" है। राजदूत अपना संदेश नहीं देता, केवल वही देता है जो कुछ राजा निर्देशित करता है। वह राजा के शब्दों को आगे बांटता है। वह उसमें कुछ नहीं जोड़ता, उन्हें बदलता नहीं या उस से कुछ निकलता नहीं है। वह उसे जितना हो सके स्पष्ट और समझने योग्य बनाता है। उसे अपनी ओर ध्यान आकर्षित कराने या लोगों को प्रभावित करने की कोई जरूरत

नहीं है, बस राजा के संदेश को सटीक रूप से सुनना होता है। यह उस काम का एक महान विवरण है जो हम भी एक पादरी के रूप में करते हैं। हम अपनी व्यक्तिगत राय नहीं देते हैं, फैंसी कहानियां नहीं सुनाते हैं, राजनीतिक पक्ष नहीं लेते हैं या अपने श्रोताओं का मनोरंजन करने और अधिक लोकप्रिय होने के लिए कुछ नहीं कहते हैं। हमारे संदेश की सामग्री परमेश्वर का वचन होता है। इसका मतलब है कि हम बाइबल के एक अंश को सिखाते और समझाते हैं, आयत दर आयत, शब्द दर शब्द, यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारे श्रोता यह समझते हैं कि यह उन लोगों से क्या कहता था जिन्हें यह मूल रूप से लिखा गया था। फिर हम इसे उनके दैनिक जीवन और परिस्थितियों में लागू करते हैं।

हमें "वचन से प्रचार" ऐसे नहीं करना हैं कि एक हिस्सा लेकर और फिर किसी भी दिशा में जा रहे हैं, और वह कहने के लिए जो हम चाहते है कि इसका अर्थ होना चाहिए । और ना ही हम "वचन के बारे में प्रचार" इस लिए करते हैं, कि इसके अर्थ के बारे में हम अपनी व्यक्तिगत राय दें। हमें इसके प्रतेक शब्द को पढ़ना और समझाना चाहिए, शब्द दर शब्द। इसका मतलब है कि हमें इसका अध्ययन करना चाहिए और इसे स्वयं सीखना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:15)। (बाइबल का अध्ययन कैसे करें इस बारे में अधिक जानकारी के लिए मेरी पुस्तक "परमेश्वर के वचन का अध्ययन कैसे करें" देखें। धर्मोपदेश की तैयारी में मदद के लिए मेरी पुस्तक " परमेश्वर के वचन का प्रचार करण और शिक्षण करना " को देखें। यह अंग्रेजी, तेलुगु, स्पेनिश और हिंदी में ऑनलाइन उपलब्ध हैं। https://www.christiantrainingonline.org/our-ministries/india/books/)।
याद रखें, परमेश्वर ने आपको कलीसिया बनाने के लिए नहीं बुलाया है , यह उसका काम है (मत्ती 16:18)। आपका काम वचन का प्रचार करना है!

पौलूस की सलाह: एक पादरी के रूप में हमारी बड़ी जिम्मेदारी लोगों को परमेश्वर के वचन का प्रचार करना है, जैसे एक राजदूत अपने राजा के लिए बोलता है।

2 तीमुथियुस 2:15 आपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला होने का प्रयत्न कर, जो लज्जित न होने पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

जब आप उपदेश देते हैं तो परमेश्वर सुनता है। क्या वह कहेगा कि आप उसके वचन को जानने और संवाद करने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं? यदि नहीं, तो आपको कहाँ सुधार करना चाहिए?

15. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार करने के लिए तैयार रह

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:1-2

पौलुस तीमुथियुस को पासबानी के बारे में अच्छी सलाह देता रहा है। जैसे ही वह अपने पत्र के अंत में आता है, वह उसे पाँच बहुत महत्वपूर्ण आज्ञाएँ देता है, जो उस समय और आज के पादरियों के लिए आदेश हैं (2 तीमुथियुस 4:1-5)। ये आज्ञाएँ हैं "प्रचार कर," "तैयार रह," "सुधारना ," डांटना/समझाना" और "प्रोत्साहित करना"। पिछले भाग में हमने “वचन का प्रचार कर” आदेश के बारे में बात की थी। अब हम अन्य आदेशों को देखना चाहते हैं।

"तैयार रह" का अर्थ है कि पादरी हमेशा **"वचन का प्रचार करने"** के लिए तैयार रहें। यह सामूहिक उपदेशों या व्यक्तिगत बातचीत में परमेश्वर के सत्य को समझाने को संदर्भ करता है। पीटर हैमंड, जो सूडान के लिए एक मिशनरी था। उसने एक बार कहा था, "एक मिशनरी को उपदेश देने, प्रार्थना करने

या एक पल की सूचना पर मरने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।" यह पादरी के लिए भी बहुत सच बात है। पौलुस तीमुथियुस को बस यही कह रहा है। हमें हमेशा परमेश्वर के वचन की सच्चाई को लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जब यह सुविधाजनक हो या जब यह बहुत कठिन हो ("समय और असमय")। **"जो कोई तुम से तुम्हारी आशा का कारण पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो"** (1 पतरस 3:15)।

इसका मतलब है कि हमें लोगों के सवालों का जवाब देने के लिए बौद्धिक रूप से तैयार रहना चाहिए कि हम कैसे जानते हैं कि परमेश्वर मौजूद है, बाइबल सच है और यीशु परमेश्वर है। हमें बाइबल से यह साबित करने में सक्षम होना चाहिए कि उद्धार अनुग्रह से है और मसीही जीवन जीने के बारे में जो कुछ भी लोग पूछते हैं उसका उतर हमें अच्छी तरह से जानते हैं। (अधिक जानकारी के लिए https://www.christiantrainingonline.org/our-ministries/india/books/ पर उपलब्ध मेरी पुस्तकें, "जानिए हम क्यों विश्वास करते हैं" और "बाइबल आयतों की सामयिक सूची" देखें)

हमें भी हमेशा आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर के सत्य को साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमारे जीवन में ऐसा कोई पाप या कुछ और नहीं हो सकता है जो परमेश्वर की पवित्र आत्मा को हमारे द्वारा बोलने से रोक सके (इफिसियों 4:30; 1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। हमें आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए और आराधना, प्रार्थना और मनन करने में समय व्यतीत करना चाहिए।

अंत में, जब हमारे पास अवसर हो तो हमें लोगों को परमेश्वर की सच्चाई बताने के लिए सामाजिक रूप से तैयार रहना चाहिए। हमारे पास एक अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए और दूसरों का सम्मान अर्जित किया होना चाहिए ताकि वे हमे सुन सकें। हमें अपने आसपास के लोगों से दोस्ती करने की जरूरत है ताकि वे हमारे साथ सहज महसूस करें। हमें सिर्फ अपने बारे में सोचने और सारी बातें खुद करने के बजाय दूसरों की बात सुनने और उनकी जरूरतों के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत है। सुनना सीखो।

यीशु के बारे में दूसरों से बात करने के अवसरों की हमेशा तलाश करें। बाइबल को अच्छी तरह से जानें ताकि आप आध्यात्मिक बातों के बारे में उनके सवालों और आपत्तियों का जवाब दे सकें। आप जो विश्वास करते हैं उसकी व्याख्या करने में सक्षम बने और जब आवश्यक हो तो अपने विश्वासों का रक्षा करें। यदि आपको कोई उत्तर नहीं पता है, तो ईमानदारी से उस व्यक्ति को बताएं कि आप नहीं जानते हैं, लेकिन उत्तर खोजने के लिए अध्ययन करेंगे और उनसे शीघ्र सम्पर्क करेंगे। जब आप नहीं जानते तो कभी दिखावा न करें कि आप जानते हैं। जब पौलुस हमें "वचन का प्रचार करने" की आज्ञा देता है, तो यही उसका अर्थ है। वह सिर्फ एक रविवार की सुबह के उपदेश के बारे में बात नहीं कर रहा है, वह हमारे हर दिन पूरे दिन तैयार रहने के बारे में बात कर रहा है, चाहे परिस्थितियाँ और प्रतिक्रिया कुछ भी हो।

पौलूस की सलाह: वचन का प्रचार करने के रूप में एक अच्छा काम करने का मतलब है कि आपको तैयार रहना चाहिए, और इसमें समय और मेहनत दोनों ही लगते है।

2 तीमुथियुस 2:24-26 और प्रभ के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर सब पर कृपालु हो, और सिखाने में निपुण हो, और क्रोधी ना हो। विरोधियों को धीरे से निर्देश दिया जाना चाहिए, इस उम्मीद का साथ कि परमेश्वर उन्हें सत्य के ज्ञान के लिए पश्चाताप करने की आत्मा देगा, और वे अपने होश में आएंगे और शैतान के जाल से बचेंगे, जिसने उन्हें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए बंदी बना रखा है।

आप अपने विश्वास के बारे में सवालों और आपत्तियों का जवाब देने के लिए कितने अच्छे तरह से तैयार हैं?

क्या आप बातचीत में परमेश्वर के सत्य को लाने के अवसरों के प्रति सतर्क हैं?

क्या आप प्रार्थना करते हैं और ऐसे समय की तलाश करते हैं जब आप दूसरों के साथ बाइबल साझा कर सकें?

16. कर्तव्य 10: सुधर, डाँट और प्रोत्साहन कर

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:1-2

पौलुस ने तीमुथियुस को "वचन का प्रचार करने" का महान अंतिम आदेश दिया। उसने उससे कहा कि बाइबल में उसके वचनों का उपयोग करते हुए यीशु के लिए उसके राजदूत के रूप में बोलने के हर अवसर का उपयोग करने के लिए तैयार रहें। उसे दैनिक जीवन में शिक्षा देने के अवसरों के लिए सतर्क रहना चाहिए, जैसे कोई माता-पिता बच्चों के साथ होते हैं। तीन अन्य आज्ञाएँ हैं जो पौलुस ने उसे दी थीं वो "वचन का प्रचार" करने की उसकी आज्ञा से संबंधित हैं।

"वचन का प्रचार करने के लिए; मौसम में और मौसम के बाहर, तैयार रहना; बड़े धीरज और सावधानी भरी शिक्षा के साथ डाँटना, और प्रोत्साहन देना, और समझाना" (2 तीमुथियुस 4:2)। केवल तीमुथियुस ही नहीं, परन्तु हमें भी सत्य की शिक्षा देनी है, हमें गलती को सुधारना है। पौलूस पहले ही कई बार कह चुका है, क्योंकि यह बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण है। हमें सत्य की शिक्षा वहाँ देनी है जहाँ इसकी जानकारी नहीं है या इसका अनुसरण नहीं किया जाता है। हमें झूठे विश्वासों को जब भी और जहाँ भी हम पाते हैं उन्हें सुधारना है। त्रुटि को खोजने और उसका सुधार करने के लिए पवित्र शास्त्र का एक अच्छा, संपूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि अक्सर यह सच्चाई के अंदर छिपा हुआ होता है और सावधानी से छुपाया गया होता है। जब कोई व्यक्ति किसी चीज़ की नकल करना चाहता है, तो वे उसे जितना संभव हो उतना असली जैसा बनाता है, लेकिन फिर भी वह नकली ही होती है। झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों के बारे में भी यही सच है। हमें नम्रता और प्रेम से दूसरों को सुधारना चाहिए। हमें दूसरों को उसी तरीके से सुधारना चाहिए जिस तरीके से हम चाहते हैं कि हमे सुधार जाए (सुनहरा नियम)। जो लोग नकली की पहचान कर सकते हैं वे ऐसा कर सकते हैं क्योंकि उन्हें असली की अच्छी तरह से पहचान होती है, वे किसी भी विचलन को पहचान सकते हैं। हमे भी पवित्रशास्त्र का इसी तरह का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

दुर्भाग्य से, हर कोई सुधार किये जाने का जवाब नहीं देगा। बहुत से लोग उस झूठ को थामे रहने पर जोर देंगे जिस पर वे विश्वास करते हैं और जो कुछ पाप उनके जीवनों में उत्पन करता है। उस स्थिति में हमारा प्रचार करना उन्हें डांटने का रूप ले लेता है - उनके विद्रोह और उनकी अवज्ञा की तरफ संकेत करता है। उन्हें चेतावनी दी जानी चाहिए ताकि वे जान सकें कि वे गलत हैं, और दूसरों को उनके पाप के प्रति सतर्क हो जाना चाहिए ताकि वे उसका पालन न करें।

जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "डांटने " के लिए किया गया है, वह एक बहुत कठोर शब्द है जो एक तीखी, कड़ी डांट को दर्शाता है। इसे प्यार से किया जाना चाहिए, जैसे कोई माता-पिता एक बच्चे को सुधारते हैं जो कुछ गलत और खतरनाक काम कर रहा होता है। लेकिन इसे भी माता-पिता की तरह ही

गंभीरता और बिना कोई समझौता किये करना चाहिए। यह ऐसा है जैसे किसी के घर में आग लगी हो, लेकिन वे अंदर हैं पर इसके बारे नहीं जानते हैं। आप उन्हें सूचित करने के लिए दौड़ेंते हैं ताकि वे सुरक्षा के लिए भाग सकें। वचन के द्वारा " डांटने" का यही अर्थ है।

अंत में, "वचन का प्रचार कर" में हमारे श्रोताओं को प्रोत्साहित करना भी शामिल है। हमें सुधारना और डांटना है, लेकिन साथ ही वह सब कुछ करना है जिससे निर्माण और प्रोत्साहन होता है, हमें किसी को हतोत्साहित नहीं करना है। एक अच्छे माता-पिता हमेशा अपने बच्चों के निर्माण के लिए समय और तरीके खोजते रहते हैं। वे सिर्फ उनकी त्रुटियों को ठीक करने के लिए नहीं देखते रहते हैं। किसी व्यक्ति की नकारात्मक आलोचना से बेहतर सकारात्मक प्रोत्साहन उसे बेहतर बनाने में मदद करने के लिए बहुत अच्छा साबित होता है।

सभी को विश्वासयोग्यता में बने रहने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है। परमेश्वर के वादों को साझा करना दूसरों को दिलासा देने और आश्वस्त करने का सबसे अच्छा तरीका है। हमें परमेश्वर के वादों को जानना और उनका उपयोग करना चाहिए ताकि हम उन्हें दूसरों के साथ कर इन्हें साँझा कर सके

पौलूस की सलाह: परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में शामिल है; त्रुटि को सुधारना, उन्हें डांटना जो परमेश्वर की सच्चाई को स्वीकार नहीं करते और जिइनके साथ हम बात करते हैं उन्हें प्रोत्साहित करना।

1 थिस्सलुनीकियों 5:11 इसलिये एक दूसरे को प्रोत्साहन दो, और एक दूसरे का निर्माण करो, जैसा तुम कर भी रहे हो।

आपको कौन प्रोत्साहित करता है? क्या आप ने उनका धन्यवाद किया?
आप किसे जानते हैं, जो किसी प्रोत्साहन का उपयोग कर सकता है? आज आप उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए क्या कर सकते हैं?

17. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार कैसे करें

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:1-2

पौलूस तीमुथियुस को और हमें आज्ञा दी थी कि हम वचन का प्रचार करें, हमे हमेशा दूसरों को सुधारने, डांटने और प्रोत्साहित करने के लिए तैयार रहना है। हाँ , हमें यही करना है। आगे पौलुस तीमुथियुस को बताएगा कि यह कैसे करना है। "वचन का प्रचार कर; मौसम और मौसम के बाहर तैयार रह; **बड़े धीरज और सावधानी भरी शिक्षा के साथ डाँटना, और प्रोत्साहन देना, और समझाना" है** (2 तीमुथियुस 4:2)। हम कैसे "वचन का प्रचार" करन है ? हमें इसे धैर्य से और इसकी सटीकता के साथ इसे संप्रेषित करना है।

सबसे पहले, हमें परमेश्वर के वचन को सिखाने और लागू करने में "बड़े धैर्य" का इस्तेमाल करना चाहिए। यूनानी शब्द का अर्थ है "धीरज धीरज।" यह "धीरज रख के दौडने" जैसा है (इब्रानियों 12:1)। यह एक चलती, आगे बढती, जीवित कार्य है लेकिन धैर्यपूर्ण विश्वास के साथ की की जाती है। अक्सर हमें एक ही बात को बार-बार सिखाना और समझाना होता है। माता-पिता को बच्चों के साथ ऐसा करना पड़ता है , और परमेश्वर को भी अपने बच्चों के साथ ऐसा ही करना पड़ता है। एक अच्छा माता-पिता बनने और एक

अच्छा पादरी बनने के लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है। धैर्य स्वाभाविक रूप से या आसानी से नहीं आता है। यह परमेश्वर की आत्मा का एक फल है (गलतियों 5:22-23), यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम स्वयं उत्पन्न कर सकते हैं। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसका हम दिखावा कर सकते हैं। यह या तो वास्तविक हमरा पास है या हमारे पास नहीं है। परमेश्वर का फल हममें तभी उत्पन्न होता है जब हम उसके निकट रहते हैं और हमारे जीवन में कोई पाप नहीं होता है। हमें पास्बानी करने के लिए धैर्य की आवश्यकता है। जैसा कि पौलूस कहता है , हमें बहुत धैर्य की जरूरत है।

परमेश्वर के सत्य को साझा करने का दूसरा तरीका है "सावधानीपूर्वक निर्देश"। हमें पूरी बाइबल सिखानी चाहिए, केवल कुछ पसंदीदा हिस्से ही नहीं। हमें वह सब कुछ कवर करना चाहिए जो एक हिस्सा कहता है या आयत कहती है, न कि केवल वह चुनना चाहिए जिसके बारे में हम बात करना चाहते हैं। हमें इस पर बार-बार जाना चाहिए जब तक कि लोग वास्तव में इसे समझ न लें। फिर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह उनके जीवन में सही ढंग से लागू होता है। बाइबल को एक प्रोग्राम, व्यवस्थित तरीके से सिखाया जाना चाहिए। मेरी किताब, "बाइबल अवलोकन", आपको बाइबल को समझने और इसके बारे में आपकी शिक्षा को व्यवस्थित करने में मदद करेगी (देखें https://www.christiantrainingonline.org/our-ministries/india/books/)।
एक बेहतर बाइबल शिक्षक बनने का एक अच्छा तरीका है बच्चों को, अपने बच्चों को या नाती-पोतों को या अपने चर्च के लोगों को सिखाना। यह आपको बाइबल की सच्चाइयों को तोड़ने में मदद करेगा ताकि उन्हें सरल और अधिक समझने योग्य बनाया जा सके। बच्चे जब नहीं समझेंगे तो बताएंगे। इसलिए बात करने से पहले आपको अधिक सोच समझकर योजना बनानी होगी और यह अच्छा है।

आज संसार में बहुत सी त्रुटियाँ हैं। केवल बाइबल ही परमेश्वर के सत्य का पूर्ण अधिकार है। लोग, यहां तक कि पादरी भी आसानी से गुमराह हो सकते हैं यदि वे पूरी तरह से बाइबल को नहीं जानते होंगे। इसलिए हमारे लिए "वचन का प्रचार करना" और इसे "बड़े धैर्य" और "सावधानीपूर्वक निर्देश" के साथ करना बहुत महत्वपूर्ण है।

पौलूस की सलाह: परमेश्वर के वचन का संचार बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ किया जाना चाहिए।

इब्रानियों 12:1-3 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रास्रोता कने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। हम विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर दृष्टि करें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके सामने रखा हुआ था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करते हुए, क्रूस का दुख सहन किया, और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने तरफ जा बैठा। उस पर ध्यान करो, जिस ने पापियों का ऐसा विरोध सहन किया, ताकि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।

क्या आप एक धैर्यवान व्यक्ति हैं?

क्या आपका परिवार कहेगा कि आप धैर्यवान हैं?

आपको और अधिक धैर्यवान बनने के लिए और इसलिए अधिक मसीह के समान बनने के लिए क्या करना चाहिए?

18. कर्तव्य 10: वचन का प्रचार क्यों करें

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:3-5

बाइबल को धैर्यपूर्वक और पूरी तरह से सिखाने के महत्व को समझाने के बाद, पौलुस समझाता है कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था। सबसे पहले, उसने बताया कि करना क्या है: प्रचार करना, तैयार रहना, सुधारना, डाँटना और प्रोत्साहित करना है (1 तीमुथियुस 4:2क)। फिर उसने समझाया कि यह कैसे करना है: बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ (1 तीमुथियुस 4:2ख)। तब उसने तीमुथियुस से बताता है कि उसको ऐसा क्यों करना है: लोग सत्य से मुड़कर झूठ पर विश्वास करेंगे (1 तीमुथियुस 4:3-5)।

हम जानते हैं कि दुनिया सच्चाई को रद्द करती है और झूठ पर विश्वास करती है, लेकिन पौलूस विशेष रूप से कलीसिया द्वारा ऐसा करने के बारे में बात कर रहा है। हम निश्चित रूप से आज भी ऐसा होते हुए देख रहे हैं। **"क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे। परन्तु वे अपनी अभिलाषा के अनुसार बहुत से उपदेशक ढूंढ लेंगे, जो आपने कानों की खुजली के कारण मनचाहा सुनना चाहते हैं सुनेगे"** (1 तीमुथियुस 4:3)। बहुत से लोग जो खुद को मसीही कहते हैं, वे सच्चाई से ऊब जाएंगे और इसके प्रति उदासीन हो जायेंगे ("इसे सहन नहीं करेंगे")।

पौलुस को "सत्य" के बारे में तीमुथियुस को कहने के लिए बहुत कुछ है। उसने इसके बारे में तीमुथियुस को लिखे अपने पहले पत्र में 5 बार लिख चूका है (2:4,7; 3:15; 4:3; 6:5) और इस दूसरे पत्र में 6 बार (2:15,18,25; 3:7) ,8)। पौलुस तीमुथियुस को और हमें सत्य को जानने, सत्य का पालन करने और सत्य का प्रचार करने के लिए कहता है। यह इस बात सारांश है कि एक अच्छा पादरी क्या होता है और क्या करता है।

"वे अपने कान सत्य से फेर लेंगे और काल्पनिक कथाओं की ओर फेरेंगे" (2 तीमुथियुस 4:4) जैसे कि नास्तिकता, मानवतावाद, विकासवाद, उदारवाद, झूठे धर्म, पुनर्जन्म और अन्य कई कुछ। बहुत कहलाये जाने वाले मसीही लोग सच्चाई से दूर हो जाएंगे, लेकिन तीमुथियुस को वफादार बने रहने की आज्ञा दी गई है। **"परन्तु तू सब बातों में सचेत रहना, संकट को सहना, सुसमाचार के प्रचार का काम करना, और अपनी सेवकाई के सब कामों को पूरा करना"** (2 तीमुथियुस 4:5)। पौलुस यहाँ तीमुथियुस को झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों का सामना करने और उन पर विजय पाने में मदद करने के लिए तीमुथियुस को 4 अंतिम आदेश देता है।

सबसे पहला, **"सभी परिस्थितियों में आपने सिधांत पर कायम रहना।"** इसका शाब्दिक अर्थ है "उलझन में ना पड़ना।" जो सत्य नहीं है उसके प्रति सचेत रहना। आत्म-नियंत्रित रहें और भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया न करना। आलोचना या दूसरों के दबाव के डर से न झुकना। झूठे शिक्षक भेड़ियों के समान हैं जो भेड़ों को नष्ट करने आते हैं (प्रेरितों के काम 20:28-20)। शैतान उस सिंह के समान है जो हमें नाश करने आया है (1 पतरस 5:8)। अगर आपके बच्चों के पास असली भेड़िये या शेर होते तो आप बहुत सतर्क और सावधान रहते। इसी तरह ही हमें आध्यात्मिक रूप से भी होना है।

इसके बाद, पौलुस **"कठिनाई को सहन करने "** की अपनी आज्ञा दोहराता है। एक पादरी का जीवन आसान नहीं है, यदि वह यीशु का अनुसरण कर रहा है और उसकी सेवा कर रहा है। जो लोग स्वयं को पहले रखते हैं और अपने स्वयं के घमण्ड के लिए सेवकाई का उपयोग करते हैं, उन्हें कष्ट नहीं सहना पड़ता है, परन्तु जो यीशु के समान सेवा करते हैं, वे आलोचना और असविकृति का सामना करेंगे जैसा उसने किया था (2 तीमुथियुस 3:12)। हम अकेलापन, हताशा, भ्रम, निराशा, वित्तीय समस्याओं, विवाह और परिवार के मुद्दों, व्यक्तिगत पापों, स्वास्थ्य के मुद्दों, पर्याप्त समय न होने, लोगों की मांगों, उन लोगों

पर दुःख का सामना करते हैं जो परमेश्वर के वचन का पालन नहीं करते हैं और कई अन्य बातों के लिए। परमेश्वर इन सब की अनुमति देता है क्योंकि वह इसका उपयोग हमें यीशु के समान बनाने के लिए करता है। कोई भी पादरी जो यीशु का अनुसरण कर रहा है, उन परीक्षाओं से मुक्त नहीं है जो हमारे विश्वास को खींचती है और मजबूत करती हैं।

तीसरा, पौलुस तीमुथियुस को याद दिलाता है कि **"सुसमाचार प्रचारक का काम करना है।"** सुसमाचार प्रचार तीमुथियुस के आत्मिक वरदानों के मिश्रण का हिस्सा था। हम सभी के पास आध्यात्मिक उपहारों का एक अनूठा संयोजन है जो परमेश्वर हमें देता है ताकि हम अन्य मसीहीयों की सेवा कर सकें। उनमें पासबानी, अगुवाई करना , संगठन और प्रशासन, शिक्षण, बुद्धि, प्रचार ज्ञान, मिशनरी कार्य, सेवा, दया, मदद, आतिथ्य, प्रोत्साहन, विश्वास, प्रार्थना, देना, बलिदानपूर्ण जीवन, विवेक जैसी चीजें शामिल हैं। (आध्यात्मिक उपहारों के बारे में अधिक जानकारी के लिए, "पादरी के कर्तव्य," परिशिष्ट 2 https://www.christiantrainingonline.org/our-ministries/india/books/ देखें)।

यहां तक कि अगर हमारे पास प्रचार का उपहार नहीं है, जहां हमे लोगों से उद्धार के बारे में बात करना स्वाभाविक रूप से और आसानी से आता है, फिर भी उसकी खुशखबरी को साझा करने के लिए हम जिम्मेदार हैं। हमारे जीवन का केंद्र उसी को ही होना है। प्रत्येक उपदेश, बातचीत, बाइबल अध्ययन और परामर्श समय को यीशु को ऊँचा करना की भावनाए शामिल होना चाहिए।

तीमुथियुस को दी गई अंतिम आज्ञा है "अपनी सेवकाई के सारे कर्तव्यों को पूरा कर"। हमें अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करना है, परन्तु सेवकाई के अन्य क्षेत्रों की लापरवाही नहीं करनी है। (अधिक जानकारी के लिए मेरी पुस्तक, "पादरीयों और अगुओं के कर्तव्य" देखें https://www.christiantrainingonline.org/our-ministries/india/books/)। "पूरा करने" का अर्थ है पूर्ण माप में लाना। हमें पूरी तरह से यीशु का अनुसरण करना है जैसे एक पादरी को करना चाहिए।

पादरी होना नौकरी से कहीं बढ़कर है। यह एक बिल्डर, किसान या डॉक्टर होने जैसा नहीं है। लोग इन नौकरियों को चुनते हैं, लेकिन परमेश्वर चुनता है कि उसकी सेवा कौन करेगा। अन्य व्यवसायों में योग्यता की आवश्यकता होती है, परन्तु परमेश्वर द्वारा पादरी के रूप में चुने जाने के लिए हमें केवल उपलब्धता की आवश्यकता होती है। अन्य करियर अच्छी तरह से किए गए काम से व्यक्ति को सांसारिक सम्मान दिलाते हैं। क्योंकि हमें सेवा करनी है इसलिए सारा सम्मान यीशु को जाता है। स्वर्ग में हमारा प्रतिफल अनन्त है और सदा बना रहेगा।

पौलूस की सलाह: हमें वचन का प्रचार करना है क्योंकि बहुत से लोग, यहां तक कि मसीही होने का दावा करने वाले भी सच्चाई से दूर हो सकते हैं।

तीमुथियुस को दी गई पौलुस की चार आज्ञाओं का पालन करने में आप कैसें हैं?

आपके लिए किसका अनुसरण करना सबसे आसान है?

कौन सा कठिन है? क्यों? आप इसमें क्या सुधार कर सकते हैं?

19. पत्नियों के प्रति हमरे कर्तव्य

पौलुस , 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस में पादरियों को लिखता रहा है। लेकिन उनकी पत्नियों के बारे क्या? आज, पौलूस एक पादरी की पत्नी को क्या सलाह देंगा ?

हमारे कर्तव्यों की प्राथमिकता में, हमारे परिवार हमारी सेवकाई से पहले आते हैं (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1-6)। जब आदम अदन में परमेश्वर के साथ चलता और बात करता था , तो उसने महसूस किया कि उसके जीवन में कुछ कमी है। परमेश्वर ने हव्वा की रचना करके उस आवश्यकता को पूरा किया, उसके लिए एक पत्नी को बनाया जिससे वह प्रेम करे और अपने जीवन को साझा करे (उत्पत्ति 2:18-24)। उसने पालन-पोषण के लिए बच्चों को नहीं बनाया, मदद करने के लिए माता-पिता को नहीं बनाया या उसके पासबानी करने के लिए कोई कलीसिया को नहीं बनाया। खुद परमेश्वर के प्रति हमारे कर्तव्य के बाद, हमारा अगला कर्तव्य हमारी पत्नियों और बच्चों के प्रति बनता है, यहाँ तक कि हमारी सेवकाई से भी पहले।

परमेश्वर ने मुझे एक अद्‍भुत(अनूठी) पत्नी देकर अशीषत किया है नहीं तो मैं आज वह व्यक्ति नहीं होता जो मैं आज हूं। जितना अधिक मैं उसके साथ विवाहत जीवन बसर कर रहा हूं, उतना ही मैं उसके अच्छे व्यक्तिव की सराहना करता हूं, और उतना ही अधिक मैं इस तरह के विशेष उपहार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं। बेशक पर्दे के पीछे पर उसका काम और मेरे जीवन और सेवकाई में उसकी विश्वासयोग्यता अमूल्य है। मुझे लगता है कि उसका विश्वासयोग्य, गहरा प्रार्थना जीवन मेरे जोशीले काम काज की तुलना में परमेश्वर के राज्य के लिए अधिक काम पूरा करता है। वह मेरी सबसे बड़ी प्रार्थना सहायक है।

उसके माध्यम से मैंने अपने लिए परमेश्वर के बेशर्त प्यार के बारे में सीखा है, क्योंकि मैंने इसे उसके माध्यम से प्रदर्शित होते देखा है। मैं बेहतर समझता हूं कि परमेश्वर मुझे कैसे क्षमा कर सकता है और करेगा, क्योंकि वह बार-बार इसका उदाहरण बनती रही है। मैं उसकी विश्वासयोग्यता पर बेहतर भरोसा कर सकता हूँ क्योंकि मैं देखता हूँ कि यह उसके(मेरी पत्नी के) जीवन में जी जीवत है।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि यदि हमे आपने जीवन साथियों और परिवारों की ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं तो हम जीवन में बहुत कुछ पूरा कर सकते थे। हम उनके द्वारा लिए गए समय पर नाराजगी जता सकते हैं। शायद मैं अपनी पत्नी और परिवार के बिना सेवकाई के लिए अधिक समय दे सका होता , लेकिन यह उतना पूर्ण नहीं होता, और इसकी गुणवत्ता भी बहुत कम रह जाती। मुझे यकीन है कि मैं उसकी मदद के बिना हार गया होता या असफल हो जाता।

परमेश्वर आज्ञा देता है कि मैं अपने या अपनी कलीसिया के पहले उसकी सेवा करूँ (इफिसियों 5:25-33)। वास्तव में, वह कहता है कि यदि मैं पहले उसकी सेवा नहीं कर सकता, तो मुझे पादरी नहीं होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2-5; तीतुस 2:6)। अच्छा पादरी होने से अच्छा पति होना अधिक महत्वपूर्ण है (1 पतरस 3:7)। (मसीही विवाह के बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मोयर द्वारा "शादी और सेवकाई " देखें https://www.christiantrainingonline.org/download/india/Books/english_translations/Marriage-and-Ministry-book.pdf)

परमेश्वर मुझ से उम्मीद करता है मैं उससे वैसे ही प्रेम करूँ जैसे वह मुझसे प्रेम करता है (इफिसियों 5:25)। मुझे उसकी सेवा करनी है, न कि केवल उससे अपनी सेवा करवानी है। मुझे उसको प्यार दिखाना

चाहिए, उसकी किसी भी तरह से मदद करनी चाहिए और हमेशा उसके प्रति दयालु और कोमल रहना है।
अपनी जरूरतों से पहले उसकी जरूरतों को पूरा करना मेरी सेवकाई से बाहर नहीं है, बल्कि मैं इससे परिपक्व होकर समृद्ध होता है। मैं उसके लिए जो भी समय देता
हूँ और प्यार देता हूं, मैं उससे कई गुना अधिक वापस पाता हूं। किसी को अपने से पहले रखना सीखना आसान नहीं रहा है, लेकिन शादी और सेवकाई में यह जरूरी रहा है। इससे मुझे यीशु की तरह बनने में मदद मिलती है जिसकी विशेषता है दूसरों को खुद से पहले रखना।

मैंने जीवन में जो मुख्य सबक सीखे हैं और जीवन में मैंने जो भी बड़े से बड़ा आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास अनुभव किया है, वह मेरी शादी के माध्यम से आया है। हालात हमारे लिए हमेशा आसान नहीं रहें हैं। परमेश्वर हमारी खामियों और हमारे संघर्षों का उपयोग, विनम्रता, सेवा, क्षमा मांगने, क्षमा करने और क्षमा स्वीकार करने के बारे में, सिखाने के लिए करता है । ये बातें किसी किताब से नहीं, सिर्फ जिंदगी से सीखी जा सकती हैं।

मैं जैसे जैसे अपनी उम्र में बड़ा होता जाता हूँ और जीवन और सेवकाई में जितना आगे बढ़ता जाता हूँ, उतना ही मुझे एहसास होता जाता है कि एक अच्छी पत्नी का मूल्य हीरों और मणियों से कहीं अधिक है (सभोपदेशक 31:10-12, 30-31)। और इसे पढ़ने वाली पत्नियों के लिए उनका पति भी एक अच्छा है!

कभी-कभी पुरुष या स्त्री के लिए यह परमेश्वर की इच्छा होती है कि वह विवाह न करे परन्तु अकेले रहे। उनके लिए किसी और के लिए शादी करने की परमेश्वर की इच्छा से कम नहीं है। परमेश्वर स्वयं जरूरतों को पूरा करने का वादा करता है जब उन्हें पूरा करने के लिए किसी का कोई साथी नहीं होता है। कभी यह महसूस न करें कि क्योंकि आप विवाहित नहीं हैं इसलिए जरूर कुछ गलत है !

पौलूस की सलाह: अपनी पत्नी की जरूरतों को अपनी सेवकाई से पहले रखें और उसे प्यार करें और बेशर्त अपनी पत्नी की सेवा करें, जैसे मसीह आपसे प्यार करता है।

नीतिवचन 19:22 22 जिसको पत्नी मिलती है, उसे भलाई प्राप्त हुयी है, और यहोवा उस से प्रसन्न हुआ है।
नीतिवचन 31:10,31 उत्तम चरित्र की पत्नी कौन पा सकता है? वह मणियों और बहमूल्य पथरों से कहीं ज्यादा मायने रखती है। ... 30 आकर्षण एक धोखा है, और सुंदरता अस्थायी है; परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।

पुरुषों, जब आप परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं, तो क्या वह कहेंगा "धन्य, अच्छा और वफादार सेवक" जिस तरह से तुम ने आपने अपनी बेटी, अपनी पत्नी से प्यार किया और उसकी सेवा की?

क्या आपकी पत्नी कह सकेगी कि वह आप के लिए आपकी सेवकाई या कार्य से अधिक महत्वपूर्ण है?

क्या वह इसका उदाहरण दे सकती है जब आप ने उसे अपनी जरूरतों से पहले रखा हो ?

आज से आप अपनी पत्नी के लिए अधिक मसीह समान बनने के लिए क्या कर सकते हैं?

20. हमारे बच्चों के प्रति हमारे कर्तव्य

हम जानते हैं कि पौलुस ने तीमुथियुस को एक ईश्वरीय पादरी और पति होने के बारे में क्या सलाह दी थी, लेकिन वह एक पिता होने के बारे में क्या कहेगा? आज पौलूस पादरीयों को क्या सलाह देंगा ? मैं कुछ बातें साझा करूँगा जो उसने मुझे एक ईश्वरीय पिता होने के बारे में सिखाई हैं।

जब मैं पीछे मुड़कर अपने जीवन को देखता हूं, तो मेरे पास वह दृष्टिकोण होता है जो आप में से बहुत से युवा लोगों के पास नहीं होता है। मेरे बच्चे बड़े हो गए हैं, शादीशुदा हैं और अपने बच्चों की परवरिश कर रहे हैं। उनके जीवन पर मेरा प्रभाव काफी हद तक बना हुआ है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने सेवकाई के आरम्भ में मुझे मेरे परिवार को मेरी नंबर एक कलीसिया बनाने के महत्व के बारे में कायल किया। मेरे जीवन में और लोग आए और चले गए, लेकिन मेरा परिवार अभी भी मेरा परिवार है। मेरी पत्नी और बच्चों की तुलना में ऐसा कोई नहीं है जिस पर मेरा अधिक प्रभाव रहा हो या कभी भी इससे अधिक प्रभाव रहेगा।

पृथ्वी पर यीशु की सर्वोच्च प्राथमिकता उसके शिष्यों का 'परिवार' था, न कि भीड़, और न ही नए कार्यक्रम और परियोजनाएँ। उसने उन्हें और उनकी ज़रूरतों को पहले रखा, चेलों के साथ समय बिताने के लिए वह अक्सर भीड़ से अलग हो जाता था या दूसरों को दूर भेज देता था (मत्ती 8:18; 14:13-15; 15:39)। उसके तौर तरीके का ही आज हमने भी अनुसरण करना है। ऐसा कोई भी ऐसा नहीं है जिस के लिए आप अपने बच्चों को छोड़ कर उनके लिए आप आपने आप को पूरी तरह से पुन पेश करेंगे। और आप अच्छे या बुरे के लिए उनमें खुद को पुन: पेश करेंगे। आप इस तथ्य को नहीं बदल सकते कि आप उनके जीवन को पूरी तरह से प्रभावित करेंगे। प्रशन यह है कि प्रभाव क्या होगा, यदि आपका प्रभाव नहीं होगा तो। बच्चे नर्म मिट्टी के समान होते हैं, जिसे तू बनाता और जैसा चाहे ढालता है (नीतिवचन 22:6)। यदि आप उनके साथ रहने में बहुत व्यस्त हैं, तो इससे वे अस्वीकृत और महत्वहीन महसूस करते हैं। आप उनके जीवन में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं। आप उनके साथ जैसा व्यवहार करते हैं, यह उन्हें या तो यीशु के पास या उससे दूर ले जाएगा। आउन्हें निर्माण कर रहे हैं और अपनी सेवकाई में किसी और से अधिक उनका निर्माण करेंगे।

यह शर्म की बात है कि सेवकाई करने वालों के बच्चे अक्सर विद्रोह और अवज्ञा के लिए जाने जाते हैं। वह किसका दोष है? परमेश्वर स्वयं कहता है कि यदि हम अपने परिवारों का प्रबंध नहीं कर सकते तो हम उसकी कलीसिया का भी प्रबंध नहीं कर सकते (1 तीमुथियुस 3:4-5)। आपके बच्चों को आपकी कलीसिया से ज्यादा आपकी जरूरत है। कभी-कभी हम परमेश्वर के लिए अपनी सेवा में और दूसरों की नज़रों में अपनी 'सफलता' में इतने मशगूल हो जाते हैं कि जो सबसे महत्वपूर्ण है उसे खो देते हैं। परमेश्वर ने हमें अपने बच्चों को उसके लिए चेला बनाने के लिए दिया। कुछ भी ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है! वह कभी भी अन्य बातों, यहां तक कि सेवकाई के लिए भी हमें अपने बच्चों की लापरवाही करने के लिए प्रेरित नहीं करेगा। वे उसके लिए अनमोल हैं और वह उन्हें हमें सौंपता है। वह हमें कभी भी ऐसा करने के लिए इतना अधिक नहीं देगा कि हमारे पास उनके/बच्चों के लिए समय न हो। यह हमारी गलत प्राथमिकताओं से आता है। जीवन में मेरे सबसे बड़े आनंद में से एक है अपने बच्चों को प्रभु की सेवा करते और उनका अनुसरण करते हुए देखना। "मुझे यह सुनने से बढ़कर और कोई खुशी नहीं है कि मेरे बच्चे सच्चाई पर चल रहे हैं।" (3 यहुन्ना 4)। उनमें से प्रत्येक ने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने और पूरे हृदय से उसकी सेवा करने का चुनाव किया है। सुनिश्चित करें कि आप अपनी सेवकाई में अपने बच्चों को सर्वोच्च महत्व के रूप में देखते हैं। केवल आपकी पत्नी ही है जो इनसे भी अधिक महत्वपूर्ण है।

पौलूस की सलाह: अपने बच्चों को अपनी सेवकाई से पहल पर रखें लेकिन अपनी पत्नी से नहीं और उन्हें यीशु के चेले बनने के लिए बड़ा करें।

व्यवस्थाविवरण 11:18-22 मेरे इन वचनों को आपने दिल और दिमाग में कायम कर; उन्हें अपने हाथों पर चिन्ह के रूप में बाँधो और उन्हें अपने माथे पर बाँधो। घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा करते हुए अपने बाल बच्चों के इनकी चर्चा करना। इन्हें अपने घरों के चौखटों की चौखटों और अपने फाटकों पर लिखना, जिस से जिस देश के विषय में यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपय खाई थी उस में तुम्हारे और तुम्हारे वंश के दिन उतने ही दिन हों जितने दिन आकाश पृथ्वी के ऊपर हैं।

मुझे यकीन है कि आप तो कहेंगे कि आपका परिवार आपकी नंबर 1 प्राथमिकता है, लेकिन क्या वे इससे सहमत होंगे?

आप क्या सबूत पेश कर सकते हैं जो दिखाता है कि आप अपने काम से पहले अपनी पत्नी और बच्चों को रखते हैं?

क्या आपके बच्चे कहेंगे कि वे जानते हैं कि वे आपके लिए आपकी सेवकाई से अधिक महत्वपूर्ण हैं?

21. एक पादरी की पत्नी के कर्तव्य

एक पादरी की पत्नी, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, परमेश्वर की बेटी होती है। उसकी पहचान यीशु में होती है (2 कुरिन्थियों 5:17-18), नाकि एक पादरी से विवाह करके। वह सब कुछ होने के लिए जिसके लिए परमेश्वर ने उसे बनाया था, घर और सेवकाई को संतुलित करने के लिए उसे स्वस्थ खाने, उचित आराम करने और अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने की आवश्यकता है। सेवकाई में जीवन की कई मांगें होती हैं। उस पर अपने पति और बच्चों के प्रति जिम्मेदारियाँ हैं, साथ ही चर्च की ज़रूरतें भी हैं। वह खुद को और अपने पति को स्वस्थ रखने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए जिम्मेदार होती है।

एक पत्नी के रूप में उसकी मुख्य जिमेदारी होती है अपने पति का समर्थन और सहायता करना (इफिसियों 5:22-24, 33; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6)। परमेश्वर ने स्त्री को उसके पति के सहायक के रूप में बनाया। (उत्पत्ति 2:18) विवाहित पुरुषों को एक सहायक, मददगार पत्नी की आवश्यकता होती है। उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। अबीगैल एक अच्छी उदाहरण थी (1 शमूएल 25:39-42)। एक पत्नी उसे प्रोत्साहित करने, प्रार्थना करने, सलाह देने और उन लोगों से बचाने में मदद करती है जो उसे हराने और हतोत्साहित करने की कोशिश करते हैं।

सेवकाई में पति और पत्नी एक टीम होते हैं। पत्नी कलीसिया में अपने पति के समान कार्य या अधिकार में कार्य नहीं करती है, परन्तु वे विवाह के कारण सेवकाई में एक साथ बंधे होते हैं (2 कुरिन्थियों 6:14)। दुख की बात है कि कुछ पादरीयों की पत्नियाँ पादरियों सेवकाई को "उनकी" सेवकाई के रूप में देखती हैं और उनके साथ इसमें भाग नहीं लेती हैं। इसके अलावा, कुछ पादरी अपनी पत्नियों के लिए वो काम करने को देते हैं जो कोई दूसरा नहीं करना चाहता है । यह प्रेमपूर्ण या उचित नहीं है। उसके अपने उपहार और प्रतिभाएँ होती हैं और उन्हें उनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

परमेश्वर और आपने पति के बाद, लेकिन कलीसिया से पहले, एक पादरी की पत्नी को एक ईश्वरीय माँ बनना जरूरी है (भजन संहिता 127:3-4)। एक पादरी बनने के लिए उसके पति को "अपना घर ठीक से चलाना" आवश्यक है (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1:6)। इसका अर्थ है, अपनी पत्नी और बच्चों को एक दूसरे के लिए प्रेम और सम्मान में ईश्वरीय जीवन जीने की अगुवाई करना। एक पत्नी उसके लिए इसे आसान या कठिन बना सकती है। वह बच्चों पर बहुत प्रभाव डालती है और घर के लिए भावनात्मक मूड स्थापित करती है। अगर वह खुश, आशावान और आनंदित है, तो घर भी अच्छा रहेगा। अगर वह गुस्सैल और आलोचनात्मक है, तो इसका असर बाकी सभी पर भी पड़ेगा। एक प्यार करने वाला, वफादार परिवार बनाने के लिए उसे अपने पति के साथ काम करने की जरूरत है। पारिवारिक जीवन के साथ-साथ सेवकाई में भी वह उसकी साथी और उसकी टीम की सदस्य होती है।

जैसा कि सभी मसीहीयों के साथ होता है; एक पादरी की पत्नी के पास विशेष वरदान हैं जो परमेश्वर ने उसे मसीह की देह की सेवा करने के लिए दिए होते हैं (रोमियों 12:6-8)। वह उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कलीसिया के लिए परमेश्वर का उपहार होती है (इफिसियों 4:10-12)। परमेश्वर उससे उन उपहारों का उपयोग करने की उम्मीद करता है (1 पतरस 4:10-11)। अगर वह नहीं करती है, तो पूरी कलीसिया इसका परिणाम भुगतती है। यदि वह अन्य कामों में व्यस्त होती है, तो उसके पास वह करने के लिए समय या ऊर्जा नहीं होगी जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए सुसज्जित किया है। लूका 2:36-37 में हन्ना, प्रेरितों के काम 9:36 में दोरकास, प्रेरितों के काम 16:15 में लुदिया, प्रेरितों के काम 18:26 में प्रिस्किल्ला, प्रेरितों के काम 21:9 में फिलिप की बेटियाँ, रोमियों 16:1-2 में फीबे, और विधवाएँ 1 तीमुथियुस 5:3-10 में सभी अच्छे उदाहरण हैं। अपना समय की प्राथमिकता पहले उपहार के क्षेत्रों में दें। अन्य क्षेत्रों को जोड़ें जैसे परमेश्वर आपकी अगुवाई करता है।

एक पादरी पति की पत्नी होना एक सम्मान की बात है। आप प्रत्यक्ष रूप से जीवन को रूपांतरित होते हुए और परमेश्वर के हाथ उन तरीकों से काम करते हुए देखती हैं जो दूसरे नहीं देख सकते। उसके लिए रोज प्रार्थना करें। प्रेम (कोमल आत्मा) और निडर होकर (शांतिपूर्ण आंतरिक आत्मा) में उसकी सहायता करो (1 पतरस 3:4)। जब समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, तो एक अच्छे श्रोता बनें, आलोचनात्म होकर उस पर या विश्वासियों पर दोषारोपण ना करें। बातचीत, गपशप, आलोचना या शिकायत करके समस्या को न बढ़ाते हुए समाधान का हिस्सा बनें। इसे अकेले में प्रभु के पास ले जांए।

अपने पादरी पति से संबंधित निजी पारिवारिक मामलों की अपनी संगति के लोगों से चर्चा न करें। यदि आपको सलाह या मार्गदर्शन की आवश्यकता है, तो किसी विश्वसनीय, गोपनीय, वृद्ध और बुद्धिमान महिला विश्वासी से बात करें। अगर शारीरिक या मौखिक दुर्व्यवहार जैसी गहरी चिंताओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है, तो अपने मुद्दों को किसी भरोसेमंद बुजुर्ग के पास लेकर जाएँ ।

अपने पादरी पति से हमेशा सही होने या ईश्वरीय तरीके से जवाब देने की उम्मीद न करें। वह भी, "प्रक्रिया में है।" उस पर कृपा करो। उसे भी इसकी जरूरत है और आपको भी। कड़वाहट की जड़ को रोकने के लिए शीघ्र क्षमा करें। उसको प्रोत्साहन दें ; उससे पूछें कि उसे क्या चिंता है और क्या उसे प्रोत्साहित करता है। उसकी प्रतिक्रिया सुनने में सक्रिय रूप से लगी रहें। एक भरोसेमंद श्रोता बनें।

एक ऑर्केस्ट्रा मंडली में, पहला वायलिन माधुर्य को धारण करता है और सभी का ध्यान आकर्षित करता है। लेकिन दूसरा वायलिन वादक सामंजस्य बनाता है और संगीतमय सौंदर्य बनाता है। पादरी की पत्नियाँ दूसरी वायलिन वादक हैं। उन्हें ज्यादा तवज्जो नहीं मिलती, लेकिन वे खूबसूरत तालमेल बिठाती हैं।

आनंद लें। धन्य हो। अनन्त पुरस्कार प्राप्त करें। आप सबसे अच्छी मसीही महिला बन सकती हैं और आप आपने आप ही: ही एक अच्छे पादरी की पत्नी बन जाएंगी।

पौलूस की सलाह: अपने पति से बिना शर्त प्यार करें, उसकी अगुवाई को सम्मान के साथ प्रस्तुत करें और हर संभव तरीके से उसकी मदद करें।

1 तीमुथियुस 3:11 इसी रीति से उन की पत्नियां भी आदर के योग्य हों, वे कुटिल बातें न करें, पर संयमी और सब बातों में विश्वास करनेवाली हों।

एक पादरी से शादी करने में आपको सबसे ज्यादा क्या आनन्दमय लगता है?

एक पादरी की पत्नी के रूप में आपके लिए सबसे कठिन काम क्या है?

22. कर्तव्य 11: अंत तक विश्वासयोग्य बने रहें - 1

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:6-8

अपने अंतिम पत्र (2 तीमुथियुस) में, पौलुस तीमुथियुस को एक पादरी के रूप में उसके कर्तव्यों की याद दिलता है। उसे अपने विश्वास में मजबूत होना था (2:1), सत्य का संचार करना (2:2), कठिनाइयों को सहन करना (2:3-13), झूठी शिक्षाओं का विरोध करना (2:14,16-19), केवल परमेश्वर की स्वीकृति की तलाश करना (2:15), पवित्र बनना (2:20-26), संसार से बढ़ते विरोध के प्रति सतर्क रहना (3:1-9), सताव में विश्वासयोग्य रहना (3:10-13), वचन को आपने जीवन में जीवित रखना (3; 14-16) और वचन का प्रचार करना था (4:1-5)। पौलूस अपनी शिक्षण टिप्पणी को इस बात की व्यक्तिगत गवाही के साथ समाप्त करता है कि वह जेल में यह सब कैसे कर रहा है (4:6-8)। वह तीमुथियुस को आदेश या सलाह नहीं देता है, लेकिन इसमें स्पष्ट रूप से उसके और हम सभी के लिए एक चुनौती मौजूद है। **"क्योंकि मैं भेंट की दाखरस की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे प्रस्थान का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रक्षा की है। अब मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो ईश्वरीय और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा - और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी जो उसके प्रगट होने की बाट जोते हैं"** (2 तीमुथियुस 4: 6-8)।
पौलुस विजय के कितने बड़े लेख के साथ अपनी बात को समाप्त करता है। जेल में होने और जल्द ही शहादत का सामना करने के बावजूद, वह अपनी आँखें यीशु पर रखता है। यह तीमुथियुस और उसके बाद से कई लोगों के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन था।

वह "भेंट की दाखरस के समान उण्डेला जाता है।" यह एक पुजारी को संदर्भित करता है जो तब तक वेदी पर दाखरस उंडेलता है जब तक कि वेदी पर दाखरस का बलिदान नहीं हो जाता है। पौलूस को आपने लिए ऐसा ही लगता है। वह स्वीकार करता है कि वह जबरदस्त परीक्षणों का सामना कर रहा है और स्वयं कठिनाई का सामना कर रहा है। क्या आपने कभी इस तरह से सोचा है? आपने सब कुछ दे दिया है और अब और देने के लिए कोई शारीरिक या भावनात्मक ऊर्जा नहीं बची है। कई बार ऐसा हुआ है कि मैं ने आपने आप को पौलूस के शब्दों से खुद को पहचाना है। परमेश्वर उस समय बहुत वास्तविक और निकट था, और मुझे यकीन है कि वह पौलूस के साथ भी था।

पौलूस जानता है कि उसकी मृत्यु **("प्रस्थान")** निकट है और वह अपने जीवन को एक बलिदान के रूप में परमेश्वर को अर्पित कर रहा है। "प्रस्थान" का उपयोग एक यात्री के लिए अपने देश को छोड़ने के लिए

किया जाता है, या एक सैनिक जो शिविर को आगे बढ़ने के लिए या एक नाविक द्वारा किनारा छोड़ने के लिए। मौत के लिए यह कितना सटीक शब्द चित्र है। यह अंत नहीं है, बस एक बड़ा बदलाव है। जीवन समाप्त नहीं होता है, लेकिन यह इस दुनिया से अनंत काल तक के लिए चला जाता है। वो क्या ही आनन्द होगा! पौलूस वास्तव में इसकी ही प्रतीक्षा कर रहा था, जैसा कि हम सभी को भी करना चाहिए।

जब वह अपने जीवन पर पीछे मुड़कर देखता है, तो पौलूस तीन वाक्यांशों के साथ अपने प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है। पहला है **"मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है।"** इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द शाब्दिक रूप से "पीड़ा" है। यह एक मुक्केबाज़ या पहलवान के लिए प्रयोग किया जाता है जो एक अत्यंत कठिन लड़ाई में अपना सब कुछ दे देता है। पौलुस सेवकाई में अपने जीवन के बारे में ऐसा ही सोचता था। यीशु की सेवा करना एक युद्ध है, एक कठिन युद्ध है। हम पाप, शैतान और उसकी ताकतों और हमारे चारों ओर की दुनिया के विरोध से प्रलोभन से लड़ते हैं, वही दुश्मन जिससे यीशु लड़ा था। हमें क्यों उम्मीद करें कि हम जो उसका अनुसरण करते हैं, उनके लिए यह अलग होगा? यीशु हमारी लड़ाई को खत्म नहीं करता बल्कि इसे जीतने में हमारी मदद करता है। जो माता-पिता अपने बच्चों से सभी बाधाओं को दूर करते हैं, वे बिगड़ैल, आत्मकेंद्रित, अपरिपक्व बच्चे हो जाते हैं । परमेश्वर के बच्चों के बारे में भी यही सच है। बाधाएं हमें मजबूत बनाती हैं।

क्या आप अपने अब तक के मसीही जीवन को पीछे मुड़कर देखने में सक्षम हैं और कह सकते हैं कि आपने अच्छी लड़ाई लड़ी है? क्या आप उन लड़ाइयों में सथिर हैं जो आपको आज लड़नी हैं, या आप हार मान रहे हैं और उन्हें आपको हराने दे रहे हैं?

दूसरे तरीके से पौलुस अपने जीवन का सार प्रस्तुत करता है कि उसने **"दौड़ पूरी कर ली है।"** उनके दिनों में, दौड़ में गिनी जाने वाली बात केवल गति ही होती थी , बल्कि यह कि आपकी मशाल अभी भी जल रही थी। यह उदाहरण उसके जीवन के अंत तक परमेश्वर के प्रति पौलुस की विश्वासयोग्यता की बात करती है। वह विश्वास से या परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं मुड़ा। उसकी संघर्ष और कठिनाइयाँ थीं, लेकिन उसने दृढ़ता से काम किया।

क्या आप उसी तरह ईमानदारी से सेवा रहें हैं जैसे आपने तब किया था जब आपने पहली बार यीशु का अनुसरण करना शुरू किया था? क्या आप जीवन भर ऐसा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं?

अन्त में, पौलुस कहता है कि उसने **"विश्वास रखा है।"** यह एक फौजी शब्द है जो खड़े सुरक्षकर्मी को संदर्भित करता है, जो उसकी रक्षा करता है जो कुछ उसे सौंपा जाता था। पौलूस के लिए, यह मसीही विश्वास था, जिसको बाइबल में सत्य की देह बताया गया है। वह तोड़ों के दृष्टांत में एक व्यक्ति की तरह एक विश्वासयोग्य भण्डारी था (मत्ती 25:14–30 लूका 19:11–27)। यहाँ तक कि सताव और अपने जीवन की धमकियों के दौरान भी, उसने कभी भी परमेश्वर के वचन में प्रकट सत्य से इनकार नहीं किया या उससे मुड़ा नहीं।

कब आपने परमेश्वर के वचन में परमेश्वर की आज्ञाओं और निर्देशों के कुछ हिस्से को त्यागा है, उससे मुकरे है, नकारा है या उसकी लापरवाही की है? क्या उसमे कुछ ऐसा है जिसे आप आज 100% नहीं मान रहे हैं?

पौलूस की सलाह: **अभी से अपना जीवन यीशु के लिए जिएं ताकि अंत में आप कह सकें कि आपने अच्छी लड़ाई लड़ी है, दौड़ पूरी की है और विश्वास बनाए रखा है।**

आप कौन जानते हैं जो किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जो अच्छी लड़ाई लड़ रहा है, दौड़ में दौड़ रहा है और विश्वास बनाए रख रहा है? जब आप यीशु के लिए जीते हैं तो आप उससे क्या सीख सकते हैं जो आप की मदद का सबब बं सकता है ?

23. कर्तव्य 11: अंत तक विश्वासयोग्य - 2

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:6-8

जैसे ही उसने तीमुथियुस को सलाह के अपने अंतिम शब्दों को समाप्त किया, पौलूस साझा करता है कि वह यीशु के लिए अपने जीवन को कैसे देखता था। उसने कहा कि वह अच्छी कुश्ती लड़ चुका है, और उसने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, और विश्वास बनाये रखा है (2 तीमुथियुस 4:6-8)। यह तीमुथियुस के लिए अपना जीवन जीने की एक अनकही चुनौती थी ताकि जब वह मृत्यु का सामना करे तो वह यही बात कह सके। अंत तक विश्वासयोग्य रहना हम सभी का कर्तव्य है। हम सभी रहना चाहते हैं, लेकिन यह कठिन हो सकता है।

यहां तक कि अगर आप पौलूस की तरह वफादार नहीं भी रहे हैं (और बहुत कम हैं भी जो रहते हैं), अगर आप किसी पाप या विफलता को स्वीकार करते हैं और इससे मुड़ते हैं, तो परमेश्वर आपको माफ कर देंगा और आपको बहाल कर देंगा ताकि आप एक साफ रिकॉर्ड के साथ फिर से शुरू कर सकें (1 यूहन्ना 1:9)। अभी से वफादार बनो। और यदि आप असफल होते हैं, तो वह आपको क्षमा करेगा और जितनी बार आपको इसकी आवश्यकता होगी, आपको पुनर्स्थापित करेगा।

परमेश्वर आपको इस जीवन में शांति, आनंद और स्वयं के साथ घनिष्ठ संगति की आशीष देगा। वह आपको अनंत काल के लिए स्वर्ग में भी प्रतिफल देगा। इसलिए पौलूस आगे कहता है: **"अब मेरे लिए धार्मिकता का मुकुट रखा गया है ..."** खेल आयोजनों में विजेताओं को मुकुट दिए जाते थे, जैसे आज हम पदक और ट्राफियां देते हैं। परमेश्वर का पुरस्कार दूसरों को हराने के लिए नहीं बल्कि अपने काम को पूरा करने के लिए दिया जाता है। वही अनंत काल के लिए प्रतिफल हैं। न केवल हम हमेशा के लिए यीशु के साथ रहेंगे, बल्कि हमारी विश्वासयोग्य सेवा के लिए हमें उससे विशेष आशीषें और विशेषाधिकार भी प्राप्त होंगे। ये सभी विश्वासियों को यीशु द्वारा दिए जाते हैं (1 कुरिन्थियों 9:4-27)। विश्वासयोग्य पादरीगण महिमा का मुकुट प्राप्त करेंगे (1 पतरस 5:4)। सभी मसीहीगण (2 तीमुथियुस 4:8), पादरियों के साथ साथ, एक अनुशासित जीवन जीने के लिए एक अविनाशी मुकुट प्राप्त कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 9:25), लोगों को यीशु के पास ले जाने और उन्हें बढ़ने में मदद करने के लिए आनन्द का मुकुट (1 थिस्सलुनीकियों 2:19)), यीशु की वापसी से प्रेम करने के लिए धार्मिकता का मुकुट (2 तीमुथियुस 4:8) और परीक्षाओं को सहने के लिए जीवन का मुकुट (याकूब 1:12; प्रकाशितवाक्य 2:10)।

आपके अनुसार इनमें से कौन सा मुकुट आपको प्राप्त होगा? स्वर्ग तक पहुँचने और उन्हें यीशु से प्राप्त करने पर आपको कैसा लगेगा?

हम इस जीवन से कुछ भी स्वर्ग में अपने साथ नहीं ले जा सकेंगे। हमारे पास केवल वे मुकुट होंगे जो यीशु हमें वहां देता है। जब हम सिंहासन पर उसे बैठा देखकर उसकी आराधना करते हैं और उसकी महानता और सुंदरता को देखते हैं, तो हम अपना प्रेम दिखाना चाहेंगे ताकि हम उसे केवल वही दे सकें जो हमारे पास है - यानि हमारे मुकुट। हम उन्हें इस मान्यता में उसके चरणों में रखेंगे कि वे उसके हैं, क्योंकि उसकी दया और शक्ति के बिना हम उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते थे (प्रकाशितवाक्य 4:10)। हम

केवल लकड़ी, घास और ठूंठ ही पैदा कर सकते हैं - जिसमें उसके योग्य कुछ भी नहीं है (1 कुरिन्थियों 3:12-15)। उसे देने के लिए कोई मुकुट न होना कितना दुखद होगा!

दूसरा तीमुथियुस शहीद होने से पहले तीमुथियुस को लिखा पौलुस का अंतिम पत्र है। अंतिम शब्द महत्वपूर्ण और विशेष होते हैं। एक दिन आप और मैं अपने अंतिम शब्द कह रहे होंगे। क्या हम यह कह सकेंगे, कि **मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास रक्षा की है।** (2 तीमुथियुस 4:7-8)? पौलूस का पृथ्वी पर समय समाप्त हो गया है लेकिन हम अभी भी यहाँ हैं, हम अभी भी उसके लिए जी सकते हैं और उसकी सेवा कर सकते हैं।

क्या आप अभी ऐसा कर रहे हैं? क्या आप जीवन भर ऐसा करते रहेंगे, चाहे आप किसी भी परिस्थिति का सामना करते हों ?

पृथ्वी पर हमारे अंतिम शब्दों से भी अधिक महत्वपूर्ण स्वर्ग में हमारे लिए कहे गए यीशु के पहले शब्द हैं। मैं उसे यह कहते हुए सुनना चाहता हूँ, **"शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक! तुम थोड़े में विश्वासयोग्य रहे; मैं तुझे बहुत सी बातों का अधिकारी ठहराऊंगा। आओ और अपने मालिक की खुशियाँ बाँटो!"** (मत्ती 25:23)। बस स्वर्ग में होना अद्भुत होगा, लेकिन यीशु से मिलना और उसे आमने-सामने यह कहते सुनना हमारी कल्पना से भी परे होगा।

पौलूस की सलाह: यीशु के लिए जीना न केवल इस जीवन में आशीषें लाता है, बल्कि अनंत काल के लिए विशेष मुकुट और पुरस्कार भी लाता है।

प्रार्थना में कुछ समय यीशु को धन्यवाद देने के लिए बिताएं कि उसने आपके बीते जीवन में क्या किया है, वह अभी क्या कर रहा है और स्वर्ग में अनंत काल के लिए आप उसके साथ रहेगा।

24. पौलूस और तीमुथियुस के अंतिम वर्ष

पढ़ें: 2 तीमुथियुस 4:9-22

पौलूस के दिनों में एक पत्र लिखते समय, यदि शुरुआत में अपने नाम के हस्ताक्षर करना और अंत में व्यक्तिगत टिप्पणी करना आम बात थी, तो आज कल हम जिस तरह से पत्र लिखते हैं, उसके बिल्कुल विपरीत है (2 तीमुथियुस 4:9-22 पढ़ें)। तीमुथियुस को जो कुछ वह भी कहना चाहता था, उसे कहने के बाद, पौलुस अब उन मित्रों के लिए व्यक्तिगत अभिवादन शामिल करता है जिन्हें वह फिर कभी नहीं देखेगा (आयत 19-21)। उसने मरकुस के बारे पूछता, जिसे उसने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर ले जाने से मना कर दिया था क्योंकि मरकुस ने पहली बार उसे छोड़ दिया था, कि वह तीमुथियुस के साथ आए और अपना कुर्ता और स्क्रॉल उसके पास लाए (आयत 12-13)। प्रत्यक्ष रूप से मरकुस आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो गया था और अब एक भरोसेमंद सेवक था। रोम में पौलुस के साथ केवल विश्वासयोग्य लूका ही था (आयत 11)। वह अंत में कहता है, **"प्रभु तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। तुम सब पर अनुग्रह होता रहे"** (आयत 22)। अनुग्रह पौलुस के पूरे जीवन का विषय था, और हमारा भी होना चाहिए।

पौलूस की मृत्यु का विवरण कोई नहीं जानता, लेकिन ऐसा लगता है कि रोम में नीरो द्वारा भयानक उत्पीड़न के दौरान उसका सिर काट दिया गया था। नीरो ने 64 ईस्वी में रोम को जला दिया और मसीहीयों को इसका दोषी ठहराया था, इस प्रकार भयानक उत्पीड़न और हत्या की एक और लहर शुरू हो चुकी थी। क्योंकि वह एक रोमी नागरिक था, इसने पौलुस को क्रूस पर चढ़ने से बचा लिया था। लगभग इसी

समय पतरस और उसकी पत्नी को क्रूस पर चढ़ाया गया था। इतिहास कहता है कि पतरस सूली पर उल्टा चढ़ना चाहता था क्योंकि वह सोचता था कि वह अपने गुरु की तरह मरने के लायक नहीं था।

जहाँ तक तीमुथियुस की बात है, ऐसा प्रतीत होता है कि वह लगभग 66 ईस्वी में रोम में पौलुस के साथ मिल पाया था और उस समय तीमुथियुस लगभग 31 वर्ष का था। उसने अपना शेष जीवन इफिसुस में सेवा करते हुए बिताया, वही स्थान जहाँ से वह छोड़ना चाहता था, जब तक कि वह शहीद नहीं हो गया था। यूहन्ना और मरियम(यीशू मसीह का माँ) भी वहीं रहते थे। वे दोनों भी उसके लिए कितनी बड़ी मदद साबित हुए होंगे। डोमिनिटियन या नर्व द्वारा किये गए उत्पीड़न में उसकी मृत्यु लगभग 97 ईस्वी में हुई, जब वह 62 वर्ष का था।

तीमुथियुस ने परमेश्वर की सेवा में एक लंबा जीवन व्यतीत किया। उसने पौलुस से सीखा और जो सीखा उसे दूसरों तक पहुँचाया जो उसे तब तक आगे बढ़ाते गए जब तक कि वह आज हमारे पास नहीं पहुच गया (2 तीमुथियुस 2:2; 1 थिस्सलुनीकियों 3:2)। वह जो कुछ भी जानता था उसे दुसरे लोगों में बाटता, उन्हें सेवकाई का प्रशिक्षण देता। तीमुथियुस के पास भी एक सेवक का हृदय था और वह सेवा कराने के बजाय सेवा करने को तैयार था (प्रेरितों के काम 19:22)। वह वहाँ जाने के लिए उपलब्ध था जहाँ परमेश्वर चाहता था कि वह जाए और समस्याओं से घिरी कलीसियाओं के लिए निवारण कर्ता के रूप में सेवा करता था (प्रेरितों के काम 20:4)। तथ्य यह है कि वह सिखाने योग्य था और सीखने के लिए इच्छुक था, जो उसे बढ़ने और सेवकाई में बने रहने के लिए महत्वपूर्ण था (2 तीमुथियुस 3:10-11)। उसने जो कुछ सीखा उसे लिया और दूसरों को दिया।

क्योंकि उसने पौलुस के लक्ष्यों और उद्देश्यों को साझा करता था, तीमुथियुस विश्वासयोग्यता से पौलुस (और परमेश्वर की) इच्छा और इच्छा का प्रतिनिधित्व कर सकता था (फिलिप्पियों 2:19-20)। कुछ पादरी दूसरों की मदद करने और जहां जरूरत हो वहां सेवा करने के बजाय खुद के लिए नाम और प्रतिष्ठा बनाने में अधिक रुचि रखते हैं। कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद, तीमुथियुस जो कुछ भी करता था वह उसमें विश्वासयोग्य था (1 कुरिन्थियों 4:17)। वह आज भी सभी पादरियों के लिए एक महान उदाहरण बना हुया है।

पौलूस की सलाह: पौलूस और तीमुथियुस का पालन करें, इसलिए नहीं कि वे सिद्ध हैं बल्कि इसलिए कि वह यीशु का अनुसरण करते थे ।

1 कुरिन्थियों 4:17 मैं अपने पुत्र तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजता हूं, जिस से मैं प्रेम रखता हूं, और जो प्रभु में विश्वासयोग्य है। वह तुम्हें मसीह यीशु में मेरे जीवन के टूर तरीके की याद दिलाएगा, जो उससे सहमत है जो हर जगह हर कलीसिया मैं सिखाता हूं।

आप किसकी समानता में अधिक हैं, पौलूस की या तीमुथियुस की ?

आप किन मायनों में पौलूस की तरह हैं? आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ा है जिसका उसने भी सामना किया था ?

आप किन मायनों में तीमुथियुस की तरह हैं? आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ा जिसका उसने भी सामना किया था ?

आपने पौलूस और तीमुथियुस से क्या सीखा है जो आपको एक बेहतर पादरी बनने में मदद कर सकता है?

25. अपने पादरियों के प्रति मसीही लोगों के कर्तव्य

हमने, उनकी भेड़ों के प्रति चरवाहों के कर्तव्यों को देखा है, अब हम मसीही लोगों की अपने पादरियों के प्रति जिम्मेदारियों के बारे में बात करते हैं। भेड़ एक चरवाहे के काम को आसान या कठिन बना सकती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे उसके नेतृत्व के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देती हैं। परमेश्वर की भेड़ों के बारे का भी यही सच है। मसीहियों को आज्ञा दी जाती है कि वे अपने अगुवों का आदर करें (1 तीमुथियुस 5:17-25)। वे, उनकी विश्वासयोग्य सेवा के लिए उन्हें पहचानने और उन्हें सम्मान देने के द्वारा ऐसा कर सकते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:12)। उन्हें प्यार दिखाना महत्वपूर्ण है, क्योंकि अगुओं को भी इसकी उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी और को (1 थिस्सलुनीकियों 5:13)। लोगों को जरूरी है कि वे अपने पादरीयों की हर तरह से मदद करें। उन्हें प्रतिदिन उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

कभी भी किसी अगुवे की आलोचना न करें या चुगली न करें (1 कुरिन्थियों 4:3-4)। यदि बाइबल संबंधी कोई चिंता का विषय है तो उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें। यदि फिर भी यह ऐसा ही रहता है, तो इस व्यक्ति के बारे में अपनी चिंताओं को व्यक्त करने के लिए किसी उपयुक्त अगुआ के पास जाएँ और उसे इसका निवारण निकालने दें। यदि समाधान नहीं होता है और परमेश्वर आपको कलीसिया छोड़ने के लिए ले कहता है, तो चुगली या आलोचना के बिना चुपचाप छोड़ दें (नीतिवचन 16:28; 11:9,13; 10:18; भजन संहिता 15:2-3; इफिसियों 4:29)।

मसीहीयों को अपने अगुओं को उनकी सेवा के लिए धन्यवाद देकर, कठिनाइयों का सामना करने में उनकी सहायता करके और किसी भी तरह से मदद करने के लिए उनको प्रोत्साहित करना चाहिए। चर्च सेवाओं में लोगों की नियमित उपस्थिति भी एक पादरी को प्रोत्साहित करती है।

विश्वासियों को अपने अगुओं के लिए नियमित रूप से, विशेष रूप से और प्यार से प्रार्थना करनी चाहिए। 35 वर्षों तक मैंने जिस कलीसिया में पादरी का कार्य किया वह मेरी मदद करने में और मेरे लिए प्रार्थन करने में बहुत अच्छी थी। मैं जानता हूं कि उनकी प्रार्थनाओं से क्या फर्क पड़ा, लेकिन मैं उनके सहयोग के बिना पादरी का काम (पासबानी) नहीं कर सका होता।

पौलुस ने आरंभिक कलीसियाओं को नियमित भेंट चढ़ाने की आज्ञा दी थी (1 कुरिन्थियों 16:2)। पुराने नियम में परमेश्वर ने यहूदियों से कहा था कि वे अपने धन का 10% परमेश्वर के कार्य के लिए दें (उत्पत्ति 14:20; 28:22) और यीशु ने दशमांश देने की बात को मान्यता दी (लूका 11:42)। हम अब परमेश्वर के पुराने नियम की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, इसलिए वे आज्ञाएँ हम पर लागू नहीं होतीं। फिर भी, यह बातें हमें एक दिशानिर्देश दे सकती है कि कितना देना है। पौलूस ने कहा कि हमें देना है क्योंकि परमेश्वर ने हमें समृद्ध किया है (1 कुरिन्थियों 16:2), जो हम में से अधिकांश के लिए 10% से अधिक होगा। वित्तीय रूप से देने के महत्व के बारे में लिखने के लिए पौलूस दो अध्यायों, 2 कुरिन्थियों 8 और 9 को समर्पित करता है।

चर्च को दिए गए धन में से कुछ हिस्सा एक पादरी को पर्याप्त वेतन देने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि काम करने वाला अपने वेतन का हकदार है (व्यवस्थाविवरण 24:15)। व्यवस्थाविवरण 24:15 में चित्र एक बैल का है जो अन्न को गाहने के लिए बाट खींचकर मालिक के लिए भोजन उत्पन्न

करने का काम करता है। यह बिलकुल सही है कि उसे अपने काम से लाभ उठाने दिया जाए ताकि उसके पास काम करते रहने की ऊर्जा बनी रहे। एक पादरी को भुगतान करने से उसे अध्ययन करने और पासबानी करने के लिए समय मिलता है।

यदि लोगों के पास देने के लिए पैसा नहीं है, तो वे पादरी के परिवार के लिए भोजन या कुछ उपयोगी वस्तु प्रदान कर सकते हैं। जिस कलीसिया में मैं पादरी था, उसके पास मुझे भुगतान करने के लिए पैसे नहीं थे, तो कलीसिया के लोगों ने हमें भोजन दिया। इसकी बहुत जरूरत थी और हम ने इसकी बहुत सराहना करते थे।

पौलुस कहता है कि एक पादरी "दोगुने आदर" के योग्य है (1 तीमुथियुस 5:17-18)। न केवल उन्हें परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में मान और सम्मान मिलना चाहिए, बल्कि उन्हें सेवकाई के लिए समय देने में मदद करने के लिए वित्तीय सहायता भी मिलनी चाहिए। बहुत से मसीही और कलिसियाए एक पादरी को उसके परिवार का संचालन करने के लिए पर्याप्त भुगतान नहीं करते हैं। एक पादरी को अपने चर्च में औसत व्यक्ति की तुलना में अधिक पैसा बनाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन उसे कम भी नहीं मिलना चाहिए।
बाइबल मसीहीयों को कर्ज में डूबने से मना करती है और एक कलीसिया को किसी भी तरह के कर्ज से दूर रहने के लिए बाद-चढ़ कर काम करना चाहिए (रोमियों 13:8; नीतिवचन 22:7; भजन सहिता 37:21; लूका 14:28; इब्रानियों 13:5) । कोई भवन खरीदना आवश्यक हो सकता है, लेकिन इसकी कीमत कम से कम होनी चाहिए और जितनी जल्दी हो सके इसका भुगतान किया जाना चाहिए।

पादरी बनना एक कठिन काम है। जितना संभव हो सके इसे आसान बनाने के लिए आप अधिकसे अधिक करें।

पौलूस की सलाह: अपने पादरी के प्रति आदर और सम्मान दिखाएं, उसकी मदद करें और आर्थिक रूप से उसकी सहायता करें।

यिर्मयाह 3:15 तब मैं तुम को अपने मन के अनुसार चरवाहे दूंगा, जो ज्ञान और समझ के साथ तुम्हारी अगुवाई करेंगे।

क्या आपके लोग आपके साथ सम्मान से पेश आते हैं? क्या आप एक अच्छा उदाहरण स्थापित करने के लिए उनके साथ अच्छा व्यवहार कर रहे हैं?
क्या लोगों को यह सिखाते हैं कि उनको, वे जितना बेहतर कर सकते हैं, आपकी मदद करना ज़रूरी है?
आप उन्हें अच्छे भण्डारी होने और कलीसिया को आर्थिक रूप से मदद देने के महत्व के बारे में सिखाते हैं?
क्या आप आपने लोगों को इस का महत्व सिखाते हैं कि वे जितना कर सकतें है आप की मदद करने के लिए उन्हें उतना करना जरूरी है ?

26. पादरीयों के अन्य पादरीयों के प्रति कर्तव्य
हम एक पादरी के कर्तव्यों और जिमेदारियों को देख रहे हैं जैसा कि 2 तीमुथियुस में देखा गया है। हमने देखा है कि पादरीयों की अपने लोगों के प्रति और लोगों की अपने पादरीयों के प्रति जिमेदारी। विचार का एक अंतिम क्षेत्र है पादरीयों का अन्य पादरीयों के प्रति कर्तव्य।

हम एक ही टीम में हैं, एक ही महान चरवाहे के लिए काम कर रहे हैं। अन्य पादरीयों या कलिसीयाओं के साथ कोई प्रतियोग्यता, ईर्ष्या या आलोचना नहीं हो सकती (1 कुरिन्थियों 3:9)। हमें झूठे शिक्षकों का मूल्यांकन और न्याय करना है, लेकिन साथी पादरीयों और उनकी सेवकाई को नहीं (1 तीमुथियुस 5:19-25; रोमियों 14:4)। हमें एक दूसरे का समर्थन करना चाहिए, एक दूसरे के साथ मुकाबला नहीं करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 3:8-9)। हम एक साथ मिलकर काम करने वाली एक देह हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-27; रोमियों 12:4)। जब शरीर के अंग एक दूसरे के विपरीत काम करते हैं तो शरीर कमजोर और अस्वस्थ हो जाता है। कलीसिया के साथ भी ऐसा होता है जब पादरीगण और कलीसियाए एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं या करते हैं। हर कोई इससे पीड़ित होता है।

हमें एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करने, एक-दूसरे की मदद करने, एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने और एक साथ मिलकर अपने आम दुश्मन के खिलाफ काम करने की जरूरत है। अन्य पादरीयों के साथ संगति और सहयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है। हम एक दुसरे के साथ अपनी चिंतायों को साझा कर सकते हैं, एक दुसरे को अंतर्दृष्टि और ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, एक दुसरे को कठिनाइयों के दौरान प्रोत्साहित कर सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे को जिमेदार ठहरा सकते हैं। जरूरत पड़ने पर हम दूसरों की मदद करने के लिए अपने उपहार और क्ष्मतायों को साझा कर सकते हैं। हमें एक दूसरे की जरूरत है। मुझे लगता है कि आज इतने सारे पादरीयों के संघर्ष करने का एक ही कारण यह है कि उनके पास अन्य पादरी नहीं हैं जो जरूरत पड़ने पर उन्हें प्रोत्साहित कर सके या उनकी मदद कर सकें। तीमुथियुस के पास काम में हाथ बटाने के लिए तीतुस जैसा साथी पादरी थे । उनके पास एक उसताद के रूप में पौलूस भी था। पौलूस के पास एक उसताद के रूप में बरनबास और एक दोस्त के रूप में लूका था जिसने उसके साथ यात्रा की थी और उसके साथ सेवा की थी । यीशु के अपने शिष्य थे, और विशेष रूप से याकूब, यूहन्ना और पतरस। आपको अन्य पादरीयों की आवश्यकता है और उन्हें आपकी आवश्यकता है। आपको कभी भी इतने व्यस्त नहीं होना चाहिए कि अन्य पादरीयों के साथ संबंध विकसित करने में समय निकलने के लिए आप के पास समय ही ना हो । वे बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं।

पौलूस की सलाह: पादरीयों को हर तरह से एक दूसरे का समर्थन और मदद करनी चाहिए।

इब्रानियों 12:14 सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप से रहने और पवित्र होने का यत्न करो; पवित्रता के बिना कोई भी प्रभु को नहीं देखेगा।

क्या कोई ऐसा पादरी या कलीसिया का अगुआ हैं जिनके साथ आपकी नहीं बन रही है? रिश्ते को ठीक करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

आप किन पादरियों से ईर्ष्या करते हैं? क्यों? अपनी ईर्ष्या को स्वीकार करें और परमेश्वर से आपको क्षमा करने के लिए कहें।

जरूरत पड़ने पर आप किसके पास जा सकते हैं? आप संघर्षों और कठिनाइयों को किसके साथ साझा कर सकते हैं?

यदि आप संघर्ष करते हैं तो आपको कौन देखेगा? यदि आप फिसल जाते हैं तो आपको कौन जिम्मेदार ठहराता है?

आपका उसताद कौन है? आप किसके लिए एक उसताद की तरह हैं?

आप कौन से युवा पादरियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं और उनकी मदद कर रहे हैं? आप उनके लिए क्या कर रहे हैं?

<u>IV. तीतुस</u>

क- तीतुस की पृष्ठभूमि

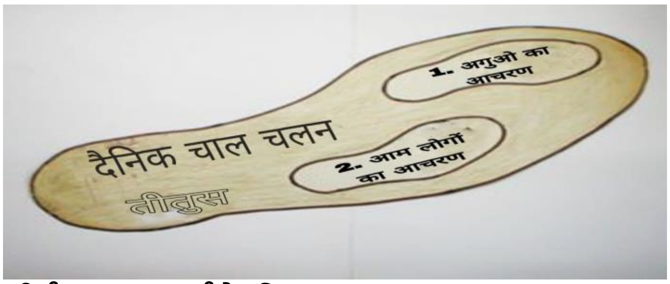

शीर्षक: प्राप्तकर्ता के लिए नाम पर
लेखक: पौलूस
विषय: दैनिक चाल चलन
लेखन की तिथि: 62 ई.
लेखन का स्थान: कोरिन्थ
प्राप्तकर्ता: तीतुस, एक युवा पादरी जिसे पौलूस सेवकाई के लिए प्रशिक्षण दे रहा है ।
मुख्य वचन: 11 क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह जो सब मनुष्यों का उद्धार करता है, प्रगट हुआ है।
12 यह हमें अईश्वरीय और सांसारिक अभिलाषाओं को “ना” कहना और इस वर्तमान युग में आत्म-नियंत्रत, खरा और ईश्वरीय जीवन जीना सिखाता है।
13 जब तक हम हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के धन्य महिमामय प्रगट होने की आशा की प्रतीक्षा करते है ।
14 जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया, कि हमें सब अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपनी प्रजा बनाए, जो भले काम करने को उत्सुक हो। 2:11-14

प्रमुख शब्द: "अच्छा" (11 बार); "अच्छे कार्य" (6 बार); "ध्वनि" (5 बार)

उदेश्य:

1 तीमुथियुस	**तीतुस**	**2 तीमुथियुस**
अधिकतर पासबानी हेतु	अधिक पासबानी नहीं	अधिकतर पासबानी हेतु
सुसमाचार की रखवाली कर 6:20	सुसमाचार के अनुसार काम कर 3:8	सुसमाचार का प्राचार कर 4:2

विषय: ईश्वरीय जीवन कैसे जियें

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के बाद, पौलूस यरूशलेम गया जहाँ उस पर यहूदी कानून तोड़ने का झूठा आरोप लगाया गया और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी सुरक्षा के लिए उसे कैसरिया ले जाया गया जहां उसे 2 साल तक नजरबंद रखा गया। पौलुस ने कैसर से अपील की और उसे रोम ले जाया गया। रास्ते में उसका जहाज डूब गया। आखिरकार उसे रिहा कर दिया गया क्योंकि यहूदी उसके खिलाफ कोई आरोप साबित नहीं कर सके थे। इसके बाद पौलुस इफिसुस चला गया और तीमुथियुस को वहाँ छोड़कर पूरे इलाके की कलीसियाओं की मदद करने लगा। पौलूस उत्तरी यूनान में लगातार रहने लगा और तीमुथियुस को लिखता रहा, उसे उसके काम में प्रोत्साहित करता रहा और कलीसियाई व्यवस्था और संगठन के बारे में समझाता रहा (1 तीमुथियुस)। इसके बाद पौलुस क्रेते गया और वहाँ पर तीतुस को उन कलीसियाओं की देखरेख करने के लिए रख दिया। शीघ्र ही पौलुस क्रेते को छोड़कर कुरिन्थुस में चला गया। वहाँ से उसने तीतुस को प्रोत्साहित करने के लिए उसे पत्र लिखा (तीतुस की पत्री)। आखिरकार वह इफिसुस में फिर से आ बसा जहां उसे दूसरी बार गिरफ्तार किया गया और मसीही होने के अपराध के लिए उसे रोम वापस ले जाया गया। वहाँ बन्दीगृह से उसने तीमुथियुस को फिर से पत्र लिखा (2 तीमुथियुस)।

पृष्ठभूमि 1 और 2 तीमुथियुस के बीच रखी हुई तीतुस की पत्री है जो 1 तीमुथियुस के जैसी है। तीतुस एक अन्यजाति था जिसकी पौलुस ने उद्धार की ओर अगुआई की थी । पौलुस उसे यरूशलेम सभा में ले गया केवल अगुवों को दिखाने के लिए कि खतना किए बिना अन्यजातियों को बचाया जा सकता है (प्रेरितों के काम 15:1-11; तीतुस 2:11-14; गलातियों 2:3)। तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत में तीतुस का फिर से उल्लेख होता है। पौलुस ने उसे नाजुक समस्याओं से निपटने के लिए कुरिन्थुस में भेजा (ठीक उसी तरह जैसे तीमुथियुस को इफिसुस में भेजा था)। मुख्य रूप से, फिर भी, तीतुस ने क्रेते की कलीसियाओं के साथ काम किया, ठीक वैसे ही जैसे तीमुथियुस ने इफिसुस की कलीसियाओं के साथ काम किया था।

I.अगुवों का आचरण (1:5-16) पौलुस तीतुस को याद दिलाते हुए आरंभ करता है कि कलीसिया के अगुवों को कैसे रहना और कार्य करना था। डीक्नो और प्राचीनो के लिए योग्यताएं और मानक दिए गए थे। पौलूस उन्हें झूठे शिक्षकों के बारे और उनके खतरे के बारे में भी चेतावनी देता है। तीतुस क्रेते द्वीप पर हर जगह नहीं जा सकता था, इसलिए उसे वहां के भिन भिन गृह -कलिसीयाओं की देखरेख के लिए भरोसेमंद अगुओं की आवश्यकता थी। यही संगठन ढांचा था जो उन सभी जगहों पर इस्तेमाल किया जाता था जहाँ कलीसिया होती थी।

II. आम लोगों का आचरण (2:1-10) पौलुस तीतुस को बताता है कि बाकि सब विश्वासियों को कैसे जीना है। वृद्ध पुरुषों को आत्म-नियंत्रित होना चाहिए; महिलाएं को इज्ज़तदार और वफादार होना चाहिए, युवा पुरुषों को समझदार होना चाहिए। सभी को दूसरों के लिए एक ईश्वरीय उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। सेवकों को भी, ईश्वरीय, आज्ञाकारी जीवन जीना है।

हर रीती से और हर समय उन्हें अनुग्रह में जीना है। उन्हें भक्तिहीन अभिलाषाओं और चाहतों से मुड़ना है। उन्हें इस बात को याद करते हुए जीना है कि यीशु उनके लिए किसी भी समय वापस आ सकता है और उन्हें इसके लिए हमेशा तैयार रहना है। पवित्रता परमेश्वर के लोगों की विशेषता होनी चाहिए।

सरकार के साथ आपने संबंध में उन्हें अच्छे नागरिक होने चाहिए। सभी लोगों के लिए उन्हें वह करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो भला है, वे जो कहते और करते हैं उसमें ईमानदार, दयालु और सभी के लिए हमेशा क्षमाशील और विचारशील और विनम्र होना हैं। उन्हें आपसी में झगड़ों और विवाद से बचना चाहिए। इस से दूसरों को पता चलेगा कि एक मसीही वास्तव में कैसा होता है।

कोई भी जो इन सिद्धांतों का पालन नहीं करता है उसे अनुशासित किया जाना चाहिए ताकि वे पश्चाताप कर सकें या कलीसिया से निकाल दिए जाना चाहिए। इस से पाप की गंभीरता दिखाई देगी और कलीसिया शुद्ध रहेगी। मसीही जीवन जीना अनिवार्य है, यह कोई वैकल्पि नहीं है। यह एक आवश्यकता है, सुझाव नहीं। आप कैसे जीवन जी रहे हैं?

ख- तीतुस की रूपरेखा

I. अगुओं का चरित्र, आचरण, योग्यता 1:5-16
क. ईश्वरीय अगुवों का चरित्र 1:5-9
ख. झूठे शिक्षकों का चरित्र 1:10-16

II. मसीहीयों का आचरण 2:1-3:11
क. उनकी उम्र और स्थिति के संबंध में 2:1-10
1. पुराना 2:1-5
क. आम सिधांत के प्रति 2:1
ख. वृद्ध पुरुषों के प्रति 2:2
ग. बूढ़ी औरतें के प्रति 2:3
2. युवा लोग के प्रति 2:6-8
3. स्वामीयों के दासों के प्रति 2:9-10
ख. संसार के प्रति 2:11-15
ग. सरकार के प्रति 3:1
घ. सभी लोगों के प्रति 3:2-7
ङ अविश्वासियों के प्रति 3:8-11

समापन 3:12-15

ग. पादरियों के लिए सलाह - तीतुस

1. संदेश पहुंचाना

पढ़ें: तीतुस 1:1-4

यदि आपको एक शब्द में या एक वाक्यांश में अपना वर्णन करने के लिए कहा जाए, तो आप कौन सा शब्द चुनेंगे? पौलुस ने तीतुस के लिए स्वयं का वर्णन करने के लिए "सेवक " या "दास" शब्द का उपयोग किया था(तीतुस 1:1क)। सेवक या दास के लिए यूनानी शब्द ऐसा है जिका मतलब होता है "किसी की इच्छा दूसरे की इच्छा द्वारा निगल ली जाती है"। क्रेते द्वीप पर बहुत से दास थे, जहाँ तीतुस रहता था जब पौलुस ने उसे पत्र लिखा था। वे मानव स्वामियों के गुलाम थे और उन्हें वही करना पड़ता था जो उन्हें कहा जाता था, वे चाहे कुछ भी क्यों ना सोचते हों या करना चाहते हों। पौलूस ने कहा कि वह यीशु का गुलाम था, न केवल उस बात में जो वे करता था बल्कि जो सोचता और महसूस करता था उस में भी। उसकी इच्छा बस परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की होती थी।

पौलुस फिर एक अन्य शब्द का उपयोग यह वर्णन करने के लिए करता है कि उसकी विशिष्ट सेवक भूमिका क्या थी: उसे परमेश्वर द्वारा यीशु के सुसमाचार को उन लोगों तक ले जाने के लिए भेजा गया था जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार के लिए चुना है (तीतुस 1:1ख)। वह न केवल उद्धार का संदेश लेकर आया, बल्कि उसने फिर उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाया ताकि वे ज्ञान और भक्ति में बढ़ें। उसने उन्हें अनन्त जीवन का आश्वासन दिया, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे की थी (तीतुस 1:2)। पौलूस ने पुष्टि की कि परमेश्वर झूठ नहीं बोलता (आयत 2), क्रेते पर ज्यूस की पूजा करने वाले ईश्वर का स्पष्ट संदर्भ है, जिसे झूठे के रूप में जाना जाता था। इस संदेश को ले जाना पौलुस के लिए सम्मान और विशेषाधिकार था जहाँ भी जाने के लिए परमेश्वर ने उसकी अगुवाई की थी (तीतुस 1:3)।

पौलुस स्पष्ट करता है कि उसका काम परमेश्वर के वचन को पहुँचाना था जहाँ भी वह जाता था। यह उनकी सच्चाई नहीं बल्कि परमेश्वर का सत्य था जिसको उसने अभी पहुंचाया था। जब आप किसी रेस्तरां में खाना खाते हैं, तो एक वेटर आपके लिए आपका खाना लेकर आता है। वह खाना पकाता नहीं है, इसे कोई और बनाता है। उसका काम सिर्फ वह दे देना है जो किसी और ने बनाया है। पादरी, शिक्षक और अगुआ के रूप में हम यही करते हैं। हम अपना संदेश नहीं बनाते हैं; हम बस वही करते हैं जो परमेश्वर कहता है। हम इसे बदलते नहीं हैं, इसमें जोड़ते नहीं हैं, इसमें समझौता नहीं करते हैं या इसे किसी भी तरह से बदलते नहीं हैं। हम बस इसे परमेश्वर के वचन द्वारा उन लोगों तक पहुँचाते हैं जिनसे हम बात करते हैं। पौलूस यही करता था और हमें भी करना चाहिए। तीतुस को भी वह यही करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

पौलुस तीतुस को अपना "सच्चा पुत्र" कहता है, जो उसके साथ उसके घनिष्ठ संबंध को दर्शाता है। पौलूस अपने जीवन के अंत के करीब आ रहा था और एक दो साल में मर जाने वाला था । उसने अपना पहला पत्र तीमुथियुस को अगस्त 62 ई. में लिखा। तीतुस को 66 ईस्वी की गर्मियों में और 2 तीमुथियुस एक साल बाद, 67 ईस्वी के अखीर में लिखा गया था। छह महीने बाद पौलूस शहीद हो गया था।

तीतुस तीमुथियुस से बड़ा था और अधिक सथिर भी था। क्रेत की कलीसिया, जहाँ तीतुस ने सेवकाई की थी, इफिसुस की तरह समस्यात्मक नहीं थी जहाँ तीमुथियुस था। पौलूस नहीं जानता था कि वह तीतुस को फिर से देखेगा या नहीं, इसलिए उसने उसे सेवकाई में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लिखा, जैसा कि उसने तीमुथियुस को लिखा था। तीतुस को भी , हमारी तरह, परमेश्वर द्वारा दिया गया सन्देश देना था।

आज हम "भेजे हुए" हैं जो यीशु के बारे में संदेश को अपने आसपास के लोगों तक ले जा रहे हैं। पौलुस, तीमुथियुस और तीतुस इसे करने के लिए अब यहाँ नहीं हैं। यह अब हमारी बारी है, उनका काम खत्म हो गया है। वे अब पृथ्वी पर यीशु की सेवा नहीं कर सकते - लेकिन हम कर सकते हैं। हमारे पास अभी भी एक अवसर है कि हम अपने सभी विचारों और कार्यों में उसके दास बनें। हम दूसरों को उसके बारे में बता सकते हैं और उनके विश्वास में बढ़ने में उनकी मदद कर सकते हैं। यह सांसारिक जीवन ही एकमात्र मौका है जो हमारे पास है/ होगा। हम केवल एक बार जीते हैं इसलिए आइए इसे यीशु के लिए समझे!

पौलुस की सलाह: हम परमेश्वर के दास हैं, जिन्हें उसकी सच्चाई को हर जगह फैलाने के लिए भेजा गया है।

मत्ती 28:18-20 "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। और निश्चित रूप से मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं, संसार के अंत तक।

परमेश्वर आपका वर्णन करने के लिए किस एक शब्द या वाक्यांश का उपयोग करेगा?
क्या इसमें "अच्छा और विश्वासयोग्य दास/दास" शामिल होगा?

2. व्यवस्था और संरचना का परमेश्वर

पढ़ें: तीतुस 1:5

परमेश्वर को संरचना और संगठन पसंद है। उसने ब्रह्मांड को बहुत ही सटीक रूप से चलने के लिए बनाया। गणित के नियम विज्ञान पर शासन करते हैं और जो कभी नहीं बदलते। हर चीज का अपना स्थान होता है और वह हर चीज से जुड़ी होती है। व्यवस्था है, अराजकता नहीं; योजना है, मौका नहीं; नमूना है , दुर्घटना नहीं। चूँकि परमेश्वर ने इस तरह से चलने के लिए ब्रह्मांड का निर्माण किया, इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वह चाहता है कि कलीसिया भी उसी तरह से चले। हम इसे तीतुस को लिखे गए पौलुस के शब्दों के बिल्कुल आरंभ में देखते हैं।

अपने आरंभिक परिचय शब्दों (तीतुस 1:1-4) के बाद, पौलुस ठीक आपने लिखने के कारण पर पहुँच जाता है: "मैं तुझे क्रेते में इसलिए छोड़ आया था, कि जो कुछ अधूरा रह गया था तू उसे सुधारे, और नगर नगर में प्राचीनों को नियुक्त करे, जैसे मैंने तुझे निर्देशित किया था " (तीतुस 1:5)। तीतुस पूरे द्वीप में फैली बिखरी गृह कलीसियाओं के लिए पौलुस का प्रतिनिधि था। पौलूस अपनी शुरुआती मिशनरी यात्राओं पर कई साल पहले क्रेते गया था, लेकिन वहां कोई कलीसिया शुरू नहीं की थी। वे पहले से ही बनी हुई थी, शायद उन यहूदियों के द्वारा जिन्होंने पिन्तेकुस्त पर यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया था और क्रेते में घर लौट आए थे (प्रेरितों के काम 2:11)। कलीसिया मुख्य रूप से दासों के समाज से बनी हुयी थी जो अनैतिक, अईश्वरीय मालिकों की मल्कियत में थे।

तीतुस को "जो अधूरा रह गया था उसे पूरा करने" की आज्ञा दी गई है (तीतुस 1:5)। "स्ट्रेटन आउट" एक चिकित्सा शब्द है जो टूटी हुई हड्डी को सेट करने को दर्शाता है। वहाँ की कलीसिया को योग्य, प्रशिक्षित पुरुषों की अगुवाई में संगठित, संरचित, संचालित होने की आवश्यकता थी, जो परमेश्वर के वचन की

सच्चाई को जानते थे और उसका पालन करते थे। क्रेते के लोग बेईमान, आलसी और भ्रष्ट होने के लिए प्रसिद्ध थे (तीतुस 1:12)। मसीही बनने से सब कुछ अपने आप नहीं बदल जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के पास अभी भी स्वतंत्र इच्छा होती है कि वे कैसे आपना जीवन जीते हैं। पवित्र जीवन जीने और अच्छे काम करने के बारे में पौलुस के पास कहने के लिए बहुत कुछ था, क्योंकि वहाँ इसकी आवश्यकता थी, और इसे प्रोत्साहित करना तीतुस पर निर्भर करता था। साथ ही, बहुत सी झूठी शिक्षाएँ भी चल रही थीं (तीतुस 1:10-11)। हालातों को व्यवस्थित करना और सही दिशा में आगे बढ़ाना तीतुस पर निर्भर करता था।

इसे पूरा करने के लिए तीतुस को सबसे पहले "प्राचीनों को नियुक्त" करने की आवश्यकता थी (तीतुस 1:5)। पौलूस हमेशा ही कलिसीयाओं में आदेश और संगठन की आवश्यकता पर जोर देता था । 2 तीमुथियुस में वह कलीसिया की अगुवाई पर और तीतुस में कलीसियाई संगठन पर ध्यान केन्द्रित करता है। कलीसिया के अच्छे स्वास्थ्य के लिए संरचना बहुत महत्वपूर्ण है। सुसमाचार के प्रसार और विश्वासियों के विकास के लिए यह आवश्यक है। परमेश्वर ने ब्रह्मांड में संरचना, व्यवस्था और संगठन बनाया है। हम इसे गणित और विज्ञान में देखते हैं। हमें इसको कलीसिया में भी देखने की जरूरत है।

इन प्राचीनों को आत्मिक रूप से परिपक्व, ईश्वरीय पुरुष होना था जो विभिन्न गृह कलीसियाओं में मसीहियों की देखरेख करते। आमतौर पर दो या दो से अधिक लोग पूरे द्वीप में प्रत्येक स्थानीय सभा में नियोजन, शिक्षण और मार्गदर्शन करते थे। कलीसिया में गैर-यहूदी दूसरों की अगुवाई करने वाले योग्य पुरुष इस पहचान और अवधारणा से परिचित होंगे। यहूदी आराधनालयों के पास भी ऐसा कार्यालय होता था।

एक कलीसिया में अगुओं के दो समूह होते हैं: प्राचीन आध्यात्मिक अगुआ होते हैं और लोगों की आध्यात्मिक जरूरतों की देखरेख करते हैं। आज हम उन्हें पादरी भी कहते हैं। डीकन दूसरा समूह हैं और वे भवन की भौतिक आवश्यकताओं की , लोगों की , वित्त और संसाधनों की देखभाल करते हैं ताकि प्राचीन अधिक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

	पॉइमेन	**प्रेसब्यूटरोस**	**एपिस्कोपोस**	**डायकोनोस**
लिप्यंतरण		प्रेस्बिटरी	एपिस्कोपल	डीकन
अनुवाद	**पादरी**	**प्राचीन**	**निगेबान** (बिशप)	**सेवक** (दास)
शाब्दिक	चरवाहा	कमान अधिकारीं	रक्षक	खाने के मेज पर प्रतीक्षा करता नौकर
मुख्य विचार	खिलने और अगुवाई में दिखने वाला उपहार, कर्तव्य	पद: यहूदी अरधनाल्य के मुखिया का अधिकारिक रुतबा, व्यक्तिगत मान सम्मान, परिप्क्विता	पद : गैर यहूदी समूह के मुखिया का रुतबा, नीती निर्माता	सेवकीय रव्या: परमेश्वर के दास का रव्या
किस की तरफ से	परमेश्वर की	दूसरों की	दूसरों की	आपने आप से
	इफिसियों 4:11; 1 पतरस 5:1-4	1 पतरस 5:1-4; 1 तीमुथियुस 5:1,17,19; तीतुस 1:5-6	1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:7-9; 1 पतरस 5:1-4	1 तीमुथियुस 4:6; 2 तीमुथियुस 4:5

पादरी के रूप में आज हमारा काम इस चीज को सुनिश्चित करना भी है कि हमारी कलीसिया और हमारे लोगों के जीवन में सब कुछ सही चल रहा है। हमें आगे की योजना बनानी चाहिए, संगठित होना चाहिए और चीजों को एक व्यवस्थित क्रम में करना चाहिए। हमें लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए और उन्हें प्राप्त करने के लिए योजनाएँ बनानी चाहिए। हमें एक बड़े परिवार की तरह एक साथ काम करते हुए लोगों को व्यवस्था में रखना चाहिए। हम उन चीजों को टाल नहीं सकते हैं जिन्हें करने की आवश्यकता है और ना ही कलीसिया में अव्यवस्था या कलह को हावी होने दें सकते हैं। हम प्रभारी हैं; परमेश्वर चाहता है कि हम चीज़ों को नियन्त्रण में रखें और सबकी देखरेख करें जैसे वह हमारी देखरेख करता है।

पौलूस की सलाह: प्रत्येक कलीसिया को अपने कार्यों को व्यवस्थित करने और उसकी देखरेख करने के लिए अगुओं की आवश्यकता होती है।

1 पतरस 5:1-4 तुम में से प्राचीनो से, मैं एक संगी प्राचीन, और मसीह के दुःखों का गवाह, और जो प्रगट होनेवाली महिमा में भागी हूँगा, उन से बिनती करता हूं: परमेश्वर के उस झुण्ड के चरवाहे बनो जो तुम्हारी देखरेख में है, और सेवा करते हुए निगेबान के रूप में - इसलिए नहीं कि आपको ऐसा करना चाहिए, बल्कि इसलिए कि आप ऐसा करने के इच्छुक हैं, जैसा कि परमेश्वर चाहता है कि आप बनें; धन का लोभी होने को नहीं, परन्तु सेवा करने को तत्पर रहने को; जो तुझे सौंपे गए हैं उन पर अधिकार जमाने के लिए नहीं , पर झुण्ड के लिये आदर्श बनने के लिए। और जब प्रधान चरवाहा प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो कभी मुरझाने वाला नहीं है ।

आपको अपनी कलीसिया में कौन-सी समस्याएँ सुलझानी पड़ी हैं?

इस समय आपके जीवन में कहां पर अव्यवस्था और अव्यवस्थता है?

संगठित होने के लिए परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए आपको इसके बारे में क्या करना चाहिए?

3. ईश्वरीय अगुवों का व्यवहार

पढ़ें: तीतुस 1:6-9

तीतुस को लिखे अपने पत्र में, पौलुस उसे कलीसिया में हर तरह की समस्या या अव्यवस्था को दूर करने की आवश्यकता की याद दिलाते हुए शुरू करता है। उसे आध्यात्मिक रूप से परिपक्व, आत्म-संयम के साथ ईश्वरीय पुरुषों को नियुक्त करने की आवश्यकता थी जो पूरे क्रेते में फैले हुए गृह -कलिसीयाओं की अगुवाई करने के लिए एक अच्छी प्रतिष्ठा रखते थे । ये पुरुष, स्थानीय गृह -कलिसीयाओं के पादरी, इस बात को सुनिश्चित करने की कुंजी थे कि परमेश्वर के वचन का पालन किया जाता है और लोग आध्यात्मिक रूप से विकास करते थे। क्योंकि यह पद इतना महत्वपूर्ण था, इसलिए उनसे कुछ उमीदें राखी जाती थी (तीतुस 1:6-9)। पौलुस ने पहले ही तीमुथियुस को यह योग्यताएँ बता रखी थीं (1 तीमुथियुस 1:6-9)। (इन लक्षणों की विस्तृत व्याख्या के लिए, देखें V, पादरियों और अगुओं के लिए मानक ।)

इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि ग्रामीण क्रेते में छोटी छोटी यहूदी कलीसिआयों के अगुओं से उन्ही उच्च मानकों की उम्मीद की जाती थी, जो इफिसुस के बड़े और महत्वपूर्ण शहर में अन्यजातियों से

अपेक्षा की गई थी जहाँ तीमुथियुस सेवा करता था । यह मानक सभी कलीसियाओं के सभी अगुवों पर हर समय, हर जगह, पूरा समय लागू होते हैं।

एक ईश्वरीय अगुवा में ईश्वरीय गुण होने चाहिए। उसे कलीसिया में कार्य करने में परिपक्व और अनुभवी होना चाहिए। उसे भरोसेमंद, विनम्र और ईश्वरीय सलाह देने में सक्षम होना चाहिए। कलीसिया के अंदर और बाहर के लोगों के बीच उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। जब दूसरे बात कर रहे हों तो उसे सुनने वाला होना चाहिए, धैर्यवान और समझदार होना चाहिए, दूसरों के साथ घुलने-मिलने वाला होना चाहिए और लोगों को अपने साथ सहज महसूस कराने वाला होना चाहिए। उसे दूसरों के साथ सम्मान और समझ के साथ पेश आना चाहिए।

उसे बाइबल को अच्छी जानकारी होनी चाहिए और उसे इसकी सच्चाइयों को दूसरों तक पहुँचाने में सक्षम होना चाहिए। उसका एक ईश्वरीय जीवन और परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध स्पष्ट होना चाहिए। उसके जीवन में कोई भी अंगीकार न किया हुआ पाप नहीं हो सकता है । उसे सिद्ध और निष्पाप होने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उसे पाप पर विजय प्राप्त करने और हर समय यीशु के समान बनने की आवश्यकता है। यह इस बात में देखा जाएगा कि वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

वह लालची या भौतिकवादी नहीं हो सकता। इसके बजाय, उसे ज़रूरतमंदों को देने में खुले दिल वाला होने की ज़रूरत है। उसे हर समय खुद को नियंत्रण में रखना चाहिए और अपने परिवार, कलीसिया और समुदाय में मसीह के समान जीवन जीने का एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए।

इन्हें प्राप्त करने में समय लगता है, यह जीवन भर का काम है। फिर भी इसके बावजूद हम पूर्ण होने के निकट नहीं होंगे। यीशु की तरह बनना एक लंबी, धीमी प्रक्रिया है - लेकिन जो पादरी और अगुवा हैं उनके लिए सही दिशा में विकासत होना जरूरी है। ये मानक हमें एक लक्ष्य देते हैं जिसके लिए हमे प्रयास करना चाहिए , वे हमें अपने स्वयं के आध्यात्मिक विकास में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। यीशु हमारा उदाहरण है। उसके जैसा बनना हमारा लक्ष्य है। क्या आप इस दिशा में बढ़ रहे हैं?

पौलूस की सलाह: कलीसिया के अगुओं को आध्यात्मिक रूप से परिपक्व, ईश्वरीय होना चाहिए और आपने घर, कलीसिया और समुदाय में मसीह जैसा होना चाहिए।

तीतुस 1:6-9 प्राचीन निर्दोष, एक ही पत्नी का पति, ऐसा पुरूष हो जिसके बच्चे विश्वासी हों, और जंगली और आज्ञा न मानने के दोषी ना हो।
7 क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का काम सौंपा गया है, वह निर्दोष होना चाहिए, न अभिमानी, न चिड़चिड़ा, न पियक्कड़, न हिंसक, और न कपट के धन के पीछे लगने वाला हो।
8 वरन पहुनाई करनेवाला, भलाई से प्रीति रखनेवाला, संयमी, सीधा, पवित्र और अनुशासित हो।
9 वह विश्वासयोग्य सन्देश को, जैसा कि सिखाया गया है, दृढ़ता से थामे रहे, ताकि खरी शिक्षा के द्वारा लोगों को उत्साहित कर सके, और विरोध करने वालों का खण्डन कर सके।

आप किसको जानते हैं जो ऊपर सूचीबद्ध गुणों का उदाहरण है?

क्या दूसरों को लगता है कि आप इन मानकों को पूरा करते हैं?

आप आपने सबसे कठिन समय पर किस से मेल खाते हैं? उस क्षेत्र में और अधिक मसीह के समान बनने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

<u>4. झूठे शिक्षकों का व्यवहार</u>

पढ़ें: तीतुस 1:10-14

पौलुस ने तीतुस को अंतिम निर्देश लिखता है और उसे स्थानीय गृह कलीसियाओं की अगुवाई करने के लिए आध्यात्मिक रूप से परिपक्व, ईश्वरीय पुरुषों को नियुक्त करके कलीसिया में समस्याओं को दूर करने के लिए कहता है (तीतुस 1:1-5)। फिर उसने विस्तार से बताता है कि उन्हें किस प्रकार के मनुष्य होने चाहिए (तीतुस 1:6-9)। इसके विपरीत, बेशक, वहां झूठे शिक्षक थे जो कलीसिया में समस्याएँ उत्पन्न कर रहे थे (तीतुस 1:10-16)। वे मसीही होने का दावा करते थे और कलीसिया में शामिल थे लेकिन वे जो सिखाते थे वह पौलूस की शिक्षा के अनुरूप नहीं था। यदि वे अविश्वासी होते जिन्होंने कलीसिया पर बाहर से हमला किया होता, तो उन्हें आसानी से पहचाना और अनदेखा किया जा सकता था। लेकिन जब लोकप्रिय, प्रभावशाली लोग जो अपने विश्वास में ईमानदार और अपने शिक्षण में सटीक दिखाई देतें हैं, लोगों को गुमराह करते हैं, तो यह बहुत हानिकारक हो सकता है।

पौलूस उन्हें "विद्रोही" कहता है (तीतुस 1:10 - परमेश्वर की सच्चाई के विरोधी), " एक मात्र बकवादी" (जो परमेश्वर की सच्चाई नहीं बल्कि मनुष्य विचारधारा की शिक्षा देते हैं) और "धोखेबाज" (दूसरों को विश्वास दिलाते हैं कि उनके पास सच्चाई थी जबकि उनके पास कोई सचाई होती थी नहीं)। उनमें से ज्यादातर "खतना समर्थक समूह" में के लोग थे, यहूदियों का जिक्र करते हुए जो मसीही होने का दावा करते थे, और हो भी सकते थे। यहूदी अपनी बहस और कानूनवाद के लिए जाने जाते थे। मजाक के रूप में,कहावत थी कि अगर "दो यहूदियों से पूछेंगे, तीन राय मिल जाएँगी।"

पौलुस बलपूर्वक आदेश देता है कि इन लोगों को "चुप करा देना चाहिए" ।(तीतुस 1:11) फिर वे इसका कारण बताता है ("क्योंकि")। पहला, वे अपनी झूठी शिक्षाओं से " सब कुछ बर्बाद कर देते हैं"। पूरे परिवार, यहाँ तक कि पूरे गृह कलीसियाओं को बाधित और गुमराह किया जा चूका था और वह संघर्ष में डाल दिया गया था । जैसे कि यह उतना बुरा नहीं था, उनका यह सब करने का कारण था पैसा कमाना। क्रेते के लोग अपने लालच के लिए जाने जाते थे, और कुछ लोगों ने मसीही लोगों से धन प्राप्त करने का एक तरीका खोज लिया था। वह कुछ ऐसा बताते थे जिससे उन्हें सबसे बड़ा वित्तीय इनाम मिलेगा। शायद वे परमेश्वर के बारे में अपनी 'छिपी सच्चाइयों' को बेच रहे थे, या हो सकता है कि वे उन लोगों से उम्मीद कर रहे हों जिनको उन्होंने सिखाया था कि वे उन्हें पैसा देंगे। दुर्भाग्य से आज भी ऐसे पादरी और अगुवा हैं जो सेवकाई को करियर के रूप में देखते हैं, कमाई करने का एक तरीका सोचते हैं । वे बड़े बड़े चर्च और अधिक वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए काम करते हैं।

अपनी बात को साबित करने के लिए पौलूस एपिमेनाइड्स को उद्धृत करता है जो पहले रहते थे और कहते थे की, "क्रेती हमेशा झूठे, दुष्ट जानवर, आलसी पेटू होते हैं" (तीतुस 1:12)। कैलिमैकस, जो पौलुस के लिखे जाने से 300 साल पहले रहता था, उस ने भी कहा कि वे झूठे थे। क्रेते पर झूठ बोलने की निंदा नहीं की गई थी, लेकिन वास्तव में इसे एक अच्छे तरीके के रूप में देखा जाता था अपने मन की प्राप्ति के लिए। उनकी कथायों और परंपराओं में, जिस मुख्य देवता की वे पूजा की जाती थी, वह था ज़्यूस जो

उन महिलाओं को आकर्षित करने के लिए झूठ बोलता था । उनका कहना था कि ज़्यूस को क्रेते पर दफनाया गया था, जो कि एक झूठ था।

तीतुस को पौलुस की आज्ञा थी की "उनको कड़ी ताड़ना दे" (तीतुस 1:13)। उनकी और उनकी शिक्षाओं की निंदा करने में बहुत स्पष्ट और दृढ़ रहें। पीछे न हटें बल्कि जितना हो सके झूठ (लोगों पर नहीं) पर हमला करें। क्रेती खुरदरे, कठोर और असंस्कृत थे इसलिए सरल; विनम्र फटकार का उन्हें बहुत फर्क नहीं पड़ेगा। पौलूस ने तीमुथियुस को उपजाऊ इफिसुस के लिए कहा कि वह अपनी डांट में कोमल और नम्र हो, क्योंकि वहां पर सभी लोगों को इस तरह की ताड़ना की ही जरूरत थी। यह काम करने का कोई सही या गलत तरीका नहीं होता है, यह परिस्थितियों और परमेश्वर की अगुवाई पर निर्भर करता है कि कैसे किया जाये। हालाँकि इसे किया जाता है, झूठी शिक्षा को चुनौती दी जानी चाहिए और इसे रोका जाना चाहिए। यदि नहीं, तो यह दर्शाता है कि एक पादरी या तो परमेश्वर के वचन की सच्चाई का सम्मान नहीं करता है या वह इस बात से डरता है कि दूसरे उसके बारे में क्या कह सकते हैं। उनकी त्रुटि के लिए उन्हें कड़ी फटकार लगाने का कारण यह होता है कि वे सच्चे विश्वास में लौट आएं (तीतुस 1:13)।

झूठी शिक्षा कई रूप ले सकती है लेकिन क्रेते पर यह "यहूदी मिथकों" के बारे में थी (तीतुस 1:14)। यहूदियों ने कई कहानियाँ और कथाएं विकसित की थीं जो असत्य थीं लेकिन उन्हें आगे इसलिए बढ़ायाजाता था क्योंकि लोग उन्हें सुनना चाहते थे। उनके पास कथाएं, संगीत, मौखिक इतिहास, कहावतें, चुटकुले, लोकप्रिय मान्यताएँ, परियों की कहानियाँ, लंबी कहानियाँ और रीति-रिवाज थे जो यहूदी धर्म की परंपराएँ हैं। इनमें भूतों /प्रेतों और राक्षसों की कहानियां, लोगों के नाम में छिपे गुप्त संदेश, कथित अजीब चीजें शामिल हैं जो परमेश्वर ने अतीत में कही या की थीं पर जो बाइबिल में नहीं हैं, अजीब सबक वाली कहानियां और दृष्टांत जो केवल विशेष लोगों के लिए प्रकट किए गए हैं। लोग इन पर मोहित थे, यहाँ तक कि वे भी जो अतिवादी और अक्सर अविश्वसनीय होती थी । शायद कुछ लोगों को डर था कि वे सच हैं इसलिए वह उनके बारे में और जानना चाहते थे। अन्य लोग आसान, समस्या-मुक्त जीवन के लिए शार्ट-कट की तलाश कर रहे होंगे।

पौलूस की सलाह: झूठे शिक्षकों का सामना करना चाहिए और उन्हें सुधारना चाहिए।

2 पतरस 2:1-3 परन्तु जैसे उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे वैसे ही तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे। * वे गुप्त रूप से विनाशकारी विधर्म का परिचय देंगे, यहाँ तक कि प्रभु परमेश्वर को भी नकारेंगे *जिसने उन्हें खरीदा है *—स्वयं पर तेजी से विनाश लाएंगे।
2 बहुत से लोग उनकी नीच चाल चलेंगे* और सच्चाई के मार्ग को बदनाम करेंगे।
3 ये शिक्षक अपने लालच में *अपनी गढ़ी हुई कहानियाँ* सुनाकर तुम्हारा शोषण करेंगे। उनकी निंदा लंबे समय से उनके ऊपर लटकी हुई है, और उनका विनाश सो नहीं रहा है।

आपको किन झूठी शिक्षाओं से निपटना है?

वे लोगों को इतना आकर्षित क्यों कर रही हैं?

उनके बारे में बहुत बात खतरनाक क्या है?

उनका विरोध करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

5. इन दिनों की झूठी शिक्षा -1
पढ़ें: तीतुस 1:15-16

हमने अभी देखा है कि झूठे शिक्षक बहुत खतरनाक झूठ बोलने वाले होते हैं और उनकी झूठी शिक्षाओं को दरुस्त किया जाना चाहिए। पौलूस उनके बारे में बात नहीं कर रहा था। वह फिर यह बताता था कि उन्होंने इतना परेशान क्यों किया था ।

यह बहुत खतरनाक ही हो गया था जब लोगों ने "सच्चाई से इनकार करने वालों की आज्ञा" का पालन करना शुरू कर दिया था (तीतुस 1:14)। यहूदी धर्म एक वैधानिक व्यवस्था में बदल गया जैसे इसने हजारों नियम और कानून विकसित कर लिए जिनका पालन करना नकारात्मक परिणामों से बचने के लिए जरूरी था। वैधानिकता हमेशा भय से प्रेरित होती है: इस बात का भय कि परमेश्वर हमारे साथ क्या करेगा और दूसरे क्या कहेंगे यदि हम सभ नियमों का पालन नहीं करते हैं। यहूदियों के भोजन के बारे, सब्त के दिन काम करने के बारे, दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना है इसके बारे और परमेश्वर की सेवा कैसे करनी है, इसके बारे में यहूदियों के हजारों नियम कानून बन चुके थे। जब वे यीशु में विश्वास करने लगे, तो उनमें से कुछ लोगों ने मसीही होने के साथ साथ इन कानूनों और नियमों को भी कायम रखा। उन्होंने यीशु को यहूदी धर्म से जोड़ते थे । आरम्भिक कलीसिया ने लगभग 20 वर्ष पहले प्रेरितों के काम अध्याय 15 में यरूशलेम परिषद में इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई थी। पौलुस जहाँ कहीं भी गया, वह इन झूठे शिक्षकों के साथ संघर्ष में पड़ गया था। गलातियों के नाम उसका पहला पत्र, इसी सिद्धांत के बारे में था।

कुछ जो इन झूठी बातों को आगे बढ़ा रहे थे वे सच्चे विश्वासी थे परन्तु उन्होंने अनुग्रह को कामों से बदल दिया था (लूका 8:13; 1 तीमुथियुस 4:1; इब्रानियों 3:12), दूसरे कई लोग   उद्धार के लिए यीशु के पास कभी भी नहीं आते थे लेकिन अपने झूठे विचारों को फैलाने के लिए कलीसिया में उपस्थित होते थे (लूका 8:13; 1 तीमुथियुस 4:1; इब्रानियों 3:12)। लूका 13:27; 2 थिस्सलुनीकियों 2:11)।

उनके उद्धार की जो भी स्थिति हो, उन्होंने यह कहकर झूठी शिक्षा को बढ़ावा दिया कि यीशु ही पर्याप्त नहीं हैं - काम भी आवश्यक थे। वास्तव में, पौलुस कहता है कि यह लोग और उनकी शिक्षाएँ "भ्रष्ट" हैं (तीतुस 1:15)। दूसरों पर दावा करते हुए कि वे औपचारिक रूप से अशुद्ध हैं क्योंकि वे कोषेर कानूनों को नहीं मानते हैं, वे वही हैं जो अपने विश्वासों में आध्यात्मिक रूप से अशुद्ध हैं।

पौलुस यह कहते हुए निष्कर्ष निकालता है , "वे परमेश्वर को जानने का दावा तो करते हैं, परन्तु अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं। वे घृणित और आज्ञा न माननेवाले हैं, और किसी अच्छे काम के योग्य नहीं" हैं (तीतुस 1:16)। ये बहुत कड़े शब्द हैं! "अयोग्य" का अर्थ है कि परीक्षण किए जाने पर उन्हें बेकार के रूप में खारिज कर दिया जाता है क्योंकि वे परमेश्वर की स्वीकृति को पूरा नहीं करते हैं। उनकी कथनी और करनी सचाई से परे है। जब मैं एक मसीही नौजवान था, तो मुझे ऐसे लोगों द्वारा सलाह दी जाती थी कि क्या करना है और क्या नहीं करना है और इस सूची पर ध्यान केंद्रित करते थे - ज्यादातर उस पर जो नहीं करना होता था । कुछ ऐसी चीजें थीं जो मैं नहीं कर सकता था, नहीं पहन सकता था, नहीं पढ़ सकता था या नहीं खा सकता था। मेरे लिए सब कुछ निर्धारित था। जितनी बारीकी से मैं उनके आदेशों का पालन करता था, उतना ही अधिक मुझे स्वीकार किया जाता था और मेरी प्रशंसा की जाती थी। यदि मैं असफल होता, तो मुझे कामुक या पीछे गिरते हुए के रूप में देखा जाता था। मुझे यह जानने में थोड़ा समय लगा कि मैं अनुग्रह के अधीन हूँ और परमेश्वर के पास मार्गदर्शन के लिए आ सकता हूँ कि वह मेरे लिए क्या चाहता है। ऐसा नहीं था कि उन्होंने मुझसे जो कुछ भी करवाया था वह सब गलत था, पर यह

कि मैं उन्हें गलत कारण से कर रहा था। मैं डर से प्रेरित था। अगर मैंने वह नहीं किया जो मुझे बताया गया था तो मुझे परमेश्वर का डर था और अन्य मसीही मुझे अस्वीकार कर देंगे।

पापियों को उद्धार और आशीर्वाद देने में, जैसे प्रकट हुआ है, अनुग्रह परमेश्वर का मुफ्त और अतुल्य पक्ष है। यह परमेश्वर का अतुल्य , अयोग्य और अनर्जित एहसान है। हम अनुग्रह से बचाए गए हैं (इफिसियों 2:8-9) और अनुग्रह से जीते हैं (इब्रानियों 13:9)।

कुछ झूठे शिक्षक परमेश्वर के लोगों को उसके प्रेम को अर्जित करने के तरीके के रूप में कानूनों और नियमों के अधीन रखने का प्रयास करते हैं। अन्य झूठे शिक्षकों का कहना है कि परमेश्वर हमसे बहुत प्यार करता है , इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कैसे रहते हैं या हम क्या करते हैं। हम जो चाहें कर सकते हैं और उसके सामने सब ठीक है। दोनों बातें ही गलत हैं। जब हम भय से जीते हैं तो हममें प्रेम, आनंद और शांति का अभाव होता है। हम दूसरों के आलोचक बन जाते हैं और अविश्वासियों के लिए एक बुरी गवाही बन जाते हैं। जब हमें लगता है कि सब कुछ ठीक है, हम पाप करते हैं और स्वयं को परमेश्वर से अलग कर लेते हैं। यह सब अधिक पाप करने की ओर ले जाता है और इस प्रकार हमारे पास प्रेम, आनंद या शांति भी नहीं रहती है। तब हम दूसरों के लिए भी एक बुरी गवाही बन जाते हैं। उड़ाऊ पुत्र ने महसूस किया कि वह जो चाहे कर सकता था और दुख, कंगाली और हानि में सिमिट कर रह गया । उसका बड़ा भाई कानून से जीवन जीता था और उसके पास भी कोई प्यार, खुशी या शांति नहीं थी। वह निर्णायक और आलोचनात्मक बन चूका था। दोनों ही अति खतरनाक और गलत हैं। शैतान उनका उपयोग सत्य की नकल करने के लिए करता है और ऐसा प्रतीत कराता है कि वे सही हैं जबकि वे हमें बंधन में डालने और पराजित करने के लिए मात्र जाल फेंकता हैं।

पौलूस की सलाह: झूठे शिक्षक बहुत खतरनाक होते हैं और विनाश लाते हैं।

इब्रानियों 13:9 सब प्रकार के विचित्र उपदेशों से न भरमाए जाओ। हमारे हृदयों के लिए यह अच्छा है कि वे अनुग्रह से मजबूत हों, न कि औपचारिक खाद्य पदार्थों से, जो उनके खाने वालों के लिए कोई मायने नहीं रखते।

आप किस चरम सीमा तक जाने के लिए अधिक ललचाते हैं: यह महसूस करने के लिए कि हमें परमेश्वर का प्रेम और अनुमोदन प्राप्त करने के लिए कुछ करना है या नहीं करना है या यह मानना कि कुछ भी करना ठीक है क्योंकि परमेश्वर आपको क्षमा कर देगा और यह ठीक रहेगा?

6. इन दिनों में झूठी शिक्षा - 2

पढ़ें: तीतुस 1:15-16

बेशक यह पैसा हो, पेंटिंग्स हो , या कुछ और हो, सबसे खतरनाक नकली वह होता है जो असली के जयादा से जयादा मेल खाता है। यह जितना की मेल खाता होगा, उतना ही भरमाने वाला होता है। बाइबल में परमेश्वर की शिक्षाओं का भी यही सच है। शैतान झूठा और धोखेबाज़ है (यूहन्ना 8:44)। वह परमेश्वर के सत्य को नकार कर उसका विरोध करता है, परन्तु वह अक्सर उसकी नक़ल करने में अधिक सफल हो जाता है। वह उसके झूठे सिद्धांतों में कुछ सत्य होने के कारण सही प्रतीत होने लगता है, लेकिन इसे खतरनाक बनाने के लिए पर्याप्त त्रुटियां जोड़ता है। हमने देखा कि कैसे वह इसे वैधानिकता, कानूनों और नियमों के साथ करता है जो भय पर आधारित हैं। वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता को छीन लेते हैं और व्यवहार में

हेरफेर करने के लिए अपराधबोध और अस्वीकृति का उपयोग करते हैं। परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप से कहता है कि हम व्यवस्था के नहीं, अनुग्रह के अधीन हैं (रोमियों 6:14)।

कुछ लोग ऐसे हैं जो अनुग्रह को इस तरह लेते हैं कि इसका अर्थ यह है कि पाप करना बिलकुल ठीक है या हम जो चाहें करते चलें क्योंकि परमेश्वर प्रेम का परमेश्वर है और चाहे कुछ भी हो जाये वह सभी को स्वीकार करता है। यह सच है कि ईश्वर प्रेम है, लेकिन वह किसी भी तरह से अवज्ञा की अनुमति नहीं देता है। क्योंकि हमारे पास उद्धार है इसका मतलब यह नहीं है कि हम उस पाप के परिणामों को भुगतने के बिना ही कुछ भी कर सकते हैं। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि उद्धार खो सकता है, परन्तु परमेश्वर के साथ संगति टूट जाती है और हम आनन्द, शांति और आत्मा के फलों को खो देते हैं (गलतियों 5:22-23)।

इन दिनों की एक और बहुत ही खतरनाक यह झूठी शिक्षा है कि हमारा उद्धार यीशु में सुरक्षित नहीं है, कि हम इसे खोने के लिए कुछ कर सकते हैं। इससे एक व्यक्ति के दिल में भय पैदा होता है, इसलिए वे यीशु के लिए जो कुछ भी करते हैं वह उसके प्रति प्रेम के कारण नहीं किया जाता है, बल्कि अपने लिए, अपने उद्धार को अर्जित करने या उसको कायम रखने के लिए किया जाता है। यह एक पत्नी की तरह है जो अपने पति की सेवा करती है क्योंकि वह डरती है कि यदि वह ऐसा नहीं करती है तो वह उसे अपनी पत्नी मानने से इनकार कर देगा। एक करीबी, प्यार भरा, भरोसेमंद रिश्ता इस तरह विकसित नहीं हो सकता है। उद्धार एक मुफ्त उपहार है। इसे पाने के लिए हम कुछ नहीं करते हैं और इसे खोने के लिए कुछ भी नहीं है (इफिसियों 2:8-9; यूहन्ना 3:16-18, 36; 5:24; 6:37-40; 10:27-30; 20:30- 31; रोमियों 4:6-8; 8:14-16, 28, 37-39; 14:8; 2 कुरिन्थियों 1:21-22; इफिसियों 1:13-14; 3:12)।

आज के दिनों के सबसे आम झूठों में से एक यह है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि हर कोई स्वस्थ और धनी हो, जबकि स्पष्ट रूप से बाइबल में यीशु का अनुसरण करने वालों में से बहुत कम ही थे जो इनमें से किसी एक श्रेणी के थे। यीशु हमारे पापों को दूर करने के लिए मरा था, हमे स्वास्थ्य या धनी बनाने के लिए नहीं। यह झूठ हमारे लालच और आत्मकेंद्रितता पर केंद्रित होता है। यह लोगों को दोषी महसूस कराता है और जब वे स्वास्थ्य या वित्त के साथ संघर्ष करते हैं तो वे अपने विश्वास पर संदेह करने लगते हैं।

इसी धोखे के समान एक वह है जो कहता है कि हम अपने जीवन में किसी आशीष का "दावा" कर सकते हैं या एक चमत्कार होने के लिए "बोल" सकते हैं। केवल परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है (रोमियों 4:17)। हम उसकी सेवा करते हैं, हम उसे आदेश नहीं देते। प्रभु की प्रार्थना कहती है "तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो," न कि "मेरा राज्य आए, मेरी इच्छा पूरी हो" (मत्ती 6:10)। वह माल्क है; हम नौकर हैं।

आज अन्यभाषा में बोलने का दुरुपयोग भी बहुत हानिकारक है। यह कहना कि प्रत्येक को अपना उद्धार दिखाने के लिए अन्य भाषा में बोलना चाहिए यह पवित्रशास्त्र के विरुद्ध है (1 कुरिन्थियों 12:1-11, 30; 14)। आध्यात्मिक उपहार परमेश्वर द्वारा चुने जाते और दिए जाते हैं, हमें उन्हें मांगना नहीं है। परमेश्वर प्रत्येक को भिन्न-भिन्न वरदान देता है (1 कुरिन्थियों 12) और एक वरदान को दूसरे से ऊपर रखना गलत सोच/भावना है (1 कुरिन्थियों 12; 14)। भाषाओँ में बोलने को मुक्ति या आध्यात्मिकता का प्रतीक बनाने का मतलब है शैतान के हाथों में खेलना और लोगों में भय, अपराधबोध और गर्व का कारण पैदा करना है।

और भी बहुत सी झूठी शिक्षाएं हैं जो आज प्रचलित हैं। कुछ लोग नरक या न्याय के अस्तित्व को नकारते हैं। अन्य लोग यीशु की मानवता को उसकी इश्वारता से ऊपर, या उसकी इश्वारता को उसकी मानवता से ऊपर उठाते हैं जबकि वह दोनों में 100% था। एक समूह का दावा है कि हम वह कर सकते हैं जो

यीशु ने पवित्र आत्मा के माध्यम से पृथ्वी पर किया। कुछ लोग दावा करते हैं कि आज ऐसे भविष्यद्वक्ता हैं जो लिखित पवित्रशास्त्र के समान स्तर पर बोलते हैं। अन्य लोग अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानने का दावा करते हैं और उन्हें बताते हैं कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है।

आज एक आम झूठ यह है कि कोई निरपेक्षता नहीं है। वे परमेश्वर के शाश्वत मानक के रूप में बाइबल को अस्वीकार करते हैं और इसे सही या गलत के साथ बदल देते हैं। उनके हिसाब से मनुष्य अंतिम निर्धारण कारक बन जाता है, परमेश्वर नहीं। कुछ लोग जो नबी होने का दावा करते हैं ऐसे बोलते हैं मानो वे जानते हैं कि सबके लिए क्या सही है और परमेश्वर का सत्य केवल उन्हीं के पास है।

इन त्रुटियों के कई रूप और विविधताएँ हैं। हर चीज का मूल्यांकन परमेश्वर के वचन द्वारा किया जाना चाहिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन कुछ अलग कहता है या इसका समर्थन करने के लिए वे किस तर्क का उपयोग करते हैं। जालसाजी से सावधान रहें - वे बहुत भरमाने वाले हो सकते हैं। केवल इसलिए कि कोई चीज सत्य के करीब लगती है, वह सच नहीं हो जाती है !

पौलूस की सलाह: झूठी शिक्षा कई रूप लेती है लेकिन एक बात समान है: यह परमेश्वर के वचन के पूर्ण सत्य द्वारा समर्थित नहीं होती है।

प्रकाशितवाक्य 22:18-19 मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, चेतावनी देता हूं, कि यदि कोई उन में कुछ भी जोड़े, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस पर बढ़ा देंगे। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातें हटाएगा, तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग छीन लेगा।

ऊपर बताई गई कौन-सी झूठी शिक्षाओं से आप रूबरू हुए हैं?

क्या उनमें से किसी ने आपको अतीत में धोखा दिया है? आप कैसे आजाद हुए?

आप अपनी कलीसिया के लोगों को इन त्रुटियों से गुमराह होने से बचाने के लिए क्या कर रहे हैं?

7. झूठी शिक्षाओं के परिणाम

पढ़ें: तीतुस 1:10-16

हमने आज के दिनों में मौजूद कुछ नकली शिक्षाओं के बारे में बात की है। वे सत्य के बहुत करीब लग सकती हैं लेकिन उनमें ऐसी त्रुटि है जो खतरनाक और आध्यात्मिक रूप से घातक है। इनके कई भयानक परिणाम हो सकते हैं। परमेश्वर का सत्य स्वयं परमेश्वर से आता है जैसा कि उसके वचन में प्रकट किया गया है। जो कुछ भी परमेश्वर के वचन द्वारा पूरी तरह से समर्थित नहीं है वह मनुष्य से आता है और परमेश्वर से नहीं। एक मसीही की जिम्मेदारी स्पष्ट है: हमें परमेश्वर के वचन की खोज करके परमेश्वर की सच्चाई को सीखना है। हमें परमेश्वर के अचूक स्तर के अनुसार प्रत्येक शिक्षा का सावधानी से मूल्यांकन करना चाहिए। जो परीक्षा में खरा उतरता है, वही खरा उपदेश है, और जो उस में खरा नहीं उतरता, वह झूठा उपदेश है।

झूठा सिद्धांत सत्य के साथ त्रुटि को मिलाता है लेकिन सच्चा शिक्षण सत्य से त्रुटि को जाहिर करता है। सत्य और असत्य में का अंतर देखने के लिए परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और इसे सीखने में समय लगता है (इब्रानियों 5:12-14)। हमें परमेश्वर के सत्य को जानना चाहिए और फिर उसे और केवल उसी को थामे रहना चाहिए। जब हम थोड़ी सी भी त्रुटि की अनुमति देते हैं, तो अधिक का अनुसरण करने के लिए रास्ता खुल जाता है ।

झूठा सिद्धांत हमें पवित्रता में बढ़ने से रोकता है जबकि सच्ची शिक्षा भक्ति की ओर ले जाती है। जो झूठ है वह धार्मिकता को रोकता है क्योंकि यह सत्य और परमेश्वर पर नहीं, बल्कि नई और अलग बातों पर ध्यान केंद्रित करता है (1 तीमुथियुस 1:3-6)।

झूठा सिद्धांत पाप की ओर ले जाएगा लेकिन बाइबल की सच्चाई इसकी रोकथाम करती है। झूठा सिद्धांत पाप को हमारे हृदयों और दिमागों में जड़ जमाने देता है और हमारे जीवनों में अपना मार्ग बनाता है। खरी शिक्षा हमारी पापपूर्णता का सामना करती है और हमें पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करती है (2 तीमुथियुस 3:16-17)। धर्मशास्त्र में दर्ज सिद्धांत सिखाता है और फटकार लगाता है, यह सुधारता है और प्रशिक्षित करता है, पाप को शुद्ध करता है और धार्मिकता के लिए प्रेरित करता है।

झूठा सिद्धांत उन अगुवों की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो त्रुटि सिखाते हैं, जबकि ठोस बाइबल शिक्षा दिखाती है कि परमेश्वर का सच्चा जन कौन है। कलीसिया के अगुवों को ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो झूठ का खंडन करने में सक्षम होने के साथ-साथ सत्य को जानते और सिखाते हो (तीतुस 1:9)। यदि कोई व्यक्ति संपूर्ण सत्य और केवल सत्य की शिक्षा नहीं दे रहा है, तो वह पादरी या अगुवा नहीं हो सकता।

झूठा सिद्धांत अधिक त्रुटि के द्वार खोल देता है परन्तु सच्ची शिक्षा झूठ से रक्षा करती है। जो पूरी तरह से परमेश्वर का सत्य नहीं है, वह किसी कलीसिया को कमजोर करता है, लोगों को विभाजित करता है और अधिक झूठी शिक्षाओं को फैलाने के लिए खुला मैदान हो जाता है। क्रेते की कलीसिया में ऐसा ही हुआ था (तीतुस 1:9-10, 16)।

झूठा सिद्धांत परमेश्वर की आशीष को दूर करता है परन्तु खरी शिक्षा अधिक आशीष लाती है। प्रकाशितवाक्य इसकी प्रतिज्ञा करता है (1:3; 22:7)। उन लोगों के लिए एक कड़ी चेतावनी है जो परमेश्वर के सत्य को थामे रहने में असफल रहते हैं (प्रकाशितवाक्य 2:14-16, 20-23)। परमेश्वर उन्हें आशीष देता है जो उसके वचन का सम्मान करते हैं और जो उसका दुरुपयोग करते हैं उन्हें श्राप देता है।

झूठा सिद्धांत कलीसिया को कमजोर करता है जबकि सच्ची शिक्षा कलीसिया को कठिनाई के समय के लिए तैयार करती है। परमेश्वर के वचन को सीखना आवश्यक है (2 तीमुथियुस 4:2), क्योंकि ऐसा समय आ रहा है जब कलीसियाएँ सत्य से फिर जाएँगी (2 तीमुथियुस 4:3-4)। पौलुस ने तीमुथियुस को " खजाने की रखवाली" करने के लिए कहा जो उसे सौंपा गया था (1 तीमुथियुस 6:20, 2 तीमुथियुस 1:14)। लेकिन तीमुथियुस के लिए व्यक्तिगत रूप से उसकी रखवाली करना काफी नहीं था। उसे अगली पीढ़ी के अगुओं को खड़ा करने के लिए परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था, जो इसे धारण करेंगे और बदले में इसे उनके बाद की पीढ़ी को सौंप देंगे (2 तीमुथियुस 2:2)।

संक्षेप में, झूठी शिक्षा खतरनाक है क्योंकि यह सत्य के साथ त्रुटि को मिलाती है, हमें पवित्रता में बढ़ने से रोकती है, पाप की ओर ले जाती है, झूठे शिक्षकों की ओर ध्यान अकर्षत करती है, अधिक त्रुटि के द्वार

खोलती है, परमेश्वर के आशीर्वाद को रोकती है और मसीहीयों को और कलीसिया को कमजोर करती है। दूसरी ओर, सची शिक्षा सत्य से त्रुटि दिखाती है, भक्ति की ओर ले जाती है, पाप को रोकती है, यह दिखाती है कि परमेश्वर के सच्चे पुरुष कौन हैं, झूठ से रक्षा करती है , परमेश्वर की आशीष लाती है और कलीसिया को कठिनाई के समय के लिए तयार करती है।

झूठी शिक्षा को हल्के में लेने या इसे नज़रअंदाज़ करने जैसी कोई बात नहीं है। धोखा देना और नष्ट करना शैतान की खतरनाक चाल है। इसका मुकाबला करना चाहिए और जल्द से जल्द इसे रोकना चाहिए।

पौलूस की सलाह: हर प्रकार की झूठी शिक्षा के प्रति सावधान रहें और इसे तुरंत हटा दें।

2 तीमुथियुस 4:2-4 मौसम में और मौसम के बाहर वचन का प्रचार करने तो तयार रहना; बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ उचित, डांट मरना और प्रोत्साहित करना। क्योंकि वह समय आएगा, जब मनुष्य खरा उपदेश न सह सकेंगे। इसके बजाय,
वे अपनी इच्छाओं के अनुरूप, वे अपने आस-पास बड़ी संख्या में शिक्षकों को इकट्ठा करेंगे, जो उनके खुजली वाले कानों को वो ही सुनायेंगे जो वे सुनना चाहते हैं। वे अपने कानों को सच्चाई से फेर लेंगे और मनगडत कहानियों की ओर मुड़ेंगे।

क्या तुम झूठे शिक्षण को सत्य से अलग करने में सक्षम हो? आप मदद और सलाह के लिए किसके पास जा सकते हैं?
किसी ऐसे को कुछ गलत सिखाने वाले का सामना करना आपके लिए सबसे कठिन कब होता है?

8. झूठी शिक्षा को कैसे पहचानें

पढ़ें: तीतुस 1:10-16

हम झूठे शिक्षकों और झूठी शिक्षाओं के बारे में सीखते आ रहे हैं। पौलुस, 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस में इस विषय पर वापस बात करता रहा है। यह उस वक्त भी बड़ी समस्या थी और आज भी है। टी डी जेक कहता है कि ईश्वर तीन व्यक्तियों में नहीं, बल्कि तीन रूपों में शाश्वत रूप से मौजूद है। ग्रेग बॉयड का कहना है कि परमेश्वर भविष्य के कुछ पहलुओं को जानता है, लेकिन भविष्य की अन्य घटनाएं उसके ज्ञान से बाहर हैं। क्रेफ्लो डॉलर कहता है क्योंकि हम परमेश्वर की छवि में बने हैं, हम छोटे परमेश्वर हैं। मॉरमनवाद कहता है कि परमेश्वर ने जोसफ स्मिथ को नया धर्मग्रंथ प्रकट किया जो बाइबल का स्थान लेता है। रोमन कैथोलिकवाद कहता है कि हम विश्वास के द्वारा ईश्वरीय ठहराए जाते हैं, परन्तु केवल विश्वास के द्वारा नहीं। ऐसा लगता है कि लगभग हर दिन कोई न कोई नया सामने आ ही जाता है जो सत्य के जैसा मालूम होता है। यूहन्ना हमें "आत्माओं को परख करने " के लिए कहता है (1 यूहन्ना 4:1) और पौलुस "सब बातों को परख करने" के लिए कहता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)। परमेश्वर हमें पादरियों और अगुआओं के रूप में रखता है, जो हमारे लोगों को सिखाई गई हर चीज़ की जाँच करने के लिए ज़िम्मेदार है और यह सुनिश्चित करने के लिए जिमेदार हैं कि यह सच है। लेकिन हम खरी शिक्षा को असत्य से कैसे अलग कर सकते हैं? हम सत्य के शिक्षकों को त्रुटि के शिक्षकों से कैसे अलग कर सकते हैं?

1.शुरुआत की परख। खरी सच्चाई केवल परमेश्वर के वचन से आती है, झूठी शिक्षा कुछ ऐसी है जो मनुष्य परमेश्वर के सत्य के साथ जोड़ देता है। यह बहुत भ्रामक हो सकता है, यह समझ में आ सकता है

और इसे सिखाने वाले लोग बहुत ईमानदार और ईश्वरीय लग सकते हैं, लेकिन जब तक यह पवित्रशास्त्र में स्पष्ट और पूरी तरह से सिखाया जाता दिखाई नहीं देता है, तब तक यह झूठ है। सत्य केवल परमेश्वर से आता है (यूहन्ना 7:16; गलातियों 1:11-12)। सच्चा सिद्धांत परमेश्वर से उत्पन्न होता है जो सत्य है (तीतुस 1:2)।

पौलुस कुलुस्सियों की कलीसिया को उस सिद्धांत से दूर रहने की चेतावनी देता था जो मनुष्य से उत्पन्न होता है (कुलुस्सियों 2:22) क्योंकि इसके पीछे वास्तव में दुष्टात्माएँ होती हैं (1 तीमुथियुस 4:1)। परमेश्वर सत्य का पिता है, और शैतान झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)। परख यह करनी है : "क्या यह शिक्षा परमेश्वर और उसके वचन से उत्पन्न हुई है या इसे किसी के द्वारा जोड़ा गया है? कभी-कभी यह बताना आसान होता है, लेकिन दूसरी बार यह मुश्किल हो सकता है। जब ऐसा होता है, तो दूसरे परीक्षण का उपयोग करें।

2. प्राधिकरण की परख। सत्य स्पष्ट रूप से परमेश्वर के वचन पर स्थापित होता है और पूरी तरह से समर्थित होता है, लेकिन गलत सिद्धांत बाइबल के अलावा अन्य स्रोतों पर आधारित होते है। यह किसी एक मजबूत अगुआ या लोकप्रिय बाइबिल शिक्षक का अधिकार हो सकता है। यह मानवीय तर्क हो सकता है और इसका समर्थन करने के लिए तर्कसंगत व्याख्याओं का उपयोग किया जाता है। शायद यह किसी व्यक्ति के अनुभव पर आधारित हो। या यह किसी प्रबल भावना से उत्पन हुआ हो सकता है: यह इतना सही लगता है कि मानो यह सच ही होना चाहिए। हमें बिरीया के लोगों की तरह होना चाहिए जिन्होंने "संदेश को बड़ी उत्सुकता से ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें वैसे है भी कि नहीं" (प्रेरितों के काम 17:11)। वे जानते थे कि सभी सिद्धांतों की तुलना परमेश्वर के वचन, उनके सत्य के स्रोत से की जानी चाहिए। इसी तरह, पौलुस थिस्सलुनीकियों की उनकी शिक्षा का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन और स्वीकृति के लिए प्रशंसा करता है क्योंकि वे इसके ईश्वरीय अधिकार को समझते थे (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)। खरे सिद्धांत की उत्पत्ति परमेश्वर के मन में होती है और यह उसके आधिकारिक आत्म-प्रकाशन, बाइबल में दर्ज है।

लेकिन क्या होता है जब दो विपरीत शिक्षाएं यह दावा करती हैं कि जो वे मानते हैं व्ही बाइबिल सिखाती है ? हम कैसे जान सकते हैं कि कौन सचा है? परीक्षण 3 का प्रयोग करें।

3. मिलावट की परख। परमेश्वर के सत्य का समर्थन पूरा पवित्रशास्त्र करता है, न कि केवल कुछ सवालिया आयतें। पवित्रशाशत्र एक मेल है और खुद का खंडन नहीं करता है। सच्चे सिद्धांत के लिए एक समानता या मशहूरी होती है और झूठे सिद्धांत के लिए एक विचित्रता या बदनामी होती है। इब्रानियों को पत्र लिखने वाले लेखक ने अपनी मण्डली के लोगों को "विभिन्न और विचित्र शिक्षाओं" के बारे में चेतावनी दी थी, जबकि पौलूस तीमुथियुस को "अलग सिद्धांत" स्वीकार करने के बारे में चेतावनी देता था (इब्रानियों 13:9; 1 तीमुथियुस 1:3, 6:3)। दोनों इस बात पर जोर देते हैं कि सिद्धांत की हमेशा स्थापित और इसके सत्य होने की स्वीकृत ढांचे से तुलना की जानी चाहिए। जो सत्य के उस ढांचे के बारे में जानकार हैं, वे झूठ को तुरंत पहचानने और उसका खंडन करने की सर्वोत्तम स्थिति में होंगे। परमेश्वर के मन में कोई विरोधाभास या भ्रम नहीं है, इसलिए बाइबिल में भी ऐसा कोई नहीं हो सकता है।

बाइबल एक स्थान पर जो शिक्षा देती है, उसे दूसरे स्थान पर खण्डन नहीं किया जा सकता है। इसलिए, हर सच्चे सिद्धांत को संपूर्ण पवित्रशास्त्र के अनुरूप होना चाहिए। सिद्धांत को कभी भी अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे हमेशा पूरी बाइबल की सही समझ की रौशनी में देखा जाना चाहिए। हमें हमेशा पवित्रशास्त्र को खुद ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने देना चाहिए। बहुत से झूठे शिक्षक उन आयतों या विचारों को अलग कर देते हैं जो पूरी किताब की जाँच का सामना नहीं कर सकते।

एक बार जब हम सिद्धांत का परीक्षण कर लेते हैं और इसे सत्य पा लेते हैं, तो इन तीन मानदंडों के अनुसार, हम अपने और अपने आस-पास के लोगों पर इसके प्रभाव से इसकी मजबूती को भी देख सकते हैं। यह परीक्षण संख्या 4 है।

4. आध्यात्मिक विकास और ईश्वरीय जीवन की परख। खरा उपदेश आत्मिक विकास लाता है (1 तीमुथियुस 4:6)। तीमुथियुस इसका एक उदाहरण है (1 तीमुथियुस 6:11, 2 तीमुथियुस 1:5)। खरे सिद्धांत आत्मिक रूप से स्वस्थ, परिपक्व, जानकार मसीही लोग पैदा करते हैं। झूठा सिद्धांत आध्यात्मिक रूप से अस्वस्थ, अपरिपक्व, अज्ञानी मसीही बनने की ओर ले जाता है जो कभी भी सच्चे मसीही नहीं हो सकते हैं। हम जो विश्वास करते हैं वह हमारे कार्य करने के तरीके में प्रकट होता है। सत्य को पवित्र जीवन में देखा जाता है, झूठ और त्रुटि को गर्व, विभाजन, विशिष्टता, आत्म-धार्मिकता और परमेश्वर के संपूर्ण वचन की अवज्ञा में देखा जाता है। केंद्रिता झूठी शिक्षाओं और झूठे शिक्षकों पर है, यीशु पर नहीं।

एक शिक्षा तब सत्य होती है जब वह परमेश्वर के वचन पर आधारित होती है, और स्वयं परमेश्वर की ओर से आती है, सब पवित्र शास्त्र के अनुरूप होती है और पवित्र, ईश्वरीय जीवन और आध्यात्मिक विकास में दृढ होती है। दूसरी किसी भी चीज से ऐसे बचना चाहिए जैसे जहर से बचना जरूरीहै - क्योंकि वह ऐसा ही है।

यीशु ने थुआतीरा के मसीहियों से कहा कि "जो कुछ तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक थामे रहो" (प्रकाशितवाक्य 2:25)। पौलुस ने कहा कि एक कलीसिया के अगुवे को सत्य के प्रति विश्वासयोग्य रहना चाहिए ताकि वह उसे सिखा सके और जो गलत हैं उन्हें डांट सके (तीतुस 1:9)। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:9)।

पौलूस की सलाह: सच्चे सिद्धांत को झूठे से अलग करना सीखें, और हर चीज़ को झूठ से दूर करें।

तीतुस 2:1 तुम्हें खरी शिक्षा के अनुसार शिक्षा देनी चाहिए।

क्या आप उपरोक्त चार परीक्षणों को समझते हैं? उनसे अच्छी तरह परिचित हो जाएं ताकि जरूरत पड़ने पर आप उनका इस्तेमाल कर सकें।

यदि कोई शिक्षण चल रहा है जिसके बारे में आप सुनिश्चित नहीं हैं, तो इन परीक्षणों का अभी उपयोग करें।

9. मसीही पुरुषों का व्यवहार
पढ़ें: तीतुस 2:1-2

यह दिलचस्प बात है कि जब पौलुस ने तीतुस को अपना अंतिम पत्र लिखा तो उसने सिद्धांतों या विश्वासों के बारे में नहीं लिखा। उसने धर्मशास्त्र या यहाँ तक कि कलीसियाई व्यवस्था की शिक्षा नहीं दी, जैसा उसने तीमुथियुस को शिक्षा दी थी। उसने जिस पर ध्यान केंद्रित किया वह व्यवहार था: दैनिक जीवन के काम। हम बाइबल की सच्चाई के बारे में जो चाहें बात कर सकते हैं, लेकिन अगर यह हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए हमे प्रभावित नहीं करती है तो यह बस एक बात ही है - मतलब बात करते रहना। पौलुस इसके बारे में बात करते हुए शुरू करता है कि ईश्वरीय अगुवों को कैसे जीना चाहिए (तीतुस 1-9), और उसके बाद कि झूठे शिक्षक कैसे जी रहे हैं (तीतुस 1:10-16)। प्रमाण स्पष्ट है: यीशु की सच्चाई जीवन को बेहतर होने के लिए बदल देती है; झूठे सच वाले झूठ भीतर के भ्रष्टाचार और लालच को दिखा देते हैं। हम जो मानते हैं वह महत्वपूर्ण है, लेकिन हम इसे अपने जीवन में अमल में कैसे लाते हैं यह और भी महत्वपूर्ण है।

आगे पौलुस ने लिखा कि जो अगुवे नहीं थे उन्हें कैसे जीना चाहिए था। वह उन मसीही लोगों के बारे में बात कर रहा था जिन्होंने क्रेते पर गृह कलीसियाओं का निर्माण किया था (तीतुस 2:1-10)। तीतुस लोगों को सिखाने के लिए जिम्मेदार था ताकि वे जान सकें कि ईश्वरीय जीवन कैसे जीना होता है। उसने इसे विभिन्न समूहों में विभाजित किया: पुरुष, महिला, वृद्ध और युवा। उनके जीवन और कलीसिया में प्रत्येक की अलग-अलग भूमिकाएँ और कार्य हैं लेकिन उन्हें मसीह में एक साथ मिलकर काम करना चाहिए।

पौलूस इस भाग को एक सामान्य आदेश के साथ शुरू करता है: **"तू खरे उपदेश के अनुसार शिक्षा देना" (तीतुस 2:1)।** झूठ के विरुद्ध सच ही सर्वोत्तम बचाव होता है। पौलुस ने अभी अभी उन लोगों के बारे में चेतावनी दी है जो यहूदी विधिवाद की शिक्षा देते हैं और कलीसिया में भ्रम और अव्यवस्था लाते हैं। गलती को हावी होने से रोकने का तरीका है सच्चाई की शिक्षा देना। जब लोग परमेश्वर के वचन को जानेंगे तो झूठ को जड़ पकड़ने के लिए कोई उपजाऊ भूमि नहीं होगी। जब लोग सत्य को जानेंगे और उसका पालन करेंगे, तो उनका व्यवहार प्रभावित होगा। तीतुस 2:1-10 समझाता है कि यह कैसे होगा।

पुरुष जो अधिक परिपक्व हैं ("बूढ़े") आध्यात्मिक विकास के छह लक्षणों का प्रदर्शण करेंगे। **वे संयमी होंगे।** वे सभी चीजों में संतुलित, स्पष्टवादी, सतर्क और संयमित होंगे। इसके बाद, **वे सम्मान के योग्य होंगे।** ये लोग गम्भीर विचार वाले होंगे, मूर्ख विदूषक नहीं जिनसे दूसरे लोग दूर रहना चाहते हैं। तीसरा, **वे आत्म-नियंत्रित होंगे**, भावनाओ से चालित या नियंत्रण से बाहर नहीं होंगे। उनके पास विवेक और अच्छा निर्णय होगा। इसके अतिरिक्त, **वे विश्वास में दृढ़ होंगे** (वे परमेश्वर और उसके वचन पर भरोसा करेंगे), **प्रेम में सथिर होंगे** (दूसरों के साथ प्रेमपूर्ण तरीके से व्यवहार करेंगे) और **धीरज में दृढ़ होंगे** (धीरज, धैर्य और विश्वासयोग्यता)।

यह मनुष्यों को बदलने के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य को अपने अंदर प्राप्त करता है। केवल परमेश्वर का आत्मा ही इसे दूसरों में उत्पन्न कर सकता है। जो यीशु के बिना हैं, वे मनुष्य नियंत्रक और जोड़तोड़ करने वाले होंगे, हर किसी और हर चीज का प्रभारी बनना चाहते हैं। ईज़ेबेल इस प्रकार के व्यक्ति का एक उदाहरण थी। दूसरे लोग क्रोध से नियंत्रित हो जाएंगे और इस लिए लोगों को नियंत्रित करने के लिए गुस्से का इस्तेमाल करेंगे। वे बहुत आलोचनात्मक और बेरुखे हो जाएंगे। कैन इनमें से एक था। जो लोग यीशु के बिना हैं उनका एक और चिन्ह है -अहंकार। ये लोग गर्व करते हैं, अपने बारे में सोचते हैं, हमेशा मानते हैं कि वे सही हैं और दूसरे गलत हैं। वे दूसरों को नीचा दिखाते हैं, विशेषकर उन्हें जो कमजोर और मजलूम हैं। हेरोदेस इस प्रकार के व्यक्ति का एक उदाहरण है। कुछ अन्य हर चीज के प्रति नकारात्मक

और आलोचनात्मक हो जाते हैं। उनके पास कहने के लिए कुछ भी सकारात्मक नहीं होता है लेकिन चाहे कुछ भी हो वे शिकायत करते ही हैं। वे चिंता करते हैं और हर चीज के बारे में शिकायत करते हैं। अय्यूब के तीन दोस्तों ने भी इनमें से कुछ लक्षण दिखाए।

हम केवल मसीह में रह कर ही मसीह के समान बन सकते हैं। हमारे जीवन में और हमारे लोगों के जीवन में परमेश्वर का यही लक्ष्य है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने लोगों को इस तरह जीने के लिए सिखाएं और उन्हें प्रशिक्षित करें।

पौलूस की सलाह: मसीहीयों को संयमी, सम्मान के योग्य, आत्म-संयमी और विश्वास में, प्रेम और धीरज में दृढ़ होना सिखाएं।

इफिसियों 4:31-32 सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप, और क्रोध , और कलह, और निन्दा, और सब प्रकार का बैरभाव तुम यह सब को दूर कर दो। एक दूसरे पर कृपालू और करुणामय बनो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।

आप व्यक्तिगत रूप से उन क्षेत्रों में कैसे काम करते हैं जिनके बारे में पौलूस बात करता है?

क्या आपके लोगों के जीवन में ये लक्षण हैं? आप उन्हें इन चीजों में बढ़ने में मदद करने के लिए क्या कर सकते हैं?

10. स्त्रियों और युवकों का व्यवहार

पढ़ें: तीतुस 2:3-8

पवित्रशास्त्र की सच्चाई का सिखाया जाना जरूरी है ताकि लोग इसे अपने जीवन में लागू कर सकें और मसीह के समान बन सकें। यह दूसरों को उनकी भलाई और परमेश्वर की महिमा के लिए उसकी ओर आकर्षित करेगा। पौलुस तीतुस से कहता है कि वह पुरनियों को संयमी, आदर के योग्य, आत्म-संयमी और विश्वास में, प्रेम और धीरज में सथिर होना सिखाए (तीतुस 2:1-2)। पौलूस इसे महिलाओं पर भी लागू करता है।

वृद्ध, और अधिक आत्मिक रूप से परिपक्व महिलाओं को भी सिखाया जाना चाहिए कि उन्हें कैसे अपने जीवन में परमेश्वर की सच्चाई को लागू करना है (तीतुस 2:3-5)। उन्हें भी, अपने चरित्र और कार्यों के द्वारा यीशु को आपने जीवन में दिखाना है (तीतुस 2:3 "इसी प्रकार")। उदाहरण के तौर पर, पौलूस कहता है कि उन्हें **"अपने जीवन जीने के तरीके में "उचित" होना चाहिए**, जिसका अर्थ है कि उन्हें पवित्र, ईश्वरीय जीवन जीना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि दूसरों के बारे में गपशप करने, उनकी आलोचना करने और बात करने से उन्हें **"बदनाम करनेवाली नहीं"** होना चाहिए। कुछ लोग दूसरों के जीवन में व्यस्त हो जाते हैं और दूसरों की हर बात का न्याय करते हैं। दुर्भाग्य से दूसरों पर कोई अनुग्रह नहीं दिखाया जाता है। यह नकारात्मक रवैया उनके दिलों की कड़वाहट से आता है। इस तरह से फरीसियों ने भी यीशु के साथ व्यवहार किया था ।

इसके अतिरिक्त, परिपक्व महिलाओं का एक ईश्वरीय गुण यह है कि वे **"अधिक शराब के आदी नहीं हैं**" क्योंकि यह एक बुरी गवाही है और उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। नीतिवचन में नशे के विरुद्ध

बहुत कुछ कहा गया है (नीतिवचन 21:17; 23:20-21,31; 31:4,6)। आज ऐसे और भी कई पदार्थ हैं जिनका एक व्यक्ति आदी हो सकता है जैसे कि ड्रग्स और यहां तक कि कॉफी, सोडा और चॉकलेट में कैफीन भी। लूत नशे में मतवाले होने के खतरों का एक स्पष्ट उदाहरण है (उत्पत्ति 19:30-38)।

गपशप या शराब की ओर मुड़ने के बजाय, ईश्वरीय महिलाओं को **"अच्छी बातें सिखानी चाहिए"** (तीतुस 2:3)। इसका मतलब है कि अन्य महिलाओं को ऐसे निर्देश देना जो उनके लिए क्या मददगार है। परिपक्व महिलाएं, जब उनके बच्चे बड़े हो जाते हैं और चले जाते हैं, तो उन्हें युवा महिलाओं को सलाह देने में व्यस्त रहना चाहिए, विशेष रूप से उन्हें पत्नियों और माताओं के रूप में बढ़ने में मदद करना **("पति और बच्चे"** तीतुस 2:4)। साथ ही उन्हें युवा महिलाओं को "**संयम"** में बढ़ने में मदद करनी चाहिए (तीतुस 2:5) ताकि उनके पास समझदारी वाला , अच्छा निर्णय हो सके। महिलाओं द्वारा दूसरों को दिए जाने वाले अन्य महत्वपूर्ण लक्षणों में शामिल हैं **"शुद्ध"** (क्रेते की संस्कृति में विचारों और कार्यों में पवित्र जहां अनैतिकता आम थी), **"घर पर व्यस्त"** (घर और परिवार उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता, अब उस जगह से जा रही है- जगह-जगह गपशप करना और शराब पीना), "दयालु" (कठोर या कठिन नहीं) और **"अपने पतियों के अधीन"** (जंगली जैसी या दूसरों के लिए बुरी गवाही छोड़ने वाली नहीं)।

पौलूस ने कहा कि यह सब न केवल महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि दूसरों के लिए उनकी मसीही गवाही के लिए भी महत्वपूर्ण है: **"ताकि कोई भी परमेश्वर के वचन की निन्दा न करे।"** यदि क्रेते की कलीसिया दूसरों को शांति और आनंद पाने में मदद करना चाहती है जो केवल यीशु ही दे सकता है, तो उन्हें दूसरों को यीशु की ओर आकर्षित करने के लिए अपने दैनिक जीवन में उन गुणों को दिखाने की आवश्यकता है।

युवतियों को ऊपर सूचीबद्ध कार्यों को करना है जैसा कि पौलुस ने बताया है, और युवकों को भी अपने जीवन में यीशु के लिए एक अच्छी गवाही देनी है (तीतुस 2:6)। युवा पुरुषों के लिए पौलूस जिस विशेषता पर जोर देता है वह है **"संयम"**। इस हिस्से में इस ग्रीक शब्द का 4 बार प्रयोग किया गया है (आयत 2,4,5,6) यह सभी मसीहीयों में आत्म-संयम के महत्व को दर्शाता है, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो। कई युवा पुरुष समय समय पर जो कुछ भी सुखद लगता है, उसे आवेगपूर्वक करते हैं और इसके द्वारा दूसरों को चोट पहुँचाते हैं और अपनी खुद की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाते हैं। तीतुस को आत्म-संयम का एक उदाहरण प्रस्तुत करके अपने लोगों को इस बारे में चेतावनी देते रहना था (तीतुस 1:7)। अगुओं के रूप में, लोग हमें करीब से देखते हैं और हम जो कहते हैं उससे ज्यादा जो हम करते हैं उस से सीखते हैं। जब हमारे कार्य हम जो कहते हैं उसके अनुरूप नहीं होते हैं, तो दूसरे लोग हमें पाखंडी के रूप में देखेंगे और जो हम सिखाते या प्रचार करते हैं उस पर ध्यान नहीं देंगे।

हमें, तीतुस की तरह, एक उदाहरण स्थापित करना है जो हमारे शिक्षण का समर्थन करता है ताकि लोग **"ईमानदारी", "गंभीरता" और "सच्चाई"** सीखें ताकि मसीहीयों के पास एक अच्छी गवाही हो और अविश्वासी यीशु का ठठा न कर सकें (तीतुस 2:7) -8)।

पौलूस की सलाह: मसीही पुरुषों और महिलाओं को ईश्वरीय तरीके से जीना चाहिए जिस से यीशु को महिमा मिलती है।

व्यवस्थाविवरण 12:32 जो जो आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूं उन सभों के करने में चौकसी करना। तुम उस में कुछ न बढ़ाना, और न उस में से कुछ घटाना।

यदि आप किसी नए मसीही को सिखा रहे हैं कि कैसे यीशु के लिए जीना है, तो आप क्या सलाह देंगे?

तीन विशिष्ट विशेषताओं की सूची बनाएं जो सबसे महत्वपूर्ण हैं।

आप इन तीनों पर अपना मूल्यांकन कैसे करेंगे?

11. दासों का व्यवहार
पढ़ें: तीतुस 2:9-10

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पौलूस विभिन्न उम्र के मसीही पुरुषों और महिलाओं को इसके बारे में निर्देश देना चाहता है कि उन्हें आपने दैनिक जीवन में अपने विश्वास के अनुसार कैसे जीना चाहिए। परन्तु उसका अगला विषय हमें चकित कर सकता है, क्योंकि वह मसीही दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा मानने के लिए कहता है (तीतुस 2:9-10)। पहली शताब्दी में, गुलामी की प्रथा अभी भी काफी सामान्य थी, और अक्सर एक दास , या गुलाम, को एक इंसान के रूप में कम आँका जाता था। परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को जो एक दास है उसके समान ही देखता है जो दस नहीं नहीं है। उसका वचन अक्सर उनकी स्थिति को सीधे संबोधित करता है। इफिसियों 6 में दासों से बात करती हुई कई आयतें हैं, फिलेमोन की पूरी पुस्तक ही एक दास, उनेसिमुस के बारे में है। इसलिए हमें दासों के कर्तव्यों पर चर्चा करने के लिए अगुओं के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों पर इस खंड को समाप्त करने वाली कुछ आयातों को देखने में कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिए। क्यों? क्योंकि वृद्ध, परिपक्क विश्वासी और साथ ही साथ युवा, परिपक्क विश्वासियों को निश्चित रूप से इस श्रेणी में शामिल किया जाएगा।

पौलुस दासों को स्मरण दिलाता है कि वे अपने स्वामीयों की आज्ञा का पालन करें और उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करें, बदले में बात न करें और ना ही चोरी करें परन्तु विश्वासयोग्य बनें ताकि वे यीशु का एक अच्छा उदाहरण बन सकें (तीतुस 2:9-10)। प्रारंभिक कलीसिया में, मसीहीयों का एक बहुत बड़ा प्रतिशत गुलाम था। दुनिया भर में आज भी यह सच है: जो सबसे गरीब हैं वह ही अक्सर सुसमाचार की खुशखबरी का जवाब देने वाले पहले व्यक्ति होते हैं। उद्धार उन्हें पाप से मुक्त करता है, परन्तु उनके स्वामियों के प्रति उनकी जिमेदारी से नहीं। शायद कुछ झूठे शिक्षक यह कह रहे थे कि यदि वे मसीही हैं तो उन्हें अपने स्वामीयों की आज्ञा का पालन करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह में वे अब समान हैं। क्या आप समाज के हालातों की कल्पना कर सकते हैं कि यदि मसीही बनने वाले प्रत्येक दास को अपने स्वामी की आज्ञा का पालन न करना पड़े तो हालात क्या होंगे ? प्रत्येक दास एक मसीही होने का दावा करने लगेगा, ताकि उन्हें किसी स्वामी के अधीन न रहना पड़े। निश्चित रूप से गुलामी गलत है और इसे समाप्त किया जाना चाहिए, लेकिन ऐसा करने का यह तरीका नहीं था। यह तो मसीहीयों के खिलाफ अराजकता और हंगामा खड़ा कर देगा ।

पुराने नियम में मूसा की व्यवस्था ने गुलामी को सीमित और विनियमित किया और इसके अमानवीय दुर्व्यवहारों को ठीक करने की कोशिश की थी (निर्गमन 20:10; 21:20-27)। इस्राएल में दासों को पूर्ण व्यक्तियों के रूप में मान्यता दी गई थी जिनके पास मानवीय गरिमा और बुनियादी अधिकार कायम थे (व्यवस्थाविवरण 5:14; अय्यूब 31:13-15)। अपने दासों और नौकरों को गाली देना अविवेक पूर्ण और अनैतिक दोनों के रूप में देखा जाता था (व्यवस्थाविवरण 23:15-16)।

फिर भी, हम अक्सर आश्चर्य करते हैं कि पौलुस ने गुलामी की स्पष्ट रूप से निंदा क्यों नहीं की (इफिसियों 6:5)। उसने किया, लेकिन उतना सीधे रूप में नहीं जितना हम चाहते हैं। पौलुस के दिनों में क्या हो रहा

था इसे समझने से हमें हालातों को बेहतर समझने में मदद मिलती है। प्राचीन समय के प्रत्येक लोगों द्वारा गुलामी का अभ्यास किया जाता था, जिसका ऐतिहासिक रिकॉर्ड आज भी हमारे पास है, जीसे कि मिस्र, सुमेरी, बाबेल, अशुर, फोनीशि, सीरियाई, मोआबी, अम्मोनी, अदोमी, यूनानी, रोमी और बाकी सभी। इसके अलावा, पहली शताब्दी के दौरान, रोम की लगभग 85 से 90 प्रतिशत आबादी गुलामों की थी।

जब हम अमेरिका में गुलामी के बारे में सोचते हैं, तो हम तीस लाख काले अफ्रीकियों के बारे में सोचते हैं जो जंजीरों और अत्यधिक क्रूरता में अटलांटिक के पार लाए गए थे। रोमी गुलामी बहुत अलग थी। अधिकांश गुलाम युद्ध के कैदी होते थे और अगर उन्हें युद्ध के मैदान में गुलाम नहीं बनाया गया होता तो निश्चित रूप से उनकी हत्या कर दी गयी होती। संयुक्त राज्य अमेरिका में काले गुलाम जीवन भर के लिए गुलाम हो जाते थे, लेकिन अधिकांश रोमी गुलाम एक दशक के भीतर ही अपनी आजादी हासिल कर सकते थे। इसका मतलब यह नहीं है कि यह सही था, लेकिन इसका मतलब यह है कि हमारे अपने सांस्कृतिक प्रभाव के अज्ञानी हुए बिना इन आयतों को पढ़ना गलत है।

पौलुस का उद्देश्य था पाप से आत्मिक स्वतंत्रता लाना। यह गुलामी से शारीरक स्वतंत्रता जितना ही महत्वपूर्ण था, पर यह उतनी महत्वपूर्ण नहीं थी जितना कि सुसमाचार का प्रसार महत्त्वपूर्ण था। वह दोनों तो अच्छी तरह से नहीं कर सका, इसलिए उसने उद्धार पर ध्यान केंद्रित किया। जब उसने इफिसियों 6:5 में दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा मानने के लिए कहा तो इफिसुस में लगभग 250,000 स्वतंत्र नागरिक और 400,000 दास थे। इनमें से अधिकांश गुलाम बहुत गरीब थे और अगर उनके स्वामी उन्हें नहीं खिलाते तो वे भूखे मर जाते।शारीरक स्वतंत्रता उनके लिए पहले से कहीं अधिक समस्याएँ और कष्ट ला सकती है।

गुलामी को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका अंदरूनी चीज को बाहर निकलना है, न कि केवल नए कानूनों को दरकिनार करना। स्वामी जो मसीही बन जाते हैं उन्हें अपने दासों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, और मसीही दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा मानने में एक अच्छी मिसाल कायम करनी चाहिए। जब लोगों ने मसीही दासों के ईश्वरीय चरित्र को देखा, तो उन्होंने पौलूस को गंभीरता से सवीकार करना शुरू कर दिया जब उन्होंने तर्क दिया कि दास -व्यापार एक बुरा काम था (1 तीमुथियुस 1:10), पर यह कि दासों को अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करनी चाहिए यदि वे कर सकते हैं तो (1 कुरिन्थियों 7:21), यह कि स्वामियों को अपने दासों को समान समझना चाहिए (इफिसियों 6:9; गलातियों 3:28), और यह कि उन्हें उचित समय पर उन्हें स्वतंत्र कर देना चाहिए (फिलेमोन 16)। हालाँकि सरकारों ने कई वर्षों तक उसकी शिक्षा का विरोध किया, अंततः पौलुस की शिक्षा प्रबल हुई।

दुनिया के सभी धर्मों में, तीन महान एकश्वरवादी (मसीही धर्म, यहूदी धर्म और इस्लाम) सहित, केवल मसीही धर्म में ही यह विचार विकसित हुआ कि गुलामी पापपूर्ण थी और इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए। रोम के पतन के तुरंत बाद मसीही धर्मशास्त्र में गुलामी-विरोधी शिक्षाएं दिखाई देने लगीं और इसके साथ-साथ मसीही यूरोप के सभी हिस्सों में गुलामी का अंत हो गया। जब यूरोपीय लोगों ने इसके बाद नई दुनिया में गुलामी की स्थापना की, तो उन्होंने ऐसा मसीहीयों और चर्च द्वारा आपत्ति करने पर ही किया। नई दुनिया की गुलामी का खात्मा मसीही कार्यकर्ताओं द्वारा शुरू और पूरा किया गया था।

आज के दिनों में हमारे लिए, हम कर्मचारी और नियोक्ता (या बॉस) के लिए दास और स्वामी की भूमिका और जिम्मेदारियों का एक अनुप्रयोग बना सकते हैं। और अब ध्यान दें कि कैसे, पहली शताब्दी के बंधुआ सेवक के साथ, ये अंतिम दो आयतें पुराने, परिपक्व विश्वासी को जो एक कर्मचारी है और साथ ही एक युवा, परिपक्व विश्वासी जो एक कर्मचारी है दोनों को, संबोधित करती हैं। हम, परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में, कार्य दिवस, कार्य सप्ताह के दौरान कैसे कार्य करें? हम कैसे सुनिश्चित करें कि सप्ताह के

दौरान हम वही लोग हैं जो हम रविवार को हैं? अपने स्वामी (अपने नियोक्ता, अपने बॉस) के प्रति विनम्र रहें।

पौलूस की सलाह: आप जिनकी सेवा करते हैं उनके प्रति आज्ञाकारी रहें ताकि आप यीशु के लिए एक अच्छी गवाही दे सकें।

यूहन्ना 15:12-13 "मेरी आज्ञा यह है: एक दूसरे से वैसा ही प्रेम रखो जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं है, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।

यदि यीशु आप का नियोक्ता के रूप में काम कर रहा होता तो वह कैसे कार्य करता? क्या आप ऐसा करते हैं?

यीशु आपके कर्मचारियों के साथ कैसा व्यवहार करता यदि वे उसके लिए काम कर रहे हों ते ? क्या आप उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं?

12. ईश्वरीय चुनाव करना

पढ़ें: तीतुस 2:11-15

जीवन विकल्पों की एक श्रृंखला है। हम हर दिन बड़ी या छोटी चीजों के बारे में निर्णय ले रहे हैं: क्या पहनना है, पहले क्या करना है, कितना खाना है, किसी सवाल का जवाब कैसे देना है, क्या सलाह देनी है, किसी कठिनाई या निराशा का जवाब कैसे देना है, आदि, वगैरह वगैरह। बिना कुछ जाने ही हम पूरे दिन विकल्पों के लिए "हां" या "ना " कहते रहते हैं। जीवन इन चुनाओं से ही बना है। कई चुनाव छोटे लग सकते हैं, लेकिन वे बड़े परिणामों को बना देते हैं। यीशु के लिए या स्वयं के लिए जीना, हमारे जीवन में मुख्य विकल्पों में से एक है, लेकिन विकल्प छोटे निर्णयों के साथ आते हैं, बड़े निर्णयों के साथ नहीं। जब कोई पापी या अईश्वरीय बात सोचने का प्रलोभन उत्पन्न होता है तो हम कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? जब हमारे पास एक वासना को खिलाने का अवसर होता है, तो क्या हम उसके सामने हार मान लेते हैं? क्या हमें ऐसा कुछ कहना या करना चाहिए जो सही लगता है, लेकिन है वो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध? थोड़ी सी गपशप, या शिकायत करने या कुछ ऐसा करने के बारे में क्या जो हमें करना चाहिए? उद्धार से पहले हम केवल वही करते हैं जो हम चाहते हैं, लेकिन जब यीशु हमारे जीवन में रहता है तो चीजें बदल जाती हैं। अब हम कर सकते हैं, और हमें करना चाहिए, "इस युग में अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं को अस्वीकार करो, और संयमी, सीधे और भक्ति का जीवन व्यतीत करो" (तीतुस 2:12)। उद्धार से पहले हम पाप का विरोध नहीं कर सकते थे, परन्तु अब जबकि हम पर परमेश्वर का अनुग्रह कार्य कर रहा है, हम कर सकते हैं (तीतुस 2:11)।

हमें याद रखना चाहिए कि यह दुनिया अस्थायी है और एक दिन, शायद बहुत जल्द, हम यीशु के साथ होंगे (तीतुस 2:13)। किसी भी समय उसकी उपस्थिति में हो जाने का विचार हमें आज्ञाकारी, पवित्र जीवन जीने पर हमारा ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकता है। हमें पाप से शुद्ध करने के लिए जो कुछ उसने हमारे लिए सहा, उसकी याद को हमें उस तरीके से जीने के लिए प्रेरित करना चाहिए जो उसे भाता है (तीतुस 2:14)।

हमें अपने लोगों को भी ये बातें सिखानी हैं। पौलुस ने तीतुस से यही कहा (तीतुस 2:15)। कि उसे उनको "सिखाना" है। इसका अर्थ है "घोषणा करना, प्रकट करना, खोलना, परमेश्वर के सत्य को स्पष्ट करना ताकि सुनने वाले समझ सकें।" पादरियों और अगुवों के लिए यह परमेश्वर की पहली आज्ञा है: "मेरी भेड़ों को चराओ " (यूहन्ना 21:15-17)। यह "पूरे अधिकार के साथ" किया जाना है, जिसका अर्थ है कि यह तीतुस के लिए एक आधिकारिक आदेश है। यीशु परमेश्वर की ओर से आए अधिकार के साथ शिक्षा देता था (मत्ती 7:28-30)। हमारे पास वह अधिकार भी है (लूका 9:1; मत्ती 10:1)। हमारे पास सिखाने के लिए परमेश्वर का वचन है और इसमें परमेश्वर का अधिकार भी है (इब्रानियों 4:12)। जब हम उपदेश देते हैं या सिखाते हैं, तो हम यीशु के समर्थन और अधिकार के साथ उसकी घोषणा कर रहे होते हैं। हमारे पास परमेश्वर के वचन को स्पष्ट रूप से और आधिकारिक रूप से घोषित करने का पूरा अधिकार है, लेकिन इसके आगे एक भी वाक्य नहीं जाना है, इसमें से कुछ भी ना निकलना है, इसमें ना कुछ बदलना है या इसमें ना कुछ जोड़ना है। जब हम उपदेश देते हैं, सिखाते हैं, सलाह देते हैं या नसीयत देते हैं तो हम परमेश्वर के लिए बोल रहे होते हैं और दूसरों को उसकी सच्चाई बता रहे होते हैं।

शिक्षण का एक हिस्सा है "प्रोत्साहित करना और डाटना"। हम लोगों को सही काम करते रहने के लिए प्रेरित करते हैं। कुछ बाइबल शिक्षक डाँटते और निंदा करते हैं, जो लोगों को बेहतर तरीके से काम करने के लिए प्रेरित करने में मदद नहीं करता है। अपराधबोध और भय कोई उचित प्रेरक नहीं हैं। जीवन कठिन है, लोग दुख उठा रहे हैं और हर किसी को सही काम करते रहने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है। लेकिन जब कोई लगातार वचन की अवहेलना कर रहा है तो हमें उसके पाप को प्रेमपूर्ण तरीके से इंगित करना चाहिए, जैसे हम सही होना चाहते हैं यदि हम गलत हैं तो। हम यह काम उनकी निंदा करने या उन्हें हराने के लिए नहीं करते हैं बल्कि उन्हें अपने तौर तरीके सुधारने और सच्चाई में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए करते हैं। यह सब वचन सिखाने का ही एक हिस्सा है।

इस खंड में तीतुस को दी गई पौलुस की अंतिम आज्ञा है, "कोई तुझे तुच्छ न जाने।" " तुच्छ" शब्द का अर्थ अनादर करना या अवहेलना करना है। यह व्यक्तिगत रूप से हमारे बारे में नहीं है, बल्कि यह उसके बारे में है जिसका हम प्रतिनिधित्व करते हैं और जिसके बारे में बोलते हैं। इस तरह से जियो और बोलो कि तुम यीशु के लिए सम्मान और महिमा लाते हो, फिर यदि तुम्हें अस्वीकार कर दिया जाता है तो यह वास्तव में यीशु है जिसको वह अस्वीकार कर रहे हैं। कभी भी ऐसा कुछ न करें जिससे उसका अनादर हो!

आज आप छोटे और बड़े कई चुनाव और फैसले कर रहे होंगे। हर एक को इस आधार पर बनाना याद रखें कि यीशु क्या चाहता है क्योंकि एक दिन, शायद बहुत जल्द, आप उसके साथ होंगे, जिसने आपके सभी पापों का भुगतान किया है।

पौलूस की सलाह: पाप को "न" कहें लेकिन यीशु के लिए पवित्र, ईश्वरीय जीवन जीने के लिए "हाँ" कहें। दूसरों को उसका वचन सिखाओ ताकि वे भी ऐसा ही करें।

इब्रानियों 4:12 क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है। यह किसी भी दोधारी तलवार से अधिक तेज है, यहां तक कि आत्मा और दिलों , जोड़ों और गुदे गुदे को विभाजित करने के लिए भी छेद करता है; यह हृदय के विचारों और व्यवहारों का न्याय करता है।

आपके पास कौन से दैनिक विकल्प सबसे कठिन हैं? कौन सी बात आपको अवज्ञा करने के लिए लुभाती है?
अगली बार अवसर आने पर ईश्वरीय निर्णय लेने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

13. अधिकारियों के प्रति व्यवहार

पढ़ें: तीतुस 3:1-7

यह कहा गया है कि मसीही जीवन जीना साइकिल चलाने जैसा है। आप या तो आगे बढ़ रहे हैं और या गिर रहे है। इसमें अभी भी कोई एक जगह खड़ा नहीं है। यीशु के लिए जीना जीवन के सभी पहलुओं पर लागू होता है, जैसा कि पौलुस तीतुस इसकी को याद दिलाता है और उसे अपने लोगों को याद दिलाने के लिए कहता है। इसमें शामिल हैं, सरकार के साथ हमारा संबंध और उनके साथ हमारा संबंध जो हमारे ऊपर नेतृत्व के पदों पर हैं (तीतुस 3:1)। तीतुस को आज्ञा दी गई थी कि वह लोगों को **"शासकों और अधिकारियों के अधीन रहने"** (सरकार, नियोक्ताओं, माता-पिता, पतियों, पादरीयों और सभी अगुओं का सम्मान करने के लिए), **"आज्ञाकारी होने"** की याद दिलाए (जब तक कि उनकी आज्ञा परमेश्वर के वचन के विरुद्ध न हो) , और **"जो कुछ भी अच्छा है उसे करने के लिए तैयार रहें"** (दूसरों की सेवा करने के लिए एक ईमानदार, प्रेमपूर्ण उत्सुकता रखें)। पादरीगण लोगों को यह सिखाए, लेकिन उससे पहले अपने जीवन से इसका उदाहरण दें।

पौलुस हमें तीतुस 3:2 में आपने लोगों को **"किसी की निन्दा न करना"** (शाप न देना, कलीसिया और यीशु के शत्रुओं के विरुद्ध अपमानता भरा व्यवहार करना या बुरा बोलना, परन्तु मसीही प्रेम में सच बोलना) सिखाने के लिए लगातार याद दिलाता है। **शांतिप्रिय" (सभी के साथ दोस्ताना, झगड़ालू नहीं), "विचारशील" (कोमल, उदार, निष्पक्ष, धैर्यवान**, **"और सभी पुरुषों के प्रति सच्ची विनम्रता दिखाने के लिए" (नकली नहीं बल्कि दूसरों के लिए वास्तविक हार्दिक प्रेम, जैसा कि यीशु करता है)।** तीतुस 1, में पौलुस इन्हीं गुणों का कलीसिया के अगुवों के लिए योग्यता के रूप में इस्तेमाल करता है। अब वह इनको सभी के लिए लागू करता है। अगुवों को इन तरीकों से लोगों को प्रशिक्षित करना है। लेकिन उससे पहले, उनके अपने जीवन में यह गुण होने चाहिए (तीतुस 1:5-9)।

आयत 2 में दीनता के बारे में बात करने के बाद, पौलुस उन्हें याद दिलाता है कि हम सभी अविश्वासी थे और जैसा वे जीवन जीते हैं वैसे ही हम भी जीते थे (तीतुस 3:3), इसलिए हमारे पास घमण्ड करने के लिए कुछ भी नहीं है। हमारे जीवन में यह केवल परमेश्वर का अनुग्रह है जो हमें अविश्वासियों से अलग करता है। उद्धार कोई ऐसी चीज नहीं है जिसके बारे में हम डींग मार सकें या इसका श्रेय ले सकें। यह केवल उसकी दया से है कि वह क्षमा के साथ हम तक पहुँचा है (तीतुस 3:4-6)। यह केवल उसी तरह की क्रिया है कि जब उसकी आत्मा ने हम में कार्य किया और हमने अपने दोष को देखा और उसकी क्षमा की आवश्यकता को देखा। यह केवल ऐसे हुआ कि आत्मा ने यीशु को ईश्वर-मनुष्य और हमारे उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट किया, कि हम उद्धार के लिए उसकी ओर मुड़े। हम कोई श्रेय नहीं ले सकते। यह केवल उसकी अद्‌भुत कृपा है जो हमारे और अनंत काल के बीच नरक में दीवार बन कर खड़ी हो जाती है । इसके और आगे, हम उसके साथ स्वर्ग में अनंत काल व्यतीत करेंगे (तीतुस 3:7)। हमें दूसरों के प्रति वही करुणा दिखानी चाहिए जो परमेश्वर ने हम पर दिखाई है।

हमारे विश्वास करने से पहले, हमारे और परमेश्वर के बीच हजारों कदम की दूरी थी। उसने अंतिम एक को छोड़कर सभी कदम हमारी ओर बढ़ कर दूरी हद से जयादा काम कर दी। वह हमें स्वतंत्र इच्छा देता है और किसी को विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करता है। बाकि बचा यह अंतिम कदम उठाना हमारा काम है, हम पर कि हम अंतिम कदम उसकी तरफ बढ़ाते हैं। लेकिन हम ऐसा भी नहीं करते होते यदि पवित्र आत्मा हमें हमारी आवश्यकता और उसके प्रावधान को दिखाने के लिए हमारे अंदर कार्य नहीं कर रहा होता। सभी स्तुति और महिमा उसको मिले! हम कभी भी कुछ भी कैसे कर सकते

हैं, पर विनम्रता, प्रेम और करुणा के साथ उन तक पहुंचें जो अब वैसे हैं जैसे हम कभी थे ? हो सकता है कि परमेश्वर, अपनी दया में, हमारे द्वारा यीशु के सुसमाचार के लिए उनकी आंखें खोल दे!

इफिसियों 1:3-14 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। क्योंकि उस ने जगत की सृष्टि से पहिले ही हमे उस में चुन लिया, कि हम उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष ठहरें। प्रेम में उस ने अपनी ख़ुशी और इच्छा के अनुसार पहले से ठहराया, कि हम यीशु मसीह के द्वारा उसके पुत्र होने के लिए गोद लिए जाएं, जिस से उसके उस महिमामय अनुग्रह की स्तुति हो, जो उस ने हमें उस में दिया है, जिस से वह प्रेम रखता है। हमें उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा, परमेश्वर के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जो उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया है।

... उसी में हम भी चुने गए हैं, उसकी योजना के अनुसार पूर्व-निर्धारित किए गए हैं जो अपनी इच्छा के उद्देश्य के अनुरूप सब कुछ करता है।

धीमी आवाज़ से प्रार्थना करने के लिए कुछ क्षण निकालें और सोचें कि यदि परमेश्वर ने आपको विश्वास में लाने के लिए आप में काम करने का चुनाव नहीं किया होता तो जीवन कैसा होता। उसके लिए धन्यवाद।

परमेश्वर के खिलाफ किसी भी शिकायत के लिए या उसने आपके जीवन में जो किया है उसका श्रेय लेने के लिए या ऐसी कभी की गयी कोशिश के लिए उससे माफी मांगें।

14. यीशु के लौटने की प्रतीक्षा

पढ़ें: तीतुस 3:8-15

जो उपदेश देते हैं या सिखाते हैं वे जानते हैं कि किसी संदेश का निष्कर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यह आखिरी विचार है जो आप लोगों के पास छोड़ते हैं। इसे सारांशित करने, निष्कर्ष निकालने और कार्रवाई के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता होती है। तीतुस को लिखे अपने पत्र में पौलुस का निष्कर्ष उन सभी बातों को करता है (तीतुस 3:8-15)।

तीतुस को अपने अंतिम शब्दों को शुरू करने के लिए पौलुस अच्छे काम करने के बारे में अपने शब्दों का उल्लेख करता है (तीतुस 3:1-7)। वह फिर से अपने लोगों को **"भले काम करने में लगे रहने"** के लिए प्रशिक्षित करने के महत्व को दोहराता था (तीतुस 3:8)। सिर्फ इसलिए कि कोई यीशु के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करता है और मरने पर स्वर्ग जा रहा है, इसका मतलब यह नहीं है कि वे इस जीवन में पाप नहीं कर सकते हैं या नहीं करेंगे (1 यूहन्ना 1:7-10)। हमारा पुराना पापी स्वभाव उद्धार के साथ नहीं बदलता है। हमें एक नया स्वभाव, परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर मिल जाता है, इसलिए हमें अब इसके आगे पाप के द्वारा नियंत्रित नहीं होना है (रोमियों 6:12-23)। हमारे पास अभी भी अपनी स्वतंत्र इच्छा है और हम पाप करना चुन सकते हैं जैसे हमने उद्धार से पहले किया करते थे। उद्धार के बाद शरीर की हर चाहत अभी भी मजबूत बनी रहती है, कभी-कभी पहले से भी ज्यादा मजबूत! जब हम पाप करते हैं तो हम अपने उद्धार को नहीं खोते हैं (1 कुरिन्थियों 3:1-23), परन्तु इसके परिणाम जरूर होते हैं। पाप हम में परमेश्वर के पवित्र आत्मा के कार्य को रोकता है और इसलिए हम उसकी शांति, मार्गदर्शन, शक्ति और सहायता का अनुभव नहीं करते हैं (इफिसियों 4:30; 1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। जब परमेश्वर का आत्मा से हमें भर देता है (रोमियों 8:9 नियंत्रित करता है), तो वह हम में अपना फल उत्पन्न करता है (गलतियों 5:22-23) जो विश्वासी को बनाता है और अविश्वासियों को यीशु की ओर आकर्षित करता है (तीतुस 3:8)।

जो "अच्छा" है, उसे करने का अर्थ है कि एक मसीही विश्वासी के लिए क्या करना ठीक है और क्या नहीं, के विवरणों के बारे में वाद विवादों और तर्कों में न पड़ना, विशेष रूप से पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार (तीतुस 3:9)। पौलुस जिस व्यवस्थावाद के बारे में बात करता है, उसका उल्लेख तीतुस 1:10-16 में कर रहा है। जीवन के मामूली विवरणों के बारे में इन वैधानिक तर्कों में पड़ना **"लाभहीन और व्यर्थ"** है (तीतुस 3:9)। इससे कुछ भी अच्छा नहीं होता, लेकिन संघर्ष, विभाजन, जो गलत है उसे करने का डर, दूसरों की तुलना में अधिक धार्मिक महसूस करने में गर्व करने और अनुग्रह की जगह कानून के परिणाम।

इन लोगों को सुधारने का प्रयास करें, वास्तव में दो बार प्रयास करें (मत्ती 18:15-17)। परन्तु यदि वे अपनी भूल में बने रहें, तो उन से कुछ लेना देना ना रखें (तीतुस 3:10)। उन पर अपना समय बर्बाद न करें और न ही उन्हें वह तवज्जो दें जिसकी वे लालसा रखते हैं। दूसरों को चेतावनी दें कि वे उनकी बात न सुनें और उन्हें चर्च में बोलने का अवसर न दें। ये लोग **"विकृत और पापी"** हैं और **"स्वयं के दोषी"** हैं (तीतुस 3:11)। ये बहुत कड़वे शब्द हैं लेकिन सत्य हैं। भले ही वे लोकप्रिय होते हों और ईमानदार प्रतीत होते हों, और लोग उनकी प्रशंसा करते हैं और उन्हें सुनना पसंद करते हैं, हमें अपनी भेड़ों को किसी भी प्रभाव वाले स्थान से हटाकर उनकी रक्षा करनी चाहिए। मान लीजिए कि आप चर्च सभा के बाद भोजन कर रहे थे और हर कोई साझा करने के लिए कुछ कुछ लेकर आया हो , और एक व्यक्ति थोड़ा सा चूहे मारने की दवा मिलाकर कुछ भोजन लाया हो। क्या आप उसे यह खाना सबके साथ साझा करने देंगे? यहां तक कि अगर वे एक अच्छा, ईमानदार व्यक्ति भी था और आप उनका अपमान नहीं करना चाहते थे, तो भी आप दूसरों को उनका जहर नहीं खाने दे सकते थे। झूठे शिक्षकों के बारे में भी तो यही सच है। बहुत अधिक नुकसान करने के लिए केवल एक छोटी से अंश की आवश्यकता होती है!

पौलूस ने तब कुछ व्यक्तिगत संदेशों (तीतुस 3:12-15) के साथ अपने पत्र को बंद कर दिया और पत्र को तीतुस के रास्ते भेज दिया, और अंततः आज यह हमारे पास है। हम पौलुस के साथ बैठने और उसके द्वारा प्रशिक्षित होने में सक्षम नहीं हैं, लेकिन तीमुथियुस और तीतुस को लिखे उनके पत्रों को पढ़कर और उनका अनुसरण करके हम आज आपने लिए उनकी सलाह के प्राप्तकर्ता हो सकते हैं। वही करें जो सही और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध हो और दूसरों को भी ऐसा करना सिखाएं। जो कुछ और बात सिखाते हैं उन्हें चेतावनी दी जानी चाहिए, उन्हें अस्वीकार कर दिया जाएगा और हटा दिया जाएगा। ये कड़े शब्द हैं लेकिन इतिहास ने दिखाया है कि ये सच हैं। वे आज भी हमारे लिए सच हैं।

पौलूस की सलाह: जो अच्छा है वह करो और झूठ सिखाने वालों से कोई लेना-देना ना रखो ।

गलातियों 6:9-10 हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। इसलिए, जैसा कि हमारे पास अवसर है, आइए हम सभी लोगों के साथ भलाई करें, विशेषकर उनके साथ जो विश्वासियों के परिवार से संबंधित हैं।
इफिसियों 2:10 क्योंकि हम परमेश्वर की दस्तकारी हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया है।
जब दूसरे आपको देखते हैं, तो क्या वे आपके अच्छे कामों के लिए परमेश्वर की महिमा करते हैं?

आप ने उन झूठे शिक्षकों को कैसे जवाब दिया है जिन्होंने आपकी कलीसिया में लोगों को गुमराह करने की कोशिश की है?

अगली बार जब कोई झूठे सिद्धांत सिखाता है तो आपको क्या करना चाहिए?

V. पादरीयों और अगुओं के लिए मानक

जब हम नेतृत्व के बारे में सोचते हैं, तो हम आम तौर पर सोचते हैं कि व्यक्ति क्या करता है, अगुआ के रूप में अपनी भूमिका निभाने में उसके कार्य के बारे में। हालाँकि, बाहरी क्रियाएँ आंतरिक चरित्र पर आधारित होती हैं, न कि हमारे व्यक्तित्व या ज्ञान पर। नेतृत्व सबसे पहले कुछ ऐसा है जो हम हैं, न कि कुछ ऐसा जो हम करते हैं। पौलुस 1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:5-9 में ईश्वरीय अगुवों के लिए योग्यताओं की सूची बनता है। प्रत्येक का आंतरिक अखंडता और परिपक्वता के साथ लेंन-देंन होता है। वे सिर्फ एक सूची ही नहीं हैं जिस में से हम चुन सकते हैं और उठा सकते हैं। वे एक साथ मिलकर एक व्यक्ति का वर्णन करने के लिए कार्य करते हैं - एक ईश्वरीय अगुआ के लिए खासकर। एकमात्र व्यक्ति जिसने कभी इस पूरी सूची को पूरा किया है वह केवल यीशु है; इसलिए जितना अधिक हम इन गुणों में विकसित होते हैं, उतना ही अधिक हम उसके समान बनते जाते हैं। आइए अब उन्हें देखें।

क- एक ईश्वरीय अगुआ में एक ईश्वरीय अगुआ बनने की इच्छा होनी चाहिए

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9

पहली बात जो पौलुस कहता है वह यह है कि एक व्यक्ति को एक ईश्वरीय अगुवा बनने की इच्छा होनी चाहिए। उसे "उस पर अपना मन लगाना चाहिए" और इसे "चाहना" चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1)। सेवा करने के लिए कभी किसी से बात न करें, चाहे आप उसके बारे में कितना भी क्यों ना सोचतें हों कि वह कितना अच्छा अगुआ बन सकता है। यह इच्छा परमेश्वर को उसके हृदय में रखनी होती है, और फिर उसे इसका अनुसरण करके और सेवा करने के इच्छुक होने के द्वारा इसका जवाब देना चाहिए। इन मूल सत्यों के बिना, कोई भी एक ईश्वरीय अगुवा नहीं बनता। कोई भी नहीं!

पौलूस की सलाह: परमेश्वर किसी को उसकी सेवा करने के लिए मजबूर नहीं करता है, यह कुछ ऐसा होना चाहिए जो कोई करने को तैयार है।

परमेश्वर ने आपके हृदय में कब डाला कि आप उसकी सेवा करें ?
क्या यह काम करने के लिए प्रतिबद्ध होना आपके लिए कठिन था?

क्या आप ने उसकी सेवा करने की इच्छा के बारे में अपना मन बदल लिया है? उसकी सेवा करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की फिर से पुष्टि करें।

यदि आप आश्चर्य करते हैं कि क्या उसने आपको बुलाया है, तो मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि यदि आप उसकी सेवा करना चाहते हैं तो वह इच्छा उसकी ओर से आई है, जब तक कि आप यह सेवा सिर्फ किसी गर्व या लालच से नहीं करना चाहते।

ख- एक ईश्वरीय नेता में अंदरूनी ईश्वरीय गुण होते हैं

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9

उन लोगों के लिए, जो बुलाए गए हैं और सेवा करने की इच्छा में प्रतिक्रिया देते हैं, पौलूस के पास 25 चरित्र लक्षण हैं जो एक ईश्वरीय अगुआ का वर्णन करते हैं। इन्हें पाने के लिए जीवन भर आध्यात्मिक

विकास करना पड़ता है, और हाँ , यीशु के अलावा कोई   भी कभी इन सभी को हासिल करने की पूर्णता तक नहीं पहुँच पाया। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे हम शुरू करते हैं और जीवन भर करते रहतें हैं।

सूची में पहला आंतरिक गुण है **संतुलन** (1 तीमुथियुस 3:2)। यह किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो संयमी है और हद से बचता है, जिसे आसानी से धोखा नहीं दिया जा सकता है या बहकाया नहीं जा सकता है, जो हमेशा सथिर और कायम रहता है और जो दबाव में आ कर नहीं गिरता है।

समझदारी (1 तीमुथियुस 3:2) इसके समान है लेकिन थोड़ा सा अलग भी है। यह व्यक्ति आत्म-नियंत्रित होता है, उचित होता है और अच्छे निर्णय लेता है क्योंकि वह परिपक्वता और अनुभव के साथ समस्याओं का सामना करता है। जब कड़े फैसले लेने पड़ते हैं तो वह अच्छा काम करता है।

साथ ही एक ईश्वरीय अगुवे को **अनुशासित** होना चाहिए (तीतुस 1:8)। इसका शाब्दिक अर्थ है "ताकत को नियंत्रण में रखे होना चाहिए।" एक ईश्वरीय नेता भोजन, नींद या किसी और चीज में उसकी हद तक नहीं पहुचता है। वह जानता है कि उसे कब ना कहना है (नीतिवचन 25:28)। वह आसानी से प्रलोभन या बहुत अधिक धन खर्च करने वाले व्यक्ति का शिकार नहीं होता है। वह क्रोध, मान, लोभ या आलस्य को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता है।

पौलूस की सलाह: एक ईश्वरीय आगुआ और भी संयमित, आत्म-संयमी और अनुशासित होता है।

आप अपने जीवन में संतुलन और आत्म-नियंत्रण पर खुद को 1 से 10 के पैमाने पर कैसे आंकेंगे?

आपका साथी या सबसे अच्छे दोस्त आपको क्या अंक देंगे?

जब जरूरत पड़ती है तो क्या आपके पास आत्म-नियंत्रण होता है?

क्या कठिन परिस्थितियों में दूसरे लोग आपके पास सलाह के लिए आते हैं क्योंकि आप बुद्धिमान निर्णय लेने की प्रतिष्ठा रखते हैं?

<u>ग- एक ईश्वरीय अगुआ के लोगों के साथ ईश्वरीय संबंध होते हैं</u>
पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9

एक ईश्वरीय अगुवा होने का अर्थ है कि हमें दूसरों के साथ मेलजोल बढ़ाने की जरूरत है। पौलूस ऐसे कई गुणों की सूची बनाता है जिनकी परमेश्वर ईश्वरीय अगुओं में होने की उम्मीद करता है ताकि वे दूसरों के साथ सही व्यवहार करें।

एक ईश्वरीय अगुवा **तेज-तर्रार** (तीतुस 1:7) या **हिंसक** (1 तीमुथियुस 3:3) नहीं हो सकता। वह जल्दी या आसानी से क्रोधित होने वाला नहीं हो सकता, या ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो दूसरों के साथ बहुत बहस करता हो (नीतिवचन 29:22)। वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करता है इसमें यह भी शामिल है। उसे दबाव की स्थिति में शांत रहना चाहिए। एक ईश्वरीय क्रोध, ईश्वरीय आक्रोश होता है, जैसे जब यीशु ने पैसे बदलने वालों को मंदिर से बाहर भेजा था , लेकिन यह क्रोध/आक्रोश नियंत्रण में

होना चाहिए और केवल पाप के खिलाफ होना ही चाहिए जिसको इसकी जरूरत है। इसके बावजूद भी हमें बहुत, बहुत सावधान रहना चाहिए ताकि हम स्वयं पाप में न पड़ जाएँ (इफिसियों 4:26)।

पौलुस आगे कहता है कि एक अगुवा **झगड़ालू** नहीं हो सकता (1 तीमुथियुस 3:3)। वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो बहस करने के लिए जाना जाता हो। वह उन लोगों का अपमान नहीं कर सकता जो उसका अपमान करते हैं या दूसरों की आलोचना करते हैं। वह ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता है जो बातचीत पर हावी हो और हमेशा हर चीज के बारे में आपने आप को सही मानता/मनवाता हो (नीतिवचन 20:3)। इसके बजाय, एक ईश्वरीय अगुवे को सुनने का इच्छुक होना चाहिए, सीखने के लिए तयार मन वाला होना चाहिए, और आवश्यकता पड़ने पर अपनी राय बदलने में सक्षम होना चाहिए।

इस व्यक्ति के पास हर समय अपना रास्ता ही नहीं होना चाहिए। वह **अहंकारी** या घमंडी नहीं होना है (तीतुस 1:7)। उसे ऐसा होना चाहिए जो दूसरों के साथ घुलमिल जाता हो और एक मंडली के हिस्से के रूप में अच्छा काम करने वाला हो।

यह कहने के बाद कि हमें दूसरों के साथ कैसा नहीं होना चाहिए, पौलुस यह भी कहता है कि हमें कैसा होना चाहिए: **कोमल** (1 तीमुथियुस 3:3)। इसमें दूसरों के साथ धैर्य रखने वाले , दयालु और विचारशील होने का विचारधारा है। इसका अर्थ है जिद्द ना करने वाला , क्षमा करने वाला और किसी अपराध को अनदेखा करने के लिए तैयार रहने वाला। लोग इस व्यक्ति के द्वारा कभी भी हीन भावना या आलोचक महसूस नहीं करते हैं।

पौलूस की सलाह: एक ईश्वरीय अगुआ दयालु, कोमल और दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करता है।

क्या आपकी पत्नी या बच्चे कहते हैं कि आपको बहुत गुस्सा आता है?
क्या उन्हें लगता है कि आपको तो हमेशा सही ही साबित होना है?
क्या आप उन्हें सुनने के लिए तैयार होते हैं कि अगर वे बात को समझ जाते हैं तो आप अपना मन बदल लेते हैं ?
क्या दूसरे आपको किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो अपने सभी व्यवहारों में धैर्यवान और दयालु है, चाहे जीवन में उसकी कोई भी स्थिति क्यों न हो?

घ- एक ईश्वरीय अगुआ की ईश्वरीय प्रतिष्ठा होती है

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9

ये गुणवत्ता के लक्षण इस बात को दर्शाते हैं कि दूसरे लोग एक अगुआ के बारे में कैसा महसूस करते हैं और वे उसकी पीठ पीछे क्या कहते हैं। यह इस बात को भी दर्शाता है कि वे दूसरों के सामने आपका कैसे वर्णन करते हैं। प्रत्येक मसीही के लिए एक अच्छी प्रतिष्ठा रखना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं। पर यह अगुओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ पर परमेश्वर कहता हैं कि हमारी प्रतिष्ठा कैसी होनी चाहिए।

वह एक ईश्वरीय अगुवे की प्रतिष्ठा को **निष्कलंक** (1 तीमुथियुस 3:2) और **निर्दोष** (तीतुस 1:6-7) के रूप में वर्णित करता है। "निष्कलंक" का शाब्दिक अर्थ है "बिना झुर्रियाँ" और एक ऐसे लिबास की बात करता है जो चिकना और सिलवटों से मुक्त हो। अगुवों का कोई भी सवालिया आचरण नहीं होना चाहिए, कोई

गुप्त पाप नहीं होना चाहिए और दूसरों के साथ कोई अनसुलझा संघर्ष नहीं होना चाहिए। हम किसी भी तरह से दूसरों को यह कहने का मौका नहीं दे सकते हैं कि हमने उन्हें धोखा दिया है या हमने उनसे कुछ लालच किया है या हम किसी रूप से किसी चीज का अभिमान है। "बेदाग" होना इसी की समानता है। यह एक कानूनी शब्द है और किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जिस पर किसी भी तरह के किसी गलत काम का आरोप नहीं है। हमें अगुओं के रूप में परिपूर्ण होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन जब हम किसी को नाराज करते हैं या कुछ उनके खिलाफ गलत करते हैं, तो हमें तुरंत माफी मांगनी चाहिए और इसे ठीक करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, पौलुस कहता है कि हमें **सम्माननीय** होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2)। यह एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो सम्मान और इज़्ज़त के योग्य है, एक मसीही सज्जन ।

ऐसा बनने का एक तरीका है दूसरों के साथ हमारे सभी व्यवहारों में **सच्चे** होना (तीतुस 1:8) है। जिसका मतलब है कि हमें निष्पक्ष और ईमानदार होना है, अपने वादे पूरे करने हैं, अपने बिलों का समय पर भुगतान करना है, अपनी बात पर कायम रहना है और हमेशा दूसरों के बारे में अच्छा बोलना है।

इसके अलावा, हमें ज़रूरतमंदों के लिए एक **मेहमाननवाज़** जैसा होना चाहिए (तीतुस 1:8)। पौलूस के दिनों में कोई होटल नहीं होता था, इसलिए यात्रा करने वाले लोगों को आवास के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। एक ईश्वरीय अगुवे का दूसरों के प्रति बलिदानी और फिक्र करने का सभाव होना चाहिए, और जो उसके पास है उसे दूसरों के साथ साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इन सब का परिणाम यह होगा कि **बाहर वालों में हमारी शवि होगी** (1 तीमुथियुस 3:7)। समुदाय के अन्य लोग हमारे बारे में इज्ज़त और सम्मान के साथ सोचते हैं। भले ही वे यीशु के बारे में हमारे विश्वास से सहमत न हों, वे जानते हैं कि हम अच्छे, ईमानदार और भरोसेमंद लोग हैं।

पौलुस की सलाह: एक ईश्वरीय अगुवे की भी यीशु की तरह दूसरों के बीच अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

आपके समुदाय में आपकी कैसी प्रतिष्ठा है? जो मसीही नहीं हैं वे आपके बारे में क्या सोचते हैं?

आप के बारे में उन मसीहीयों का क्या विचार है जो आपके चर्च में नहीं जाते हैं, वे आपके बारे में कैसे बात करते हैं?

क्या लोग जानते हैं कि आपका वचन अच्छा है और आप जो कहते हैं उस पर विश्वास करते हैं?

क्या लोग यीशु के बारे में बेहतर सोचते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि आप उसका प्रतिनिधित्व करते हैं?

ङ- एक ईश्वरीय अगुआ का एक ईश्वरीय आध्यात्मिक जीवन होता है

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9

चरित्र के लक्षणों की एक और सूची जिसका पौलूस उल्लेख करता है जो एक अगुआ के व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास और परिपक्वता पर ध्यान केंद्रित करती है। यह भी, सभी अगुओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

एक ईश्वरीय अगुवा **पवित्र** होना चाहिए (तीतुस 1:8)। उसे एक ऐसा पुरुष या स्त्री होना चाहिए जो परमेश्वर के लिए जीवन जीता हो और परमेश्वर को प्रसन्न करता हो। वह यह सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश करता हो कि वह जो सोचता/सोचती है या करता/करती है उसमें कोई पाप नहीं है। हममें से कोई भी कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता, परन्तु हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे जीवन में कोई ऐसा पाप ना हो जिसका अंगीकार न किया गया हो। दूसरों को उसके जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति दिखाई देनी चाहिए। उसे अपने मसीही चाल-चलन में परिपक्व होने की जरूरत है ताकि वह और अधिक पवित्र होता जाये।

उसे अपने मसीही ज्ञान में भी परिपक्व होने की जरूरत है। पौलुस कहता है कि एक ईश्वरीय अगुवे को **खरी शिक्षा पर दृढ़ रहना चाहिए** (तीतुस 1:9)। उसे वचन की सच्चाई की व्याख्या और उसकी रक्षा बचाव करने में सक्षम होना चाहिए। उसे इस चीज को आपने चल चलन में दिखाना चाहिए जैसे वह अपना दैनिक जीवन जीता है।

क्योंकि आपने दैनिक जीवन में और बाइबल के ज्ञान में परिपक्व होने में समय लगता है, इसलिए पौलुस यह भी कहता है कि कोई अगुआ **नया चेला नहीं होना चाहिए** (1 तीमुथियुस 3:6)। यहाँ "नया" शब्द एक नए, कोमल पौधे को संदर्भित करता है, जिसे मजबूत होने के लिए धूप और पानी की आवश्यकता होती है। नए विश्वासियों को परमेश्वर के वचन को सीखने और इसे अपने जीवन में लागू करने की आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होने और विकसित होने में समय लगता है। पौलुस चेतावनी देता है कि यदि ऐसा होने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया जाता है, तो नया अगुवा अपने पद के कारण घमण्डी हो सकता है और पाप में गिर सकता है। जब एक मसीही जन कुछ समय के लिए बढ़ रहा होता है, तो उसे किसी दूसरे अगुवे की सहायता करने की स्थिति में रखा जा सकता है ताकि उसे प्रशिक्षित किया जा सके और सिखाया जा सके, लेकिन उसे रहना अधिकार के अधीन चाहिए और उस अगुवे के प्रति जवाबदेह होना चाहिए जब तक कि वह बिना गर्व या आत्म-केंद्रित बने किसी भी अगुवाई जिमेदारी को संभालने के लिए पर्याप्त परिपक्व न हो जाए ।

उसके आत्मिक जीवन से संबंधित अंतिम योग्यता यह है कि एक अगुवे को **सिखाने में सक्षम होना** चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2)। इसका मतलब सबसे पहले यह है कि उसके पास सिखाने की भावना होनी चाहिए और बाइबल ज्ञान में वृद्धि करते हुए आध्यात्मिक रूप से सीखने और बढ़ने के लिए तैयार रहने की चाहत होनी चाहिए। फिर उसे दूसरों को परमेश्वर का सत्य बताने में सक्षम होना चाहिए। सभी अगुवों के पास शिक्षा देने का गुण नहीं है, लेकिन सभी को परमेश्वर की सच्चाई को दूसरों के साथ साझा करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हम सभी को सुसमाचार प्रचार करने का या प्रार्थना का उपहार नहीं मिला है, लेकिन फिर भी हमें अपना सर्वश्रेष्ठ करने की आवश्यकता है। अगुओं के शिक्षक होने का भी यही सच है। यह एकमात्र गुण है जो किसी के नेतृत्व कौशल को छूता है। इस आवश्यकता को जोड़कर परमेश्वर फिर से दिखा रहा है कि पादरीयों और अगुवों के लिए परमेश्वर के वचन को सिखाना और प्रचार करना कितना महत्वपूर्ण है।

पौलूस की सलाह: एक ईश्वरीय अगुवे को अपने विश्वास में बढ़ते हुए हर दिन परमेश्वर के साथ समय बिताना चाहिए।

क्या आप पवित्रता में बढ़ रहे हैं और पाप पर विजय प्राप्त कर रहे हैं?

क्या आपके जीवन में कोई पाप है जो आपको हरा रहा है?

उन क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

क्या आप ईमानदारी से बाइबल का अध्ययन करते हैं और सीख रहें हैं?

क्या आप त्रुटि को पहचान सकते हैं और दूसरों को वचन से परमेश्वर का सत्य दिखा सकते हैं?

क्या आप दूसरों को परमेश्वर का सत्य बताने की पूरी कोशिश करते हैं?

क्या आप अभी भी अपने विश्वास और ज्ञान में परिपक्व हो रहें हैं और इसमें बढ़ रहे हैं ?

VI. संघर्ष समाधान

क- संघर्ष अनिवार्य है (संघर्ष समाधान-1)

संघर्ष। हम इससे भाग नहीं सकते। कैन और हाबिल से लेकर आज तक, राष्ट्रों, व्यक्तियों, परिवारों और चर्चों में संघर्ष बना ही रहा है। यह संघर्ष हमारे पापी स्वभाव से उत्पन होते हैं। याकूब 4:1-2 कहता है: "तुम्हारे अंदर में झगड़े और लडाई का क्या कारण है? क्या वे तुम्हारी उन इच्छाओं से नहीं आतीं जो तुम्हारे भीतर संघर्ष करती हैं? तुम कुछ चाहते हो लेकिन तुम्हे मिलता नहीं। तुम हत्या करते हो और लालच करते हो, पर तुम्हें वह नहीं मिल सकता जो तुम चाहते हो। तुम झगड़ते हो और लड़ते हो। शांति के राजकुमार के वापस आने पर ही केवल पृथ्वी पर लोगों के बीच वास्तविक शांति कायम होगी। तब तक, हमें अपने संघर्षों को सम्भालना और उन्हें नियंत्रित करना सीखना चाहिए ताकि वे हमें नियंत्रित न कर सकें।

पौलूस, तीमुथियुस और तीतुस ने भी अन्य लोगों के साथ कई संघर्षों का सामना किया। ज्यादातर का तो संगी मसीहीयों के साथ ही सामना करना पड़ा था। पौलुस द्वारा 1 तीमुथियुस को लिखे जाने के कारणों में से एक था, इफिसुस की कलीसिया में लोगों के बीच की समस्याओं और मतभेदों को दूर करने में उसकी मदद करना। इसलिए ही तीमुथियुस को वहाँ भेजा गया था, परन्तु लोगों के बीच के झगड़ों और संघर्षों को रोकना उसके लिए बहुत कठिन समय था। यह आज के कई पादरीयों और कलीसियाओं की भी सचाई है।

संघर्ष अनिवार्य है, लेकिन इसे ईश्वरीय तरीके से नियंत्रित किया जाना चाहिए। जब वे जो विश्वासी नहीं हैं लड़ते हैं, जो सबसे जयादा और ऊँचा बोलने वाला , सबसे बड़ा, सबसे शक्तिशाली या सबसे अमीर होता है, वह आमतौर पर अपना रास्ता खुद बना लेता है। अक्सर कोई संतोषजनक समझौता नहीं होता है, वहां बस एक विजेता और हारने वाला होता है। लेकिन कलीसिया में या घर में मसीहीयों के बीच की यह बात

नहीं है। जब मेरे बच्चे लड़ते थे और मेल मिलाप से नहीं रहते थे तो मुझे हमेशा दुख होता था। हमारा स्वर्गीय पिता भी दुखी होता है, जब वह अपने बच्चों को इस तरह की हरकतें करते हुए देखता है।

संघर्ष इस लिए अनिवार्य है क्योंकि हम सभी स्वाभाविक रूप से स्वार्थी और आत्म-केन्द्रित पैदा हुए हैं। हम आपने आप को पहल पर रखते हैं। यह हमारा पापी स्वभाव है। जहाँ भी संभव हो, शैतान हमारे शरीर को संघर्ष को भड़काता है, विशेष रूप से मसीहियों के बीच कलीसिया में और घर में।

जीतने के लिए दुनिया का तरीका है लड़ाई: जिसकी लाठी उसकी बैंस। लेकिन क्रूस का तरीका है संघर्ष में आपनी व्यक्तिगत भूमिका को ईमानदारी और विनम्रता से देखना। दूसरों को दोष देना आसान है, उनकी गलतियों को नज़रअंदाज़ करना और अपन गलतियों आप पर ध्यान केंद्रित करना बहुत कठिन है। तौभी परमेश्वर का वचन कहता है "क्योंकि सब ने पाप किया है" (रोमियों 3:23)। यीशु ने खुद सिखाया, “तू क्यों अपके भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख के लट्ठे पर ध्यान नहीं देता है ? तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'ला मैं तेरी आँख का तिनका निकाल दो,' जबकि तेरी अपनी ही आँख में हर समय लट्ठा पड़ा रहता है? हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब ही तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा" (मत्ती 7:3-5)।

यह बहुत स्पष्ट है कि, यदि हम यीशु का अनुसरण करने जा रहे हैं, तो हमें अपने स्वयं के दोषों को देखना चाहिए और दूसरों के साथ आपने संबंध की चिंता करने से पहले आपने संघर्ष में भाग लेना चाहिए। यह पहला कदम बहुत ही महत्वपूर्ण है यदि इसे एक सच्चा मेल-मिलाप और संकल्प बनाना है, न कि सिर्फ एक विजेता का और हारने वाले का रूप देना है। या तो दोनों पार्टियां जीत जाती हैं या फिर वास्तव में कोई भी नहीं जीतता है। यह बात विवाहत जीवन में विशेष रूप से सच है, लेकिन कलीसिया और व्यक्तिगत संबंधों में ऐसा ही है।

संघर्ष उत्पन में हमने क्या किया होगा , चाहे अनजाने में ही हुआ हो ?

संघर्ष को रोकने या समाप्त करने के लिए हम क्या कर सकते थे?

क्या दूसरे व्यक्ति के प्रति हमारा दृष्टिकोण करुणा और क्षमाशील रहा है, या हमारे अंदर बदले की भावना या कड़वाहट है?

<u>ख- पहला कदम उठाएं (संघर्ष समाधान- 2)</u>

बच्चों को एक-दूसरे के साथ मेल मिलाप से कैसे रहना है, यह सिखाना माता-पिता होने के सबसे कठिन कामों में से एक हो सकता है। उन लोगों के साथ जो संघर्ष में हैं पादरीयों की भूमिका के बारे में भी यही कहा जा सकता है। यहाँ तक कि हमारे आपने के विवाहत रिश्तों और दूसरों के साथ हमारे संबंधों में भी, किसी विवाद को समाप्त करना कठिन हो सकता है। अक्सर, हम सिर्फ लड़ना बंद कर देते हैं लेकिन तय कुछ भी नहीं होता है, पर कठोर भावनाएँ लगातार बनी रहती हैं। अगली बार जब कुछ सामने आता है, तो अतीत की सारी बातें उभर आती है और हम फिर वहीं आ कर खड़े हो जाते हैं जहाँ हम ने छोड़ा होता है।

समस्याओं को केवल नज़रअंदाज़ करना और उनके खतम होने का दिखावा करना कोई विकल्प नहीं है। परमेश्वर कहता है कि जहाँ तक हमारे वस की बात है, हमें **"सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप**

रखना" है (रोमियों 12:18)। इसका मतलब है कि हम किसी भी संघर्ष को समाप्त करने के लिए जिम्मेदार हैं, भले ही इसे हमने शुरू किया हो या नहीं। स्थिति में अपनी भूमिका का ईमानदारी से सामना करने के बाद, समाधान की शुरुआत करना संघर्ष सम्भालने में हमारा दूसरा कदम होता है। यहां तक कि अगर हम पूरी तरह से निर्दोष हैं, तब भी हम नाराज व्यक्ति के पास जाने और चंगाई लाने के लिए जिम्मेदार हैं: **"यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में उसी को उसका दोष बता" (मत्ती 18:15)**।

यीशु ने यह भी कहा कि इससे पहले कि हम परमेश्वर की आराधना कर सकें, हमें किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ सुलह करने में शुरूआत करनी चाहिए जो हमारे साथ नराज है, भले ही हमने उस व्यक्ति को ठेस पहुँचाने के लिए कुछ भी नहीं किया हो। **"इसलिये, यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहा हो और वहाँ तुझे याद आए कि तेरे भाई के मन में तेरे प्रति कुछ विरोध है, तो तू अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे और चला जा। पहिले अपने भाई से सुलह कर, तब आकर अपनी भेंट चढ़ाना"** (मत्ती 5:23-24)। यीशु इस बात को स्पष्ट करता है कि यदि हमारे अंदर कुछ गलत स्थिति में है तो हम परमेश्वर के साथ सही स्थिति में खड़े नहीं हो सकते। यहां तक कि अगर हमने समस्या पैदा करने के लिए कुछ भी नहीं किया है, फिर भी इसे समाप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए जिम्मेदारी हमारी है (गलतियों 6:1)। एक बार जब हम इसके बारे में जान जाते हैं, तो यह हमारा कर्तव्य है कि हम उस व्यक्ति की तलाश करें और समस्या का समाधान करें। हम उन्हें टाल नहीं सकते, हम उनका हमारे पास आने का इंतजार नहीं कर सकते या इसका कि वे पहले माफी मांगे। परमेश्वर हमें पहल करने के लिए बुलाता है, पहला कदम उठाने के लिए। यही विवाहत जीवन में, कलीसिया में और सबके साथ हमारे रिश्ते में का सच है।

किसी ऐसे व्यक्ति से , जो आप को अच्छा नहीं समझता है, पून जुड़ने के लिए विनम्रता और साहस की आवश्यकता होती है। माफी माँगना कठिन है, खासकर जब आप जानते हैं कि आपने कुछ गलत किया ही नहीं है। उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ व्यवहार करें।

यदि आप को किसी ने चोटिल किया है, और यह एक छोटी सी समस्या है या ऐसा कुछ है जिसके बारे में वे जानते भी नहीं हैं, तो यह मुद्दा आपके और परमेश्वर के बीच का हो जाता है। उन्हें क्षमा करें और आगे बढ़ें, ठीक वैसे ही जैसे आप चाहते हैं कि कोई व्यक्ति किसी ऐसी छोटी-सी बात को नज़रअंदाज़ कर दे जिसका मतलब ऐसा हो जायेगा आपने कभी सोचा भी न हो।

किसी व्यक्ति से बात करने जाने से पहले, परमेश्वर की शांति और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें।इसे लिख लेना मददगार साबित हो सकता है कि आप क्या कहना चाहते हैं ताकि आप जान सकें कि चीजों को कैसे शब्द देना है। सच बोलो, पर प्यार से (इफिसियों 4:15)। उनसे बात करें जैसे आप चाहते हैं कि आपसे बात की जाए, यदि भूमिकाएँ उलट दी जाती हैं। **"कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, कि उस से सुनने वालों को लाभ हो"** (कुलुस्सियों 3:13)।

दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया को ध्यान से और बारीकी से सुनें। यह न सोचें कि आप आगे क्या कहेंगे, खुद को उनकी जगह पर रखकर उन्हें समझने पर ध्यान दें। जवाब देने से पहले आपको उनके द्वारा कही गई बातों का सटीक सारांश देने में सक्षम होना चाहिए। यदि वे क्षमा माँगते हैं, तो उन्हें बिना शर्त क्षमा कर दें और फिर कभी इस बात का ज़िक्र न करें। हमेशा सुनहरे नियम के अनुसार चलें (मत्ती 7:12)। दूसरों से वैसे ही बात करें जैसे आप चाहते हैं कि वे आपसे बात करें। सच बोलो, पर प्रेम से (इफिसियों 4:15)। जब मसला सुलझ जाए तो माफ कर दो और भूल जाओ। इसे फिर कभी जुबान पर न लाएं, यहां तक कि अपने मन में भी।

यदि दूसरा व्यक्ति किसी ज्ञात पाप में है तो मत्ती 18:15-17 का पालन करें। अकेले में उसके पास जाओ और अपनी चिंता व्यक्त करो (आयत 15)। यदि वे सकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया नहीं देते हैं, तो एक या दो परिपक्व विश्वासियों को अपने साथ ले जाएं और उस से फिर से बात करें (आयत 16)। यदि अभी भी उसमें कोई पश्चाताप नहीं है, तो इसे पूरी कलीसिया को बताएं ताकि वे प्रार्थना कर सकें और उसे पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित कर सकें, ताकि वे पाप करने वाले व्यक्ति से किसी गलत तरीके से प्रभावित न हों जाएँ। यदि वह इस से भी पश्चाताप करने पर नहीं आता है, तो उसके साथ एक अविश्वासी के रूप में व्यवहार करें ताकि पवित्र आत्मा उसके दोष के लिए उसे दोषी ठहराए (आयत 17)।

क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो आप से नराज है? क्या आपने उससे बात करने और सुलह करने के लिए वह सब कुछ किया है जो आप कर सकते हैं?

स्थिति के लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर से पूछें कि हालातों में चंगाई लाने के लिए आप और क्या कुछ कर सकते हैं।

ग- जब शांति स्थापना विफल हो जाए (संघर्ष समाधान - 3)

क्यों कभी-कभी मसीहीयों को लडाई बंद करना और एक-दूसरे के साथ मिल कर रहना इतना मुश्किल होता है? एक व्यक्ति के रूप में, और एक पादरी के रूप में, एक चीज जो मुझे सबसे ज्यादा नापसंद है वह है लोगों के बीच मं संघर्ष, खासकर जब कभी मैं इसमें शामिल होता था। मैं इस मुद्दे को हल करने के लिए सब कुछ करना चाहता हूं और सब कुछ फिर से सुचारू और अच्छा बनाना चाहता हूं। लेकिन मैंने पाया कि हर कोई ऐसा नहीं सोचता है। कुछ तो ऐसे भी होते हैं जो संघर्ष का आनंद लेते हैं। ऐसा लगता है कि उनके जीवन में हमेशा एक या एक से अधिक टूटे हुए रिश्ते होते हैं। निजी तौर पर, मैं इस तरह से जीवन जीने की कल्पना नहीं कर सकता हूँ । मुझे ऐसे लोगों की मदद करने में कठिनाई होती है, खासकर अगर वे अपने और दूसरों के बीच की चोटों को ठीक नहीं करने की चाहत नहीं रखते हों। फिर भी बाइबल हमें हस्तक्षेप करने और चीजों को बहाल करने के लिए हर संभव प्रयास करने की आज्ञा देती है। हमें क्या करना है ?

हमने देखा है कि संघर्ष एक न टाले जाने वाली चीज है और हमें इसका समाधान निकलने में शुरुआत करनी चाहीए, भले ही समस्या हमारी गलती न बनी हो। अगर एक पक्ष या दोनों ही पक्ष सुलह करने को तैयार नहीं होते हैं तो उस स्थिति में हमे क्या करना चाहिए? इसे यूं ही नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह एक संक्रमित घाव की तरह है जो पूरे शरीर को जहरीला बना देता है। विश्वासियों के बीच असहमति मसीह की पूरे देह को जहरीला कर देती है (1 कुरिन्थियों 12:25-27)। उनका समाधान किया जाना चाहिए।

यदि आप स्थिति को एक स्वस्थ निष्कर्ष पर नहीं ला सकते हैं, तो मदद के लिए किसी पादरी/पासबान या कलीसिया के किसी परिपक्व अगुवे के पास जाएँ (मत्ती 18:15-17; फिलिप्पियों 4:2-3)। बाहरी मदद भावनाओं को काबू में रखने और तर्कसंगत संचार विकसित करने में मदद करने का एक अच्छा तरीका साबित हो सकता है। किसी ऐसे व्यक्ति को शामिल करें जो निष्पक्ष और उदेश्य सुभावी हो और तुम उसकी सलाह के प्रति ग्रहणशील हो, जो कुछ वह आपको बताए कि आप मदद करने के लिए क्या कर सकते हैं। परमेश्वर बुद्धिमान बाइबिल सलाहकार का उपयोग करता है इसलिए मध्यस्थ के माध्यम से काम करने वाले परमेश्वर को सवीकार करने के लिए तयार रहें।

विश्वासियों को उनके बीच के मुद्दों को हल करने में सक्षम होना चाहिए ताकि उन्हें समाधान के लिए शीर्ष अविश्वासियों के पास न जाना पड़े क्योंकि इस से एक घटिया उदाहरण और गवाही बनेगी (1 कुरिन्थियों 6:1-8)। यदि आप गलत हैं तो जितनी जल्दी हो सके समस्या को समाप्त करने के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं करें (मत्ती 5:25-26)।

अगर इन में से कोई भी काम नहीं करता है, तो दोनों पक्षों को निष्पक्ष मध्यस्थ के पास जाने के लिए सहमत होना चाहिए और स्थिति को स्पष्ट और ईमानदारी से समझाना चाहिए। प्रक्रिया में प्रवेश करने से पहले, दोनों पक्षों को मध्यस्थ के निष्कर्षों का पालन करने के लिए सहमत होना चाहिए। अविश्वासी वकीलों और न्यायाधीशों को मामले का फैसला करने के लिए बहुत सारा पैसा देने से यह बेहतर है। भाइयों के बीच शांति, व्यक्तिगत अधिकारों या चोट का बदला लेने की तुलना में, अधिक महत्वपूर्ण है।

कभी-कभी, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप उन लोगों के साथ समस्याओं को हल करने के लिए क्या करते हैं जो आप से नाराज है, या उनके लिए जो आपकी कलीसिया में हैं और आपसी संघर्ष में हैं, समस्याएँ लगातार बनी रहती हैं। कभी-कभी एक पक्ष या दोनों पक्ष सुलह करने को तयार नहीं होंगे। उस समय हमें क्या करन है ? रोमियों 12:18 हमें बताता है। **"यदि यह संभव है, तो जहाँ तक आप के वस की बात है , सभी के साथ शांति से रहें।"** हमें सभी के साथ शांति से रहने का आज्ञा दी गयी है, लेकिन ऐसा होने में दोनो की जरूरत है। यदि हमने हर संभव प्रयास किया है और वह सब कुछ किया है जो हमरे वस में था, तो हम और कुछ नहीं कर सकते। हम केवल मुद्दे से दूर ही जा सकते हैं। धक्का देने से बात और बिगड़ सकती है, और हमसे हमारा चैन छीन सकता है। यीशु समझता है। उसने उन लोगों के साथ मेल मिलाप करने की कोशिश की जो उसे नापसंद करते थे, लेकिन उनके पास ऐसी कोई भावना नहीं थी इसलिए वह उनसे दूर चला गया। यीशु ने ऐसा ही किया और अपने अनुयायियों को भी ऐसा ही करने को कहा (मत्ती 10:14; लूका 9:5)। यही पौलूस ने किया (प्रेरितों के काम 13:51)। उनके लिए और स्थिति के लिए प्रार्थना करें, और सुनिश्चित करें कि आपके हृदय में क्षमा ना करने की या असंतोष की भावना का निर्माण न हो। उन्हें प्यार करें, उन्हें माफ करें और आगे बढ़ें।

2 कुरिन्थियों 13:11 "अन्त में, भाइयो और बहिनों, आनन्दित हो! पूर्ण बहाली के लिए प्रयास करो, एक दूसरे को प्रोत्साहित करो, एक मन रहो, शांति से रहो। और प्रेम और शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।"

क्या कोई ऐसा है जिसके साथ आपका लंबे समय से विवाद चला आ रहा है?
इसे हल करने में सहायता के लिए अब आप क्या कर सकते हैं?

क्या आपके जीवन में कोई टूटा हुआ रिश्ता है जिसे आप जोड़ने में असमर्थ रहे हैं? उस रिश्ते के लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से उन्हें प्यार करने और उन्हें माफ करने में मदद करने के लिए प्रार्थना करें। उनके लिए भी दुआ करें।

घ- फिलिप्पी में संघर्ष (संघर्ष समाधान 4)

विश्वासियों के बीच का संघर्ष कोई नई बात नहीं है। पौलुस ने भी फिलिप्पी में अपने दो घनिष्ठ मित्रों और सहकर्मियों के साथ इसका सामना किया जिनकी आपस में नहीं बन रही थी। **पढ़ें फिलिप्पियों 4:2-9, फिलिप्पियों 4:2-3 मैं यूओदिया से बिनती करता हूं और सुन्तुखे से भी, कि प्रभु में एक दूसरे के**

साथ सहमत हों जाओ। हां, और हे सच्चे सहकर्मी, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि इन स्त्रियों की सहायता कर, जो क्लेमेंस और मेरे और सहकर्मियों के साथ सुसमाचार के लिए मेरे पक्ष में मुकाबला करती रही हैं, जिन के नाम जीवन की पुस्तक में हैं। यह असहमति इतनी गंभीर थी कि हर कोई इसके बारे में जानता था। हम नहीं जानते कि ऐसा क्या हुआ जिसने कि इन दोनों सहकर्मियों को शत्रुओं में बदल दिया था, लेकिन वे इस मुद्दे को हल नहीं कर सके थे, इसलिए पौलूस एक परिपक्व विश्वासी को हस्तक्षेप करने और रिश्ते की बहाली लाने के लिए कहता है।

पौलूस आगे लिखता है कि मसीहीयों को कैसे रहना और कैसे कार्य करना चाहिए, लेकिन शायद अभी भी उसके मन में संघर्ष है जिसका वह उल्लेख करता है। इसलिए, ये अगली आयतें इस मुद्दे के साथ-साथ पूरे जीवन को संबोधित करती हैं। दूसरों के साथ कैसे मिलना-जुलना है, इसके बारे में हम यहाँ स्पष्ट सिद्धांत पा सकते हैं।

1. प्रभु में सदा आनन्दित रहो 4:4 *"प्रभु में सदा आनन्दित रहो। मैं इसे फिर से कहूंगा: आनन्दित रहो!* कठिन परिस्थितियों में भी, जैसे कि जब दूसरों के साथ संघर्ष हो रहा हो, हमें यीशु में आनन्दित होना चाहिए - समस्या के कारण से नहीं बल्कि इसके बावजूद भी। पौलूस जोर देने के लिए इस आदेश को दो बार दोहराता है। दर्द में होने के बावजूद, हम आनन्दित हो सकते हैं क्योंकि हमारा आनन्द बाहरी परिस्थितियों से नहीं बल्कि यीशु ने हमारे लिए जो कुछ किया है उसके कारण है (फिलिप्पियों 2:1-11)। आनन्द विश्वास का प्रतिफल है कि परमेश्वर एक अच्छे उद्देश्य के लिए कठिन परिस्थितियां बनने की अनुमति देता है (फिलिप्पियों 1:18-21)।

2. तेरी नम्रता सब पर प्रगट हो 4:5क *"तेरी नम्रता सब पर प्रगट हो"*। एक बहुत ही तयार और सिखाने वाली भावना कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध रह। अपनी भूमिका को देख कि उसको सुधारने के लिए क्या करना चाहिए, दूसरों पर ध्यान केंद्रित ना कर (लठा और तिनका मत्ती 7:3)। दूसरों के साथ चुगली न करें, आलोचना न करें, अपना बचाव करें या दूसरे पर हमला न करें - परमेश्वर को आप में और उस में कार्य करने दें।

3. याद रखें कि प्रभु निकट है 4:5बी *"प्रभु निकट है।"* तुम अकेले नहीं हो ; परमेश्वर तुम्हारे साथ है। परमेश्वर सही समय पर और सही तरीके से तुम्हारी रक्षा करेगा और तुम्हारा पक्ष रखेगा।

4. संघर्ष के बारे में चिंतित न हों बल्कि परमेश्वर से इसे हल करने के लिए कहें 4:6

"किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु हर एक बात में अपनी विनती और निवेदन प्रार्थना के द्वारा धन्यवाद सहित परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किया करो।" मुझे संघर्ष और टकराव से डर लगता है - वे मेरे लिए बहुत तनाव और चिंता लाते हैं। मैं इसे परमेश्वर के कदमों पर रख देना सीख रहा हूं और उसे ही इसकी और मेरी देखभाल करने के लिए छोड़ता हूं। समस्या को ठीक करने के लिए दूसरों के पास मत जाओ, परमेश्वर की सलाह और मदद लो

5. परमेश्वर की शांति के साथ अपने दिल और दिमाग की रक्षा करें 4:7 भले ही ऐसा करने का कोई मतलब न दिखता हो । परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है "तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।" अपने जीवन में शांति के फल के लिए प्रार्थना करें, उन विचारों से दूर रहें जो तनाव या दर्द लाते हैं। उन्हें यीशु के कदमों पर छोड़ दें ।

6. विपक्ष में प्रशंसा के योग्य कुछ खोजें 4:8 *"अंत में, भाइयों, जो कुछ भी सत्य है, जो कुछ अच्छा है, जो कुछ सही है, जो कुछ शुद्ध है, जो कुछ प्यारा है, जो कुछ भी सराहनीय है - यदि कुछ भी उत्कृष्ट या प्रशंसनीय है - ऐसी बातों के बारे में सोचो ।"* दूसरे व्यक्ति और समस्या के बारे में कुछ अच्छा और सकारात्मक खोजें। केवल नकारात्मक को न देखें और उसे बड़ा करें

7. अच्छे अद्रश खोजें और इन बातों का अभ्यास करना जारी रखें 4:9 *"जो कुछ भी तुमने मुझ से सीखा है या प्राप्त किया है या सुना है, या मुझ में देखा है—उसे आपने अभ्यास में लाओ। और शांति का ईश्वर आपके साथ होगा।"* पौलूस ने बहुत विरोध और आलोचना को सहन किया था। उसने बहुत से विश्वासियों के साथ संघर्ष का सामना किया था (फिलिप्पियों 1:12-20)। वह जानता था कि यह क्या होता है , इसलिए वह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि ऐसे समय के दौरान कैसे प्रतिक्रिया दी जाए। आप कई अन्य अच्छे उदाहरण बाइबल में या उन लोगों के जीवन में पा सकते हैं जिन्हें आप जानते हैं। उनसे सीखो। उनका ऐसा ही प्रतिउतर दे जैसे दिया जाना चाहिए।

जब हमारे शत्रु क्रूस के शत्रु हैं (फिलिप्पियों 3:18) और बुराई फैला रहे हैं (फिलिप्पियों 3:2), तो हमें उनके विरुद्ध प्रभु में दृढ़ रहना चाहिए (फिलिप्पियों 4:1)। जब वे संगी विश्वासी हों, तो हमें मसीह की देह के साथ मेल मिलाप लाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 12:25-27)।

उपरोक्त सिद्धांतों में से कौन सा सिद्धांत आपकी वर्तमान स्थिति में आपकी मदद कर सकता है?
आप इन सच्चाइयों को अपने जीवन और रिश्तों में कैसे लागू कर सकते हैं?

निष्कर्ष

नीतिवचन 27:17 घोषणा करता है: "जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य दूसरे को चमका देता है"। पादरीयों के रूप में हम एक दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं, विशेष रूप से बजुर्ग पादरियों से। पौलुस तीमुथियुस से कहता था, "जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे, जो दुसरे लोगों को भी सिखाने के योग्य हों" (2 तीमुथियुस 2:2)। पौलुस ने तीमुथियुस को वह बताता था जो वह जानता था, जो उसे आगे दूसरों को देना था जो बदले में इसे तब तक आगे देते रहे जब तक कि यह आज हमारे पास नहीं आ गया। 2,000 साल पहले पौलूस की सलाह आज भी उत्तम है, इस से सीखिए और इसे आगे बढ़ाइए। जब हम इन बातों को सीखते हैं, तो हमें इन बातों को युवा अगुवों और पादरीयों को सौंप देना चाहिए ताकि वे बेहतर तरीके से यीशु की सेवा कर सकें। फिर वे बदले में उन्हें दूसरों को दे देंगे। मेरी प्रार्थना है कि आप इस पुस्तक से सीखेंगे और आप इन बातों को दूसरों तक पहुंचाएंगे, परमेश्वर की सेवा में अन्य पुरुषों को परामर्श देंगे और प्रशिक्षण देंगे।

पुस्तक के अंत में प्रशनों की परछाई

निम्नलिखित प्रशनों के उत्तर देने के लिए कुछ समय लें। आपने जो सीखा है उसे अपने जीवन और सेवकाई में लागू करने में यह आपकी मदद करेंगे। प्रार्थना करें और परमेश्वर की बुद्धि और अंतर्दृष्टि की मांग करें।यह काम धीरे धीरे करो, जल्दी मत करो। उनके बारे में आपने किसी मित्र, साथी पादरी या अपने जीवन साथी से बात करें। जो आपको लगता है कि परमेश्वर आपको सिखा रहा है उसे लिखते रहो

ताकि आप उस पर विचार कर सकें और इसको आपने जीवन में बेहतर ढंग से लागू कर सकें। यह सिर्फ आपके फायदे के लिए है; आपको उत्तरों की तरफ मुड़ने की आवश्यकता नहीं है।

पौलुस के जीवन के कौन से सबक आप के जीवन पर सबसे अधिक लागू होते हैं?

तीमुथियुस के जीवन के कौन से सबक आप के जीवन पर सबसे अधिक लागू होते हैं?

तीमुथियुस और तीतुस को पौलुस द्वारा दी गई कौन सी सलाह आप के जीवन पर सबसे अधिक लागू होती है?

आप किस को अधिक पसंद करते हैं: पौलूस को , तीमुथियुस को या तीतुस को ?

आप इन तीनो से क्या सीख सकते हैं?

पादरीयों और अगुवों के लिए पौलूस की चरित्र आवश्यकताओं की सूची में, आप किन की में मजबूत हैं?

पादरीयों और अगुवों के लिए पौलुस की चरित्र आवश्यकताओं की सूची में, आप किन किन में कमज़ोर हैं?

अपनी ताकतों का बेहतर उपयोग करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

आप अपनी कमजोरियों को दूर करने के लिए क्या कर सकते हैं?

उस समय के बारे में सोचें जब आप ने दो लोगों के बीच संघर्ष को सुलझाने की कोशिश की हो, आप उसमें कितने सफल रहे?

इस पुस्तक में आप ने क्या सीखा है जो लोगों के बीच की समस्याओं को सुलझाने में आपकी मदद कर सकता है?

यदि कोई आपके कुछ लोगों को बाइबिल से बाहरी सिद्धांत सिखा रहा है, तो आपको अपने लोगों की रक्षा के लिए क्या करना चाहिए?

त्रुटि सिखाने वाले व्यक्ति को पुनर्स्थापित करने के लिए आप को क्या करना चाहिए?

यदि पौलुस आपसे व्यक्तिगत रूप से बात कर रहा होता, तो वह आपकी वर्तमान सेवकाई में आपकी मदद करने के लिए आपको क्या सलाह दे सकता था?

SP/21.06.2023